भूमिका।



स्वार्थ और परमार्थ दोनों के लिये ज्योतिष शास्त्र बहुतही अच्छा है। इसके फलित ग्रन्थोंमेंसे नित्य व्यवहारकी उपयोगी बातें ढूँढकर उनका अभ्यास किया जाय तो वह मनुष्य घरहीमें बैठा हुवा धनी मानी और परोपकारी होसकता है किन्तु एक बातके लिये अनेकों ग्रन्थोंका अभ्यास किया जाय तब सफलता होती है और ऐसा करनेके लिये आज कलके प्रायः 'निरुद्यमी' निरुत्साही, निराश्रयी, निरायुषी, लोग कहांतक ऐसे कामोंमें तन, मन, धन लगा सकते हैं अतएव ऐसेही लोगोंके उपकारके लिये श्रीमेघविजय महाशयने "वाराहीसंहिता" आदि कई एक संहिताओंसे सामग्री इकट्ठी करके यह "वर्षप्रबोध" बहुतही उत्तम निर्माण किया था और इसमें खेती करनेवालोंके उपयोगी, व्यापारीयोंके उपयोगी तथा धनग्राही अथवा परोपकारी पंडितोंके उपयोगी कई बातोंका अच्छा संग्रह किया था किन्तु कालान्तरके कारण अथवा दुर्लभतासे यह संग्रह छिन्न भिन्न होकर खंडित होगया। और सद्व्यवस्था रूपसे अब कहीं मिलताभी नही है यद्यपि भाषाटीका सहित एक मिलताहै किन्तु वह ऐसा है मानो खुले पत्रोंकी पुस्तक आंधीमें उडगई हो और उसीको ढूंढ ढांदकर बिना नम्बर देखेही ज्योंकी त्यों छापदी हो, क्योंकि उसमें एकही विषयके दश दश अंगोंमेंसे आठ आठ अंग ओत रहेहैं और कई एक विषय इधर के उधर छिन्न भिन्न होकर खंडित होरहे हैं। संभवतः इसीकारणसे विद्वानोंके उपयोगमें यह ग्रन्थ विशेष नही आता है अतएव इन सब गडबडाध्यायोंको देखकरही मैंने अब इस ग्रन्थका फिरसे संग्रह किया है और जहां जहां जो जो कुछ त्रुटियां अशुद्धियां न्यूनता वा लोम विलोम थीं उन सबको काट छांट फेरबदल और सम्मिश्रण करके इसे यथासाध्य सांगोपांग-सद्व्यवस्थ

और सर्वोपयोगी बनानेका प्रयत्न कियाहै । जो जो विषय इसमें अदल बदल लोम विलोम और खण्डित होगये थे उन सबको क्रमपूर्वक मिलसिलेवार लगाकर खण्डित अंगोंको और और ग्रन्थोंके आधारसे पूर्ण किया है । और इसमेंसे जो अंग जाते रहे थे उनके सैकडों श्लोक अन्य ग्रन्थोंसे लेकर इसमें लगादिये हैं विशेषकर पंचांग बनानेवालोंको उपयोगी भविष्य फल सम्बधी सब सामग्री इसमें संयुक्त करदी है अतएव अब यह ग्रन्थ व्यापार करनेवालों, खेती-करनेवालों, पंचांग बनानेवालों, वर्षा आदि देखनेवालों और शुभाशुभ देखने वालोंको अवश्यही लाभदायक हो सकता है आशा है विद्वान् लोग इस सम्मार्जित कुसुमोपहारको स्वीकार करनेमें सकोच नहीं करेंगे मैंने अब इस ग्रन्थका सर्वाधिकार "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसके मालिक सेठ खेमराजजीको दे दियाहै अतएव इसे अन्य कोई छपनेका दुःसाहस न करे इति शुभम् ।

हितैषी-

हनूमान शर्मा,-जयपूर सिटी.



विषयानुक्रमणिका।

सं	विषय।	पृ.

ग्रंथ समाप्त।

॥ श्रीः ॥

वर्षप्रबोधः

भाषाटीकासहितः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता
स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम् ।
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धादिभिर्मुक्तये
ध्यातःपञ्चशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः॥ १॥

" मंगलाचरण " त्रिपुरासुरको मारनेके समय शिवजीने;-छलसे बलिको बाँधनेके समय भगवान्ने;-त्रिभुवनकी सृष्टि करनेके समय ब्रह्माने;-पृथ्वीको धारण करनेके समय शेषने;-महिषासुरको मारने-के समय पार्वती (देवी) ने;-मुक्ति साधनके समय सिद्धोंने और संसारको जीतनेके समय कामदेवने जिसका ध्यान किया, वह नागानन (गणेश) हमारी रक्षा करें ॥ १ ॥

यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान्
शृणोति वार्षीयफलं पवित्रम् ।
भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी
जह्याच्च पीडां तनुजां च वार्षिकीम् ॥ २ ॥

जो बुद्धिमान् चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको संवत्सरका पवित्र फल सुनताहै वह धनाढ्य और बहुत अन्न वाला होताहै । तथा उसके शरीरकी सालभरकी पीड़ायें दूर होजाती हैं ॥ २ ॥

शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजननं संवत्सरस्याढ्यतां
राज्ञो राजकुले जयो विजयते मंत्रीफलं बुद्धिदम् ।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा
सस्यं सर्वसुखं च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥३॥

शाकेको सुननेसे पुण्य होताहै, संवत्सरसे सम्पत्तिवान् होताहै, संवत्के राजाका फल सुननेसे राजकुलमें विजय होती है, मंत्रीका फल बुद्धि देताहै, धनाधिपसे धान्य होताहै, रसाधिपसे रस मिलतेहैं; तथा क्षेत्र (खेती आदि) में ज्ञान बढता है और सस्येशस सर्व सुख मिलते हैं इस कारण सिद्धिके देनेवाले संवत्सरके फलको अवश्य सुनना चाहिये ॥ ३ ॥

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणं
स्नानं मंगलमाचरेद्द्विजवरैः कुर्यान्मनोवाञ्छितम् ।
आद्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजये-
च्छ्रोतव्यं द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम् ॥४॥

जब नवीन संवत् बदले तब अपने मकानको लीप पोतकर ध्वजा रोपना चाहिये, और स्नानादि मंगलाचरण करके चांदी-सोना-रत्न-मणि-आदि यथायोग्य लेकर बड़े बूढ़ों सहित अच्छे पढे लिखे ब्राह्मणोंका पूजन करके कल्याणकारक पुण्यदायी संवत्का फल सुनना चाहिये ॥ ४ ॥

पञ्चांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दं
सन्तोष्यानेकदानैः परमसुखयुतोभोजयित्वान्नमिष्टम्
शृण्वन्गीतादिवाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं
संक्रमेत क्रीडंस्त्रीभिश्च सार्द्धं निशमपि च नरो
सुखी स्यात् ॥ ५ ॥

. पंचांगमें जो गणेशजी हैं उनका ब्राह्मणों सहित पूजन करके अनेक दानोंसे उनको सन्तोष देकर फल फूल मिठाई आदिका भोजन कराके संवत्‌का फल सुनना चाहिये और उस दिन गीत वाद्यादि करके रात्रिको स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करना चाहिये। ऐसा करनेसे वह मनुष्य बारह मास तक सुखी रहताहै ॥५॥

(पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः।
सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचहिंगुलवणजीरकेण च संयुतम्।
अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये ॥)

संवत्सरानयनप्रकारः।*

शके च पंचाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि।
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ॥६॥

---

*"गतानि वर्षाणि शकेन्द्रकालाद्धतानि रुद्रैर्गुणयेच्चतुर्भिः। नवाष्टपञ्चाष्ट-युतानि कृत्वा विभाजयेच्छून्यशरागरामैः ॥ १ ॥ फलेन युक्तं शकभूपकालं संशोध्य षष्ट्या विषयैर्विभज्य। युगानि नारायणपूर्वकाणि लब्धानि शेषाः क्रमशः समाः स्युः ॥ २ ॥"

संवत्सर लानेकी दूसरी विधि यह है कि शकेको दो जगह लिखकर एक जगहम ११ से गुणके ४ से गुणे और ८५८९ में जोडकर ३७५० का भाग दे(जो अंक आवे सो गये फिरमे शेषको १२ से गुणकर ३७५० का भाग दे लब्ध मास—फिर शेषको ३० से गुणकर ३७५० का भाग दे लब्ध दिन—फिर शेषको ६०से गुणकर ३७५० का भाग दे लब्ध घटी और फिर शेषको ६० से गुणकर ३७५० का भाग दे जो लब्ध हो सो पल जानना। फिर इन सबको) दूसरी जगहके शकेमें मिलाकर उसके अंकमें ६०का भाग दे जो शेष अंक रहे उसको संवत् प्रभवादि गत जानना। और नीचे जो मासादि हैं यह वर्तमानके गतमासादि जानना। इनको १२में घटावे सो भोग्य मासादि जानना। यथा—शाके १८२९को ११ से गुणे तो २०११९ हुए

नीमके कोमल पत्ते तथा फूल लेकर उनमें मिर्च, हींग, लवण, अजमादो और जीरा मिलाकर संवत्सरके दिन सर्व रोगोंकी शांतिके लिये खाना चाहिये "संवत् लानेकी रीति" शकेमें एकसौ पैंतीस १३५ जोड़नेसे विक्रम संवत् होताहै । यह रेवाके उत्तर तीरमें संवत्नामसे विख्यातहै ॥ ६ ॥

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात्॥ ७ ॥

"प्रभवादि संवत्सर लानेकी रीति—" वर्तमान विक्रम संवत्के अंकोंमें नौ जोड़कर साठका भाग देनेसे जो बचे वह प्रभवादि संवत्सर जानना—यथा १ से प्रभव २ से विभव इत्यादि ॥७॥

प्रभवादिसम्वत्सराः ।

प्रभवो विभवः शुक्लो प्रमोदोथ प्रजापतिः ।
अंगिराःश्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥८॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोव्ययः ॥ ९ ॥

"प्रभवादिके नाम"—प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, इश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी,

---

—इनको४से गुणा८०९१६हुए इनमें८५८९मिलाये८२५०९हुए,इनमें३७५० का भाग दिया तो२२लब्ध हुए शेषको बारह-तीस-साठ-साठसे क्रमसे गुणकर प्रत्येकमें३७५०का भाग दिया तो १०।१२।२८।४८हुए। उपरोक्त २२ को शके १८३९ में मिलाकर ६०का भाग दिया तो २ शेष रहे । अतः विभव गत और नीचेके अंक जो १०।१२।२८।४८ हैं ये वर्तमान शुक्लके गत मास हुए इनको १२ में घटाये तो१।१७।३१।१२ भोग्य मासादि हुए । यह समयके जानने चाहिये । विशेष "बृहत्संहिता"में देखो ।

विक्रम, वृषभ, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव और व्यय यह २० संवत् ब्रह्माकी वीसीके हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

सर्वजितसर्वधारीचविरोधीविकृतिः खरः ।
नंदनोविजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखौ ॥ १० ॥
हेमलम्बीविलम्बीचविकारीशर्वरीप्लव- ।
शुभकृच्छोभनःक्रोधीविश्वावसुपराभवौ ॥ ११ ॥

सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नंदन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलंब, विलम्ब, विकारी, शर्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव यह २० वीस संवत् विष्णुकी वीसीके हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत् ।
परिधावीप्रमादीचआनंदोराक्षसोनलः॥ १२ ॥
पिंगलःकालयुक्तश्चसिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः ।
दुंदुभीरुधिरोद्गारीरक्ताक्षःक्रोधनःक्षयः ॥ १३ ॥

प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, काल, सिद्धार्थ, रौद्र, दुर्मति, दुंदुभी, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन, और क्षय यह २० संवत् शिव विंशतिके हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

निरीतिः सकलोदेशःसस्यनिष्पत्तिरुन्नता ।
स्वस्थिताभूभुजाःसर्वेप्रभवेसुखिनोजनाः॥ १४ ॥

"प्रभवादिका फल"—प्रभव संवत्में ईतिभय (टीडीआदि) नहीं रहे खेतीकी उपज अच्छी हो । सब राजालोग प्रसन्न रहें और मनुष्य सुखी हों ॥ १४ ॥

दंडनीतिपराभूपाःबहुशस्यार्घवृष्टयः ।
विभवाब्देखिलालोकाःसुखिनोनिर्वैरिणः॥१५॥
विभव संवत्सरमें राजा लोग दंडनीति वाले हों अन्न तथा वर्षा बहुत हो और सम्पूर्ण मनुष्य निर्वैर होकर सुखसे रहें ॥ १५॥

शुक्लाब्देनिखिलालोकाःसुखिनःस्वजनैःसह ।
राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः॥ १६ ॥
शुक्ल वर्षमें स्वजनों सहित सब लोग सुखी रहैं और परस्परमें जयकी इच्छा रखते हुए राजा लोग युद्धमें लगे रहैं ॥ १६ ॥

प्रमोदाब्देप्रमोदन्तेराजानोनिखिलाजनाः ।
वीतरोगावीतभया ईतिशत्रुविनाशकाः ॥१७॥
प्रमोद वर्षमें राजा प्रजा सब आनन्दित रहैं । रोग और भय दूर हों तथा ईत और शत्रुका नाश हो ॥ १७ ॥

नचलन्त्यखिलालोकाःस्वस्वमार्गात्कथंचन ।
अब्देप्रजापतेर्नूनंबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ १८ ॥
प्रजापति वर्षमें सब लोक अपने अपन मार्गको कुछभी नहीं छोड़ें और अन्न सस्ता तथा वर्षा निश्चय हो ॥ १८ ॥

अन्नाद्यंभुज्यते शश्वज्जनैरतिथिभिःसह।
अंगिराब्देखिलालोका भूपाश्चकलहोत्सुकाः॥१९॥
अंगिरा वर्षमें अतिथियोंके साथ लोग निरन्तर अन्नादिका भोजन करें । और सब लोक तथा राजालोग कलहोत्सुक हों ॥ १९ ॥

श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता ।
अध्वरेनिरताविप्रा वीतरोगाविवैरिणः॥ २० ॥
श्रीमुख वर्षमें सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्नसे संयुक्त हो और ब्राह्मण लोग यज्ञ करनेमें निरत रहैं तथा रोग और वैरसे वर्जित हों॥२०॥

भावाब्देप्रचुरारोगामध्याःसस्यार्वृष्टयः ।
राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥२१॥

भाव वर्षमें रोग बहुत हों, वर्षा कम हो, अन्न मध्यम हो और राजा लोग युद्धमें लगे रहैं तौभी अन्य जन सुखी रहैं ॥ २१ ॥

प्रभूतपयसोगावःसुखिनःसर्वजन्तवः ।
सर्वकामक्रियासक्तोयुवाब्देयुवतीजनः ॥ २२ ॥

युवा वर्षमें गाय बहुत दूध दें सब जीव सुखी रहैं और स्त्रियां कामकलामें आसक्त हों ॥ २२ ॥

धातृवर्षेखिलाःक्ष्मेशाःसंग्रामेसक्तमानसाः ।
संपूर्णाधरणीभातिबहुसस्यार्वृष्टिभिः ॥ २३ ॥

धाता वर्षमें सब राजा लोग लड़ाईयोंमें आसक्त मन हों। और सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्न तथा वर्षासे सुशोभित हो ॥ २३ ॥

ईश्वराब्देखिलाञ्जन्तून्धात्रीधात्रीवसर्वदा ।
पोषयत्यखिलाँल्लोकान्नात्रकार्याविचारणा ॥२४॥

ईश्वर वर्षमें पृथ्वी सम्पूर्ण जीवोंका माताकी भाँति पोषण करे। अर्थात् घास फूस अन्न फल फूल और रस कस आदि लोकोपयोगी सभी वस्तुएं उत्पन्न हों ॥ २४ ॥

बहुधाजायतेवृष्टिर्बहुधाख्यस्य वत्सरे ।
विविधैर्धान्यनिचयैःसंपूर्णाचाखिलाधरा ॥ २५ ॥

बहुधा वर्षमें वर्षा बहुत हो और कई भाँतिके अन्नसे सम्पूर्ण पृथ्वी पूर्ण हो ॥ २५ ॥

नमुंचतिपयोवाहःकुत्रचित्प्रचुरंजलम् ।
मध्यमावृष्टिरर्थेश्चनूनमब्देप्रमाथिनि ॥ २६ ॥

प्रमाथी वर्षमें बादल, कहींभी अधिक जल नहीं छोड़ें, अर्थात् मध्यम वर्षा हो ॥ २६ ॥

विक्रमाब्देधराधीशाविक्रमाक्रान्तमूर्तयः ।
सर्वत्रसर्वदामेघामुंचन्तिप्रचुरंजलम् ॥ २७ ॥

विक्रम वर्षमें राजा लोग बड़े बलवान् हों । और सब जगह सदैव बहुत जल वर्षे ॥ २७ ॥

वृषभाब्देखिलाःक्ष्मेशायुद्ध्यन्तेवृषभा इव ।
मत्ताःप्रसक्ताविप्रेन्द्रायजन्तेसततंसुरान् ॥ २८ ॥

वृषभ वर्षमें राजा लोग बैलोंकी भाँति बहुत युद्ध करें । और ब्राह्मण लोग सदैव देवताओंकी पूजन करनेमें लगे रहें ॥ २८ ॥

चित्रार्थवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा ।
निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभानोश्चवत्सरे ॥२९॥

चित्रभानु वर्षमें विचित्र वर्षा और अन्न धनसे पृथ्वी पूर्ण हो और लोकमें आकुलता नहीं रहे ॥ २९ ॥

सुभानुवत्सरेभूमौभूमिपानांचविग्रहः ।
जायतेघोररूपेणसर्वभूतभयंकरः ॥ ३० ॥

सुभानु वर्षमें पृथ्वीपर राजाओंमें घोर रूपसे विग्रह रहे जिससे सब डर जांय ॥३० ॥

कथंचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रतिपत्तनम् ।
रोगशोकसमावेगात्क्रूरेतारणकाब्दके ॥ ३१ ॥

तारण वर्षमें लोग रोग-शोक-संकट आदिसे कठिनता से पार होसकें ॥ ३१ ॥

पार्थिवाब्देचराजानःसुखिनःस्युर्भृशंजनाः ।
बहुभिःफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥ ३२ ॥

पार्थिव वर्षमें राजा लोक प्रसन्न रहें प्रजा सुखी रहे । और विविध पुष्पादिसे पृथ्वी संयुक्त हो ॥ ३२ ॥

व्ययाब्देनिखिलालोकाबहुव्ययपराभृशम् ।
उद्विग्नादुःखभारेणभूमिभीतिश्चसर्वदा ॥ ३३ ॥

व्यय वर्षमें सब लोग बहुत व्यय करें और उद्वेगित तथा दुःखित रहें (यहांतक ब्रह्म विंशति का फल हुआ) ॥ ३३ ॥

सर्वजिद्वत्सरेसर्वेजनास्त्रिदशसंनिभाः ।
राजानोविलयंयांतिवीरसंग्रामभूमिषु ३४ ॥

सर्वजित् संवत्में सब लोग तो स्वर्गकी समान सुखी रहें और राजा लोग युद्धमें प्राण त्याग करें ॥ ३४ ॥

सर्वधार्यब्दकेभूपाःप्रजापालनतत्पराः ।
प्रशान्तवैराःसर्वत्रबहुसस्यार्थवृष्टयः ॥ ३५ ॥

सर्वधारी वर्षमें राजा लोग प्रजापालनमें तत्पर रहें और सब जगह सुख शांति रहे ॥ ३५ ॥

शीतलादिविकारःस्याद्बालानांतस्कराजनाः ।
अल्पक्षीरास्तथागावोविरोधश्चविरोधिनि ॥३६॥

विरोधी वर्षमें बालकोंको शीतलाका विकार हो, चौर बहुत हों गायोंमें दूध की कमी हो और मनुष्योंमें विरोध हो ॥ ३६ ॥

मुष्णन्तितस्करालोकंविकृतिप्रकृतिस्तथा ।
विकाराअल्पवृष्टिश्चविकृतेब्देप्रजारुजः ॥ ३७ ॥

विकृत वर्षमें चोरी अधिक हो, प्रकृतिमें विकृत (.विकार.) हो, वर्षा कम हो और रोग अधिक हो ॥ ३७ ॥

स्वल्पावृष्टिःस्वल्पधान्यंखण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ।
छत्रभङ्गःप्रजापीडाखरेऽब्देखरताजने॥३८॥

खर वर्षमें स्वल्प वृष्टि-स्वल्प धान्य-खण्ड वर्षा-नृप क्षय-छत्र भंग और प्रजा पीड़ा हो ॥ ३८ ॥

सुभिक्षसुखिनोलोकाव्याधिशोकविवर्जिताः ।
नन्दनंचधनैर्धान्यैर्नन्दनेवत्सरेभवेत् ॥ ३९ ॥

नन्दन वर्षमें सुख, सुभिक्ष, शोक नाश और धन धान्य हों ३९॥

युध्यंतेभूभृतोऽन्योन्यंलोकानांचधनक्षयः ।
दुर्भिक्षंचक्वचित्स्वस्थंबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ४० ॥

विजय वर्षमें राजा लोग परस्परमें युद्ध करें, लोगोंके धनका क्षय हो, दुर्भिक्ष पड़े,कहीं स्वस्थता हो और बहुत अन्न तथा वर्षा हो४०॥

जयमंगलघोषाद्यैर्धरणीभातिसर्वदा ।
जयाब्देधरणीनाथासंग्रामेजयकांक्षिणः ॥ ४१ ॥

जय वर्षमें जय मंगल घोषादिसे पृथ्वी सुशोभित रहे। और धरणीनाथ संग्राममें जयकी इच्छा करें ॥ ४१ ॥

मन्मथाब्देजनाःसर्वेतस्कराअतिलोलुपाः ।
शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥ ४२ ॥

मन्मथ वर्षमें सब लोग चौर तथा अधिक लोभी हों और चावल ईख,गेहूं तथा जौओंसे पृथ्वी पूर्ण हो ॥ ४२ ॥

दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा ।
महावैरामहीनाथावीरवारणवाजिभिः ॥ ४३ ॥

दुर्मुख वर्षमें वर्षा मध्यम हो, ईति और चौरोंसे पृथ्वी आकुल रहे। तथा राजाओंमें और हाथी घोड़ोंमें महा वैर रहे ॥ ४३ ॥

हेमलम्बेत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
भातिभूर्भूपतिक्षोभःखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥४४ ॥

हेमलम्ब वत्सरमें ईति भीति हो, अन्न वर्षा मध्यम हों । पृथ्वी सुन्दर हो, राजाओम क्षोभ हो और बिजली चमकें ॥ ४४ ॥

विलंबिवत्सरेभूपाःपरस्परविरोधिनः ।
प्रजापीडात्वनर्थंत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥ ४५ ॥

विलंब वर्षमें राजाओंमें परस्पर विरोध बढ़े । प्रजामें पीड़ा तथा अनर्थ हो तौभी मनुष्य सुखी रहें ॥ ४५ ॥

विकार्यब्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः ।
पूर्वसस्यफलंस्वल्पंवहुलंचापरंफलम् ॥ ४६ ॥

विकारी वर्षमें सब लोग रोग तथा वृष्टिसे पीड़ित हों । और पूर्व सस्य (जो गेहूं) तथा फल आदि कम हों और परसस्य (जाड़ेके अन्न) फल अधिक हों ॥ ४६ ॥

शर्वरीवत्सरेपूर्णाधरासस्यार्घवृष्टिभिः ।
जनाश्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥ ४७ ॥

शर्वरी वर्षमें अन्न और वर्षासे पृथ्वी पूर्ण हो । मनुष्य सुखी रहैं और राजाओंमें परस्पर विशेष वैर हो ॥ ४७ ॥

प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्लाविता भवेत् ।
रोगाकुलात्वीतिभीतिःसम्पूर्णवत्सरेफलम् ॥ ४८ ॥

प्लव वर्षमें वर्षा बहुत हो । और लोग रोगाकुल तथा ईतिभीतिसे दुःखित हों ॥ ४८ ॥

शुभकृद्वत्सरेपृथ्वीराजतेविविधोत्सवैः ।
आतंकचोराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ॥ ४९ ॥

शुभकृत् वर्षमें पृथ्वीपर नानाप्रकारके उत्सव हों । चौर डरते रहें और राजाओंके युद्धकी इच्छा बढ़े ॥ ४९ ॥

शोभनेवत्सरेधात्रीप्रजानांरोगशोकदा ।
तथापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ५० ॥

शोभन वर्षमें पृथ्वी प्रजाको रोग शोक देवै । तौभी अधिक अन्न वृष्टि होनेसे लोग सुखी रहैं ॥ ५० ॥

क्रोध्यब्देत्वखिलालोकाःक्रोधलोभपरायणाः ।
ईतिदोषेणसततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ५१ ॥

क्रोधीवर्षमें सब लोक क्रोध लोभमें परायण हों । शीघ्रही ईति भय हो और अन्न जल मध्यम हों ॥ ५१ ॥

अब्देविश्वावसौशश्वद्घोररोगाकुलाधरा ।
सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥ ५२ ॥

विश्वावसु वर्षमें पृथ्वी घोर रोगोंसे आकुल हो । अन्न जल मध्यम हों । और राजा लोगोंके तहसीलें (कर आदिके रुपये) भी कम आवें ॥ ५२ ॥

पराभवाब्देराज्ञःस्यात्समरःसहशत्रुभिः ।
आमयक्षुद्रसस्यानिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥ ५३ ॥

पराभव वर्षमें राजालोग शत्रुके साथ युद्ध करें । रोग हो तथा थोडा अन्न हो और वर्षाभी कम हो (यह विष्णुविंशतिके वर्षोंका फल है ।) ॥ ५३ ॥

प्लवंगाब्देमध्यवृष्टीरोगचौराकुलाधरा ।
अन्योन्यसमरेभूपाःशत्रुभिर्हृतभूमयः ॥ ५४ ॥

प्लवंग वर्षमें वर्षा मध्यम हो , रोग चोरोंसे पृथ्वी आकुल हो,राजा लोग परस्परमें युद्ध करके शत्रुसे भूमि हरण करें ॥ ५४ ॥

कीलाब्देत्वीतिभीतिश्चप्रजाक्षोभनृपाहवो ।
तथापिवर्धतेलोकःसमधान्यार्घवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥

कील वर्षमें ईति भीति हो, पृथ्वीमें राजाओंके संग्रामसे क्षोभ हो तौभी अच्छी वर्षा होनेसे धान्य सस्ता हो और लोग बढ़ें ॥ ५५ ॥

सौम्याब्देनिखिलालोकाबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ।
विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ ५६ ॥
सौम्य वर्षमें सब लोकोंमें बहुत अन्न जल हों। राजा लोग निर्वैर हों और ब्राह्मण लोग यज्ञ करनेमें तत्पर हों ॥ ५६ ॥

साधारणाब्देवृष्टयर्द्धंभयंसाधारणंस्मृतम् ।
विवैरिणोधराधीशाःप्रजाःस्युःस्वच्छचेतसः॥५७॥
साधारण वर्षमें आधी वर्षा हो, साधारण भय हो । राजा लोग निर्वैर हों और प्रजा स्वच्छचित्त (निष्कपट, हो ॥ ५७ ॥

विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिनः ।
सर्वेजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ५८ ॥
विरोधकृत् वर्षमें परस्पर विरोध बढै। और अन्न जल कम हों५८

भूपाहवोमहारोगोमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
दुःखिनोजन्तवःसर्वेवत्सरेपरिधाविन ॥५९॥
परिधावी वर्षमें राजाओंमें युद्ध हों-रोग हो-मध्यम अन्न हो और सब जीव दुःखी रहैं ॥ ५९ ॥

प्रमाथीवत्सरेतन्नमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
प्रजाःकथंचिज्जीवन्तिसमात्सर्याःक्षितीश्वराः६०॥
प्रमाथी वर्षमें जल अन्न मध्यम हों, प्रजामें रोग पीड़ा हो और राजाओंमें मत्सरता हो ॥ ६० ॥

आनन्दाब्देऽखिलालोकाःसर्वदानन्दचेतसः ।
राजानःसुखिनःसर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ६१ ॥
आनन्द वर्षमें सब लोक आनन्दयुक्त रहैं । राजा सुखी हों और अन्न जल अच्छे हों ॥ ६१ ॥

स्वस्वकार्येरताःसर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राक्षसाब्देऽखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रियाः॥६२॥
राक्षस वर्षमें सब लोग अपने अपने कामोंमें लगे रहें । सस्यार्घ वृष्टि मध्यम हो । और राक्षसी क्रियामें लोग लगे रहें ॥ ६२ ॥

नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिःप्रवराधरा ।
नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥६३॥
नल वर्षमें जल अन्न मध्यम हो । पृथ्वी अच्छा प्रतात हो । राजाओंमें क्षोभ रहे और चौरोंका भय अधिक वढे ॥ ६३ ॥

पिंगलाब्देत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।
राजानोविक्रमाक्रांताभुंजतेशत्रुमेदिनीम् ॥ ६४ ॥
पिंगल वर्षमें ईति भीति हो,अन्न जल मध्यम हो,और राजालोग अपने वलके प्रभावसे शत्रुओंकी पृथ्वीका भोग करें ॥ ६४ ॥

वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनःसर्वजंतवः ।
सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥ ६५॥
काल वर्षमें सब मनुष्य सुखी रहें । और अन्न अधिक हो किन्तु रोग फल ॥ ६५ ॥

सिद्धार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः ।
सकलावसुधाभातिवहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ६६ ॥
सिद्धार्थ वर्षमें प्रजा ज्ञान वैराग्यसे युक्त हो । सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे । और जल अन्न अच्छे हों ॥ ६६ ॥

रौद्रेऽब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विते ।
सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ६७ ॥
रौद्र वर्षमें राजाओंमें क्षोभ हो तथा क्लेशसंयुक्त हो । और अन्न जल मध्यम हों ॥ ६७ ॥

दुर्मत्यब्देखिलालोकाभूपादुर्मतयस्तदा ।
तथापिसुखिनःसर्वेसंग्रामाःसन्तिचेदपि ॥६८॥

दुर्मति वर्षमें राजाओंकी दुर्मति (खोटी बुद्धि) हो और युद्ध आदि हों तौभी प्रजा सुखी रहे ॥ ६८ ॥

सर्वसस्ययुताधात्रीपालिताधरणीधरैः ।
पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥ ६९ ॥

दुंदुभि वर्षमें पृथ्वी पर सब तरहके अन्न उत्पन्न हों–राजालोग प्रजाकी पालना करें । और पूर्व देशका विनाश हो ॥ ६९ ॥

आह्वेनिहताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः ।
यथाकथंचिज्जीवन्तिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ७० ॥

रुधिरोद्गारी वर्षमें राजालोग तो युद्धादिकोंमें फँस कर मरें । और प्रजा रोगादिसे मरे । किन्तु कुछ बचेभी रहें ॥ ७० ॥

रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा ।
प्रेक्षंतेसर्वदाऽन्योन्यंराजानोरक्तलोचनाः ॥७१॥

रक्ताक्षी वर्षमें अन्नकी वृद्धि हो, वर्षा अनुत्तम हो । और राजा-लोग एक दूसरेको लाल आँखें करके देखें ॥ ७१ ॥

क्रोधनेमध्यवृष्टिःस्यात्पूर्वदेशेचवृष्टयः ।
सम्पूर्णमितरत्सर्वेभूपाःक्रोधपरायणाः ॥ ७२ ॥

क्रोधी वर्षमें वर्षा मध्यम हो पूर्व देशमें वर्षा हो और सब राजा परस्परमें क्रोधित रहें ॥ ७२ ॥

कर्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् ।
क्षीयमाणाश्चापिनराजीवन्तिक्षयवत्सरे ॥ ७३ ॥

क्षय वर्षमें कपास, गंध, तेल, गन्ना, सहद और अन्न इनका नाश हो । और मनुष्यभी दुबले पतले जीवित रहें (यह शिव विंशतिके वर्षोंका फल है) ॥ ७३ ॥

इति षष्टिसंवत्सरफल समाप्त ।

(२) अथ संवत्सरशरीरफलम् ।

कृत्तिकाद्वितीयं देहं वत्सरस्य प्रकीर्तितम् ।
पूर्वाषाढाद्वयं नाभिः सार्पं हृत्कुसुमं मघा ॥७४॥

(२)"संवत्सरका अङ्ग और फल"–कृत्तिका और रोहिणी यह दो नक्षत्र संवत्के देह हैं पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ यह दोनों नाभिके हैं । श्लेषा हृदय और मघा पुष्प हैं ॥ ७४ ॥

निपीडिते पापखगेन देहे वातामवातानलभीर्नृदेहे ।
नाभ्यां भयं क्षुज्जनितं नराणां बालादिपुष्पे हृदये न धान्यम् ॥ ७५ ॥

इति संवत्सरशरीरफलम् ।

यदि देहके नक्षत्रोंपर पापग्रह हों तो नृदेहमें वायुभय हो । नाभिके नक्षत्रों पर पापग्रह हों तो क्षुधा जनित भय हो । हृदयके नक्षत्रोंपर पाप ग्रह हों तो धान्य भय हो । और पुष्पके नक्षत्रोंपर पापग्रह हों तो बालादिकोंको दुःख हो ॥ ७५ ॥

(३) अथ राजादिफलविचारः । (राज्ञः फलम्)

(चैत्रशुक्लप्रतिपदि यो वारो भूपतिर्मतः ।)
सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाःस्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा। स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौ-राग्निबाधा निधनं नृपाणाम् ॥ ७६ ॥

(३)"संवत्के राजा आदिका विचार और फल"–"संवत्सरका राजा"–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको जो वार हो वही वर्षका राजा होता है ।) यदि संवत्का राजा सूर्य हो तो फल कम लगें–वर्षा कम हो-गायोंके दूध भी कम रहें– मनुष्योंमें पीड़ा हो, धान्य कम हो, वृक्षोंमें फल कम लगें- चौर तथा आगकी बाधा हो और राजाओंका नाश हो ॥ ७६ ॥

चन्द्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम् । सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम् ॥ ७७ ॥

वर्षका राजा चन्द्रमा हो तो लोगोंके शुभमंगल हों, वर्षा बहुत हों, खेतियां अच्छी हों, मनुष्योंमें सुख रहे, राजाओंका उदय हो और लोगोंकी सब व्याधियां दूर हों ॥ ७७ ॥

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिवविग्रहं च । दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीडा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः ॥ ७८ ॥

मंगल राजा हो तो वह्निभय, जनक्षय, चोरोंसे आकुलता राजाओंमें और प्रजामें व्याधि वियोग पीडा आदिका दुःख हो और मेघ कम बर्षे ॥ ७८ ॥

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमङ्गलम् । प्रकुर्वते दानदयां जनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्यसङ्कुलम् ॥ ७९ ॥

वर्षका राजा बुध हो तो पृथ्वी सजलहो, घर घरमें विवाहादि मंगल हों, दान दयाकी व्यवस्था बढे और स्वास्थ्य वृद्धि तथा धन धान्यके बाहुल्यसे सुभिक्ष हो ॥ ७९ ॥

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः । यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते ॥ ८० ॥

बृहस्पति राजा हो तो उपयोगी जल बर्षे, गायें अच्छा दूध दें, ब्राह्मण लोग होम यज्ञादिमें निरत रहें और सब लोगोंमें बडे बडे उत्सव होते रहें ॥ ८० ॥

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाःसरितोऽम्बुराशिभिः । फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरापार्थिवसौख्यसंयुता ॥ ८१ ॥

शुक्र राजा हो तो खेतियां बहुत उपजें, नदियां बड़ी वेगसे बहैं, वृक्षोंमें फल बहुत लगें- गायें अधिक ब्यावें और पृथ्वी पार्थिव सौख्यसे संयुक्त हो ॥ ८१ ॥

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैःपरिपीड्यते जनः । युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान् ॥ ८२ ॥ (इति)

वर्षका राजा शनि हो तो एकही वार वर्षा हो, रोगबाहुल्यसे लोग दुखित हों, राजाओंमें युद्ध हों, चोरी डकैती आदि अधिक बढै और लोग भूखे मरते हुए डुलते फिरें ॥ ८२ ॥

(मंत्रीफलम् ।)

(मेषसंक्रांतिवारेशो भवेत्सोपि चमूपतिः)
नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्मचुरधान्यधनादि महीतलेरसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः ॥ ८३ ॥

"मंत्री फल । "—(मेष संक्रान्तिके दिन जो वार हो वही उस वर्षका मंत्री अथवा सेनापति होताहै ।) यदि सूर्य मन्त्री हो तो, राजा, रोग और चौरोंका भय बढे, पृथ्वीपर धन धान्य अधिक हों। और रसोंका संग्रह तथा समर्घता हो ॥ ८३ ॥

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमण्डिता । वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाःसुखराशिसुशोभिताः ॥ ८४ ॥

चन्द्रमा मन्त्री हो तो,वर्षा अधिक हो,अन्न बहुत हो लोग सुखी हें। और अन्य प्रकारके सुखोंकीभी वृद्धि हो ॥ ८४ ॥

अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदाद्विजवेदना। जनपदेषु जयंसुखसंचयंनवहुगोषु पयो द्विजकर्म च ॥ ८५ ॥

यदि मंगल मन्त्री हो तो लोग बीमारियोंसे दुःखी हों—किन्तु गायोंके दूध अधिक होनेसे लोग सुखीभी रहैं ॥ ८५ ॥

शशिसुतेशुभमंत्रिसमागतेस्वपतिनारमते मदनक्रियाम् । बहुधनंबहुवादिसमन्वितंयवमसूरचणान्नमहर्घताम् ॥ ८६ ॥

यदि वर्षमें बुध मन्त्री हो तो, स्त्रियां अपने पतियोंके साथ मदन क्रियामें रत हों। बहुत धन हो और जौ मसूर तथा चने इनकी मँहगाई हो ॥ ८६ ॥

विविधधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचुरतोयघनासुदिता भवेत् । नृपतयो जनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननुमंत्रिसमागते ॥ ८७ ॥

यदि बृहस्पति मन्त्री हो तो पृथ्वी पर कई प्रकारके अन्न अधिक उत्पन्न हों। वर्षा बहुत वर्षे और राजालोग मनुष्योंका पालन करें ॥ ८७ ॥

भृगुसुतेननुमंत्रिपदंगतेशलभमूषकमूषकरोहिषः । भवति धान्यसमर्घतयामलंजनपदेषुजलंसरितोऽधिकम् ॥ ८८ ॥

शुक्र मन्त्री हो तो शलभा (टीड़ी) ओर मूसे आदिका भयरहै। धान्य सस्ता हो, जल अधिक वर्षे तथा कुछ रोग पीड़ा हो ॥ ८८ ॥

रविसुतयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः । नजलदाजलदाजनतापदाजनपदेषु सुखंनधनंक्वचित् ॥ ८९ ॥

शनि मन्त्री हो तो राजाओंमें नम्रता न रहनेसे लोगोंको वे दुःख दाई रहैं । मेघोंसे जल नहीं गिरे और मनुष्योंमें कुछभी सुख धन नहीं हो ॥ ८९ ॥

(सस्येशफलम्)

कर्कसंक्रांतिवारेशःसस्यपःपरिकीर्तितः ।

सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यं समर्घं बहवोपि चौराः।युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूतहानिः ॥ ९० ॥

" सस्येश फल । "—(कर्क संक्रान्तिके दिन जो वार हो वही सस्येश होता है ।) यदि सूर्य सस्येश (अन्नका मालिक) हो तो चौरोंकी अधिकतासे धान्य महँगाहो । राजाओंमें युद्धहो,जल बहुत वर्षे, अन्नभी कम हो और प्राणियोंकी हानि हो ॥ ९० ॥

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोपगोकुलं । देवद्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्यधनौघपूर्णा ॥ ९१ ॥

यदि चन्द्रमा सस्येश हो तो प्रजा सुखी रहे—जल अच्छा वर्षे, गायें दूधदें । राजा लोग देवद्विजोंका आराधन करें और पृथ्वी धन धान्यसे बहुत पूर्ण हो ॥ ९१ ॥

प्रथमधान्यपतौधरणीसुतेगजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि ।
प्रभवदोबहुरोगधनोजलंनसमसौख्यकरंतुपधान्यहृत् ॥

मंगल सस्येश हो तो हाथी, घोडे,गधे,ऊँट और गाय,बैलोंमें रोग

हों, जल नहीं वर्षे और तुष धान्य (जो गेहूं चावल) आदिकी खेती नष्ट हों ॥ ९२ ॥

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्। द्विजगणःश्रुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने ॥ ९३ ॥

बुध सस्येश हो तो बादलोंसे जल अच्छा गिर सुख समृद्धि हो, किसी प्रकारका उपद्रव नहीं हो। और ब्राह्मण लोग वेद पाठ करें ९३

कणपतौसुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः। जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै ॥ ९४ ॥

यदि बृहस्पति सस्येश हो तो वेद विहित मार्गके प्रचारसे सौख्य हों। वर्षा बहुत हो, अन्न तथा रस गोरस दूध आदिभी बहुत हों ॥९४ ॥

शुक्रोयदाधान्यपतिर्धरायांमेघोजलंवर्षतिशोभनं प्रियम्। गोधूमशालीक्षुधनं प्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ॥ ९५ ॥

शुक्र सस्येश हो तो शुभ और प्यारी वर्षा हो। गेहूं, चावल,ईख धन और प्रियंगु यह अच्छे हों और वृक्षोंमें सुखदाई पुष्प लगें॥९५

रविसुतेयदिधान्यपतौजनानृपतिभिः परिपीडितविग्रहाः। गदभयंतुषधान्यहरंसदादुरितवादविवादयुतानराः ॥ ९६ ॥ (इति)

यदी शनि सस्येश हो तो लोग राजभयसे पीडित रहें। तथा रोग भय भी हो। जो गेहूं आदिकी खेतियां खराब हों और मनुष्य खोटे वाद विवादमें लगे रहें ॥ ९६ ॥

धान्येशफलम् ।

(धनुःसङ्क्रान्तिवारेशो धान्येशःपरिकीर्तितः ।
सस्येशःपूर्वधान्येशःपश्चाद्धान्यपतिस्त्वयम् ॥ १ ॥)
पश्चाद्धान्याधिपेसूर्येपश्चाद्धान्यंतदानहि ।
विग्रहंभूभृतांधान्यंमहर्घंज्वरपीडनम् ॥ ९७ ॥

"धान्येश फल"– (धनकी संक्रांति के दिन जो वार हो वही धान्येश होता है । धान्यभी अन्नका नाम है और सस्यभी अन्नहीका नाम है किन्तु गर्मीमें जो जौ गेहूं आदि होते हैं वह सस्यमें समझे गये हैं और जाड़ेमें मोठ मूंग बाजरी आदि होते हैं वह धान्यमें समझे गये हैं । अतएव सस्य और धान्य यह दो विभाग इसी हेतुसे किये गये हैं ।) धान्याधिप सूर्य हो तो पश्चाद्धान्य (पीछे बाला धान्य) नहीं हो, राजाओंमें विग्रह हो, धान्य महँगा हो और ज्वरादिकी पीड़ा हो ॥ ९७ ॥

चन्द्रेधान्याधिपेजातेप्रजावृद्धिःप्रजायते ।
गोधूमाःसर्पपाश्चैवगोपुक्षीरंतदाबहु ॥ ९८ ॥

चन्द्रमा धान्याधिप हो तो प्रजामें उत्पत्ति अधिक हो । गेहूं, सरसों और गोदुग्ध अधिक हों ॥ ९८ ॥

भूमिजेग्रीष्मधान्येशेग्रीष्मधान्यमहर्घकम् ।
शालीक्षुघृततैलादिमहर्घाणिभवन्ति च ॥९९॥

मंगल धान्याधिप हो तो ग्रीष्म धान्य महँगाहो और चावल, ईख, घी और तेलादि महँगे हों ॥ ९९ ॥

बुधधान्याधिपेमेघाजलंमुञ्चंतिवैभृशम् ।
सैन्धवेलाटदेशेचमाधवोल्पंचवर्षति ॥ १०० ॥

यदि बुध धान्याधिप हो तो जल बहुत बर्षे और सिन्धु तथा लाट देशमें वर्षा कम हो ॥ १०० ॥

गुरौधान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः ।
पच्यन्तेसर्वदेशेषुयज्वानोब्राह्मणादयः ॥ १०१ ॥

यदि बृहस्पति धान्याधिप हो तो गेहूं तथा चावल अधिक हों और ब्राह्मण लोग यजन याजन करनेमें तत्पर रहें ॥ १०१ ॥

भृगौपश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते ।
सस्यंसमर्घतांयातिस्वल्पंक्षीरंगवामपि ॥ १०२ ॥

धान्याधिप शुक्र हो तो पश्चाद्धान्य (जाड़ेकी खेतियां) नहीं पकें । अन्न सस्ता हो और गायोंमें दूध कम हो ॥ १०२ ॥

निर्धनाःक्षितिभुजोरणादराःसस्यमल्पमतिरोगिणोनराः । नैववर्षतिजलंसुरेश्वरःस्याद्यदात्यकणपःशनैश्चरः ॥ १०३ ॥

यदि शनैश्चर धान्याधिप हो तो रणादरी राजा लोग, निर्धन हों, अन्न कम हो । मनुष्य रोगी हों और इन्द्र जल नहीं वर्षावें ॥ १०३ ॥

(मेघेशफलम्)

(आर्द्राप्रवेशेयोवारोमेघेशःपरिकीर्तितः ।)

जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम् ।
यवचणेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुवि वर्तते ॥ १०४ ॥

" मेघेश फल । " (आर्द्रा प्रवेशके दिन जो वार हो वही मेघेश होता है) यदि मेघेश सूर्य हो तो जौ-चने-ईख-नीवार (ओहिरी) और चावल आदि अच्छे उत्पन्न हों और पृथ्वी पर सुख संचय वर्तमान रहे ॥ १०४ ॥

शशिनितोयदपेयदिगोमहिष्यजखरादिषुदुग्धरसंतदा । फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोगवतीनतुभामिनी ॥ १०५ ॥

यदि चन्द्रमा मेघेश हो तो गो, भैंस, छेरी, गधी आदिके दूध अधिक हों । पृथ्वी पर खेतियों में अन्नभी अधिक हों और वृक्षोंमें फलभी अधिक लगें और सब सुखभोग मिलें ॥ १०५ ॥

अवनिजेजलदस्यपतौभुविश्रुतिविचारविहीनधरामराः । क्वचिदपिप्रचुरंजलमल्पकंक्वचिदपिप्रशमंबहुतापदम् ॥ १०६ ॥

मंगल मेघेश हो तो ब्राह्मण लोग वेद विचारसे हीन हों । कहीं वर्षा कम और कहीं अधिक हो ॥ १०६ ॥

अमृतरश्मिसुतेयदिवारिपेबहुजलंतुयधान्यरसादिकम् । द्विजवरायजनोत्सुकचेतसोविविधसौख्ययुताधरणीतदा ॥ १०७ ॥

बुध मेघेश हो तो जल बहुत वर्षे, औ गेहूँकी खेती अच्छी हो, ब्राह्मण लोग यजन (प्रयोगादि) करनेमें उत्सुक हों और पृथ्वी विविध सौख्यसम्पन्न हो ॥ १०७ ॥

गुरुरपिप्रियवृष्टिकरः सदाखिलविलासवतीधरणीतदा । श्रुतिविचारपरानरपालकारससमृद्धियुताखिलमानवाः ॥ १०८ ॥

बृहस्पति मेघेश हो तो उत्तम वर्षा हो, पृथ्वी पर सब भांतिके सुख विलास हों । राजा लोग वेदमार्ग (श्रुति स्मृतियोंके धर्माचरण) का विचार रखें । और सब लोग रस समृद्धिमें युक्त हों ॥ १०८ ॥

भृगुसुतोजलदस्यपतिर्यदाजलमुचोजलदादिविशोभनाः । धननिधानयुताद्विजपालकान्नृपतयोजनतासुखदायकाः ॥ १०९ ॥

शुक्र मेघेश हो तो बादलोंसे अच्छा जल वर्षे । ब्राह्मणपालक राजा लोग धनके निधान हों। और मनुष्योंको सुख दें ॥ १०९॥

रविसुते जलदस्यपतौभवेद्विरलवृष्टिवतीवसुधा तदा। मनसितापकरोनृपतिःसदाविविधरोगरता जनतामता ॥ ११० ॥ (इति)

यदि शनि मेघेश हो तो पृथ्वीपर विरली (शायद) वर्षा हो। राजा लोग मनमें सन्ताप करें और लोग कईप्रकारके रोगोंसे पीडित रहें ॥ ११० ॥

(रसेशफलम्)

तुलासंक्रान्तिदिवसेयोवारःस रसाधिपः । रसपतौतरणौधरणौतदाविरसभागरताल्पपयोधरा। वसनतैलघृतप्रियमानवाःसुखेरसंनभुनक्ति महीपतिः ॥१११॥

"रसेश फल ।"-(तुल संक्रांतिके दिन जो वार हो वह रसेश होता है) यदि सूर्य रसेश हो तो रस दूध आदि कम हों, वस्त्र-तेल-घी इनकी अत्यन्त न्यूनता हो और राजाओंको सुख नहीं मिले॥१११॥

यदिविधौरसपेभुविमानवोनवनवांशुवती बुभुजे प्रियाम्। जलधराबहुवारिविधायकारसवतींधनधान्यवतीमही ॥ ११२ ॥

चन्द्रमा रसेश हो तो मनुष्य नवीन २ प्राणप्रिय प्रियाओंका भोग करें। बादलोंसे बहुत पानी वर्षे और पृथ्वी रसवती तथा धन-धान्यवती हो ॥ ११२ ॥

यदिधरातनयोरसपोभवेन्नरसराशियुता जनता शुभा। नरपतिर्विषमोजनतापदोनजलदोबहुवृष्टिकरोभुवि ॥ ११३ ॥

यदि मंगल रसेश हो तो मनुष्योंको रसराशि नहीं मिले, राजाओंका वर्ताव प्रजाके अनुकूल नहीं हो, बादलोंसे वर्षाभी कमगिरे ११३

रसपतौद्विजराजसुतेमहीसुलभधान्यघृतादियुता जनाः । प्रमुदिता वरनायकपालितावहुजलाखिलदेशसुरक्षिता ॥११४॥

बुध रसेश हो तो धान्य घी सुलभ हों और मनुष्य उनसे युक्त रहैं । नायक (श्रेष्ठ पुरुष) प्रसन्न रहैं और जल बहुत हो तथा देश सुरक्षित रहैं ॥ ११४ ॥

यदिगुरूरसपोजनसौख्यदःकमलवन्तिसरांसि तृणानिच । जनपदाद्विजपूजनतत्परागजसुवाजिरथोष्ट्रयुतानृपाः ॥ ११५ ॥

यदि बृहस्पति रसेश हो तो शरीरसुख मिले, तृणादिकी उत्पत्ति अच्छी हो । जनपद ब्राह्मणोंकी सेवा करें और राजा लोग हाथी घोडे ऊँट रथादिसे युक्त रहैं ॥ ११५ ॥

यजनयाजनकोत्सवकोत्सुकाजनपदाजलतोपितमानसाः । सुखसुभिक्षसुमोदवतीधराधरणिपाहतपापगणश्रियाः ॥ ११६ ॥

शुक्र रसेश हो तो लोग यजन याजन तथा उत्सवादि करनेमें उत्सुक रहैं । और उनके मन सन्तुष्ट रहैं । पृथ्वी सुख-सुभिक्ष तथा आनन्दवती हो और राजा लोग निष्पापी हों ॥ ११६ ॥

रविसुते रसपेरससंक्षयोनजलदागददाश्चपयोधराः । अजगवांगजवाजिखरोष्ट्रहाजनपदेषुनरान रसैर्युताः ॥ ११७ ॥ (इति)

शनैश्चर रसेश हो तो रसोंका नाश हो बादलोंसे पानीके बदले रोग बर्षे । छेरी-गाय-हाथी-घोड़े, गधे और ऊंट इनका नाश हो और मनुष्योंमें निरसता रहे ॥ ११७ ॥

(नीरसेशफलम्)

(नक्रसंक्रांतिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः।)
नीरसाधिपतौसूर्येताम्रचन्दनयोरपि।
रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्घवृद्धिःप्रजायते ॥ ११८ ॥

"नीरसेश फल।"-(मकर- संक्रांतिके दिन जो वार हो वह नीरसेश होताहै यदि सूर्य नीरसेश हो तो तांबा,चन्दन,रत्न,माणिक्य और मोती आदिकी अर्घ वृद्धि हो ॥ ११८ ॥

शुक्लवर्णादिवस्तूनांमुक्तारजतवाससाम्।
अर्घवृद्धिःप्रजायेतशशांकेनीरसाधिपे ॥ ११९ ॥

चन्द्रमा नीरसेश हो तो सफेद रंगकी वस्तुएँ-तथा मोती चांदी और वस्त्र इनकी अर्घ वृद्धि हो अर्थात् यह सस्ते हों ॥ ११९ ॥

नीरसेशोयदाभौमःप्रवालरक्तवाससाम्।
रक्तचंदनताम्राणामर्घवृद्धिर्दिनेदिने ॥ १२० ॥

मंगल नीरसेश हो तो मूँगालाल, वस्त्रलाल, चन्दन, तांबा और ऐसीही अन्य वस्तुओंकी दिन दिन अर्घ वृद्धि हो ॥ १२० ॥

चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम्।
अर्घवृद्धिःप्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि ॥ १२१ ॥

बुध नीरसेश हो तो छींटके कपडे और शंख चंदन आदि सस्ते हों ॥ १२१ ॥

हरिद्रापीतवस्तूनिपीतवस्त्रादिकंचयत्।
नीरसेशोयदाजीवःसर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ॥ १२२ ॥

बृहस्पति नीरसेश हो तो हल्दी, पीले वस्त्र, पीले रंगकी वस्तु यह सब सस्ते हों और मनुष्योंमें प्रीति बढे ॥ १२२ ॥

कर्पूरागरगन्धानांहेममौक्तिकवाससाम् ।
अर्घवृद्धिःप्रजायेतनीरसेशोभृगुर्यदि ॥ १२३ ॥

शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर, गंध,सुवर्ण, मोती और कपडे यह सस्ते हों ॥ १२३ ॥

अयःपिंडादिलोहानांकृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम् ।
अर्घवृद्धिःप्रजायेतमन्देनीरसनायके ॥ १२४ ॥

शनि नीरसेश हो तो पिण्डाकारलोह आदि तथा काले वस्त्रादिकी अर्घ वृद्धि हो ॥ १२४ ॥

(फलेशफलम्)

(मीनसंक्रांतिवारेशः फलेशःपरिकीर्तितः ।)
द्रुमवतीवरपुष्पवतीधराप्रमुदिताफलभोगविशेषता । बहुजलंजलदोभुविमुंचतिकचिदपिप्रमितं फलपो रविः ॥ १२५ ॥

"फलेश फल"–(मीन संक्रांतिके दिन जो वार हो वह फलेश होताहै ।) सूर्य फलेश हो तो अनेक प्रकारके फल पुष्प और वृक्षोंसे पृथ्वी आनन्दित हो और वर्षा अच्छी हो ॥ १२५ ॥

यदिविधुःफलपोद्रुमराशयःफलयुतावलिभिःकुसुमैर्युताः । द्विजमुखावरभोगसमन्वितानृपतयोनयनाटनतत्पराः ॥ १२६ ॥

चंद्रमा फलेश हो तो वृक्षोंमें फल तथा बेलोंमें फूल बहुत लगें । ब्राह्मणोंको अच्छे भोजन मिलें और राजा लोग न्यायी तथा भ्रमणशील हों ॥ १२६ ॥

फलपतिर्यदिभूतनयोभवेन्नबहुपुष्पफलान्वितपादपाः । गदभयान्वितदेशजनास्तदानृपतयोबहुविग्रहकारकाः ॥ १२७ ॥

मंगल फलेश हो तो वृक्षोंमें फल फूल कम लगें । मनुष्योंमें रो१ भय हो और राजाओंमें विग्रह हो ॥ १२७ ॥

यदिबुधेफलपेफलमुत्तमंजलधराजलराशिमुचस्तदा। बहुतृणंकुसुमैःकमलैर्युतंजनपदोजनसौख्यमुदान्वितः ॥ १२८ ॥

बुध फलेश हो तो उत्तम फल हों, बादल जल बहुत छोडें, घास फूस कमल और पुष्प यह बहुत हों और मनुष्य सुख तथा आनन्दसे युक्त रहें ॥ १२८ ॥

सुरगुरुःफलनायकतांगतोगतभयावनराशिमहाद्रुमाः । यजनयाजनकोत्सवमन्दिराःश्रुतिविचारपराद्विजपूर्वकाः ॥ १२९ ॥

बृहस्पति फलेश हो तो वनमें वृक्ष बहुत हों, भय नहीं हों, घर घरमें पूजा पाठ हों और ब्राह्मण तथा पण्डित लोग, वेद विचारमें तत्पर रहें ॥ १२९ ॥

यदि फलस्यपतौभृगुजेधरामृदुकुमारमहीरुहराशयः । बहुफलानरनाथसुभोगदाद्विजवराःश्रुतिपाठपरायणाः ॥ १३० ॥

शुक्र फलेश हो तो पृथ्वी पर कोमल घास फूस फल आदि हों और राजाओंको उत्तम भोग मिले और पण्डित लोग वेद पाठ परायण हों ॥ १३० ॥

यदिशनिःफलपःफलहा भवेज्जनितपुष्पगणस्यद्रुमःसदा । हिमभयंवरतस्करजन्तुभीर्जनपदोगदराशिमहाकुलः ॥ १३१ ॥ (इति)

शनि फलेश हो तो फल हानि हो, वृक्षोंमें पुष्प निष्फल हों । हिम (वर्फ) का भय हो और चौरादिका भय हो तथा मनुष्योंमें चीमारी वढे ॥ १३१ ॥

(धनेशफलम् ।)

(कन्यासंक्रांतिदिनपोधनेशःपरिकीर्तितः ।) द्रविणपे यदिवासरपेतदावणिजतोबहुद्रव्यसमागमः। गजतुरंगममेषखरोष्ट्रतोधनचयंलभतेक्रयविक्रयात् ॥ १३२ ॥

"धनेश फल"-(कन्या संक्रांतिके दिन जो वार हो वह धनेश होता है ।) सूर्य धनेश हो तो हाथी, घोडे, गधे और ऊँट इनके व्यापारसे बहुत धनलाभ हो ॥ १३२ ॥

धनपतिर्मृगलाञ्छनकोयदारसचयक्रयविक्रयतो धनम् । वसनशालिसुगंधरसंबहुद्रविणतैलयुतंनृपसौख्यदम् ॥ १३३ ॥

चन्द्रमा धनेश हो तो क्रय विक्रयमें धन संग्रह हो । और वस्त्र-शाली-सुगन्ध-तेल और घी इनमें लाभ हो, तथा राजाओंको सुख मिले ॥ १३३ ॥

असमसौख्यकरोधरणीसुतः शरदितापकरस्तुपधान्यहृत् । सहसिमासिभवेद्द्विगुणंतदानरपतिर्जनशोकविधायकः ॥ १३४ ॥

मङ्गल धनेश हो तो तेजी मन्दीकी अदला बदली बहुत हो, जौ गेहूँकी खेतीका नाश हो, मार्ग मासमें विक्रय करनेसे संग्रहीत वस्तुमें दुगुना लाभ रहे और राजा शोकदाई हो ॥ १३४ ॥

द्रविणपो हिमरश्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तुफलार्थदा। द्विजवराजययज्ञसुसंयुताःकृषिविशेषविशेषितमानसाः ॥ १२५ ॥

बुध धनेश हो तो कई प्रकारकी. वस्तुओंका संग्रह लाभदायक हो । पंडित लोग जप यज्ञादि करें । और कृषक लोग खेती विशेष करें ॥ १२५ ॥

सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराःसुखभाजनाः । फलितपुष्पितभूमिरुहाःसदाविविधद्रव्ययुताश्चमानवाः ॥ १२६ ॥

बृहस्पति धनेश हो तो लोग निष्पापी हों, वाणिज वृत्ति करनेवाले सुखी रहैं । वृक्षोंमें फल पुष्प लगें और मनुष्य कई भांतिके धन द्रव्यसे युक्त हों ॥ १२६ ॥

द्रविणपोभृगुजोद्रविणैर्युताःसमधनासकलानुमानवाः ।समसुखाःक्रयविक्रयजीविनोनृपतयो जनपालनतत्पराः ॥ १२७ ॥

शुक्र धनेश हो तो सब मनुष्य समान धनवान् हों । सुखभी समान मिलें । और क्रय विक्रयमें लाभ हो तथा राजा लोग पालन करें ॥ १२७ ॥

द्रविणपेरविजेविरलंधनंगदरताधरणीपतयःसदा । अधनतांवणिजःकृषिजीविनोद्विजवराःपरपीडनमानसाः ॥ १२८ ॥ (इति)

शनि धनेश हो तो लोगोंके पास धन नहीं रहे, राजा लोग रोगी रहैं । वाणिज्य करनेवाले तथा खेती करनेवाले निर्धन हों और पंडित लोग पराई पीडासे दुःखी रहैं ॥ १२८ ॥

(दुर्गेशफलम्)

(सिंहसंक्रान्तिवारेशोदुर्गेशः कथितोबुधैः)

नयविशेषकरस्तरणिस्तदागतभयानरराजपुरोगमाः। समधिकोनतदानृपजोन्यजःस्वपथजंब्रजतांनभयंक्वचित् ॥ १३९ ॥

" दुर्गेश फल । "-(सिंह संक्रांतिके दिन जो वार हो वह गढ़पति होताहै ।) सूर्य दुर्गेश हो तो राजा न्याय करैं, राजद्वारमें जानेवाले निर्भय हों, राजवर्गी तथा अन्य सब समान रहें । और अपने नियत मार्गमें चलनेवालोंको कुछभी भय नहीं हो ॥ १३९ ॥

गढपतिःशशलाञ्छनकोयदा नृपसुराज्यविलासितपौरजाः। बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नरवरा वरवर्णितविग्रहाः ॥ १४० ॥

चन्द्रमा दुर्गेशहो तो राजा सुराज्य करैं,प्रजाआनंद करैं। ईख तथा गोरस भोगियोंको धनलाभ हो और श्रेष्ठ लोगोंमें विग्रह हो ॥१४०॥

अवनिजोगढनायकतांगतोविविधदुःखवियोगसमन्वितः । जनपदेषुजनाःक्रयविक्रयेभयविशेषतयानफलंक्वचित् ॥ १४१ ॥

मंगल दुर्गेश हो तो लोगोंको कई प्रकारसे दुःख मिले । लेन देनमें लोगोंको बहुत भय हो और फलमी कम लगें ॥ १४१ ॥

विषमसाम्यसुखंशशिजेप्रभौभवतिराष्ट्रजनेषु विशेषताम् । शशिसुतेयदिकोटकपालकेपथिपुद्रव्यवतांनभयंक्वचित् ॥ १४२ ॥

बुध दुर्गेश हो तो शहरी लोगोंको सम विषम सुख मिले और धनवानोंको रस्तेमें भी कुछ भय नहीं हो ॥ १४२ ॥

सुरगुरौगढपेनयशोमितानरवरानरपाःकरपालिताः । गिरिषुवेनगरेषुसमंसुखंसुखमतिद्विजशस्त्रवतोऽनिशम् ॥ १४३ ॥

बृहस्पति दुर्गेश हो तो राजा लोग न्याय पूर्वक लोगोंकी पालना करैं । और शहर तथा जंगलमें समान सुख मिले तथा द्विज सशस्त्र हों ॥ १४३ ॥

नगरदेशविशेषपतिर्यदाभृगुसुतोबहुसौख्यकरोमतः । विनयवाणिजगेहसमःसुखोनगवनेनिकटेपिचदूरतः ॥ १४४ ॥

शुक्र दुर्गेश हो तो नगराधिपोंको तथा देशाधिपोंको सुख हो वाणिज्यमें तथा घरमें सम सुख मिले पर्वत और वन दूरहीसे समीप दीखें ॥ १४४ ॥

रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिताजनाः । विविधवैरिविशेषितनागराःकृषिधनं शलभैर्मुषितंभुवि ॥ १४५ ॥

शनि दुर्गेश हो तो दुनियामें इतने विग्रह उत्पन्न हों कि जिनसे लोग चल विचलहो जाँय । नागरिक लोगोंमें नाना भाँतिके वैर बढ़ें । और खेतीके धनमें टीड़ी तथा चूहोंसे बहुत हानि हो ॥१४५॥इति॥

(४) अथ मेघानयनं तत्फलं च ।

(शाकेश्युणितेनन्दैर्भाजिते शेषतो घनः ।
आवर्तएकशेषेस्यात्संवर्ताख्योद्विशेषके ॥ १ ॥
त्रिशेषे पुष्करो द्रोणश्चतुःशेषप्रकीर्तितः ।
कालनामापंचशेषेषट्शेषेनीलकःस्मृतः ॥ २ ॥

वरुणःसप्तशेषेस्याद्वायुरष्टावशेषके ।
नवशेषेतमोनामकमान्मेघानवस्मृताः ॥ ३ ॥)

(४) "नौ मेघोंका लाना"—(वर्तमान शाकेको आठसे गुण कर नौका भाग देनेसे जो शेष बचे वह मेघ होताहै । यथा एक शेष रहे तो' आवर्त' दो शेष बचें तो' संवर्त' तीन शेष हों तो 'पुष्कर' चार शेष हों तो' द्रोण' पांच हों तो' काल' छः रहें तो 'नीलक' सात रहें तो 'वरुण, आठ हों तो' वायु' और नौ शेष रहें तो' तम' नाम मेघ होताहै ॥)

विनाशनंशालियवादिकानांतथैवकार्पासघृतादिकानाम् । घनोयदावर्तकनामधेयःस्वल्पंजलं स्याद्वनिनामपायः ॥ १४६ ॥

जिस संवत्में' आवर्त' नाम मेघ हो उसमें जौ, चावल, गे चने, कपास, घी और तैल आदिका नाश होताहै और जलभी कम वर्षताहै ॥ १४६ ॥

कामाधिक्यंस्वल्पताधर्मकार्येपृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये॥ संवर्ताख्योनीरदःस्याद्धियत्रप्राचो वायुर्वातिसर्वत्रतत्र ॥ १४७ ॥

संवर्त नाम मेघ हो तो काम अधिक हो, धर्म कार्यमें कमी हो, राजा लोग अन्य कामोंमें तत्पर नहीं हों । वर्षा हो और सर्वत्र पूर्वी वायु चले ॥ १४७ ॥

नैव कंदफलमूलविवृद्धिर्जायते विविधपातकवृद्धिः । रोगतोजनकृशत्वमनल्पंपुष्करेजलधरे जलमल्पम् ॥ १४८ ॥

जिस वर्षमें पुष्कर नाम मेघ हो तो कंद मूल फल इनकी वृद्धि

नहीं हो, कई भांतिके पापोंकी वृद्धि हो । रोगपीडासे लोग दुर्बल हों और वर्षा कम हो ॥ १४८ ॥

महीशाःस्वसंपतिवृद्धयासमेताः समस्तामहीभूरिधान्येनयुक्ता । यदाजायतेद्रोणनामापयोद-स्तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः ॥ १४९ ॥

द्रोण मेघ होवे तो राजा लोगोंके खजाने भरपूर रहें । संपूर्ण पृथ्वीपर भी धन धान्य अधिक हों । और* इन्द्रदेव जलभी उत्तम बर्षावें ॥ १४९ ॥

रोगतोविकलतावपुष्मतांस्यान्मिथःकलहताक्ष-माभृताम् । कालनामजलदोदयोयदानैववर्षति जलंवृषातदा ॥ १५० ॥

काल नाम मेघ हो तो अच्छे आदमी रोग पीडासे व्याकुल हों, राजाओंमें परस्पर कलह हो । और वर्षाभी कम हो ॥ १५० ॥

सत्पयोदिशतिगोकुलपूर्णावस्त्रताखिलमहीपरि-पूर्णा । नीलनाम्रिजलदेजलवृष्टिर्जायतेसकल-मानवतुष्टिः ॥ १५१ ॥

नील नाम मेघ हो तो गायें अच्छा दूध दे । रूई कपास आदि अधिक हों । वर्षा अच्छी हो और लोग सब संतुष्ट रहें ॥ १५१ ॥

अग्निहोत्रकरणादराद्विजाः स्युःसदाधिकमुदोखि-लाः प्रजाः । अर्णवेणसहितंमहीतलंवारुणेजलधरे भवेद्लम् ॥ १५२ ॥

वरुण मेघ हो तो अग्निहोत्री ब्राह्मणोंका आदर हो, प्रजामें सदैव आनंद रहै । और वर्षाभी अच्छी अनुकूल हो ॥ १५२ ॥

नैवांबुवृष्टिंकुरुतेसुरेशःसमस्तधान्यार्घकण्यना-

शः । धराधरःस्याद्यदिवायुनामाजनव्रजस्तर्हि विहीनधामा ॥ १९३ ॥

वायु मेघ हो तो इन्द्र जलकी वर्षा नहीं करे, सब धान्योंका नाश हो । और सब वस्तुओंके संकोचसे लोग विहीनधाम (घरहीन) होजाँय ॥ १९३ ॥

रोगाधिक्यंजायतेनीरशेषश्चौराधिक्यंनैवधान्यस्यपोषः । यस्मिन्वर्षेस्यात्तमोनाममेघस्तस्मिन्दुःखंप्राप्नुयाल्लोकसंघः ॥ १९४ ॥

और तम नाम मेघ हो तो रोग अधिक हो, जलकी न्यूनता रहै, चोर अधिक हों, धान्यका पोषण नहीं हो, और लोग अनेक प्रकारसे दुःखित रहें ॥ १९४ ॥

(५) अथ द्वादशनागानयनं तत्फलं च ।

(शाकेद्वाभ्यांयुतःसूर्यैर्भक्तःशेषांकतःफणी । सुबुभ्राख्योनन्दसारीकर्कोटाख्यःपृथुश्रवः ॥ १ ॥
वासुकिस्तक्षकाख्यःस्यात्कंबलोश्वतरस्तथा ।
हेममालीनरेन्द्राख्योवज्रदंष्ट्रोवृषाभिधः ॥ २ ॥)

(५) 'द्वादश नागोंका फल''—(शाकेमें दो जोडकर बारहका भाग देनेसे जो शेष बचे सो नाग होताहै । १ बचे तो 'सुबुभ्र' २ बचें तो 'नन्दसारी' ३ बचें तो 'कर्कोटक' ४ बचें तो 'पृथुश्रव' ५ बचें तो 'वासुकी' ६ बचें तो 'तक्षक' ७ बचें तो 'कंबल' ८ बचें तो 'अश्वतर' ९ बचें तो 'हेममाली' १० बचें तो 'नरेन्द्र' ११ बचे तो 'वज्रदंष्ट्र' और १२ बचें तो 'वृष' नाम नाग होताहै ।)

सुबुभ्रनामसहितोभुजंगोजायतेतदा । नृणांसुबुद्धिकर्तास्यान्मध्यवृष्टिप्रदायकः ॥ १९५ ॥

जिस वर्षमें सुबुध्न नाम नाग हो उस वर्षमें मनुष्योंकी बुद्धि अच्छी हो और वर्षा मध्यम हो ॥ १५५ ॥

यस्मिन्वर्षेनागराजोनंदसार्यभिधानकः । तस्मिन्वर्षेमहावृष्टिंकुरुतेनन्दतेजनः ॥ १५६ ॥

नंदसारी नाग राजा हो तो वर्षा बहुत भारी हो और मनुष्य आनन्दित हों ॥ १५६ ॥

यदाकर्कोटनामाचजायतेपन्ननाशनः ।
तदानांबुददातीन्द्रोमरणंस्यान्महीपतेः ॥ १५७ ॥

कर्कोटक नाग हो तो वर्षा नहीं हो राजाओंकी मृत्यु हो ॥१५७॥

पृथुश्रवाभुजंगेन्द्रोजायतेयत्रवत्सरे ।
तत्रकीलालमल्पंस्यात्सस्यहानिरसंशयम् ॥१५८॥

पृथुश्रव नाग हो तो वर्षा कम हो और अन्नकी हानि हो ॥ १५८ ॥

उदेतियत्रवत्सरेसवासुकिर्भुजंगमः ।
प्रभूतधान्यदायकःसुवृष्टिकारकस्तथा ॥ १५९ ॥

जिस वर्षमें वासुकी नाम नाग हो तो उस वर्षमें अच्छी खेती होने योग्य उत्तम वर्षा हो ॥ १५९ ॥

तक्षकाभिधनागेन्द्रोजायतेयत्रवर्षके ।
तत्रमध्यमवृष्टिःस्याद्विग्रहानृपतेर्मतिः ॥ १६० ॥

तक्षक नाग हो तो वर्षा मध्यम हो और राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६० ॥

यदैवकंबलाभिधोभुजंगमःप्रजायते ।
तदास्तिमध्यमंजलंसमस्तधान्यमुत्तमम् ॥१६१॥

जिस वर्षमें कंवल नाग हो उस वर्षमें भी जल कम वर्षे और अन्न कम हो ॥ १६१ ॥

यस्मिन्नब्देभुजंगेन्द्रोजायतेश्वतराभिधः ।
नवर्षतिजलंवन्नीवदासस्यंविनश्यति ॥ १६२ ॥

अश्वतर नाग हो तो जल नहीं वर्षे और अन्नकी खेतियां सूख जाँय ॥ १३२ ॥

हेममालिनिनागेन्द्रेजायतेत्वखिलामही ।
समस्तधान्यसंपूर्णाप्रभूतजलवृष्टितः ॥ १६३ ॥

हेममाली नाग हो तो बहुत वर्षासे संपूर्ण पृथ्वीपर समस्त धान्य पैदा हो ॥ १६४ ॥

यत्रसंवत्सरेनागोनरेन्द्रोनामतःशुभः ।
तदास्यान्निखिलापृथ्वीप्रभूतजलपूरिता ॥१६४॥

नरेन्द्र नाग हो तो पृथ्वी वर्षाके जलसे पूर्ण हो ॥ १६४ ॥

यत्रसंवत्सरेनागोवज्रदंष्ट्राभिधानकः ।
तदाभुवनैर्पणवसर्वसस्यविनाशनम् ॥ १६५ ॥

वज्रदंष्ट्र नाग हो तो उस वर्षमें जल नहीं वर्षे और खेती सूख जाँय ॥ १६९ ॥

यदावृपाभिधानस्यभुजंगाख्योयदाभवेत् ।
तदासस्यादिकाल्पत्वंसुतरामीतितोभयम् ॥१६६॥

जिस वर्षमें वृष नाम नाग राजा हो उस वर्षमें अन्न कम हो और ईतिभय हो ॥ ६६६ ॥

(६) अथ मेघानां विशेषवर्णनम् ।

ईश्वरउवाच–शृणु देवियथातथ्यं वर्णरूपं तुयादृशम्।
मंदरोपरिमेघास्तेराजानोदशकीर्तिताः ॥ १६७ ॥

(६) " प्रसंगवश यहां अन्य मेघोंका वर्णन भी लिखते हैं । "
शिव पार्वतीको कहते हैं कि हे देवि ! मैं तुमको मेघोंका यथार्थ

वर्ण रूप कहताहूं सो सुनो। मेघोंके दश राजा तो मंदर पर्वत रहते हैं ॥ १६७ ॥

कैलासेदशविक्षेपाः प्राकारे कोटजे दश ॥
उत्तरे दश राजानः शृंगवेरे तथा दश ॥ १६८ ॥

दश कैलासमें-दश कोटज प्राकारमें-दश राजा उत्तरमें और दश शृंगवेरमें रहते हैं ॥ १६८ ॥

पर्यंते दश राजानो दशैव हिमवन्नगे।
गंधमादनशैले च राजानो दशवारिदाः ॥ १६९॥

दश राजा पर्यन्तमें-दश हिमालय पर्वतमें और मेघोंके दश राजा गंधमादन पर्वतपर रहते हैं ॥ १६९ ॥

अशीतिमेघा विख्याताः कथितास्तव पार्वति।
दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः १७०॥

हे पार्वति! इस भांति यह सब अस्सी मेघ हैं सो तुमको कहे हैं। दिशा और विदिशाओंमें भी दश दश मेघ रहते हैं ॥ १७० ॥

उन्नमय्य प्लावयंति मर्त्यलोके जलैर्महीम्।
कमलेष्टदले वृत्ते प्रतिष्ठाप्य पयोधरान्॥ १७१ ॥

वे जब उदय होते हैं तब मृत्युलोककी पृथ्वीको जलसे भर देते हैं। (अतः अब उनके उदय होकर यथेच्छ जल वर्षानेका उपाय कहते हैं।) अनुष्ठान भूमिमें विधिसहित अष्टदल कमल बनाकर उसके बीचमें मेघोंकी स्थापना करे ॥ १७१ ॥

धूपदीपैश्च कुसुमैर्नैवेद्यैः परिपूजयेत्।
सिंहको विजयश्चैवलंबकोथजयद्रथः ॥ १७२ ॥
धूम्रश्च शिखरो भद्रो मातंगो वरुणस्तथा ।
त्रिलोचनपतिश्चैव मेघाःप्राच्या अमी दश॥१७३॥

और उनका वेदोक्त मंत्रोंसे आवाहन करके पुष्प-धूप-दीप-और नैवेद्य आदिसे पूजन करे॥उनमें सिंदक-विजय-लंवक-जयद्रथ-धूम्र-शिखर-भद्र-मातंग-वरुण-और त्रिलोचन यह दश मेघ पूर्व दिशाके हैं अतः इनका पूर्वमें स्थापन पूजन करे ॥१७२॥ १७३॥

आनंदःकालदंष्ट्रश्च शूकरो वृषभस्तथा ।
मृगोनीलो भवः कुंभो निकुंभोमहिषस्तथा॥१७४॥

आनंद, कालदंष्ट्र, शूकर, वृषभ, मृग, नील, भव, कुंभ, निकुंभ और महिष यह दश मेघ दक्षिण दिशामें रहते हैं अतः इनका दक्षिणमें पूजन करे ॥ १७४ ॥

दशमेघादक्षिणस्यांप्रायोमीवृष्टिकारिणः ।
कुञ्जरःकालमेघश्चपुनर्वैकालकांतकः ॥ १७५ ॥
दुंदुभिर्मेखलःसिंधुर्मकरश्छत्रगस्तथा ॥
पश्चिमायाममीमेघादशवर्षाविधायिनः ॥ १७६ ॥

कुंजर,काल, मेघ, कालक, अन्तक, दुंदुभि, मेखल, सिंधु, मकर और छत्र यह दश मेघ पश्चिम दिशामें रहते हैं । अतः इनका पश्चिममें पूजन करे ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

मेघनादोथनृपतिस्त्रिलोचनसुधाकरौ ॥
दंडिनश्चसितालश्चत्रैकालिकजलस्तथा ॥ १७७॥
वृषभोपिचगन्धर्वोविधुमासिकएवच ।
गकरोदशमेघाःस्युरुत्तरस्यांप्रवर्षिणः ॥ १७८ ॥

और मेघनाद, त्रिलोचन, सुधाकर,दंडी, सिताल, त्रैकालिक, जल वृषभ, गंधर्व, विधुमासिक और गकर यह दश मेघ उत्तर दिशामें जल वर्षाते हैं । अतः इनका उत्तर दिशामें पूजन करे ॥१७७॥१७८॥

ओंकारोनाम्निमूर्तिश्चमयूरःकंदिकस्तथा ।
विदुकांतिश्चकरणोहेमकांतिश्चपर्वतः ॥ १७९ ॥

गौरिकाह्वयकोमेघाःस्वर्गलोकेव्यवस्थिताः ।
दिव्यमेघाश्चसप्तैतेसर्वांगसुखदायिनः ॥ १८० ॥

ओंकार, मयूर, कन्दिक, विद्युकांति, करण, हेमकांति और गैरिक यह दिव्य सात मेघ स्वर्गलोकमें स्थित रहते हैं । अतः इनका मण्डलके मध्यमें पूजन करे ॥ १७९ ॥ १८० ॥

दशमेघाःश्वेतवर्णादशैवलोहितास्तथा ।
दशपीताःस्वर्णवर्णादशधूम्राःप्रकीर्तिताः ॥ १८१ ॥

दश मेघ श्वेत, दश लाल, दश पीले और दश धूम्र वर्णके हैं ॥ १८१ ॥

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामियेनमंत्रेणआहिताः ।
आगच्छन्तिधरादेवाःकुर्वन्त्येकार्णवांमहीम् ॥ १८२

अब मेघोंके आवाहनके मन्त्र कहते हैं जिससे मेघ आकर पृथ्वीको जलसे समान कर देवें ॥ १८२ ॥

ॐ ह्रींमेघदूत्यैनमःआगच्छ २ स्वाहा । ॐ मेघदूतीकमलोद्भवायनमःआगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं महानिलराजहिमवन्निवासिनेआगच्छ २ स्वाहा । ॐह्रींनंदिकेश्वरायजठरनिवासिनेमेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा । ॐह्रींकुबेरराजायशृंगवेरनिवासिने आगच्छ २ स्वाहा । जपोस्यदशसाहस्त्रोदशांशोहोमएवच। पुष्पैश्चधवलैरक्तैःकरवीरसमुद्भवैः ॥ १८३ ॥
ततःपुष्पैःसुगन्धाढ्यैरर्चयेन्मेघसप्तकम् ।
दद्याच्चैववनेगत्वा मेघानावाहयेद्बुधः ॥ १८४ ॥

ॐ ह्रीं मेघदूत्यै० इत्यादि पांचों मन्त्रोंमें प्रत्येकके दश २ हजार जप करके इनके दशांशका होम करे । और सफेद तथा लाल कनेर

के पुष्पोंसे अथवा अन्य सुगन्धित पुष्पोंसे पूजन करके वनमें जाकर मेघोंका आवाहन करे ॥ १८३ ॥ १८४ ॥

शिवालयेतडागेवापुनर्मेघान्विसर्जयेत् ॥१८५॥(इति)

और फिर विसर्जन करना हो तो शिवालयमें अथवा तालाब पर जाकर उनका विसर्जन करे ॥ १८५ ॥

(७) आर्द्राप्रवेशेतिथ्यादिफलम् ।

प्रतिपद्दिवसेभानोर्यदार्द्रायांप्रवेशनम् ।
नृणांगृहेगृहेतर्हिभवेन्मंगलवर्द्धनम् ॥ १८६ ॥

(७) "आर्द्रा प्रवेशमे तिथ्यादिका फल ।"–(सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्रपर आता है तब उस समय जो तिथि वारादि हों उनका फल भी संवत्सरके शुभाशुभ फलमें उपयोगी होता है ।) प्रतिपदा तिथिके दिन सूर्य आर्द्रा नक्षत्रपर आवे तो घर घरमें मंगलकार्य बढते हैं ॥ १८६ ॥

भानोर्यदिद्वितीयायांभवेदार्द्राप्रवेशनम् ।
तर्हिस्यात्सर्वधान्यानांवस्त्रादीनांविवर्धनम्॥१८७॥

द्वितीया तिथिमें सूर्य आर्द्रापर आवे तो सब धान्य तथा वस्त्रादि सस्ते होते हैं ॥ १८७ ॥

भास्करस्ययदार्द्रायांतृतीयायांप्रवेशनम् ।
ईतिभीतिर्भवेत्तर्हितस्करादिविवर्धनम् ॥ १८८ ॥

तृतीयामें सूर्य आर्द्रामें आवे तो ईतिभीति हो और चौरभय बढे ॥ १८८ ॥

गणपतितिथ्यांस्मरहरधिष्ण्ये ।
यदिरविवेशोध्रुवमशुभंस्यात् ॥ १८९ ॥

चतुर्थीमें सूर्य आर्द्रामें आवे तो निश्चय अशुभ होताहै ॥ १८९ ॥

पंचम्यांरौद्रनक्षत्रंप्रयातियदिभानुमान् ।
सर्वेषांप्राणिनांतर्हिफलंस्यादुत्तमोत्तमम् ॥ १९० ॥
पञ्चमीको आर्द्रा प्रवेश हो तो सब प्राणियोंको उत्तमोत्तम फल होता है ॥ १९० ॥

षष्ठ्यामार्द्राप्रवेशश्चेज्जायतेपद्मिनीपतेः ।
तर्हिद्रविणसंपत्त्यानराणांप्रचुरं सुखम् ॥ १९१ ॥
छठको हो तो धन सम्पत्ति अधिक बढे, तथा मनुष्योंको प्रचुर सुख हो ॥ १९१ ॥

भास्करोभास्करतिथौयदार्द्रांप्रवेशनम् ।
करोतितर्हिलोकानांसततंक्षेममुत्तमम् ॥ १९२ ॥
सप्तमीको आर्द्रा प्रवेश हो तो लोकमें उत्तम क्षेम रहे ॥ १९२ ॥

यदिस्यादष्टमीतिथ्यामार्द्रानक्षत्रगोरविः ।
सस्यानांवाससांमूल्यंस्वल्पवृष्टिर्नसंशयः ॥ १९३ ॥
अष्टमीको हो तो अन्न वस्त्रादिका मूल्य बढ जाय और वर्षा कम हो ॥ १९३ ॥

सूर्यस्यशिवनक्षत्रप्रवेशेनवमीतिथौ ।
तर्हिस्यात्समताभीतेरेवमाहुर्मनीषिणः ॥ १९४ ॥
नवमीको हो तो भयमें समानता हो ॥ १९४ ॥

सूर्यस्यरुद्रसंवेशोयदिस्याद्दशमीतिथौ ।
नानाविधानिकार्याणिमंगलानिदिनेदिने ॥ १९५ ॥
दशमीको हो तो प्रतिदिन नाना प्रकारके मंगल कार्य हों ॥ १९५ ॥

एकादश्यांतिथौसूर्योरौद्रंप्रयातिचेत्तदा ।
सकलंधनधान्यादिसुभिक्षंजायतेध्रुवम् ॥ १९६ ॥
एकादशीको हो तो सम्पूर्ण धन धान्य निश्चय सस्ते हों ॥ १९६ ॥

द्वादश्यां शिवनक्षत्रं प्रविष्टश्चेद्दिवाकरः ।
नानाविधं शुभं तर्हि जनः प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १९७ ॥

द्वादशीको हो तो मनुष्योंको नाना प्रकारके शुभ फल मिलें १९७॥

दिवाकरस्य रौद्रर्क्षे प्रवेशे च त्रयोदशी ।
तिथिर्यदि स्यात्तत्तिथ्यां जायते वै जलं तदा ॥ १९८॥

त्रयोदशीमें हो तो तिथिकी स्थितिके अनुसार समर्घ महर्घ तथा जल वृष्टि हो ॥ १९८ ॥

दिवाकरस्य रौद्रर्क्षे प्रवेशे च चतुर्दशी ।
समस्तधान्यवासांसि महर्घाणि भवंति हि ॥ १९९॥

चतुर्दशीको हो तो सम्पूर्ण धान्य और सब तरहके कपडे महँगे हों ॥ १९९ ॥

पौर्णमास्यां दिनेशश्चेदार्द्रानक्षत्रगो भवेत् ।
प्रजानां तर्हि विविधाः संपूर्णाः स्युर्मनोरथाः ॥ २०० ॥

पूर्णिमा तिथिमें आर्द्रा प्रवेश हो तो प्रजाके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हों ॥ २०० ॥

अमायां पद्मिनीनाथ रौद्रनक्षत्रगे यदि ।
भूमिपानां विनाशः स्यात्तस्कराणामुपद्रवः ॥ २०१॥

और यदि अमावसमें आर्द्रा पर सूर्य आवे तो राजाओंका नाश तथा चोरोंका उपद्रव हो ॥ २०१ ॥

वारफलम् ।

दिनपतिवारे पशुपतिधिष्ण्ये ।
दिनपतिवेशे सति पशुनाशः ॥ २०२ ॥

"वारफल"–रवितवारके दिन सूर्य आर्द्रा पर आवें तो पशुओंका नाश हो ॥ २०२ ॥

शशिधरवारेस्मरहरधिष्ण्ये।
दिनकरवेशेसतिहिसुभिक्षम् ॥ २०३ ॥
सोमवारको आवे तो सुभिक्ष हो ॥ २०३ ॥

भानोर्वेशःपृथ्वीसूनोर्वारेरौद्रेधिष्ण्येचेत्स्यात्।
शस्त्राघातात्पृथ्वीशानांनिःसंदेहंमृत्युस्तर्हि॥२०४॥
मंगलवारको आवे तो राजाओंकी शस्त्रघातसे निश्चय मृत्यु हो २०४॥

बुधस्यवासरेरौद्रेधिष्ण्येभानुःप्रयातिचेत्।
तर्हिब्राह्मणजातीनांकल्याणंभूरिवर्तते ॥ २०५ ॥
बुधवारको आर्द्रा प्रवेश हो तो ब्राह्मण जातिका बहुत कल्याण हो ॥ २०५ ॥

सुरराजगुरोर्वारेद्युमणिर्यदिरौद्रगः।
सर्वेषांतर्हिजंतूनांद्रव्यवृद्ध्यासुखंबहु ॥ २०६ ॥
बृहस्पतिवारको हो तो सब जीवोंको सुख मिले तथा द्रव्यकी वृद्धि हो ॥ २०६ ॥

दैत्यराजगुरोर्वारेयदिस्याद्रौद्रगोरविः।
तर्हिशान्तिश्चपुष्टिश्चतुष्टिःप्रतिदिनंनृणाम् ॥२०७॥
शुक्रवारको हो तो मनुष्योंमें प्रतिदिन शान्ति-पुष्टिसे तुष्टि हो॥२०७॥

शनैश्चरस्यवारेचेद्रविराद्रांगतोयदि।
कृशतातर्हिलोकानांनितांतंमंदबुद्धिता ॥ २०८ ॥
और शनिवारको आर्द्रा प्रवेश हो तो लोग दुबले अधिक हों तथा बुद्धिमें कम हो ॥ २०८ ॥

नक्षत्रफलम्।

रविराद्राप्रवेशेचेद्दासभंदिनभंभवेत्।
अश्वादिपशुसंघस्यवृद्धिःस्यान्मंगलानिच २०९॥

"नक्षत्रफल"-आर्द्रा प्रवेशके समय अश्विनी नक्षत्र हो तो घोड़े आदि पशु समूहमें वृद्धि तथा मंगलवृद्धि हो ॥ २०९ ॥

अर्कस्यरौद्रसंवेशेभरणीचंद्रभंयदि ।
तर्हिस्याद्रोगबाहुल्यंशुभंनैवकदाचन ॥ २१० ॥

भरणी नक्षत्र हो तो रोगबाहुल्य हो और शुभ कुछनहीं हो २१०॥

कृत्तिकायदिचांद्रर्क्षमीशधिष्ण्यंगतेरवौ ।
अग्न्यादिकभयंभूरितर्हिस्यादंबुवर्षणम् ॥ २११ ॥

कृत्तिका हो तो आगका भय अधिक हो तथा जलवृष्टिहो॥२११॥

रोहिणीचंद्रनक्षत्रेभानुरार्द्रांगतोयदि ।
सर्वधान्यविनिष्पत्त्यासंतोषोखिलदेहिनाम् २१२॥

रोहिणी हो तो सब धान्य उत्पन्न हों और सब प्राणियोंको संतोष मिले ॥ २१२ ॥

यदिरौद्रंप्रविष्टोर्कोमृगांकेमृगगेसति ।
धान्यांबरघृतादीनांप्राबल्यंतर्हिजायते ॥ २१३ ॥

मृगशिर हो तो धान्य, वस्त्र और घी यह बहुत हों ॥ २१३ ॥

रौद्रनक्षत्रगेचंद्रेरौद्रंभयातिचेद्रविः ।
सकलाःप्राणिनस्तर्हिरौद्रकर्मप्रकुर्वते ॥ २१४ ॥

आर्द्रा प्रवेशके दिन आर्द्रा हो तो सब प्राणी रौद्रकर्म-(धाड़े डकैती, मार काट आदि) करैं ॥ २१४ ॥

अर्कस्यरौद्रसंवेशेयदिचांद्रंपुनर्वसु ।
अभिवृद्धिःसमस्तानांसस्यानांतर्हिनिश्चयात् २१५

पुनर्वसु हो तो सब सस्योंको अवश्य अभिवृद्धि हो ॥ २१५ ॥

द्रिनर्क्षेपुष्यनक्षत्रेरौद्रंव्रजतिचेद्रविः ।
तदाजलप्लुताभूमिःसर्वधान्यसमन्विता ॥ २१६॥

पुष्य नक्षत्र हो तो जल बहुत वर्षे और सब धान्यासे पृथ्वी संयुक्त रहे ॥ २१६ ॥

सार्पभंदिनेचेत्स्यादर्कस्यार्द्राप्रवेशने ।
दारुणंकर्मलोकानांभवेत्सौख्यविनाशनम् ॥२१७॥

आश्लेषा हो तो लोग बडे खोटे काम करें और सब सुखोंका नाश हो ॥ २१७ ॥

रौद्रंविशतिचेद्भानुःपितृभेचन्द्रसंयुते ।
अल्पवृष्टिस्तदाज्ञेयाकंदमूलादिकाल्पता ॥२१८॥

मघा हो तो वर्षा कम हो और कंद मूल फलभी कम हों ॥२१८॥

भगभेसतिचन्द्रर्क्षेजायतेरौद्रगोरविः ।
तदाभूमिभृतांकीर्तिःप्रत्यहंभाग्यवर्धनम् ॥२१९ ॥

पूर्वाफाल्गुनी हो तो राजाओंकी कीर्ति प्रतिदिन अच्छी बढे २१९॥

यदिरौद्रगआदित्येचन्द्रभेर्यमदैवते ।
तदासस्याभिवृद्धिःस्यात्पुत्रपौत्रयुतोजनः ॥२२०॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अन्नकी वृद्धि हो और लोग बेटे पोतोंसे युक्त हों ॥ २२०

हस्तनक्षत्रगेचन्द्रेरौद्रनक्षत्रगोयदि ।
सवितास्यात्तदासर्वेसस्यसौख्यसमन्विताः ॥२२१ ॥

हस्त हो तो सब लोग सब धान्योंसे संयुक्त रहें ॥ २२१ ॥

सवितायदिरौद्रर्क्षंव्रजेच्चित्रागतेविधौ ।
तदाचित्राणिधान्यानिसर्वदैवशुभंभवेत् ॥२२२ ॥

चित्रा हो तो मोठ-मूंग-उडद आदि अन्न उत्पन्न हों और सब प्रकारके शुभ हों ॥ २२२ ॥

भास्करोरौद्रगश्चेत्स्यान्मारुतेदिनभेसति ।
धनधान्यसमृद्धिःस्याद्धर्मवृद्धिर्दिनेदिने ॥ २२३॥
स्वाती हो तो धनधान्यकी तथा धर्म कर्मकी दिन दिन वृद्धिहो २२३

विशाखायदिचांद्रर्क्षे भानोरार्द्राप्रवेशने ।
तदानिखिलरोगाणांविनाशोजायतेध्रुवम् ॥२२४॥
विशाखा हो तो सब रोगोंका निश्चय नाश हो ॥ २२४ ॥

शशांकसहितेमैत्रेशिवभंयातिचेद्रविः ।
सर्वलोकाश्चभूपाश्चसंतुष्टाःस्युस्तदाभृशम् ॥ २२५ ॥
अनुराधा हो तो सब लोग तथा राजाओंमें संतोष रहे ॥ २२५ ॥

इन्द्रभेचंद्रसंयुक्तेसवितारौद्रगोयदि ।
तदासकललोकानांजायतेप्रचुरंभयम् ॥ २२६ ॥
ज्येष्ठा हो तो सब लोगोंको बहुत भय हो ॥ २२६ ॥

चंद्राक्रांतेनिर्ऋतिभेयदार्द्रारविसंयुता ॥
भयंनानाविधंपुंसांकृशत्वंरोगवृद्धिदा ॥ २२७ ॥
मूल नक्षत्र हो तो पुरुषोंको कई प्रकारके भय हों और रोग वृद्धि दुबलापन हो ॥ २२७ ॥

आर्द्राचेद्रविणायुक्तातोयभेदिनभेसति।
तर्हिसर्वेमहीपालाःपरस्परविरोधिनः ॥ २२८ ॥
पूर्वाषाढ हो तो सब राजाओंमें परस्पर विरोध हो ॥ २२८ ॥

वैश्वभेचंद्रसंयुक्तेरौद्रभंयदिसूर्ययुक् ।
तदानराःस्वकर्माणिकुर्वंतेमंगलान्विताः ॥ २२९ ॥
उत्तराषाढ हो तो मनुष्य अपने अपने काम करें तथा मंगलयुक्त हों ॥ २२९ ॥

श्रवणेचंद्रसहितेरविणारौद्रंभंयदि ।
सहितंस्यात्तदालोकाःपुत्रसौख्यसमन्विताः २३०॥
श्रवण नक्षत्र हो तो लोग पुत्रसौख्यसे संयुक्त रहैं ॥ २३० ॥

सवितुःशिवनक्षत्रप्रवेशसमयेभवेत् ।
वासवंयदिचान्द्रर्क्षंतदाबहुफलादिकम् ॥२३१ ॥
धनिष्ठा हो तो फल बहुत हों ॥ २३१ ॥

शशिनावारुणेयुक्तेरविणाशिवदैवतम् ।
यदिस्यात्सहितंतर्हिजलपूर्णावसुंधरा ॥ २३२ ॥
शतभिषा हो तो पृथ्वीपर जल बहुत हो ॥ २३२ ॥

पूर्वाभाद्रपदाधिष्ण्येरजनीपतिसंयुते ।
यद्यर्कोरौद्रभंयातितदासर्वेसुखोदयाः ॥ २३३ ॥
पूर्वाभाद्रपद हो तो सब सुखोंका उदय हो ॥ २३३ ॥

चान्द्रेहिर्बुध्न्यनक्षत्रेरौद्रंवेदर्कवेशनम् ।
तदासर्वाणिकार्याणिसिद्ध्यन्तिनृणांसदा॥२३४॥
उत्तराभाद्रपद हो तो मनुष्योंके सब काम सिद्ध हो ॥ २३४ ॥

शशिभृतिपौष्णेसतियदिरौद्रम् ।
प्रविशतिभानुर्नरपतिनिधनम् ॥२३५॥ (इति)॥
और आर्द्रा प्रवेशके समय रेवती नक्षत्र हो तो राजाकी मृत्यु हो॥२३५॥

योगफलम् ।

प्रथमजयोगेत्रिनयनधिष्ण्ये ।
यदिरविवेशोबहुवसुसस्यम् ॥ २३६ ॥
"योगफल"-विष्कम्भ योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो अन्न बहुत हो ॥ २३६ ॥

प्रीतियोगेविद्यमानेसत्यर्कोयदिरौद्रगः ।
सर्वात्रसुमतीतर्हिसलिलेनपरिप्लुता ॥ २३७ ॥
प्रीति योगमें हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी जलसे व्याप्त हो ॥ २३७ ॥

आयुष्मत्संज्ञकेयोगेयदिभास्वान्छिवर्क्षगः ।
तर्हिसर्वेमहीपालाःसुचरित्रानिरामयाः ॥ २३८ ॥
आयुष्मान्में हो तो सब राजालोग रोग रहित स्वच्छ चरित्री हों ॥ २३८ ॥

सौभाग्यनामकेयोगेरौद्रगश्चेद्दिवामणिः ।
सौभाग्यारोग्यतावासिस्तर्हिस्यात्सर्वदेहिनाम् ॥ २३९ ॥
सौभाग्य योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो सब देहधारियोंको सौभाग्य तथा आरोग्य मिले ॥ २३९ ॥

सतिशोभनयोगेचेद्रौद्रगःपद्मिनीपतिः ।
शोभनंकर्मकुर्वन्तितर्हिसर्वेजनानृपाः ॥ २४० ॥
शोभनमें हो तो सब लोग तथा राजा शुभ काम करें ॥ २४० ॥

अतिगंडाख्ययोगेचेदार्द्रांयातिदिवाकरः ।
परस्परंतुयुद्धंचतर्हिकुर्वन्तिभूमिपाः ॥ २४१ ॥
अतिगण्डमें हो तो राजालोक परस्परमें युद्ध करें ॥ २४१ ॥

सुकर्मनामयोगकेयदीशर्भंरविर्व्रजेत् ।
तदासमस्तभूसुराःसुकर्मकर्तुमुद्यताः ॥ २४२ ॥
सुकर्मामें हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोग अच्छे कामोंके करनेमें उद्यत (तयार) हों ॥ २४२ ॥

सतिधृतियोगेयदिदिवसेशः
प्रविशतिरौद्रंभवतिसुभिक्षम् ॥ २४३ ॥
धृतिमें हो तो सुभिक्ष हो ॥ २४३ ॥

योगेशूलाभिधानेचेद्रौद्रंयातिदिवाकरः ।
शूलादिकैर्महारोगैःपीडात्यंततदानृणाम् ॥ २४४॥
शूलमें हो तो मनुष्योंमें शूल पीडा (पाँसुका दर्द अथवा उदरशूल आदि) अधिक हो ॥ २४४ ॥

गण्डयोगेवर्तमानेरौद्रंयातिचभास्करः ।
तदा तुष्टानि कर्माणि कुर्वंतिनिखिलाजनाः॥२४५॥
गण्डमें हो तो सब लोग प्रसन्नताके काम करें ॥ २४५ ॥

तरणिर्यदिरौद्रर्क्षंप्रविशेद्वृद्धियोगके ।
पुत्रपौत्राभिवृद्धिःस्यात्तर्हियज्ञादिकर्मच ॥ २४६ ॥
वृद्धियोगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो पुत्रपौत्रादि की वृद्धि हो और यज्ञादि कर्म हों ॥ २४६ ॥

सतिध्रुवाख्ययोगेचेद्रौद्रगःस्यादहर्पतिः ।
जनाजनेशाःसर्वेपिनैवचंचलमानसाः ॥ २४७ ॥
ध्रुव योगमें हो तो राजा प्रजा दोनों उदासीन रहें ॥ २४७ ॥

व्याघातनाम्नि योगेचेद्रविणाक्रांतमीशभम् ।
तदाजनानां सर्वेषां दुर्भिक्षात्प्राणनाशनम्॥२४८॥
व्याघात योगमें हो तो दुर्भिक्ष अकालसे सब मनुष्योंका नाश हो ॥ २४८ ॥

रवेरार्द्राप्रवेशस्यसमयेयदिहर्षणः ।
सर्वधान्यादिसंवृद्ध्याप्राणिनांहर्षसंभवः॥ २४९ ॥
हर्षणमें हो तो सब अन्न सस्ते होनेसे प्राणियोंके हर्ष बढे ॥२४९॥

वज्राभिधानयोगेचेत्तपनोरौद्रगोभवेत् ।
तर्हिभूपालकलहःक्वचित्स्याज्जलवर्षणम् ॥ २५० ॥
वज्रमें हो तो राजाओंमें कलह हो और कहीं कहीं वर्षा हो॥२५०॥

मार्तंडःसिद्धियोगेचेत्कुर्याद्रौद्रप्रवेशनम् ।
धनधान्यांबरादीनांवृद्धिः स्यात्तर्हिरोगदः॥२५१॥
सिद्धि योगमें हो तो धन धान्य वस्त्रादिकोंकी वृद्धि हो और रोग हो ॥ २५१ ॥

व्यतिपाताभिधेयोगेरविराद्रांगतोयदि ।
तर्हिराज्ञोजनानांचनिश्चयेनधनक्षयः ॥ २५२ ॥
व्यतिपातमें हो तो राजा प्रजा दोनोंका धननाश हो ॥ २५२ ॥

वरीयान्वर्तमानश्चेद्रवेराद्राप्रवेशने ।
अल्पवृष्टचखिलंधान्यंकंदमूलादिदुर्लभम् ॥२५३॥
वरीयान्में हो तो कम वर्षा होनेसे कंद मूल फल धान्यादि दुर्लभ हों ॥ २५३ ॥

परिघेसतियोगेचद्युमणिःशिवभंव्रजेत् ।
तदाधर्मार्थयोर्नाशोराजानःपरिपीडिताः ॥२५४॥
परिघमें हो तो धर्म अर्थ इन दोनोंका नाश हो और राजा पीडित रहें ॥ २५४ ॥

शिवयोगेशिवर्क्षेचेद्व्रजेद्दिवसनायकः ।
सदाचाररताःसर्वेसदामांगल्यभागिनः ॥ २५५ ॥
शिव योगमें हो तो सब लोग सदाचारी रहें और मंगल भोगी हों ॥ २५५ ॥

सिद्धियोगेसहस्रांशोशिवनक्षत्रयायिनि ।
ओदनानांहिकार्याणांसिद्धिसम्पादकंबहु ॥ २५६॥
सिद्धि योगमें हो तो बहुतसे ओदन कार्य भले प्रकार सिद्ध ॥ २५६ ॥

अंशुमान्रौद्रनक्षत्रंसाध्ययोगेप्रयातिचेत् ।
असाध्यमपिसाध्यंस्यात्कार्यंतर्हिवपुष्मताम् २५७ ॥
साध्यमें हो तो असाध्य कार्यभी सिद्ध हो जाँय ॥ २५७ ॥.

शुभयोगेदिनेशश्चेन्नक्षत्रंधूर्जटेर्व्रजेत् ।
तर्हिकीलालवृष्टिःस्यात्सर्वेसंतुष्टमानसाः ॥ २५८ ॥
शुभमें हो तो अच्छी वर्षा हो और उससे सब सन्तुष्ट हों ॥ २५८ ॥

शुक्लयोगेदिनकरेकृतरौद्रागमेसति ।
जलवर्षणयोगेनधान्याद्युपचयोभवेत् ॥ २५९ ॥
शुक्ल योगमें हो तो जल बर्षनेसे खेती अच्छी उत्पन्न हो ॥ २५९ ॥

ब्रह्माभिधानयोगेचेन्नलिनीशःशिवर्क्षगः ।
जलंचसकलंधान्यंमध्यमंतर्हिजायते ॥ २६० ॥
ब्रह योगमें हो तो जल तथा धान्य सब मध्यम हों ॥ २६० ॥

ऐंद्राभिधानयोगेचेद्विरोचनसमन्वितः ।
त्रिलोचनस्यनक्षत्रंतदानींजलवर्षणम् ॥ २६१ ॥
ऐंद्रमें हो तो जल वर्षे ॥ २६१ ॥

सतिवैधृतियोगेचेत्तरणिःशिवधिष्ण्यगः ।
सर्वेषामपिजन्तूनांतदाव्याधिभयंभवेत् ॥ २६२ ॥
और वैधृति योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो सब जीवोंको व्याधि-भय हो ॥ २६२ ॥

समयफलम् ।

सूर्योदयेरोगकरीस्मृतार्द्रावटीद्वयेविग्रहरोगयोगः ।
मध्याह्नकालेकृषिनाशनायधान्यंमहर्घंचतृणस्य
नाशः ॥ २६३ ॥ इति ॥

"समय फल"–सूर्योदयके समय आर्द्रा प्रवेश होनेसे रोग हो, दो घड़ी दिन चढ़े होनेसे विग्रह हो, दुपहरीमें होनेसे खेतीका नाश हो धान्य महँगा हो और घासका नाश हो ॥ २६३ ॥

संध्यास्थिताद्रांकुरुतेसुभिक्षंरात्रौस्थितासर्वसुखा-यलोके । भोगंप्रदत्तेखलुमध्यरात्रेःपूर्वंसुखंदुःख-मतोऽपरत्र ॥ २६४ ॥ इति ॥

सन्धिमें हो तो सुभिक्ष हो, रात्रिमें हो तो सब लोगोंको सुख हो, मध्यरात्रि (आधी रात) में हो तो भोग प्रदान करे और आधीसे पूर्व भागमें सुख तथा पर भागमें हो तो दुःख हो ॥ २६४ ॥

आर्द्राप्रवेशे लग्नम् ।

रौद्रप्रवेशेतरणिर्विधुश्चेत्त्रिकोणसंस्थोथचतुष्टयस्थः। जलर्क्षगोवाशुभवीक्षितोवाधान्यंप्रभूतंनिखिलंतदा-नीम् ॥ २६५ ॥ इति ॥

"आर्द्रा प्रवेशका लग्ननिरीक्षण" यदि आर्द्रा प्रवेशकी लग्नकुण्डलीमें सूर्य और चन्द्रमा नौवें पाँचवें हों अथवा पहले–चौथे-सातवें–दशवें स्थानमें हों–या जल राशिमें हों और शुभ ग्रह उनको देखते हों तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न हों ॥ २६५ ॥

(८) जगल्लग्नविचारः ।

चैत्रमासेपुनःप्राप्तेलोकानांहितहेतवे । मेषसंक्रांतिवेलायांलग्नंशोध्यंशुभाशुभम् ॥२६६॥

(८) "जगल्लग्नविचार"–जब नवीन संवत्सर आवे तब उसमें मेष संक्रांतिके समयका लग्न स्थापन करके संसारके हितके निमित्त उसका शुभाशुभ विचार करे ॥ २६६ ॥

यदाशुभग्रहैर्दृष्टंलग्नंस्यात्तुतदाशुभम् । धनधान्यादिसंपूर्णंसर्ववर्षंशुभावहम् ॥ २६७ ॥

यदि उस लग्न (जगल्लग्न) को शुभ ग्रह देखते हों तो शुभ होता है। और उस वर्षमें धन धान्यादि सम्पूर्ण वस्तु अच्छी उत्पन्न होतीहै॥२६७॥

भावाद्वादशतेमासाःसौम्याःक्रूराग्रहाःपुनः ।
तेषुमासेषुदेवेशिफलंज्ञेयंशुभाशुभम् ॥ २६८ ॥

जगल्लग्नमें जो तनु आदि बारह भाव होते हैं उन्हीं बारहों भावोंको चैत्रादि बारह मास मान कर सौम्य और क्रूर ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार फल देखकर उन महीनों का शुभाशुभ जाने ॥ २६८ ॥

मेषप्रवेशलग्नेवायदिस्याद्वर्षजन्मनि ।
सप्तमस्थोयदापापोधान्यजातंविनाशयेत्॥ २६९॥

मेष प्रवेश लग्न(वर्ष जन्मलग्न—अथवा जगल्लग्न)में सातवें पापग्रह हों तो—खड़ी खेतीका नाश करते हैं ॥ २६९ ॥

धनेव्ययेचसौम्यश्चकेन्द्रेवामेषसंक्रमे ।
स्वर्क्षेशुभेसुहृद्दृष्टःसुभिक्षंव्यत्ययेऽन्यथा ॥२७०॥

यदि उसमें दूसरे बारहवें अथवा केन्द्रमें सौम्य ग्रह हों और स्वगृही हों तथा मित्र ग्रहोंकी उन पर दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है। अन्यथा दुर्भिक्ष होता है ॥ २७० ॥ इति ।

वर्षलग्नविचारमाह।

चैत्रशुक्लेपुनःप्राप्तेलोकानांहितहेतवे।
प्रतिपल्लग्नवेलायांलग्नेशोध्यंशुभाशुभम् ॥ २७१ ॥

" अब संवत्सरके जन्मलग्नका फल कहते हैं । "—जब फिर चैत्र शुक्लसे नवीन वर्ष आरंभ हो तब संसारकी शुभकामनाके निमित्त उस दिन जिस समय प्रतिपदा लगे उस समयका लग्न लगाकर उसमें शुभाशुभ शोधना चाहिये । अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रारंभ होनेके समय अहर्गण जितनी घड़ी हो उसीको इष्ट मानके उसपर लग्न लगाना चाहिये ॥ २७१ ॥

मेषलग्नेतुपूर्वस्यांदुर्भिक्षंराजविग्रहः ।
दक्षिणस्यांसुभिक्षंस्याद्बहुधान्यरसाचभूः॥ २७२ ॥

यदि उस समय मेष लग्न हो तो उस वर्षमें पूर्वमें राजविग्रह तथा दुर्भिक्ष हो, दक्षिणमें बहुत धान्य और सुभिक्ष हो ॥ २७२ ॥

धान्यानांविक्रयेलाभःपूर्णमेघमहोदयः ।
घृततैलादिवस्तूनांपण्यानांचमहर्घता ॥ २७३ ॥

धान्योंके बेचनेसे लाभ हो, मेघ बहुत वर्षे, घी तैलादि महंगे हों ॥ २७३ ॥

उत्तरस्यांसुभिक्षंस्याद्राज्ञामुद्वेगकारणम् ।
मध्यदेशेमहावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥ २७४॥

उत्तरमें सुभिक्ष हो, राजाओंमें उद्वेग हो, मध्य देशमें महावर्षा और धान्य उपजे ॥ २७४ ॥

वृषेपिपश्चिमेकालःपूर्वस्यांराजविग्रहः ।
उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्तिर्दक्षिणस्यांविकालतः॥२७५॥

वृषलग्न हो तो पश्चिम में काल, पूर्वमें राजविग्रह,उत्तरमें आधी उपज और दक्षिणमें काल पड़ ॥२७५ ॥

मिथुनेबहुलंयुद्धंपूर्वस्यांधान्यनष्टता ।
उदग्दक्षिणयोर्मेघावहवोधान्यसंग्रहः ॥ २७६ ॥

मिथुन लग्न हो तो युद्ध बहुत हो पूर्वमें खेती बिगड़े उत्तर दक्षिणमें वर्षा और धान्य बहुत हो ॥ २७६ ॥

पश्चिमायांस्वल्पमेघाश्छत्रभंगश्चविग्रहः ।
मध्यदेशेर्द्धनिष्पत्तिश्चतुष्पदसरोगता ॥ २७७ ॥

पश्चिममें कम वर्षा तथा छत्रभंग हो, मध्य देशमें आधी उत्पत्ति और पशुओंमें रोग हो ॥ २७७ ॥

कर्केसुखंतुपूर्वस्यामुत्तरस्यांतुविग्रहः ।
स्याच्चासनबलंयावद्दुर्भिक्षंपश्चिमेदिशि ॥ २७८॥
कर्कमें पूर्वमें सुख, उत्तरमें दुःख तथा आसन बल और पश्चिममें दुर्भिक्ष हो ॥ २७८ ॥

सिंहलग्नेदक्षिणस्यांदंष्ट्राभयमुदीर्यते ।
धान्येसमर्घतामासषट्कंयावद्धनंमहत् ॥ २७९ ॥
सिंहमें दक्षिणमें डाढ़भय, धान्यमें समर्घता और छः मासतक महाधनकी प्राप्ति हो ॥ २७९ ॥

पश्चिमायां धातुवस्तुफलादीनांमहर्घता ।
उत्तरस्यांमहावृष्टिःसुखंराज्ञेप्रजासुच ॥ २८० ॥
पश्चिममें धातुकी वस्तु और फल महँगे हों, उत्तरमें महावृष्टि और राजा प्रजामें सुख हो ॥ २८० ॥

पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिःश्रेयोग्रेमासपञ्चकात् ।
मध्यदेशेराजयुद्धंमासेपञ्चकमुद्धृतम् ॥ २८१ ॥
पूर्वमें आधी उपज हो, आगे पांच मासमें कल्याण हो, मध्य देशमें ५ मास राजयुद्ध रहे ॥ २८१ ॥

कन्यायांसुस्थिराप्राच्यांघृतेमहर्घतामता ।
मंजिष्ठादिसमर्घत्वंयावन्मासत्रयंभवेत् ॥ २८२ ॥
कन्यामें पूर्वमें स्थिरता, घीकी महँगाई और ३ मास मंजीठ आदि सस्ते हों ॥ २८२ ॥

मारिर्दक्षिणदेशेस्यात्तथा वंगेप्युपद्रवः ।
लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोन्नसमर्घता ॥ २८३॥
दक्षिणमें मरी पड़े, बंगालमें उपद्रव हो । पश्चिममें लोक विग्रह और अन्न महंगा हो ॥ २८३ ॥

चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः ।
मध्यदेशेप्रजाभङ्गःसमर्घत्वंघृतेपुनः ॥ २८४ ॥

फिर चौपायोंमें सुख, पूर्वोत्तरमें राजविग्रह, मध्य देशमें प्रजाभंग और घीकी सोंघाई हो ॥ २८४ ॥

तुलालग्नेमध्यदेशेछत्रभंगश्चविग्रहः ।
धान्यस्यविक्रयः प्राच्यांछत्रभंगमुपद्रवः ॥२८५ ॥

तुलामें मध्यदेशमें विग्रह तथा छत्रभंग हो । पूर्वमें भी छत्रभंग और उपद्रव हो ॥ २८५ ॥

दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम् ।
पश्चिमायांमहायुद्धं दंष्ट्राभयमहर्घता ॥ २८६ ॥

दुर्भिक्ष हो वायु बहुत चले वर्षा कम हो पश्चिममें महायुद्ध हो और दाढ़भय तथा महँगाई हो ॥ २८६ ॥

दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे ।
मासद्वयंपश्चिमायां किंचिदुत्पातसंभवः ॥२८७ ॥

दक्षिणमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्ष और पश्चिममें दो मास कुछ उत्पात हो ॥ २८७ ॥

वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम् ।
उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घा धातवस्तदा॥२८८॥

वृश्चिकमें,पश्चिममें नौ मास दुर्भिक्ष, उत्तरमें आधी उत्पत्ति और धातुओंकी समर्घता हो ॥ २८८ ॥

पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने ।
पश्चात्सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते॥२८९॥

पूर्वमें राजाओंमें विग्रह, मनुष्योंमें ३ मास दुःख पीछे सुख और मध्यदेशमें धान्यनाश हो ॥ २८९ ॥

दक्षिणस्यां देशभंगो भावीवर्षे प्रजायते ।
धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपंचकात्॥२९०॥
दक्षिणमें भावी वर्षमें देशभंग हो और पांच मास पीछे धातुविक्रयमें लाभ हो ॥ २९० ॥

धनुर्लग्ने तूत्तरस्यांपूर्वस्यां च सुखं नृणाम् ।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ॥ २९१ ॥
धन लग्नमें उत्तर, पूर्वमें सुख हो, मध्यदेशमें प्रबल वर्षासे दुर्भिक्ष तथा रोग हो ॥ २९१ ॥

पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात् ।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीडा चतुष्पदे॥२९२॥
पश्चिममें पांच मासमें घी धान्य सस्ते हों, दक्षिणमें सुख रहे, किन्तु चौपायोंको कुछ पीड़ा हो ॥ २९२ ॥

मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः ।
वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम्॥२९३॥
मकरमें उत्तरमें बड़े उत्पात तथा नृपक्षय हो और १ वर्षतक अच्छी उत्पत्ति तथा सुख हो ॥ २९३ ॥

मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्तिःकिंचिद्धान्यमहर्घता ।
अकालेमेघवृष्टिःस्याल्लाभोधान्यस्यविक्रयात्२९४
मध्य देशमें आधी उत्पत्ति हो, कुछ धान्य महँगा हो, अकालमें मेघ बर्षे और धान्यविक्रीमें लाभ हो ॥ २९४ ॥

कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्षसंभवः ।
हाहाकारःपश्चिमायां भवेद्धान्यमहर्घता ॥ २९५ ॥
कुंभमें पूर्वमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्ष और पश्चिममें धान्यकी महँगाईसे हाहाकार हो ॥ २९५ ॥

दक्षिणेविग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम् ।
मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्नसंग्रहः॥२९६॥

दक्षिणमें विग्रह और मध्य देशमें सुख हो । और मीन लग्नमें दक्षिणमें सुख हो ॥ २९६ ॥

मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगःक्वचिद्भवेत् ।
एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ॥ २९७॥

इति वर्षजन्मलग्नम् ।

मध्य देशकी खेती नष्ट हों और कहीं छत्रभंगभी हो । इस प्रकार बारह लग्नोंसे वर्षका जन्म लग्न देखना चाहिये ॥ २९७ ॥ (इति)

(९) अथ रोहिणीवासज्ञानम् ।

मेषार्कदिननक्षत्राद्दव्धौयुग्मंतटेद्वयम् ।
गिरावेकंद्वयंसंधौसाभिजिद्गणनाभवेत् ॥ २९८ ॥

(९) "रोहिणी वास ज्ञान"—समुद्र चक्रमें मेष संक्रांतिके दिन जो नक्षत्र हो उससे आरंभ करके दो दो नक्षत्र समुद्रोंमें, दो दो तटोंमें, एक एक पर्वतों पर और दो दो संधियों में इस प्रकार अभिजित सहित अट्ठाईसों नक्षत्र स्थापन करे ॥ २९८ ॥

यदापयोनिधिस्थलेगतोविरिंचिभंतदा ।
अतीववर्षणंभवेत्समस्तधान्यवर्द्धनम् ॥ २९९ ॥

उनमें जिस जगह रोहिणी नक्षत्र पड़ा हो वहीं रोहिणी निवास जानना । यदि 'समुद्र' में रोहिणी हो तो अत्यंत वर्षा होती है और सब धान्य बढ़ते हैं ॥ २९९ ॥

यदिविधिधिष्ण्यंपततितटस्थम्
शुभजलवृष्टिर्धनकणवृद्धिः ॥ ३०० ॥

यदि तटमें रोहिणी हो तो शुभ वर्षा हो और अन्न धनकी वृद्धि हो ॥ ३०० ॥

रोहिणीनामनक्षत्रंपर्वतस्थंयदाभवेत् ॥
वृष्टिहानिस्तदाज्ञेयासर्वसस्यविनाशनम् ॥ ३०१ ॥

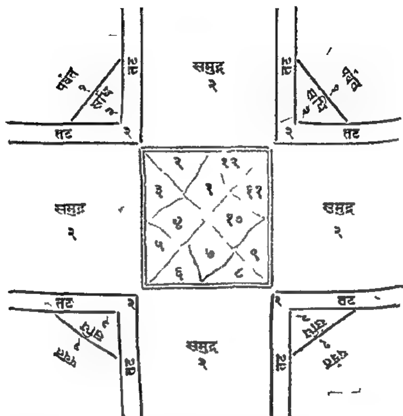
यदि पर्वत पर रोहिणी हो तो वर्षा नहीं हो और सब खेतियां सूख जांय ॥ ३०१ ॥

संधिसंस्थंयदाब्राह्मंजायते
खंडवृष्टिस्तदासर्वधान्यागमः ॥ ३०२ ॥ (इति

यदि सन्धिमे रोहिणी हो तो खण्ड वृष्टि हो किन्तु खेती सूखे नहीं ॥ ३०२ ॥

("समय निवास"–रोहिणी निवास समुद्रमें हो तो समय निवास मालीके घर, सन्धिमें हो तो वैश्यके घर, पर्वतमें हो तो कुम्हारके घर और तटमें हो तो धोबीके घर जानना। "समय वाहन" चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको सूर्यादि वारोंमें जो वार हो उनमें- सूर्यमें अश्व, चं. मृग, मं. वृषभ, बु. सिंचाण, बृ. चातक, शु. दादुर और श. हो तो भैंसा वाहन होता है ।)

अथ रोहिणीचक्रम् ।



(१०) स्तम्भानयनम् ।

चैत्रेसितप्रतिपदिरेवत्यांबहुलंजलम् ।
वैशाखशुक्लप्रतिपद्भरण्यांतृणसंभवः ॥ ३०२ ॥

(१०) "स्तम्भ ज्ञान"–(संवत्में चार स्तंभ देखे जाते हैं । जिस वस्तुका स्तंभ हो उसी वस्तुके आधिक्यसे वह संवत् व्यतीत होता है । जितने स्तंभ अधिक हों उतनाही अच्छा, जितने कम हों उतनाही मध्यम और कुछभी स्तंभ न हो तो संवत् खराब

होता है।) चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रेवती नक्षत्र हो तो 'जलका स्तंभ' होता है उस संवत्में जल अधिक वर्षता है। वैशाख शुक्ल प्रतिपदाको भरणी हो तो 'तृणका स्तंभ' होता है उससे घास अधिक होता है ॥ ३०३ ॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदिमृगेवातःशुभोभवेत् ।
आषाढशुक्लप्रतिपद्यादित्योधान्यसंभवः३०४॥(इति)

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदाको मृगशिर हो तो 'वायुका स्तंभ' होता है। उस वर्षमें वायु अधिक चलता है। और आषाढ शुक्ल प्रतिपदाको पुनर्वसु हो तो 'अन्नका स्तंभ' होता है। उस वर्षमें अन्न बहुत उत्पन्न होता है। (यदि जिस वर्षमें वह चारों स्तंभ हों तो वह वर्ष सबके लिये आनंददायक हो सकता है। और चारोंही न हों तो वह वर्ष दुःखदाई हो सकता है ॥ ३०४ ॥ (इति)

(११) अगस्त्योदयास्तानयनम् । तत्फलं च ।

पलभाघ्रगुणिताष्टसप्ततितमेहीनंकृत्वाशेषेत्रिंशता भक्तेयल्लब्धंसराशिःशेषमंशकलातुल्येअगस्त्यास्तः। पुनःपलभाघ्रगुणिताष्टनवतिमितेयुक्तंकृत्वात्रिंशताभक्तंयल्लब्धंसराशिःयच्छेषंतदंशकलामितेअगस्त्योदयः ॥ ३०५ ॥

('समयं मुहूर्त।'' –बारहों महीनोंकी संक्रान्तियोंके मुहूर्त जोड़कर इकट्टे लिखे वही समयके मुहूर्त होते हैं। (१) बारह महीनोंकी सब तिथियां जोड़ कर टूटी हुई तिथि घटानेसे "समय दिन होते हैं." किसीभी मासके शुक्ल पक्षकी दशमीको रविवार हो वह "दशमी रवि" कहातेहैं, जिस वर्षमें ऐसे दशमी दीतवार अधिक हों वे शुभ समझे जाते हैं। ऐसे दशमी दीतवारों की कुल सब घड़ी जितनी अधिक हों वह शुभ हैं")

(११) "अगस्त्यका उदयास्त लानेकी विधि"–पलभाको ८ से गुण कर ७८ अठहत्तरमें घटावे जो शेष रहे उसमें ३० का भाग दे जो लब्ध हो वह सूर्य राशि और जो शेष हो वह अंश कला जानना, सूर्यके उन राशि अंश कलाके तुल्य अगस्त्य अस्त होताहै यथा–पलभा ५ । ५८ को ८ से गुणे ४७ । ४४ हुए । इनको ७८ में घटाये ३० । १६ शेष रहे । इनमें ३० का भाग दिया तो१।०। १६ आये अतः वृषके० अंश १६ कला पर अगस्त्यास्त जानना । और उसी अष्ट गुणित पलभाको ९८ अठानवेमें जोड़ कर ३० का भाग देनेसे जो लब्धि हो वह राशि और जो शेष हो वह अंश कला होतेहैं । सूर्यके उन राशि अंश कलाके तुल्यमें अगस्त्यका उदय होताहै । यथा–अष्टगुणित पलभा ४७।४४को९८में जोड़नेसे १४५। ४४हुए । इनमें३०के भागसे४लब्धि हुई यह राशि और२५।४४ शेष रहे यह अंश कला । सूर्यके इन राशि अंश कलाके प्रमित अगस्त्य-का उदय होता है । (सूर्यके उक्तांश और इष्टांशोंमें जो अंतर हो उसमें सूर्य गतिका भाग देनेसे उदयास्तके दिन घटी पल लब्ध होतेहैं।यथा–अस्तमें सूर्यके इष्टांश१।०।१।२७मोक्तांश१।०।१६अंतर-घटी१४।३३ रवि गति ५७।४० का भाग देनेसे लब्ध०।१५।८ यह * "राजपूताना पंचांग"में सं.१९७४ ज्येष्ठ, कृष्ण८सोमवारको १५.

* यह 'राजपूताना पचाग' जैपुर राजकीय संस्कृत पाठशालाके प्रोफेसर (अध्यक्ष) पं० श्रीदुर्गाप्रसादजी द्विवेदीके शिष्य 'ज्योतिषरत्न' पं० हूँथा-कालशर्मा द्वारा निर्मित होताहै। और "गुलाबचंद बुकसेलर जयपुर सिटी" के पतेपर(=)में मिलताहै। भारत वर्षके अनेकों विद्वानोंने इसका गणित शुद्ध देख-कर मुहूर्त, तथा वर्ष जन्मपत्र देखने, व्रतोत्सवादिका निर्णय करने और संवत्स-रका शुभाशुभ (तेजी मन्दी आदि) जाननेमें उपयोगी समझकर जैपुर–जोधपुर–उदैपुर–अलवर–भरतपुर आदि राजपुतानेभरमें इसका प्रचार फैलनेकी आन्तरीय अभिलाषा प्रगट की है । अतः इस पुस्तकसे स्वतंत्र शुभाशुभ इस पंचागसे देखना उचित प्रतीत होताहै (अनुवादक) ।

घड़ी ८ पल गये पीछे अगस्त्यास्त हुआ । और इसी प्रकार द्वितीय भाद्रपद कृष्णैकादशी बुधको ८ घड़ी १९ पलपर अगस्त्यका उदय हुआ ।) ॥ ३०५ ॥

रात्रावुदयनंश्रेष्ठंनेष्टश्चास्तंगमोमुने ।
दिवसेस्तंगमः श्रेष्ठोनेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ ३०६ ॥

"अगस्त्योदयास्त फल"-रात्रिमें अगस्त्यमुनिका उदय श्रेष्ठ और अस्त नेष्ट होताहै । एवं-दिनमें अस्त श्रेष्ठ और उदय नेष्ट होताहै ॥ ३०६ ॥

यद्युदेतिदिनेप्रातःपीताब्धिर्मुनिपुंगवः ।
दुर्भिक्षंरौरवंघोरंराष्ट्रभंगंतदादिशेत् ॥ ३०७ ॥

यदि दिनमें अगस्त्य उदय हो तो घोर दुर्भिक्ष तथा राज्यभंग हो ॥ ३०७ ॥

रवौपूर्वफाल्गुन्यांप्राप्तेचैवाष्टमेऽहनि ।
अगस्तेरुदयोलोकेनशुभायकचिन्मते ॥ ३०८ ॥

यदि पूर्वाफाल्गुनी पर सूर्य आनेसे आठवें दिन उदय हो तो भी अच्छा नहीं ॥ ३०८ ॥

कृत्तिकायांरवौजातेसप्तमेवाष्टमेहनि ।
ऋषेरस्तंगतिःश्रेष्ठादिवसेयदिजायते ॥ ३०९ ॥

यदि कृत्तिकापर सूर्य आनेसे सातवें आठवें दिन अगस्त्य ऋषिका दिनमें अस्त हो तो श्रेष्ठ होताहै ॥ ३०९ ॥

यद्यगस्तेरुदयनेवर्षादर्पायजायते ।
सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिर्नचेद्भिक्षापिदुर्लभा ॥ ३१० ॥

यदि अगस्त्यके उदय होनेपर वर्षा हो तो दर्प उत्पन्न करती है । और सब प्रकारके खेतियां भी उत्पन्न होती हैं । और वर्षा न हो तो भिक्षाभी दुर्लभ होजाती है ॥ ३१० ॥ (इति) ॥

१२) अथ गुरूदयमानेन वर्षज्ञानम् ।

स्यादूर्जादिषुमासेषुवह्निभादिद्वयंद्वयम् ।
उपांत्यपंचमांत्येषुनक्षत्राणांत्रयंत्रयम् ॥
अस्मिन्नभ्युदितोजीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ३११इति

(१२) "गुरूदयमानका वर्ष"–जिस समय गुरु उदय हो उस समय वह जिस नक्षत्रपर हो और उस नक्षत्रका जो महीना हो वही महीना गुरूदय मानसे वर्ष कहाताहै। यथा–कृत्तिका–रोहणी पर गुरु हो तो 'कार्तिक संज्ञक वर्ष होताहै । मृ०आ०पर हो तो मार्गशीर्ष पु. पु. से पौष । आश्लेषा मघासे माघ । पू. उ. ह. से फाल्गुन। चि. स्वातीसे चैत्र । वि. अनु. से वैशाख ज्ये. मू. से ज्येष्ठ । पू. उ. से आषाढ । श्र. ध. से श्रावण । श. पू. उ. से भाद्रपद ।और रे.अ.भ. से आश्विन संज्ञक वर्ष होताहै ॥ ३११ ॥

गुरूदयमानीयवर्षफलम् ।

स्यात्पीडाकार्त्तिकेवर्षेवह्निगावोपजीविनाम् ।
शस्त्राग्नेश्वभयंवृद्धिःपुष्पकौसुंभजीविनाम् ॥३१२॥

"इन वर्षोंका फल"–इस प्रकारसे आयाहुआ कार्तिक वर्ष हो तो सुनार–भड़भूंजे और ग्वालोंको शस्त्र तथा अग्निके घातादिकी पीडा हो और पीले तथा लाल पुष्प बेंचनेवालोंकी वृद्धि हो ॥ ३१२ ॥

मार्गवर्षेत्वल्पवृष्टिःसस्यहानिरनेकधा ।
राजानोयुद्धनिरताअन्योन्यवधकांक्षिणः ॥३१३॥

मार्गशीर्ष वर्ष हो तो वर्षा कम हो–खेती नष्ट हो और परस्परमें मारडालनेकी इच्छा करके राजा लोग युद्धमें फँसें ॥ ३१३ ॥

पौषेब्देसुखिनः सर्वेगुरुपूजारताजनाः ।
क्षेत्रंसुभिक्षमारोग्यंवृष्टिःकृषकसम्मता ॥ ३१४ ॥

पौष नामक वर्ष हो तो सब लोग सुखी रहें. बड़ोंकी तथा गुरुकी

पूजामें रत रहैं । खेती अच्छी होनेसे सुभिक्ष और आरोग्य हो तथा कृषकोंकी इच्छानुसार वर्षा हो ॥ ३१४ ॥

माघेसंपत्करोब्दःस्यात् सर्वभूतहितोदयः ।
सम्यग् वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं च प्रजायते॥३१५॥

माघ वर्ष हो तो सब प्राणियोंके हितका उदय हो और वर्षा भले प्रकारसे वर्षे ॥ ३१५ ॥

फाल्गुनाब्दे चौरभीतिःस्त्रीणां दुर्भगता भृशम् ।
क्वचिद्वृष्टिःक्वचित्सस्यं क्वचिद्भीरीतयःक्वचित्३१६॥

फाल्गुन वर्ष हो तो चौरभय, स्त्री दुर्भग, कहीं वर्षा, कहीं अन्न और कहीं ईति, कहीं भयहो ॥३१६ ॥

चैत्राब्देभूभुजः स्वच्छाःस्त्रीषुचाल्पप्रजाभवेत् ।
अल्पवृष्टिःस्वल्पधान्यंप्रजानांव्याधितोभयम्३१७

चैत्रमें राजा स्वच्छ, स्त्री स्वल्पप्रजा, वर्षा कम, खेती न्यून और प्रजामें व्याधि हो ॥ ३१७ ॥

आषाढमें राजा लोग सदैव कलह करनेमें इच्छित रहें । कहीं ईति कहीं भीति, कहीं वृद्धि और कहीं वर्षा हो ॥ ३२० ॥

श्रावणाब्देधराभातित्रिदशस्पर्द्धिमानवैः ॥
धरापुष्पफलैर्युक्तापरिपूर्णाध्वरादिभिः ॥ ३२१ ॥

श्रावण वर्षमें पृथ्वी ऐसी शोभित हो कि जिससे इन्द्रपुरी भी ईर्षा करे । पृथ्वीपर कई प्रकारके फल पुष्प बहुत उत्पन्न हों और यज्ञादिसे परिपूर्ण रहे ॥ ३२१ ॥

अब्देभाद्रपदेवृष्टिःक्षेमारोग्यंक्वचित्क्वचित् ।
सर्वसस्यसमृद्धिःस्यान्नाशमेत्यपरंफलम्॥ ३२२ ॥

भाद्रपद वर्षमें कहीं २ वर्षा तथा क्षेम आरोग्य हो । और धान्य वृद्धि तथा फलनाश हो ॥ ३२२ ॥

अब्देत्वाश्वयुजेत्यर्थंसुखिनःसर्वजन्तवः ।
मध्यमंपूर्वसस्यंस्यात्परिपूर्णाविपच्यते ॥ ३२३॥

और आश्विन संज्ञक वर्ष हो तो सब प्राणी सुखी रहें । प्रथम धान्य (जौ गेहूँ) कम हों और सब प्रकारसे परिपूर्णता हो॥ ३२३॥ इति॥

(१३) अथविंशोपकानयनम् ।

शाकस्त्रिगुण्योनगभाजितश्चशेषंद्विनिघ्नंशरसंयुतं च । लब्धंचशाकंचपुनःप्रकल्प्यपूर्वोक्तवत्स्युः खलुविश्वकाख्याः ॥ वर्षाचधान्यंतृणशीततेजो वायुश्ववृद्धिःक्षयविग्रहौच ॥ ३२४ ॥

(१३) "विंशोपका"-(अर्थात् सम्वत्में वर्षा आदि कितने विश्वा होंगे यह जाननेका विधि ।) शाकको तीनसे गुणकर सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उसे दुगुना करके पांच युक्त करे तो वर्षाके विश्वा होते हैं । आगे पूर्वोक्त लब्धिको शक मानकर फिर उसी

प्रकार के तो धान्य, तृण, शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह इनके विश्वा आजाते हैं ॥ ३२४ ॥

शाकंचवेदगुणितंसप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषंद्विघ्नंत्रिभिर्युक्तंप्रोक्तंविश्वाख्यसंज्ञकम् ॥३२५॥
क्षुधातृषातथा निद्राचालस्यंचोद्यमस्तथा ।
शान्तिःक्रोधस्तथादंभोलोभोमैथुनमेवच॥ ३२६ ॥
ततस्तुरसनिष्पत्तिःफलनिष्पत्तिरेवच ।
उत्साहःसर्वलोकानांज्ञातव्यंनिश्चितंबुधैः ॥ ३२७॥

शाकेको चारसे गुण कर सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उसको दुगुना करके तीन मिलानेसे क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दंभ, लोभ, मैथुन, रसनिष्पत्ति, फलनिष्पत्ति और सब लोकोंका उत्साह इनके विश्वा जाने जाते हैं ॥ ३२५।३२६।३२७

शाकाब्दं वसुभिर्निघ्नंनवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषंतुद्विगुणीकृत्यरूपमत्रापियोजयेत् ॥ ३२८ ॥
धर्मपापंचपुण्यंचव्याधिव्याधिविनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारोमरणंजनिरेवच ।
देशस्योपद्रवंस्वास्थ्यंचौराकुलभयंतथा ॥३२९ ॥

शाकेको आठसे गुणकर नौका भाग देनेसे जो शेष बचे उनको दुगुना करके एक मिलानेसे धर्म, पाप, पुण्य, व्याधि, व्याधिनाश आचार, अनाचार, मरण, जन्म, देशोपद्रव, देशस्वस्थता, चौरभय और चौरनाश इनके विश्वा ज्ञात होते हैं ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥

शकःपञ्चभिःसप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्घाहतःसप्तभक्तावशिष्टः ॥ द्विनिघ्नंत्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जगर्भांडजस्वेदजानांहिविंशोपकाःस्युः ॥ ३३० ॥

शकको चार जगह लिख कर प्रत्येक को पांचसे–सातसे–नौसे–और ग्यारहसे गुणकर सबमें प्रथक् प्रथक् सातका भाग देनेसे जो शेष रहें उनको दुगुने करके तीन मिलानेसे क्रमसे उद्भिज (वृक्ष लता बेलि, आदि), जरायुज (मनुष्य तथा गौ आदि पशु), अंडज (पक्षी तथा सर्पादि) और स्वेदज (पशीनेमें उत्पन्न होनेवाले जूं खटमल–आदि कीडे) इनके विश्वा मालूम हो जाते हैं ॥ ३३० ॥

(पंचांग कर्ताओंके हितनिमित्त यहां हम इनके उदाहरण और देते हैं । यथा–(१) शके १८४० को ३ से गुणा ५५२० और ७ का भाग देनेसे ७८८लब्ध और ४ शेष रहे । चारको दुगुने किये ८ और ५ मिलाये तो १३ हुए यह वर्षा१३ विश्वा हुई, आगे लब्ध ७८८ को शक मानकर शेष काम उसी प्रकार करनेसे धान्य तृण आदिके विश्वा आवेंगे । (२) शके १८४० को ४ से गुण ७३६० कर सातका भाग दिया तो १०५१ लब्धि और शेष ३ रहे शेष ३ को दुगुना करके तीन युक्त किये ९ क्षुधाके विश्वा हुए । इसी प्रकार आगेभी जानना चाहिये । (३) शकेको ८ से गुण १४७२०कर नौका भागदिया १६३७ लब्ध हुए । शेष १को दुगुना करके १ मिलाया ३ हुए यह उसके विश्वा है । आगे इस प्रकार पापादिके विश्वा आते हैं । और (४) शके १८४० को चार जगह ५।७।९।११ से गुणा तो ९२०० । १२८८०।१६५६०।२०२४० हुए इनमे पृथक् पृथक् ७ का भाग देनेसे २ ।०।१। ३ बचे इनको दुगुने कर ३ जोड़नेसे ७।३।१३।९ उद्भिजादिके विश्वा हुए । इनके सिवाय औरभी सब वस्तुओंके विश्वा लगाये जाते हैं किन्तु विस्तारभयसे यहां नहीं लिखे हैं । "संवत्के विश्वा"–कर्क संक्रांतिके दिन जो वार हो उससे जाने जाते हैं ।सूर्य हो तो१०चन्द्र हो तो२०मं.हो तो८बु. १२ बृ. १८ शु. १८ और शनिवार हो तो ५ विश्वा जानना

(१४) अथायव्ययसाधनम् ।

स्वस्वामिवर्षाधिपवत्सरैक्यं त्रिघ्नंशराढ्यंतिथिभक्तशेषम् । आयोथलब्धिस्त्रिगुणाशराढ्यातिथ्युद्धृताशेषमितोव्ययःस्यात् ॥ ३३१ ॥

(वर्षाणि) षट्सूर्येतिथयश्चन्द्रेह्यष्टौभूमिजकेतथा । सप्तदशेंदुपुत्रेचदशभास्करनन्दने ॥ ३३२ ॥ एकोनविंशतिर्जीवेराहौद्वादशकंभवेत् । एकविंशतिराख्याताशुक्रस्यापितथैवच ॥३३३॥ (इति) वर्षप्रबोध-पूर्वभागे प्रथमस्थलः ।

(१४) "लाभ खर्च जाननेकी क्रिया"-राशिके स्वामीके वर्षों और संवत्के राजाके वर्षोंको जोड़कर तीनसे गुणके पाँच मिलाकर पन्द्रहका भाग देनेसे जो शेष हो सो लाभ और जो लब्धि हो उसको तिगुनी करके पांच मिलाकर पन्द्रहका भाग देनेसे जो शेष रहे सो खर्च होता है यथा-राशि मेष इसके स्वामी मंगलके वर्ष ८, राजा शनिके वर्ष १०, इनको जोड़े १८ हुए । तीनसे गुने५४हुए ५ मिलाये ५९ हुए १५ का भाग दिया१४शेष रहे यह मेषका लाभ है । फिर लब्धि ३ को तीनसे गुणकर पांच मिलाके १५ का भाग दिया तो शेष १४ रहे यह मेषका खर्च हुआ इसी प्रकार सब राशियोंमें जानना चाहिये । स्मरण रहे कि लाभ खर्च विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी इन दोनों मतोंसे लगाया करतेहैं सो जिस मतके लगाने हों उसी मतके वर्ष लेने चाहिये । विंशोत्तरीके सू. ६।चं. १०।मं.७। रा. १८।वृ. १६।शनि १९।बु. १७।शुक्रके २० वर्ष होतेहैं । अष्टोत्तरीमतमें सूर्यके ६ । चं. १५ । मं. ८ । बु. १७ । श. १० । बृ.१९। रा.१२ और शुक्रके २१ वर्ष होते हैं । ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥

इति श्रीहनूमानशर्मासंग्रहीत संवत्सर फल प्रबोधके पूर्व भागका प्रथम स्थल समाप्त ।

(१) अथ खेचरचारे सूर्यचारः ।

साम्प्रतमयनंसवितुः कर्कटकाद्यंमृगादितश्चान्यत्।
उक्ताभावोविकृतिःप्रत्यक्षपरीक्षणैर्व्यक्तिः ॥ १ ॥

(१) "अब खेचरचार में 'सूर्यचार'का विचार लिखते हैं।" वर्तमानमें सूर्यके कर्कादि और मकरादिसे दक्षिणायन और उत्तरायण यह दो अयन होतेहैं। कथित रीतिके अभावको विकृति कहते हैं। अतः प्रत्यक्ष परीक्षित युक्ति प्रकाशित करते हैं ॥ १ ॥

दूरस्थचिह्नवेधादुदयेस्तमयेपिवासहस्रांशो।
छायाप्रवेशनिर्गमचिह्नैर्वामण्डलेमहति ॥ २ ॥

सूर्यके उदयास्त समयमें महामण्डलकी दूरीके चिह्नोंके वेधसे अथवा छायाके प्रवेश और निर्गमके चिह्नोंसे अयनपरिवर्तनका ज्ञान होताहै ॥ २ ॥

अप्राप्यमकरमर्कोविनिवृत्तोहन्तिसापरांयाम्याम् ।
कर्कटमसम्प्राप्तोविनिवृत्तश्चोत्तरांसैन्द्रीम् ॥ ३ ॥

यदि सूर्य मकरमें विना पहुँचेही लौट आवे तो दक्षिणका नाश होताहै। और कर्कमें विना पहुँचेही लौट आवे तो पूर्वसहित उत्तर दिशाका नाश होताहै ॥ ३ ॥

उत्तरमयनमतीत्यव्यावृत्तःक्षेमसस्यवृद्धिकरः ।
प्रकृतिस्थश्चाप्येवंविकृतगतिर्भयकृदुष्णांशुः ॥४॥

यदि उत्तरायणको उलांघ कर सूर्य लौटे तो क्षेम और सस्य(अन्न) वृद्धि करताहै। इसीको प्रकृतिस्थ कहते हैं यदि इसमें विकार हो तो भय होताहै ॥ ४ ॥

अमलवपुरवक्रमण्डलःस्फुटविपुलामलदीर्वदीधितिः । अविकृततनुवर्णचिह्नभृज्जगतिकरोति शिवंदिवाकरः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य निर्मल देहवाला–गोल मण्डलवाला–स्पष्ट और बहुतसी निर्मल लम्बी किरणोंवाला हो तथा सूर्यके गोल बिंबमें कुछभी विकार न हो रंगभी साफ हो और किसी भांतिका उसमें कोई चिह्न न हो तो ऐसे सूर्यनारायण जगत्का कल्याण करते हैं ॥ ५ ॥

असितविचित्रनीलपरुषोजनघातकरः ।
खगमृगभैरवखररुतेश्वनिशाव्यमुखे ॥ ६ ॥

यदि सूर्यबिंब काला हो,विचित्र हो, नीला होकर भयंकर दीखता हो और सायंकालमें पक्षी–हिरन–गीदड़े–और गधे रोवें तो मनुष्योंका घात करता है ॥ ६ ॥

दिवसकृतःप्रतिसूर्योजलकृदुदग्दक्षिणेस्थितोऽनिलकृत् । उभयस्थःसलिलभयंनृपमुपरिनिहन्त्यधोजनहा ॥ ७ ॥

"प्रतिसूर्य"–यदि सूर्यका प्रतिसूर्य दीखे (अर्थात् उदयकालमें जो लाल रंगका दूसरी तर्फमें एक सूर्य जैसाही और कुछ दीखा करता है वह) उत्तरमें दीखे तो वर्षा होती है । दक्षिणमें दीखे तो आंधी तूफान आते हैं । सूर्यके दोनों बाजुओंमें दीखे तो जलभय (महावृष्टि) हो सूर्यके ऊपर दीखे तो राजाका नाश, और नीचे दीखे तो जननाश होताहै ॥ ७ ॥

सूर्यस्यविविधवर्णाःपवनेनविघट्टिताःकराःसाभ्रे ।
वियतिधनुःसंस्थानायेदृश्यन्तेतदिन्द्रधनुः ॥ ८ ॥

"इन्द्र धनुष"-सूर्यकी अनेक रंगोंकी किरणें पवनसे रुक कर बादलवाले आकाशमें जो धनुष जैसी दीखती हैं उसीको इन्द्र धनुष कहतेहैं ॥ ८ ॥

विदिगुद्भूतंदिस्स्वामिनाशनंव्यभ्रजंमरककारि ।
पाटलपीतकनीलैःशस्त्राग्निक्षुत्कृतादोषाः ॥ ९ ॥

ऐसा इन्द्र धनुष दिशाओंकी कोणोंमें (अग्नि-नैर्ऋत्य-वायु-और ईशानमें)दीखे तो तत्संहवर्ती दिशाके राजाका नाश होता है । और यदि विनाही मेघके इन्द्रधनुष हो तो मरी पड़ती है। पाटल (पाढलके फूल समान) अथवा पीले रंगका या नीले रंगका हो तो शस्त्र-अग्नि-भूखे मरनेका भय होता है ॥ ९ ॥

जलमध्येऽनावृष्टिर्भुविसस्यवधस्तरौस्थितेव्याधिः
वल्मीकेशस्त्रभयंनिशिसचिववधायधनुरैन्द्रम्॥ १०॥

वह इन्द्रधनुष यदि जलके बीचमें दीखे तो अनावृष्टि हो-पृथ्वी पर दीखे तो खेतीका नाश हो, वृक्षपर दीखे तो व्याधि हो-वमई पर दीखे तो शस्त्र भय हो और रात्रिमें दीखे तो मन्त्री (मुशाहिबों)का वध हो ॥ १० ॥

सूर्येन्दुपरिवेषाणांफलंवक्ष्येस्वयंततः ।
श्वेतवर्णेभवेद्द्रव्यंपीतवर्णेरुजाकरः ॥ ११ ॥

"परिवेष"-कभी कभी सूर्य अथवा चन्द्रमाके चौतर्फ गोल मण्डल दिखाई दिया करता है उसको परिवेष अथवा कुंडाला कहते हैं । वह परिवेष सफेद रंगका हो तो देशमें धन धान्य हों । पीले रंगका हो तो रोग हों ॥ ११ ॥

रक्तवर्णेभवेद्युद्धंकृष्णवर्णेनृपक्षयः ।
नीलवर्णेमहावृष्टिर्धूम्रवर्णेत्वधूसरी ॥ १२ ॥

लालरंगका हो तो युद्ध हो। काले रंगका हो तो राजा मरे ।
नीले रंगका हो तो बड़ी भारी वर्षा हो। धूँयेके समान हो तो धूस-
रता हो ॥ १२ ॥

स्वल्पेस्वल्पफलंसर्वंबहूनांतुफलंमहत् ।
जलद्रावेमहावृष्टिर्बिंबनाशेनृपक्षयम् ॥ १३ ॥

इनमें यदि न्यूनता हो तो फलमेंभी न्यूनता और अधिकता हो
तो फलमेंभी अधिकता हो। यदि उसमें जल कण टपके तो महावृष्टि
हो और वह गोलाकार खण्डित हो तो राजाका नाश हो ॥ १३ ॥

अथसंक्रांतिफलम् ।

यदैकराशिपरिभुज्यसूर्योराश्यंतरंयातिनभो-
विभाभे। संक्रांतिसंज्ञंखलुकालमेनमाचक्षतेशा-
स्त्ररहस्यविज्ञाः ॥ १४ ॥

संक्रांति फलबोधकचक्रम् ।						
वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
र.	उग्र	घोरा	शूद्रसुखा	पूर्वाह्न	वि. रा. सु.	पूर्वे
सो.	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्यसुखा	मध्याह्न	वैश्यसुख	पश्चिमे
मं.	चर	महोदरी	चौरसुखा	अपराह्न	शूद्रसुख	दक्षिणे
बु.	मैत्र	मन्दाकिनी	नृपसुखा	प्रदोष	पिशाचसुख	दक्षिणे
बृ	ध्रुव	मन्दा	द्विजसुखा	अर्धरात्री	राक्षससुख	उत्तरे
शु	मिश्र	मिश्रा	पशुसुखा	अपररात्री	नटसुख	पूर्वे
श	दारुण	राक्षसी	चांडालसुखा	प्रत्यूष	पशुपालसुख	पश्चिमे

"संक्रांति फल"--आकाश मण्डलमें सूर्य जब एक राशिको भोग

कर दूसरीमें जाता है। उसी समयको पंडित लोग संक्रांति कहते हैं ॥ १४ ॥

मेषे रवौ तुलाचन्द्रे षण्मासे धान्यलाभदः ।
वृषेऽर्के वृश्चिके चन्द्रस्तुर्ये मासेन्नलाभदः ॥ १५॥

वह संक्रांति जिस समय मेष राशिपर अर्क अर्थात् सूर्य मेषराशि पर आवे उस समय तुलका चन्द्रमा हो तो छः महीने धान्य लाभ हो। वृषका सूर्य आवे उस समय वृश्चिकका चन्द्रमा हो तो चार महीने अन्नका लाभ हो ॥ १५ ॥

मिथुनेर्के धनुश्चन्द्रस्तिलतैलान्नसंग्रहात् ।
मासैश्चतुर्भिर्लाभाय सक्रूरैश्चेन्न विद्यते ॥ १६ ॥

मिथुन पर सूर्य आवे तब धनका चन्द्रमा हो तो तिल तैलान्नके संग्रहसे चार महीनेमें लाभ हो किन्तु क्रूर ग्रह हों तो नहीं हो ॥१६॥

कर्केर्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने ।
घोरंयावच्चतुर्मासं दासीकृतधनेश्वरः ॥ १७ ॥

कर्क पर सूर्य आवे तब मकरका चन्द्रमा हो तो घोर दुर्भिक्ष हो, चार महीनेतक धनवानोंको भी नौकर बनादे ॥ १७ ॥

षण्मासाद्द्विगुणो लाभः सिंहेर्के कुम्भचन्द्रतः ।
मीने चन्द्रश्च कन्यार्के छत्रभंगश्च विग्रहः ॥१८॥

सिंह पर सूर्य आवे तब कुम्भका चन्द्रमा हो तो छः महीनेमें दुगुना लाभ हो। कन्या पर सूर्य आवे तब मीनका चन्द्रमा हो तो छत्र भंग और विग्रह हो ॥ १८ ॥

तुलार्के चंद्रमा मेषे पंचमे मासि लाभदः ।
वृश्चिकेर्के वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसंग्रहः ॥ १९ ॥
प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासद्वयांतरे ।
मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पंचमासान्नलाभदः ॥ २० ॥

तुल संक्रांतिके समय मेषका चन्द्रमा हो तो पांचवें महीनेमें लाभ हो । वृश्चिक संक्रांति समय वृषका चन्द्रमा हो तो तिल तैलान्नके संग्रहसे दो महीनेमें दुगुणा लाभ हो । धनार्कके समय मिथुनका चन्द्रमा हो तो पांच मासमें अन्न लाभ हो ॥ १९ ॥ २० ॥

कार्पासघृतसूत्रादेः पंचमे मासि लाभदः ।
मृगेर्कैकर्कशीतांशुःपांसुलानांविनाशकः ॥ २१ ॥

कपास-घी-और सूत आदि पांच महीनेमें लाभ दें । मकर पर सूर्य आवे तब कर्कका चन्द्रमा हो तो कुलटा (खोटी स्त्रियों) का नाश हो ॥ २१ ॥

सिंहेन्दुः कुम्भभानौ च तुर्ये मासेन्नलाभदः ।
कन्याचन्द्रेपि मीनेर्कस्ताद‍ृशीधान्यसंग्रहात्॥२२॥

कुंभ संक्रांतिके समय सिंहका चन्द्रमा हो तो चौथे मासमें अन्न लाभ हो । और मीन राशि पर सूर्य आवे उस समय कन्यापर चन्द्रमा हो तो मका, जुवार आदिके संग्रहसे चार महीने में लाभ-हो ॥ २२ ॥ (इति)

नीचे लिखे कोष्ठकमें संक्रान्तिके वाहन फल जानना।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थित	बैठा	खडा	खडी	सूती	बैठी	खडी	बैठा	सूता	खडी	सूती	खडा
फल	मध्य	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्यम	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेढा	बैल	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	बैल	मेढा	गर्दभ	ऊँट	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वराह
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पाडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कम्बल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भुशुण्डी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तोकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रान्न	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	माटी	गोरोचन	आंवले	हलद	सुरमा	सिन्दूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अन्त्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्लिका	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलम	पुखराज	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पर्ण	हरित	भूजपत्र	सात	पा०वर्ण	नील	कृष्ण	अरुन	नलकंठ	पाडुर
वय	बाला	कुमारी	गतालका	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अतिवन्ध्या	पुत्रवती	सन्या

जिस करणकी संक्रांति हो उसके वाहनफल चक्रसे समझना और संक्रांति जिस वाहनपर स्थित हो तथा जो वस्तु धारण करै उसीकी हानि समझना.

स्यात्कार्तिकेवृश्चिकसंक्रमाहेसूर्येमहर्घंभुविशुक्लवस्तु। म्लेच्छेषुरोगान्मरणायमंदःकुजःपरधान्यरसग्रहाय ॥ २३ ॥ लाभस्तुतस्यत्रिगुणस्त्रिमासान्बुधेचपूगादिफलं महर्घम्।गुरौचशुक्रेतिलतैलमूत्रकार्पाससूत्रादिमहर्घतास्यात् ॥ २४ ॥

"संक्रांति समयके मास तथा वारफल"-(प्रायः व्यापारादि विषयमें दीपावली पीछे वर्ष बदलता है अतः इसी अभिप्रायसे यहाँ कार्तिकादि महीनोंके क्रमसे फलका उल्लेख हुआ है।) यदि कार्तिक महीनेमें वृश्चिककी संक्रांति दीतवारको अर्क तो सफेद वस्तुएँ महँगी हों, म्लेच्छोंमें रोग हो तथा मृत्यु हो। मंगल या शनिवारी हो तो धान्य तथा रसके संग्रह करनेसे तीन महीने पीछे तिगुना लाभ हो बुधवार हो तो सुपारी नारियल आदि महँगे हों और बृहस्पति तथा शुक्रवारी हो तो तिल तैल रुई कपास और सूत आदि महँगे हों॥२४॥

धनुषितरणिभोगेमार्गशीर्षेर्कभौमोशनिरविपविषारश्चौडकर्णाटगौडाः । सुरगिरिमलयान्तामालवास्तेपुराज्ञांरणमरणविशेषाद्विग्रहायत्रयोऽमी ॥२५॥

यदि मार्गशीर्षमें धनकी संक्रातिके दिन दीत, मंगल, शनिवार हो तो चौल-कर्णाटक-गौड-देवगिरि (सुमेरुपर्वत) मलय-और मालव इन देशोंमें राजाओंमें रणमरण तथा विग्रह विशेष हो॥२३॥२५॥

कार्पाससूत्रादितिलाज्यतैलमहर्घतालाभदशासुवर्णात् । शैत्यप्रवृद्धिर्बसोमवारेकिंचिद्विनाशोऽप्यतएवधान्ये ॥ २६ ॥

कपास सूत तिल घी और तैल महँगे हों सुवर्णमें लाभ हो और ठंढ अधिक पड़े तथा सोमवार हो तो खेतीका कुछ नाश हो ॥२६॥

बुधेगुरौवान्नसमर्घतास्याच्छुक्रेपुनर्म्लेच्छजनप्रमोदः॥
पौषेमृगेऽर्केशनिनाभयायप्रभाकृताक्षत्रिकुलक्षयाय॥

वही संक्रांति बुध या गुरुवारी हो तो अन्न सस्ता हो शुक्रवारी हो तो म्लेच्छों को आनन्द दे और पौषमें मकर संक्रांति शनिवारी हो तो भय तथा क्षत्रिय कुलका क्षय हो ॥ २७ ॥

बुधेसुदायुद्धमुशन्तिश्रेष्ठागुरौविरोधंस्वकुलेद्विमास्याम् । युगन्धरीमल्लमसूरधान्येहिमाद्विनाशश्च-णकेपिसोमे ॥ २८ ॥

बुधवारी हो तो प्रसन्नता और युद्ध हो । गुरुवारी हो तो दो महीने तक निजकुलमें विरोध रहे । युगंधरी, मल्ल, मसूर और चने इनका उपल वृष्टिसे नाश हो और सोमवारी हो तो भी यही फल हो ॥ २८ ॥

देवेगुरौवादलएवशुक्रेमाघेऽथकुंभेदिनकृत्प्रसंगे ।
पृथ्वीभयंविग्रहएवघोरंचतुष्पदानामतिशायकष्टम्॥

माघमें कुंभकी संक्रांतिके दिन बृहस्पति या शुक्रवार हो तो पृथ्वी-पर घोर भय विग्रह हो । और चौपायोंको अत्यन्त कष्ट हो ॥ २९॥

मीनेर्केसतिफाल्गुनेशनिवशात्सामुद्रिकार्थक्षयो
भौमेहेम्निसलाभतारणभटाःसूर्येभटानिष्टताः ।
तैलाज्यादिरसामहर्घदिवसाश्चन्द्रेजनानांसुखं
शुक्रेचंद्रसुतेसुभिक्षमतुलंरोगप्रयोगोगुरौ ॥ ३० ॥

फाल्गुनमें मीन संक्रांतिको शनिवार हो तो समुद्रीय द्रव्यों (सीप-मोती-शंखादि) का नाश हो,मंगल हो तो सोनेमें लाभ हो, रवीवार हो तो शूर वीर रणमें जुटें और तेल घी आदि महँगे हों, सोमवार हो तो मनुष्योंको सुख हो शुक्र बुध हो तो अत्यन्त सम-र्घता हो और बृहस्पतिवार हो तो रोगका प्रयोग हो ॥ ३० ॥

चैत्रेमेषरवौतथाक्षितिसुतेमंदेमहर्घस्थितिर्गोधूमेच-
णकेतथैवशशिनाकार्पासतैलादिषु । जीवःक्षत्रिय-
जीवनाशनकरः शुक्रोऽथवाचंद्रजः सर्ववस्तुमह-
र्घमेवकुरुतेवैवाहसोत्साहताम् ॥ ३१ ॥

चैत्रमें मेष संक्रांतिके दिन रवि तथा मंगल शनिवार हो तो गेहूं तथा चणोंकी महँगाई हो । सोमवार हो तो कपास और तैल आदि महँगे हों । बृहस्पति वार हो तो क्षत्रियोंका नाश हो और शुक्र तथा बुधवार हो तो सब वस्तुएँ महंगी हों किन्तु विवाहादि उत्साह हो ॥ ३१ ॥

वैशाखेवृषसंक्रमेशनिकुजादित्याहिदुर्भिक्षदादेशे
क्लेशरुचिर्महर्घविषयःप्राप्यानगोधूमकाः। कार्पा-
सेफलवस्तुनीक्षुरसजेमांजिष्ठकेत्यादरः सोमेधा-
न्यमहर्घताकविगुरूतेषुप्रियाः स्थू रसाः ॥ ३२ ॥

वैशाखमें वृष संक्रांति शनि रवि कुज वारी हो तो देशमें दुर्भिक्ष हो । लोगोंकी रुचि क्लेशमें हो और गेहूंका दाना नहीं मिले । कपास फलवस्तु-ईखके गुड़ शक्कर-और मंजीठ इनका आदर हो अर्थात् यह अधिक महँगे हों । सोमवार हो तो धान्य महँगे हों, शुक्र बृहस्पति-वारी हों तो इनके मिष्टरस उत्पन्न हों ॥ ३२ ॥

ज्येष्ठेश्रीमिथुनार्कतःशनिकुजादित्येषुपापाशयोरोगे-
ग्निज्वलनादिजंभयमपिप्रायोमहर्घाःकणाः । संतुष्टो
वसुधासुधाकरसुतेवस्तुप्रियंसिंधुजंदुर्भिक्षंशशिजी-
वभार्गववलात्सार्वत्रिकंसूत्रताम् ॥ ३३ ॥

जेठमें मिथुन संक्रांतिके दिन शनि मंगल रविवार हों तो पाप फैले, आग लगे, रोग बढ़े, भय हो और सब अन्न महँगे हों । बुध-

वार हो तो लोग प्रसन्न हों, सामुद्रिक वस्तुएँ प्रिय हों और चंद्र गुरु शुक्रवार हो तो सर्वत्रसे दुर्भिक्ष दूर हो ॥ ३३ ॥

आषाढे कर्कसंक्रान्तौक्रूरवारेतिवर्षणम् ।
क्षत्रियाणांक्षयोधान्यंगुरौतुप्रबलोनिलः ॥ ३४ ॥

आषाढमें कर्क संक्रांतिको क्रूर वार हो तो अधिक वर्षा हो, क्षत्रियोंका क्षय हो, धान्य हो और गुरुवार हो तो हवा अधिक वेगसे चले॥ ३४॥

सोमेसौम्येतथाशुक्रेजलस्नानंभुवस्तलम् ।
धान्यंसमर्घतांयातिपरदेशाज्जनेसुखम् ॥ ३५ ॥

सोम शुक्र बुधवारी हो तो पृथ्वीपर जल हो, धान्य सस्ते हों और विदेशी लोग सब सुखी हों ॥ ३५ ॥

सिंहेर्केश्रावणेभौमेशनौवावाहवृष्टये ।
तुपधान्यविनाशायवायुःपीडाकरोरवौ ॥ ३६ ॥

श्रावणमें सिंह संक्रांतिके दिन शनि भौमवार हो तो वर्षा हो, तुप धान्यका नाश हो । रविवारी हो तो वायु पीडाकारक हो॥ ३६॥

समर्घमाज्यंदेवेज्येऽगुरुतैलमहर्घता ।
सोमेशुक्रेबुधेछत्रभंगकृल्लोकतोषदः ॥ ३७ ॥

बृहस्पतिवारी हो तो घी सस्ता हो, तेल महँगा हो । सोम शुक्र बुधवारी हो तो छत्रभंग हो किंतु संसारको संतोष मिले ॥ ३७ ॥

कन्यार्कतोभाद्रपदेल्पवृष्टिःशनेर्जने स्याद्बहुधान्यनाशः । कुजाद्रुजाद्यावहुधेतयोवाऽवृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घतान्ने ॥ ३८ ॥

भादवामें कन्याकी संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो अल्प वृष्टिसे धान्यनाश हो, मंगलवारी हो तो रोगादि हों, ईतिभय हो और अल्प वृष्टिसे महँगाई हो ॥ ३८ ॥

जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण क्रमेण सौख्यं न बहु-
श्रमेण । अमुद्रसामुद्रकभूपयुद्धं किंचिद्विनाशो-
पि च पश्चिमायाम् ॥ ३९ ॥

बृहस्पति सोम तथा शुक्रवारी हो तो क्रमके पराक्रमसेही सौख्य हो, विशेष परिश्रमसे नहीं हो । और राजाओंमें अमुद्र तथा सामुद्र युद्ध होनेसे पश्चिममें कुछ नाश हो ॥ ३९ ॥

आश्विने रवितुलाधिरोहणे भास्करो द्विजगवा-
दिदुःखदः । राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सर्षपः
खलु महर्घतां वदेत् ॥ ४० ॥

और आश्विनमें यदि तुल संक्रांतिके दिन रीतवार हो तो ब्राह्मण तथा गायोंको दुःख हो । शनिवार हो तो राजाओंमें विग्रह करे और सरसों महँगी हो ॥ ४० ॥

वसुधा बहुधान्यसंभवाद्वसुधापूर्णसुधा बुधाश्र-
यात् । गुरुणातिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृ-
गुसूनुना तथैव ॥ ४१ ॥

बुधवार हो तो पृथ्वीपर अनेक प्रकारके धान्य बहुत हों और गुरु-चन्द्र-शुक्रवार हो तो अन्न सस्ता हो ॥ ४१ ॥

चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्लोके बहुतरं सुखम् ॥ ४२ ॥

"संक्रांति समयकी वर्षाका फल"-यदि चैत्रके महीनेकी संक्रांतिको मेघ वर्षे तो अन्न अच्छा उत्पन्न होता है तथा लोकमें बहुत सुख होता है ॥ ४२ ॥

वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तौवृष्टिर्मिश्रफलाभवेत् ।
अर्घं महर्घं ज्ञातव्यं दुर्भिक्षं नैवमादिशेत् ॥ ४३ ॥

वैशाख और ज्येष्ठकी संक्रांतिको वर्षा होनेसे मिला हुआ फल होता है। कभी तेजी और कभी मन्दी हो, दुर्भिक्ष नहीं हो ॥ ४३॥

यदि स्याज्ज्येष्ठपंचम्यांवृषसंक्रमणादनु।
दिनद्वयान्तर्जलदस्तदासुभिक्षनिर्णयः ॥ ४४ ॥

यदि जेठकी पंचमीको वृष संक्रांतिसे दो दिनके भीतर जल वर्षे तो सुभिक्ष हो ॥ ४४ ॥

आषाढे चैव सक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः।
व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ॥ ४५ ॥

आषाढकी संक्रांतिको मेघ वर्षे तो घोर व्याधि उठती है ॥ ४५॥

श्रावणेचैवसंक्रांतौयदिवर्षतिवारिदः।
अनन्तधान्यहानिःस्याद्भवेन्मेघमहोदयः ॥ ४६ ॥

श्रावणकी संक्रांतिको वर्षा हो तो धान्यकी अनन्त हानि हो४६॥

मासे भाद्रपदे प्राप्ते संक्रान्तौ यदि वर्षति।
बहुरोगाकुलो लोक आश्विने शोभनं पुनः ॥४७॥

भादोंकी संक्रांतिको वर्षा हो तो लोग रोगोंसे व्याकुल हों ॥ ४७ ॥

आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये।
राजयुद्धं प्रजाःस्वस्थाधान्यैरापूर्यते जगत् ॥४८॥

आश्विनकी संक्रांतिको वर्षा हो तो राज्यमें युद्ध प्रजामें सुख और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥ ४८ ॥

कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति।
मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ॥ ४९ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्षकी संक्रांतियोंको वर्षे तो वर्ष मध्यम हो, पौषमें सुभिक्ष हो ॥ ४९ ॥

पौषमासस्य संक्रान्तौ यदा मेघमहोदयः ।
बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ॥ ५० ॥

पौषकी संक्रांति को वर्षा हो तो गायोंके दूध बहुत हों और अन्नभी बहुत हों ॥ ५० ॥

माघमासे च संक्रान्तौ यदि वर्षति वारिदः ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं गेहेगेहे महोत्सवम् ॥ ५१ ॥

माघकी संक्रांतिको वर्षा हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और उत्सव हों ॥ ५१ ॥

फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।
विचित्रं जायते सस्यं माधवज्येष्ठयोरपि ॥ ५२ ॥

फाल्गुनकी संक्रांतिको वर्षा हो तो वैशाख ज्येष्ठमें विचित्र धान्य हो ॥ ५२ ॥

संक्रांतेः विशेषफलम् ।

कार्त्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ।
संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ॥५३॥

"संक्रांति विषयक विशेष फल"—कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, चैत्र, श्रावण और भाद्रपद इन छः संक्रांतियोंके दिन वर्षा हो तो अशुभ होती है ॥ ५३ ॥

पौषे माघे च वैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषु च ।
संक्रांतौ वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः ॥ ५४ ॥

और पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ और आश्विन इन महीनोंकी संक्रांतियोंके दिन वर्षा हो तो सब प्रकारसे शुभ है॥५४॥

नन्दायां मेषसंक्रांतिरल्पवृष्टिकरी मता ।
भद्रायां राजयुद्धाय जयायां व्याधये नृणाम्॥ ५५॥

रिक्तायां पशुघातायपूर्णायांधान्यवर्द्धिनी ।
इत्येतद्बालबोधोक्तं बहुशास्त्रेषु संमतम् ॥ ५६ ॥

मेष संक्रांति नन्दा तिथिमें हो तो कम वर्षा हो । भद्रामें हो तो राजयुद्ध हो । जयामें हो तो मनुष्योंमें व्याधि हो । रिक्तामें हो तो पशुघात हो । और पूर्णामें हो तो धान्यवृद्धि हो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

चैत्रेशनौत्रयोदश्यां यदिमीनेर्कसंक्रमः ।
वत्सरःस्यात्तदानिन्द्यःसद्योधान्यार्थनाशनः ५७॥

चैत्रकी तेरस शनिवारको यदि मीन संक्रांति अर्क तो वह वर्ष निन्द्य तथा शीघ्रही धान्य और द्रव्यका नाश करता है ॥ ५७ ॥

यद्दिने यार्कसंक्रांतिस्तद्राशौतद्दिनेशशी ।
जन्मवेधादयोनेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृद्दांगृहे ॥ ५८ ॥

जिस दिन जो सूर्य संक्रांति हो उस दिन उसी राशि पर चन्द्रमा हो तो यह जन्मवेधसे नेष्ट होता है और मित्रके घरमें हो तो श्रेष्ठ होता है । (एक राशि योग प्रायः अमावसको आता है) ॥ ५८॥

यस्मिन्वारेस्तिसंक्रांतिस्तत्रैवामाभिधातिथिः ।
लोकेखर्परयोगोयंजीवधान्यादिनाशकः ॥ ५९ ॥

जिस दिन संक्रांति हो और उसी दिन अमावस तिथि हो तो यह खर्पर योग जीव तथा धान्यादिका नाशक है ॥ ५९ ॥

मेषकर्कमकरेर्कसंक्रमे क्रूरवारसहितेजलंनहि ।
धान्यमल्पतरमेववत्सरेविग्रहोविपुलरोगतस्कराः६०

मेष-कर्क-मकरकी संक्रांतियोंको क्रूर वार हों तो जल नहीं हो । धान्य कम हो और उस वर्षमें चौर तथा रोगादि और विग्रह बहुत ॥ ६० ॥

शनिःस्यादाद्यसंक्रान्तौद्वितीयायांप्रभाकरः ।
तृतीयायांकुजोयोगः खर्पराख्योतिकष्टकृत्॥६१॥

प्रथम संक्रांतिको शनि-दूसरीको सूर्य और तीसरीको मंगल वार हो तो यह खर्पर योग कष्टकारी होता है ॥ ६१ ॥

संक्रांतिः स्याद्यदापौषेरविवारेणसंयुता ।
धान्यस्यद्विगुणंमूल्यंतदाप्राहुर्महाधियः ॥ ६२ ॥

पौषकी संक्रांति दीतवारी हो तो महाबुद्धिवाले धान्यका दुगुना मूल्य कहते हैं ॥ ६२ ॥

शनौत्रिगुणतामूल्येमङ्गलेचचतुर्गुणम् ।
समानंबुधशुक्राभ्यांमूल्यार्धंगुरुसोमयोः ॥ ६३ ॥

यदि वही संक्रांति शनिवारी हो तो तिगुना और मंगलवारी हों तो चौगुना मूल्य होता है। और यदि बुध शुक्रवार हों तो समान भाव तथा गुरु चन्द्रवार हो तो आधा मूल्य होता है ॥ ६३ ॥

शनिभानुकुजेवारेबहवःसंक्रमा यदा ।
तदामहर्घमनिलंकुर्वतेरोगविग्रहम् ॥ ६४ ॥

यदि शनि-रवि-कुज वारी बहुतसी संक्रांतियां बराबर आवें तो महँगाई बढे तथा रोग विग्रह हो ॥ ६४ ॥

मीनमेषान्तरेष्टम्यांमंगलेधान्यसंग्रहात् ।
द्विस्त्रिश्चतुर्गुणोलाभइत्युक्तंपूर्वसूरिभिः ॥ ६५ ॥

मीन और मेषकी संक्रांतिके बीचमें आठें मंगल वार आवे तो धान्य संग्रह करनेसे दुगुना-तिगुनाही यथा चौगुना तक लाभ होता है ॥ ६५ ॥

कुम्भमीनांतरेष्टम्यांनवम्यांदशमीदिने ।
रोहिणीचेत्तदावृष्टिरल्पमध्यादिकाक्रमात् ॥ ६६ ॥

कुम्भ और मीनकी संक्रांतिके बीचमें आठे, नौमी या दशमीको रोहिणी हो तो क्रमसे स्वल्प-मध्य और अच्छी वर्षा हो ॥ ६६ ॥

माघेकृष्णदशम्यांचेन्मकरेऽर्कःप्रवर्तते ।
धान्यसंग्रहणाल्लाभंतदाषाढेकरोत्ययम् ॥ ६७ ॥

माघ कृष्ण दशमीको यदि मकर संक्रांति हो तो धान्यके संग्रहसे आषाढमें लाभ हो ॥ ६७ ॥

सूर्योदयेपिविशतीजगतोविपत्त्यै
मध्यंदिनेसकलधान्यविनाशहेतुः ।
संक्रांतिरस्तसमयेधनधान्यवृद्ध्यै
क्षेमंसुभिक्षमवनेःकुरुतेनिशीथे ॥ ६८ ॥

यदि कोईभी संक्रांति प्रातःकालमें हो तो जगत्में विपत्ति हो । दुपहरीमें हो तो सब धान्योंका नाश हो । सायंकालमें हो तो धन धान्यकी वृद्धि हो और अर्ध रात्रिमें हो तो पृथ्वीपर सब प्रकारसे क्षेम कुशल और सुभिक्ष हो ॥ ६८ ॥

संक्रांतिनाड्यात्तिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निहरे-त्तुभागम् । संक्रांतिनाडीनवमिश्रिताचसप्ताहता पावकभाजिताच ॥ ६९ ॥ एकेसमर्घंद्वितयेच साम्यंशून्येमहर्घंमुनयोवदन्ति ॥ ७० ॥

"संक्रांतिसे गणितागत शुभाशुभ जाननेकी विधि"-संक्रांतिकी घडी तथा वर्तमान तिथि वार नक्षत्र की संख्या और किसीभी अन्नके नामके अक्षर यह सब जोड कर तीनका भाग दे । यदि एक बचे तो सस्ता-दो बचें तो समान-और शून्य बचे तो तेज हो॥६९॥ दूसरे प्रकारसे इसी भांति संक्रांतिकी घड़ियोंमें नौ मिलाकर सातसे गुणके तीनका भाग देनेसे एक बचे तो समर्घ, दो बचे तो साम्य और शून्य बचे तो महर्घ जानना ॥ ७० ॥

दिनंयोगंचनक्षत्रंसंक्रान्तेर्गृह्यतेघटी।
चतुर्गुणंसप्तभक्तंपण्डितस्तद्विचारयेत् ॥ ७१ ॥
शून्येभयंक्षयंरोगमेकेन्नंद्वितयेरसः।
त्रयेरोगश्चतुर्थेस्याद्वस्त्रमाहर्घ्यमुज्ज्वलम् ॥ ७२

संक्रांतिकी घड़ी तथा दिन और नक्षत्रकी संख्या को जोडकर चौगुने करके सातका भाग दे । यदि शून्य बचे तो भय-क्षय-और रोग हो, १ बचे तो अन्न, दो बचें तो रस, तीन बचें तो रोग, चार बचें तो उजले वस्त्रोंकी महँगाई । (पांच बचें तो क्षय और छः बचें तो रोगादि हों) ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

प्रसंगादन्यप्रकारेण शुभाशुभज्ञानम्।

आदित्याद्वारगणनात्प्रतिपत्प्रमुखातिथिः।
अश्विन्यादिचनक्षत्रंसंमील्यद्विगुणीकृतम् ॥ ७३ ॥
त्रिभिर्भागंहृयंशेषंसुभिक्षमादिशेद्बुधः।
शून्येभवतिदुर्भिक्षमेकशेषेशुभंवदेत् ॥ ७४ ॥

"प्रसंगवश वर्ष शुभाशुभ ज्ञानोपाय कहतेहैं।"-किसीभी दिन अकस्मात् कोई वर्षके शुभाशुभका प्रश्न करे तो उस दिन जो वार तिथि और नक्षत्र हों उनकी संख्या को जोडकर दुगुनी करे और तीनका भाग लगावे यदि एक शेष बचे तो शुभ, दो शेष बचें तोभी शुभ और शून्य शेष रहे तो दुर्भिक्ष जानना ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

(२) अथ चन्द्रचारः।

नित्यमधस्थस्येन्दोर्भाभिर्भानोःसितंभवत्यर्धम्।
स्वच्छाययान्यदसितंकुम्भस्येवातपस्थस्य ॥ ७५ ॥

(२)"चन्द्र चार"-सूर्यसे नीचे रहनेवाले चन्द्रमाका आधा भाग सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित होताहै।और आधा भाग घाममें अपनीही छायासे (घडेकी भांति) काला रहताहै ॥ ७५ ॥

सलिलमयेशशिनिरवेर्दीधितयोमूर्च्छितास्तमोनैशम्।
क्षपयन्तिदर्पणोदरनिहताइवमन्दिरस्यांतः ॥ ७६ ॥

जैसे काचके ऊपर सूर्यका प्रतिबिंब पड़ कर अंधियारे घरमें भी उसके द्वारा भीतर घुसकर अंधेरा दूर करताहै वैसेही जलमय चन्द्रपर सूर्यकिरणें गिरकर रात्रिके अंधकारको दूर करतीहैं ॥ ७६ ॥

त्यजतोर्कतलं शशिनः—
पश्चादवलम्बतेयथाशौक्लयम् ।
दिनकरवशात्तथेन्दोः
प्रकाशतेऽधःप्रभृत्युदयः ॥ ७७ ॥

सूर्यका निचला भाग छोडते छोडते चन्द्रमाका पश्चिम भाग सूर्यकी किरणोंके वशसे जितना सफेद (चमकीला) होता जाता है नीचे वह उतना ही प्रकाशित होता जाताहै । शुक्ल पक्षकी द्वितीयासे उसका प्रकाश आरम्भ होनेसे उसके गोलेका उस दिन बहुतही कम अंश दीखनेमें आताहै । उसे चंद्र शृंग कहते हैं ॥ ७७ ॥

वक्रोलिद्वितये सिंहे शूलाभः कन्यकाद्वये ।
मीनत्रये दक्षिणोच्चश्चन्द्रः शेषे समाकृतिः ॥ ७८ ॥

उदय होनेके दिन वृश्चिक और धनका चन्द्रमा हो तो टेढा,कन्या मिथुनका हो तो शूलकी समान, मीन, मेष, वृषका दक्षिण ओरसे ऊंचा और कर्क, सिंह, तुल, मकर कुम्भका हो तो दोनों शींग समान होते हैं ॥ ७८ ॥

विग्रहं हि समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।
व्याधिचौरभयं शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥ ७९ ॥

समान (बराबर)चन्द्रमा हो तो विग्रह हो, दक्षिणोन्नत हो तो

तेजी हो, शूल समान हो तो चौरभय तथा व्याधि हो और उत्तर शृंग ऊँचा हो तो धान्यादि सस्ते हों ॥ ७९ ॥

सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुंभयोः।
तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगुः ॥८०॥

सिंह-मेष-वृषका चन्द्रमा हो तो लाल, मकर कुंभका हो तो काला, तुल-कर्क, वृश्चिकका हो तो सफेद और शेषमें पीला रंग रहता है ॥ ८० ॥

अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिरुग्ररणमरणम् । पीतो रोगनियोगं करकादिभयं पुनः कालः ॥ ८१ ॥

लाल रंगका चन्द्र दीखे तो रस हानि और उग्र युद्धमें मरण होता है । पीला हो तो रोग फैलाता है और करकादि भय करता है ॥ ८१ ॥

सूर्येन्दुजांगारकसौरिभार्गवाः प्रदक्षिणं यांति यदा हिमद्युतेः । तदा सुभिक्षं धनवृत्तिरुत्तमा विपर्यये धान्यधनक्षयादि ॥ ८२ ॥

सूर्य, बुध, मंगल शनि और शुक्र ये यदि चन्द्रमार्गसे दहने चलें तो सुभिक्ष होता है-धन वृत्ति उत्तम होती है और बायें चलें तो धन धान्यका क्षय होता है ॥ ८२ ॥

दृश्यते यदि न रोहणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते । रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरि-जलसस्यसंयुता ॥ ८३ ॥

यादि बादलोंसे ढँके हुए आकाशमें रोहिणी युक्त चन्द्रमा नहीं दीखे तो बड़ा रोगभय उपजता है तथा पृथ्वी जल पूर्ण होती है॥८३॥

यद्दिनेगोकुलक्रीडातद्दिनेभ्युदितेविधौ ।
तदात्रीणिविनश्यन्तिप्रजागावोमहीपतिः ॥ ८४ ॥

जिस दिन गोकुलक्रीडा (गोवर्द्धन लीला) हो उसी दिन चन्द्रदर्शन हो तो प्रजा गौ और महीपति इन तीनोंका नाश होता है॥८४॥

ज्येष्ठस्यान्तेप्रतिपदिसूर्यस्यास्तंविलोकयेत् ।
द्वितीयांवीक्ष्यतेचन्द्रोगतमुत्तरदक्षिणम् ॥ ८५ ॥

जेठ सुदी प्रतिपदाको सायंकालके समय द्वितीया आगई हो तो चन्द्रमा देखे और उसके उत्तर दक्षिणका विचार करे ॥ ८५ ॥

सुभिक्षमुत्तरदिशिविपरीतन्तुदक्षिणे ।
तत्साम्येमध्यमंवर्षंज्येष्ठान्तेतद्वदेवहि ॥ ८६ ॥

यदि उत्तर शृंगोन्नत हो तो सुभिक्ष और दक्षिणोन्नत हो तो दुर्भिक्ष होता है-समान हो तो मध्यम जानना ॥ ८६ ॥

उत्तरेणग्रहाणांतुचंद्रचारोभवेद्यदि ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंविग्रहोनात्रवत्सरे ॥ ८७॥

यदि उत्तरमें उदय हो तो उस वर्षमें सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य होता है ॥ ८७ ॥

पञ्चतारग्रहायत्रसोमंकुर्वंतिदक्षिणे ।
भौमेचराजमारिःस्याज्जनमारिश्चभार्गवे ॥ ८८ ॥

यदि पांचों तारे (मं. बु, बृ. शु. श,) चन्द्रको दहनी बाजू करके चलें तो उनमें मंगलके जानेसे राजमारी और शुक्रके जानेसे जनमारी होती है ॥ ८८ ॥

बुधेरसक्षयंविद्याद्गुरौकुर्यान्निदारुकम् ।
शनौवर्षक्षयंकुर्यान्मासेमासेविलोकयेत् ॥ ८९ ॥

बुधके जानेसे रस क्षय, गुरुसे जल वृष्टि और शनिसे वर्षका क्षय होताहै। अतः महीनेकी महीने चन्द्र देखना चाहिये ॥ ८९ ॥

चित्रानुराधाज्येष्ठाचकृत्तिकारोहिणीतथा।
मघामृगशिरामूलंतथाषाढविशाखयोः ॥ ९० ॥
एतेषामुत्तरामार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः।
सुभिक्षंक्षेमवृद्धिश्चसुवृष्टिर्जायतेतदा ॥ ९१ ॥
एतेषांदक्षिणेमार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः।
क्षयंगच्छन्तिभूनाथादुर्भिक्षंचभयंपथि ॥ ९२ ॥

चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहणी, मघा, मृगशिर, मूल, पूर्वाषाढ और विशाखा इनके उत्तर मार्गसे यदि चन्द्रमा चले तो सुभिक्ष. क्षेम, वृद्धि और वर्षा हो। तथा इनके दक्षिण मार्गसे चले तो राजाओंका क्षय, दुर्भिक्ष और मार्गभय हो ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

चन्द्रोदयेमेषराशौयौगोधूमधान्यमहर्घता।
वृषेमाषतिलागुरुतुषधान्यमहर्घता ॥ ९३॥

"उदयफल" मेष राशिका चन्द्रमा उदय हो तो जौ गेहूंकी महगाई हो, वृषका हो तो उडद-तिल और तुष धान्य तेज हों ॥ ९३ ॥

कार्पाससूत्रधान्यादिमहर्घंमिथुनेस्मृतम्।
अनावृष्टिःकर्कराशौसिंहेधान्यमहर्घता ॥ ९४ ॥

मिथुनका हो तो कपास-सूत धान्यादि महँगे हों, कर्कका हो तो अनावृष्टि हो-और सिंहका हो तो धान्य महँगा हो ॥ ९४ ॥

चतुष्पदविनाशोपिराज्ञामन्योन्यविग्रहः।
द्विजादिपीडाकन्यायांतुलाक्रयणकंप्रियम् ॥९५॥

कन्याका हो तो चौपायोंका नाश हो, राजाओंमें विग्रह हो और ब्राह्मणोंको पीड़ा हो। तुलका चन्द्रमा उदय हो तो व्यापारी समान प्यारा हो ॥ ९५ ॥

वृश्चिकेधान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोःशुभम् ।
कुंभेचणकमाषादितिलानांनाशइष्यते ॥ ९६ ॥

वृश्चिकमें धान्यकी पैदावारी-धन मकरमें शुभ और कुम्भमें चने, उड़द तथा तिलोंका नाश हो ॥ ९६ ॥

मीनेसुभिक्षमारोग्यंफलंद्वादशराशिजम् ।
एवंज्ञेयंद्वितीयायांनियमेप्यत्रभावनात् ॥ ९७ ॥

और मीन राशिमें चन्द्रोदय हो तो सुभिक्ष तथा आरोग्य हो। यह बारहों राशियोंका फल प्रत्येक मासकी द्वितीयाको नियमसे देखना चाहिये ॥ ९७ ॥

चन्द्रेऽस्तेमेषराशिस्थेसर्वधान्यमहर्घता ।
वृषेचचणिकापीडामृत्युश्चौरभयंजने ॥ ९८ ॥

"अस्त फल" मेष राशिका चन्द्रमा अस्त हो अर्थात् अमावास्याके दिन मेषका चन्द्रमा हो तो सब धान्य महँगे हों, वृषमें अस्त हो तो चणिक पीडा मृत्यु और चौर भय हो ॥ ९८ ॥

मिथुनेप्यतिवृष्टिःस्याद्बीजवापेनपुष्टये ।
कर्केटप्यतिवृष्टिःस्यात्सिंहेधान्यमहर्घता ॥ ९९ ॥

मिथुनमें अति वर्षा होनेसे बोया हुआ बीज पुष्ट नहीं हो। कर्कमें अति वर्षा हो और सिंहमें अन्न महँगा हो ॥ ९९ ॥

कन्यायांखण्डवृष्टिश्चसर्वधान्यसमर्घता ।
तुलायामल्पवृष्टिःस्याद्देशभंगो भयंपथि ॥ १०० ॥

कन्यामें खण्ड वृष्टि हो, सर्व धान्य महँगे हों, तुलामें अल्प वर्षा हो और देश भंग तथा मार्ग भय हो ॥ १०० ॥

वृश्चिकेमध्यमंवर्षंग्रामनाशोप्युपद्रवात् ।
सुभिक्षंधनुषाधान्यैर्मकरेधान्यपीडनम् ॥ १०१ ॥

वृश्चिकमें मध्यम वर्षा हो और उपद्रवसे ग्राम नाश हो। धनमें धान्यसे सुभिक्ष हो और मकरमें धान्य पीड़ा हो ॥ १०१ ॥

कुंभेऽल्पवृष्टिर्धान्यानिमहर्घाणिप्रजाभयम्।
सुखसंपत्तयोमीनेमासंयावदिदंफलम्॥ १०२ ॥

कुंभमें अल्प वर्षा हो, धान्य महँगा हो, प्रजामें भय हो। और मीन राशिमें चन्द्रमाका अस्त हो तो सुख संपत्ति हो। ऊपर जो श्रृंगोन्नति तथा उदयास्तका फल कहा है यह केवल उसी मास भर होता है ॥ १०२ ॥

वैशाखेयदिवाज्येष्ठउत्तरस्यांविधूदये।
बहुधाधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ १०३ ॥

वैशाखमें वा जेठमें उत्तरमें चन्द्रोदय हो तो धान्यकी बहुत उत्पत्ति हो और वर्षा अच्छी हो ॥ १०३ ॥ (इति)

(३) अथ सूर्यचन्द्रग्रहणविचारः।

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदःप्रवदन्ति हि। सदुपयोगि जने सचमत्कृति ग्रहणमिन्दिनयोःकथयाम्यतः ॥ १०४ ॥

(३) "प्रसंग वश यहीं पर सूर्य चन्द्र ग्रहणका विचार लिखते हैं।"–स्मृति और पुराणोंके जानने वाले कहते हैं कि ग्रहणमें जप दान और होमादि करनेसे बहुत फल मिलता है और सदुपयोगी जनोंमें चमत्कृति करता है अत एव सूर्य और चन्द्रका ग्रहण कहते हैं ॥ १०४ ॥

भूच्छायां स्वग्रहणे भास्करमर्कग्रहेप्रविशतीन्दुः।
प्रग्रहणमतःपश्चान्नेन्दोर्भानोश्चपूर्वार्धात् ॥ १०५ ॥

सूर्य ग्रहणमें सूर्यके आड़ा चद्रमा आता है और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमाके पृथ्वी आड़ी आजाती है । इसीसे ग्रहण होता है। और

इसी कारण पश्चिम दिशासे चन्द्रग्रहण और पूर्वसे सूर्य ग्रहणका आरम्भ नहीं होता ॥ १०५ ॥

एवमुपरागकारणमुक्त मिदंदिव्यदृग्भिराचार्यैः ।
राहुःकारणमस्मिन्नित्युक्तःशास्त्रसद्भावः ॥१०६॥

दिव्य दृष्टिवाले आचार्योंने तो ग्रहणका यही कारण बतलाया है किन्तु लोग जो राहुको कारण मानते हैं यह शास्त्रका केवल सद्भाव मात्र है ॥ १०६ ॥

योऽसावसुरोराहुस्तस्य वरो ब्रह्मणाऽयमाज्ञप्तः ।
आप्यायनमुपरागे दत्त हुतांशेनतेभविता ॥१०७॥

क्योंकि पुराणोंमें लिखा है कि राहु नामक असुरको ब्रह्माजीने ऐसा वर दिया था कि "ग्रहणके समय जो लोग - होमादि करेंगे उसीके अंशसे तुम्हारी तृप्ति होगी–"–वास्तवमें राहु तमोमय है और चन्द्रको पृथ्वीकी छाया तथा सूर्यको चन्द्र छाया आच्छादित करती है यहभी तम रूप है अतएव इनके साथ राहु; संबंध उपयुक्त हो सकता है ॥ १०७ ॥

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहःशुभकरो मार्गे तथा कार्त्तिके
पौषेधान्यमहर्घताजनभयं वर्षं पुरो मध्यमम् ।
माघेवाञ्छितवृष्टिरन्नविगमःस्यात्फाल्गुनेदुःखकृ-
च्चैत्रेचित्ररुगादिलेखकमहापीडा समामध्यमा १०८

मार्ग शीर्ष तथा कार्तिकमें सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो शुभ करता है । पौषमें धान्यकी महँगाई, मनुष्योंको भय और अगले वर्षको मध्यम करताहै । माघमें हो तो वांछित वृष्टि और अन्न करताहै । फाल्गुनमें हो तो दुःख करताहै चैत्रमें हो तो रोग तथा लेखकोंको महापीड़ा देताहै और वर्ष मध्यम होताहै ॥ १०८ ॥

वैशाखे तिलतैलमुद्गकुरुते कार्पासकंनाशयेज्ज्येष्ठे-
ऽवर्षणधान्यनाशनकरं स्याद्भाविवर्षशुभम् ।
आषाढेक्कचिदेववर्षतिघनोरोगोऽन्नलाभः क्कचि-
द्वृक्षेमूलफलानिहंतिसहसावर्षशुभंशंभवेत् ॥ १०९ ॥

वैशाखमें ग्रहण हो तो तिल तेल मूंग और कपास इनका नाश करताहै। जेठमें अवर्षण धान्यनाश और भावी वर्ष शुभ करताहै। आषाढमें हो तो कहीं कुछ वर्षा हो, कहीं रोग हो, कहीं अन्न लाभ हो और वृक्षोंसे अकस्मात् फल गिर पड़ें तथा वर्ष शुभभी हो॥ १०९॥

गर्भाःश्रावणकेऽश्वगर्दभभवास्तूर्णंचतत्फल्गुतां
स्त्रीगर्भान्विनिहंतिभाद्रपदकेसौख्यंसुभिक्षंजने ।
कुर्यादाश्विनकेऽथसूर्यशशिनोरेकत्रमासेग्रहद्वंद्वं
चेन्नरनायकाबहुबलायुद्धंतिकोपोत्कटाः॥ ११० ॥

श्रावणमें ग्रहण हो तो घोडियोंके, गधियोंके और स्त्रियोंके गर्भ बहुत गिरें। भाद्रपदमें हो तो सौख्य तथा सुभिक्ष हो। और आश्विनमें एकही मासमें सूर्य चन्द्रके दोनों ग्रहण हों तो कोपसे उखडकर राजा लोग द्वंद्व युद्ध बहुत करें ॥ ११० ॥

कदाचिदधिकेमासेग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।
सर्वराष्ट्रभयंभंगःक्षयंयांतिमहीभुजः ॥ १११ ॥

यदि अधिकमासमें चन्द्र सूर्य ग्रहण हो तो राष्ट्रभंग और राजाओंका क्षय हो ॥ १११ ॥

रवेर्ग्रहाच्चपक्षांतेयदिचन्द्रग्रहोभवेत् ।
तदाद्दर्शनिनांपूजाधर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ ११२ ॥

सूर्यके १५ दिन पीछेही चंद्रग्रहण हो तो शास्त्रकारोंकी पूजा, धर्मकी वृद्धि और बड़ोंका उदय हो ॥ ११२ ॥

क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणेनृपतिक्षयः ।
राष्ट्रभंगइतिप्राहुर्महाप्राज्ञामुनीश्वराः ॥ ११३ ॥

सूर्य चद्र ग्रहण क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो राजाओंका क्षय और राज्यभंग हो ॥ ११३ ॥

रविवारेग्रहेवर्षंमध्यमंधान्यसंग्रहः ।
राजयुद्धंचदुर्भिक्षंघृतायस्तैलविक्रयाः ॥ ११४ ॥

रीतवारको ग्रहण हो तो धान्यका संग्रह तथा वर्षा मध्यम हो, राजयुद्ध हो, दुर्भिक्ष हो और घी तथा तेल महँगे हों ॥ ११४ ॥

सोमेऽह्नग्रहणेराजाग्रहोऽन्नस्यमहर्घता ।
लाभस्तैलघृतादिभ्योभौमेवह्निभयंभवेत् ॥ ११५ ॥

सोमवारको हो तो अन्न महँगा हो, तेल घी आदिमें लाभ हो. मंगलको हो तो अग्निभय हो ॥ ११५ ॥

भौमवारेग्रहेभानोरन्योन्यंनृपतिक्षयः ।
इन्दोर्ग्रहेचकार्पासपूतसूत्रमहर्घता ॥ ११६ ॥

अथवा मंगलवारको सूर्यग्रहण हो तो राजाओंकी क्षति हो और चंद्रग्रहण हो तो अच्छे सूतकी महँगाई हो ॥ ११६ ॥

बुधेपूगंरक्तवस्त्रसंग्रहोलाभदायकः ।
गुरौरीतिरक्तवस्तुतैलगंधादिलाभदम् ॥ ११७ ॥

बुधवारको हो तो नारियल सुपारी और लाल वस्त्र इनका संग्रह लाभदायक होताहै और गुरुवारको हो तो सब लाल वस्तु तथा तेल गंधादि लाभदायक होते हैं ॥ ११७ ॥

शुक्रेसुभिक्षंमांगल्यंसर्वलोकशुभंकरम् ।
शनौयुगंधरीलाभःश्यामवस्तुमहर्घता ॥ ११८ ॥

शुक्रवारको हो तो सुभिक्ष-मंगलकारी-और सबको शुभकारा

होताहै । और शनिवारको ग्रहण हो तो युगंधरीसे लाभ तथा कालो वस्तु महँगी होती हैं ॥ ११८ ॥

पीतरक्तवस्त्रताम्रवृषभादिकसंग्रहे ।
मासद्वयेतस्यलाभइत्युक्तंज्ञानिभिःपुरा ॥ ११९ ॥

पीले लाल वस्त्र तथा तांबा और बैल आदिके संग्रहसे दो मासमें लाभ होताहै ॥ ११९ ॥

अर्द्धोर्द्धमासिकेलाभस्त्रिभागश्चत्रिमासिके ।
चतुर्भागश्चतुर्मासेऽस्तमितेवर्षसंभवः ॥ १२० ॥

अर्द्ध ग्रहणमें आधे मासमें-तीन भागमें तीन मासमें-चारभाग ग्रहणमें चार मासमें और सम्पूर्ण ग्रहणमें अथवा अस्तमितमें वर्ष भरमें लाभ होताहै ॥ १२० ॥

ग्रहणाद्येचसर्वस्मिन्नुत्पातेप्रबलोयदा ।
पश्चात्संज्ञाततोघोरारिष्टभंगंतदादिशेत् ॥ १२१॥

ग्रहणके आद्यमें यदि सब उत्पात प्रबल हों तो पीछे वर्षा हानसे और अरिष्ट दूर होजाते हैं ॥ १२१ ॥

एवमुत्पातरहितेअस्मिन्नुदकयोनिकाः ।
जीवाः पुद्गलकादृश्यास्तद्देशेवृष्टिरुत्तमा ॥ १२२॥

यदि उत्पात नहीं हो तो जलजन्तु बहुत होते हैं और वृष्टि उत्तम होती है ॥ १२२ ॥

उपरागो यदा मेषे पीड्यतेऽयं तदा जनः ।
काम्बोजांध्रकिराताश्च पांचालाश्चतिलङ्गकाः१२३

"राशि फल" मेषका ग्रहण हो तो काम्बोज किरात पांचाल और तैलंग देशके मनुष्योंको पीड़ा हो ॥ १२३ ॥

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी॥ १२४॥

वृष राशिपर ग्रहण हो तो गोप-पशु-राहगीर-और बड़े आदमी इनको पीड़ा हो ॥ १२४ ॥

सूर्यचन्द्रमसोर्ग्रासो मिथुने च वरांगनाः ।
पीड्यन्ते वाह्लिका लोका यमुनातटवासिनः १२५॥

मिथुन राशिपर सूर्य या चंद्र ग्रहण हो तो वाह्लिक तथा यमुना तट निवासी लोगोंको और स्त्रियोंको पीडा हो ॥ १२५ ॥

कर्कटे ग्रहणे पीड़ा गर्दभानां च जायते ।
आभीरबर्बराणां च पीडा च महती मता ॥ १२६॥

कर्कका ग्रहण हो तो गधोंको पीड़ा हो । आभीर और बर्बर जातिको पीड़ा हो ॥ १२६ ॥

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ १२७॥

सिंहका ग्रहण हो तो वनवासियोंको पीड़ा हो तथा राजाओंके और राजतुल्य अन्य जनोंके धनका क्षय हो ॥ १२७ ॥

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटाशालिजातिषु ।
कवीनां लेखकानांच गायकानां धनक्षयः॥१२८॥

कन्यापर ग्रहण हो तो त्रिपुट-तथा शालि जातियोंमें पीड़ा हो और कवियों, लेखकों तथा गवैयोंके धनका क्षय हो ॥ १२८ ॥

तुलायामुपरागे च दशार्णवककाहवः ।
मरुतश्चापरान्त्याश्च पीड्यन्ते यतिसाधवः॥ १२९॥

तुलमें ग्रहण हो तो दशार्णव-काहव-मरुत तथा अपरान्तवर्तीय लोगोंको पीडा हो । और यति तथा साधुओंको पीडा हो ॥ १२९॥

वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातेःप्रजायते ।
यदुवरस्य मंद्रस्य चौलयौधेयकस्य वा ॥ १३० ॥

वृश्चिकका ग्रहण हो तो सब जातियोंको दुःख हो और मद्रक, मद्र, चौल तथा यौधेय जातियोंको दुःख हो ॥ १३० ॥

धनोपरागश्चापेस्यात्तदावंस्यश्च वाजिनः ।
विदेहमल्लपांचालाःपीड्यन्ते भिषजो विशः॥१३१॥

धनका ग्रहण हो तो उज्जैन वासियोंमें घोडोंमें-विदेह-मल्ल और पांचाल वासियोंमें पीडा हो तथा वैद्योंमें, वैश्यमें पीडा हो ॥१३१॥

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थविराणांनटानां च चित्रकूटस्यसंक्षयः ॥१३२॥

मकरका ग्रहण हो तो नीचमंत्रवादियोंका, स्थविरों (वृद्धों)का, नटोंका और चित्रकूट निवासियोंका क्षय हो ॥ १३२ ॥

कुम्भोपरागेपीड्यन्तेगिरिजाःपश्चिमाजनाः ।
तस्कराद्विरदाभीराःप्रजानांदुःखदायकाः ॥१३३॥

कुंभपर ग्रहण हो तो पश्चिमके पर्वतवासियोंको पीडा हो और तस्कर, द्विरद (दोदाँतों वाले) तथा आभीर इनसे प्रजाको दुःख हो ॥ १३३ ॥

मीनोपरागेपीड्यन्तेजलद्रव्याणिसागराः ।
जलोपजीविनोलोकाभविद्यायेचपण्डिताः॥१३४॥

और मीन राशिपर ग्रहण हो तो सामुद्रिक जलद्रव्य महंगे हों और जलोपजीवी (नाव वाले-जहाजी-तथा तैरने वालों) को भय हो ॥ १३४ ॥

अश्विन्यां पीडितायां स्यान्मुद्गादीनांमहर्घता ।
भरण्यांश्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत्॥१३५॥

"नक्षत्र फल"-अश्विनी नक्षत्रमें ग्रहण होनेसे मूंग महँगे हों । भरणीमें सफेद वस्तुओंसे ३ मासमें लाभ हो ॥ १३५ ॥

कृत्तिकायां हेमरूप्यप्रवालमणिमौक्तिकम् ।
संगृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥ १३६॥
कृत्तिकामें सोना, चांदी, मूंगा, मणि, मोती इनको खरीदनेसे नौ मासमें लाभ हो ॥ १३६ ॥

रोहिण्यां सूत्रकार्पाससंग्रहो लाभदायकः ।
दश मासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो नचेदिह ॥१३७॥
रोहिणीमें सूत कपासका संग्रह दश मासमें लाभ दे किन्तु चंद्रवेध न हो ॥ १३७ ॥

मृगशीर्षेपि मंजिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकम् ।
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ॥१३८॥
मृगशिरमें मजीठ, लाख, खार, कसूंभा यह महंगे होकर १० मासमें लाभ दें ॥ १३८ ॥

घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपंचके ।
तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोर्मासः पंचकतःपरम् ॥१३९॥
आर्द्रामें घी महंगा होकर ९ मासमें लाभ दे और पुनर्वसुमें तेल ९ मासमें लाभ दे ॥ १३९ ॥

पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभोभवेद्गोधूमसंग्रहे ।
आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यःप्राप्तिःस्यान्मासपंचके १४०
पुष्यमें गेहूंका संग्रह तीन मासमें लाभ दे आश्लेषामें ९ महीनेमें मूंगोंमें लाभ हो ॥ १४० ॥

मघाचतुष्टये चोलाचणकः खलु तुष्टये ।
चित्रायां च युगन्धर्याः लाभोमासद्वयात्यये १४१॥
मघासे चार नक्षत्रोंमें चौले, चणे चार मासमें लाभ दें । चित्रामें जुगंधरी २ मासमें लाभदे ॥ १४१ ॥

त्रिपंचनवभिर्मासैःस्वातौ लाभस्ततस्तथा ।
विशाखायां कुलित्थेभ्यःषण्मासे लाभसंभवः१४२

स्वातीमें ३-९नौवें महीनेमें अन्नमें लाभ हो । विशाखामें ६ मासमें कुलथीमें लाभ हो ॥ १४२ ॥

राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते ।
ज्येष्ठायां गुडखण्डादेःपंचमासे धनोदयः॥ १४३॥

अनुराधामें कोदोंमें नौ मासमें लाभ हो; ज्येष्ठामें गुड खांडमें ५ मासमें धन मिले ॥ १४३ ॥

तंडुलेभ्यस्तथामूलेपूषायांश्वेतवस्त्रतः ।
उषायां श्रीफलात्पूगात्सर्वत्रमासपञ्चकम् ॥ १४४॥

मूलमें चावलोंमें, पूर्वाषाढमें श्वेत वस्त्रमें और उत्तराषाढमें नारियल आदिमें लाभ हो । इन सबमें पाँच महीने पीछे लाभ जानना १४४॥

श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्टायां तु माषतः ।
चणकेभ्योऽपिवारुण्यां तेभ्यः पूर्भानिपीडने१४५॥

श्रवणमें तुअरमें, धनिष्ठामें उड़दोंमें, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदमें चणोंमें लाभ हो ॥ १४५ ॥

लाभस्त्रिमासिर्निर्दिष्टमुभाभ्यांलवणादितः ।
मासषट्काद्ग्रहेल्लाभो रेवत्यांमुद्गमाषतः ॥ १४६ ॥

उत्तराभाद्रपदमें लवणमें ३ मासमें लाभ हो और रेवतीमें ग्रहण हो तो ६ महीनेमें मूंगके संग्रहसे लाभ हो ॥ १४६ ॥ (इति)

(४) भौमचारः ।

शीतपीडाश्विनीभौमेतुधान्यमहर्घता ।
द्विजपीडाभरण्यादेर्नाशःस्यादतिशीघ्रगे ॥१४७॥

(४) " मंगल चार "—अश्विनी नक्षत्र पर मंगल हों तो तुष धान्य महँगे हों और भरणीपर हो तो ब्राह्मणोंको पीड़ा हो तथा उनका शीघ्र नाश हो ॥ १४७ ॥

सर्वदेशेग्रामपीडा धान्यानांच महर्घता ।
कृत्तिकायांदेशभंगोपीडा तापसआश्रमे ॥१४८॥

कृत्तिकापर हो तो सब देशोंमें तथा गाँवोंमें पीडा हो, धान्य महँगा हो, देश भंग हो और तपस्वियोंके आश्रमोंमें पीडा हो ॥ १४८ ॥

वृक्षपीडाश्वापदानांरोगःस्याद्रोहिणीकुजे ।
महर्घतापि कार्पासेवस्त्रेसूत्रेविशेषतः ॥ १४९ ॥

रोहिणीपर मंगल हो तो वृक्षोंमें रोग, चौपायोंमें पीड़ा, कपास वस्त्र और सूतकी महँगाई हो ॥ १४९ ॥

कार्पासनाशःप्रबलंसुभिक्षंमृगेकुजेभूजलपूरितेव ।
वृष्टिश्चरौद्रेदितिजेतिलानांनाशोविनाशोमहिषी-
कुलस्य ॥ १५० ॥

मृगशिरपर मंगल हो तो पृथ्वी जलसे पूरित होजाय और कपासकी खेती नष्ट होजायँ । आर्द्रा पर हो तो वृष्टि हो और पुनर्वसु पर हो तो तिलोंका नाश तथा भैंसोंका विनाश हो ॥ १५० ॥

पुष्येकुजेचौरभयंविरोधाच्छुभंनकिंचिन्नृपनिर्ब-
लत्वम् । सार्पेल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशोदुर्भिक्षने-
वोरगदंशभीतिः ॥ १५१ ॥

पुष्यपर हो तौ चौरभय हो, विरोधसे अशुभ हो, और राजा कमजोर हों । श्लेषापर हो तो बहुत वर्षासे धान्य नाश हो, दुर्भिक्ष हो और साँपोंका भय अधिक हो ॥ १५१ ॥

वैऽयेनवृष्टिस्तिलमाषमुद्गविनाशनंदुर्लभतान्यधान्ये । स्वायोनिजे चेत्क्षितिजेल्पवृष्टिःप्रजासु पीडागुरुतैलमूल्यम् ॥ १५२ ॥

मघापर हो तो वर्षा न होनेसे उड़द मूंग और तिलोंका नाश हो अन्य धान्य दुर्लभ हों। पूर्वाफाल्गुनीपर हो तो अल्प वर्षा हो, प्रजामें पीड़ा हो और तैलका मूल्य बढ़जाय ॥ १५२ ॥

तथोत्तरायांजलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीड़नमश्वमूल्यम् । हस्तेकुजेल्पांबु च तुच्छधान्यंघृतंगुडो वा लवणं महर्घम् ॥ १५३ ॥

उत्तराफाल्गुनीपर हो तो वर्षाके अवरोधसे चौपायोंमें पीड़ा हो, घोड़ोंका मूल्य बढे । और हस्तपर मंगल हो तो जल कम हो, तुच्छ धान्य हो, घृत गुड़ और नमक महँगे हों ॥ १५३ ॥

चित्राकुजे तीव्ररुजोतिपीडा शालीप्टगोधूममहर्घतापि । स्वातावनावृष्टिरथद्विदेवे कार्पासगोधूममहर्घभावः ॥१५४ ॥

चित्रापर मंगल हो तो तीव्र रोगपीडा हो । चावल तथा गेहूं महँगे हों । स्वातीपर हो तो अनावृष्टि हो, विशाखापर हो तो कपास और गेहूंका भाव महँगा हो ॥ १५४ ॥

मैत्रे सुभिक्षं पशुपक्षिपीडा ज्येष्ठकुजे स्वल्पजलं च रोगाः । मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा महर्घता वा तुषधान्यराशेः ॥ १५५ ॥

अनुराधापर हो तो सुभिक्ष हो, पशु पक्षियोंको पीड़ा हो, ज्येष्ठा पर मंगल हो तो जल कम हो, रोग हो । मूल पर मंगल हो तो क्षत्रियोंमें पीडा हो, तुष धान्य महँगा हो ॥ १५५ ॥

पूषाकुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽल्पदुग्धा वसुधान्नपूर्णा । महर्घता शालितिलाज्यमाषे-ष्वग्रेपि तत्पूर्ववदेव भावम् ॥ १६६ ॥

पूर्वाषाढपर हो तो जल बहुत हों, गायें दूध कम दें, पृथ्वी अन्नसे पूरित हो । शालि, तिल, घी, और उड़द महँगे हों, उत्तराषाढपर हो तो भी यही फल हो ॥ १६६ ॥

श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च । स्याद्वासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यं समर्घं गुडशर्करादि ॥ १६७ ॥

श्रवणपर मंगल हो तो रोग हो, धान्यका योग न हो, पीछे वर्षा हो । धनिष्ठा पर हो तो इन्द्रकी भांति समृद्धि हो, धान्य सस्ता हो और गुड शक्करभी सस्ते हों ॥ १६७ ॥

स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्याम् । पूभामहीजे तिलवस्त्रसूत्रकर्पासपूगादिमहर्घता वा ॥ १६८ ॥

शतभिषापर मंगल हो तो कीडे और मूषे अधिक हों, तौभी खेतियां बहुत हों । पूर्वाभाद्रपर हो तो तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी आदि महँगे हों ॥ १६८ ॥

दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेपि किंचित् । सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगा बहुधान्यलक्ष्मीः ॥ १६९ ॥

उत्तराभाद्रपर हो तो दुर्भिक्ष हो–वर्षा तथा अन्न नहीं हो । और रेवती नक्षत्र पर मंगल हो तो सुभिक्ष हो, मनुष्योंमें रोग हो और अन्न लक्ष्मी बहुत हो ॥ १६९ ॥

मेषेभूमिसुतोदयेचचपलामाषास्तिलाःस्युःप्रिया
नाशःस्याच्चवृषेचतुष्पदकुलेयुग्मेषुदुःप्राप्यता ।
वैश्यानां बहुपीडनंशशिगृहे वृष्टयातिधान्यो
दयः सिंहे शालिमहर्घता द्विजरुजः कन्योदये
भूपतेः ॥ १६० ॥

"उदय फल"–मेष राशिमें मंगलका उदय हो तो तिल और उड़द प्रिय हों (अर्थात् महँगे हों) वृषमें हो तो चौपायोंका नाश हो । मिथुनमें हो तो दुष्प्राप्यता हो । कर्कमें हो तो वैश्योंको बहुत पीडा हो, धान्यका उदय हो, सिंहमें हो तो चावल महँगे हों और कन्यामें उदय हो तो ब्राह्मणों तथा राजाओंमें रोग हो ॥ १६० ॥

धान्यानिभूयांसि तुलोदये स्युः कन्याद्वये तेन
सुभिक्षमेव । चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीतिर्निष्प-
त्तिरन्नस्य तु वृश्चिकस्थे ॥ १६१ ॥

तुलेमें हो तो धान्य बहुत हों (कोईका मत है कि कन्या मिथुनमें सुभिक्ष हो,)वृश्चिकमें हो तो चोर तथा अग्निका भय हो राजाओंकी नीति खोटी हो और अन्नकी उत्पत्ति हो ॥ १६१ ॥

धनुषि रसातलवृष्टिःशालिगुडादेर्महर्घतामकरे ।
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशायनीदेशे१६२॥

धनमें हो तो पातालवृष्टि हो, मकरमें हो तो चावल तथा गुडादिकी महर्घता हो और पश्चिम धान्य (मूँग मोठ तिल बाजरी)का नाश हो, वर्षा अधिक हो ॥ १६२ ॥

कुम्भेतीडागमात्पीडा यदि वा मूषकादिना ।
मीने कुजोदयो नैव वर्षादुर्भिक्षसाधनम् ॥ १६३॥

कुम्भमें हो तो टीडीके आनेसे पीडा हो,अथवा मूषक वृद्धि हो । और

मीन राशिपर मंगलका उदय हो तो वर्षा नहीं हो और दुर्भिक्षका साधन हो ॥ १६३ ॥

अथ अस्तविचारः ।

सुमंगलास्तगमान्मेषेपाषाणानां महर्घता ।
तृणादेःखलुवस्तूनांसुभिक्षंस्वस्थतावृषे॥ १६४ ॥

"अस्त फल"–मेष राशिमें मंगलका अस्त हो तो पत्थरोंकी महंगाई हो वृषमें अस्त हो तो घास फूस चारेकी सस्ती हो॥१६४॥

युग्मेतिवृष्टिःकर्कस्थे तस्मिन्भूधान्यशून्यता ।
सिंहेश्वखरयोःपीडाचतुष्पदमहर्घता ॥ १६५ ॥

मिथुनमें हो तो अति वर्षा हो, कर्कमें हो तो पृथ्वीपर अन्नकी शून्यता करे । सिंहमें हो तो घोडे तथा गधोंको पीडा करे और चौपाये महंगे हों ॥ १६५ ॥

कन्याद्वये महर्घाःस्युर्गोधूमाश्चणका यदा ।
अलौसुभिक्षंनृपभीर्धनुर्महर्घशालिकृत् ॥ १६६ ॥

कन्या तथा तुलमें हो तो गेहूँ और चणे महंगे हों, । वृश्चिकमें राजभय तथा सुभिक्ष हो और धनमें चावल महंगे हों ॥ १६६ ॥

तुषधान्यागरुस्तद्वन्मकरेविपुलंजलम् ।
चौरवह्निभयंदेशेकुम्भेराजसुविग्रहः ॥ १६७ ॥

मकरमें तुष धान्य तथा अगर महंगे हों, जल बहुत गिरे । कुंभमें हो तो चौर तथा अग्निका भय हो, राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६७ ॥

मीने कुजास्तंगमनान्नवनागाकुलाःप्रजाः ।
बहुप्रजासुभिक्षेणसोत्सवःशुभलक्षणः ॥ १६८ ॥

और मीनमें मंगलका अस्त हो तो अन्नकी तेजी हो, सर्पोंसे व्याकुलता हो, बालकोंका जन्म अधिक हो, सुभिक्ष हो, उत्सव हों और शुभ लक्षण हों ॥ १६८ ॥

अथ बुधचारः।

बुधेश्विन्यां तु पीडयन्ते गोधूमश्च यवादयः।
इक्षुदुग्धरसादीनांसमर्घंचघृतादिषु ॥ १६९ ॥

(९) "बुधचार"-अश्विनीमें बुध हो तो जौ गेहूंमें रोग हो। ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों ॥ १६९ ॥

बुधेभरण्यांमातंगपीडाचाण्डालनाशनम्।
तीव्ररोगाद्धान्यवस्तुमहर्घंलोकवैरतः ॥ १७० ॥

भरणी पर बुध हो तो हाथियोंको पीडा हो, चाण्डालोंका नाश हो, तीव्र रोग हो, धान्य महँगे हों और वैर बढ़े ॥ १७० ॥

कृत्तिकायां बुधे विप्रपीडा मेघाल्पता जने।
अन्नमल्पज्वरंबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ॥ १७१ ॥

कृत्तिकामें बुध हो तो ब्राह्मणोंको पीडा हो,मेघ कम हो,अन्न अल्प हों मनुष्योंमें ज्वरपीडा हो और कहीं कुछ बखेडा खडा हो ॥ १७१ ॥

रोहिण्यांज्ञे त्र कार्पासतिलसूत्रमहर्घता।
मृगशीर्षेसुभिक्षंस्याद्वातवृष्टिर्महीयसी ॥ १७२ ॥

रोहिणीमें बुध हो तो कपास, तिल, सूत महँगे हों। मृगशिरमें हो तो सुभिक्ष हो, वायुसे वर्षा हो ॥ १७२ ॥

गोधूमतिलमाषादिसमर्घंसुखिनोजनाः।
आर्द्रायांवृष्टिरतुलाग्रहपाताप्रवाहतः ॥ १७३ ॥

आर्द्रामें हो तो वर्षा अधिक हो,गेहूं तिल उडद सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहें। और ग्रहपात तथा पवन प्रवाह हो ॥ १७३ ॥

पुनर्वसौबालपीडाकार्पासेसूत्रमंदता।
जनेषुसर्वसंयोगःपुष्येराज्ञांभयंजयः ॥ १७४ ॥

पुनर्वसुमें बुध हो तो बालकोंको पीडा हो, कपास सूत मंदा हो,

पुष्यमें हो तो सब लोगोंका संयोग हो । राजाओंमें भय हो । तथा जय हो ॥ १७४ ॥

आश्लेषायांमहावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः ।
मघाबुधेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशःप्रजाभयम् ॥ १७५॥

आश्लेषामें हो तो महावृष्टि हो,तुष धान्य उत्पन्न हों । मघामें बुध हो तो वर्षा कम हो, धान्य नाश और प्रजामें भय हो ॥ १७५ ॥

पूफायांनृपसंग्रामःक्षेत्रबाधान्नमंदता ।
उफायांतुमाषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ॥ १७६॥

पूर्वाफाल्गुनीमें हो तो राजाओंमें युद्ध हो, क्षेत्र बाधा हो, अन्न मंदा हो,।उत्तराफाल्गुनीमें हो तो उडद मूंग कम उत्पन्न हों॥१७६॥

हस्तेबुधेसुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः ।
चित्रायांगणिकाशिल्पिद्विजपीडाल्पवर्षणम् १७७॥

हस्तमें बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे । चित्रामें हो तो वर्षा कम हो और वेश्या तथा शिल्पी लोग और ब्राह्मणोंमें पीडा हो ॥ १७७ ॥

स्वातौबुधेमंदवृष्टिर्विशाखायांसुभिक्षता ।
व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते ॥१७८॥

स्वातीमें बुध हो तो मन्द वर्षा हो, विशाखामें हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्षभी हो ॥ १७८ ॥

सुभिक्षमनुराधायांपक्षिपीडाप्रजासुखम् ।
ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्यमहर्घताश्वरोगिता॥१७९॥

अनुराधामें सुभिक्ष हो, पशुओंमें पीडा हो, मनुष्योंको सुख हो। और ज्येष्ठामें हो तो ईख, शाली-और घी महँगे हों तथा घोडोंमें रोग हो ॥ १७९ ॥

मूलेपक्षिपशूनांचबालपीडाविजायते ।
धान्यंमंदंचपूषायांव्याधिर्ग्रीष्मेपिवर्षणम्॥१८०॥
मूलमें हो तो पशु पक्षी और बालकोंमें पीडा हो। पूर्वाषाढमें हो तो धान्य मन्दा हो और ग्रीष्ममें व्याधि तथा वर्षा हो ॥ १८० ॥

उषायांसस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयः ।
श्रुतौगुडातसीधान्यचणकेषुहिमार्द्दयम् ॥ १८१ ॥
उत्तराषाढमें हो तो अन्नकी उत्पत्ति हो, आठ २ वर्षके बालकोंका नाश हो। श्रावणमें हो तो गुड अलसी और चणे आदि धान्यमें बर्फ ओले गिरनेका भय हो ॥ १८१ ॥

वासवेतुगवांपीडावारुणेशूद्ररोगता ।
दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता ॥ १८२ ॥
धनिष्ठामें गायोंको पीडा हो। शतभिषामें शूद्रोंमें रोग हो। पूर्वाभाद्रपदमें हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो ॥ १८२ ॥

उभायांनृपतिक्लेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम् ।
रेवत्यांनंदनंचन्द्रोमहर्घंकुंकुमाद्यपि ॥ १८३ ॥
उत्तराभाद्रपदमें हो तो राजाओंमें क्लेश तथा पक्षियोंमें आरोग्यता हो। और रेवतीमें बुध हो तो कुंकुम आदि महंगे हों॥१८३॥

मेषेबुधस्योदयतोगवादिचतुष्पदानांमहतीदपीडा । तीडादिनाधान्यमहर्घता च वृषेतिवृष्टिर्मिथुनेन वर्षा ॥ १८४ ॥
"उदय फल"—मेषमें बुधका उदय हो तो गाय बैल आदि चौपायोंको बडीभारी पीड़ा हो टीडी आदिसे धान्य महंगा हो। वृषमें हो तो वर्षा अधिक हो और मिथुनमें उदय हो तो वर्षा नहीं हो ॥ १८४ ॥

कर्केसुखंसिंहपदेचतुष्पान्म्रियेतकन्या बहुधान्यसौख्यम् ॥ भूकंपयुद्धादि तुलोदितेज्ञेतथाष्टमेराजभयंसुभिक्षम् ॥ १८५ ॥

कर्कमें सुख हो, सिंहमें चौपायोंकी मृत्यु हो, कन्यामें बहुत धान्य सुख हो। तुलमें उदय हो तो भूकंप तथा युद्धादि हों और वृश्चिकमें उदय हो तो राजभय तथा सुभिक्ष हो ॥ १८५ ॥

धनुर्बुधस्याभ्युदयात्सुखानिमृगेमही धान्यरसादिपूर्णा। कुम्भेतिवायुःपथिभिश्चमीनेदुर्भिक्षपक्षोयदिवातिवृष्टिः ॥ १८६ ॥

धनमें बुधोदय हो तो सुखका उदय हो, मकरमें हो तो पृथ्वी धान्य तथा रससे पूर्ण हो। कुम्भमें हो तो मार्गमें हवा बहुत चले और मीनमें बुधका उदय हो तो अति वृष्टिसे दुर्भिक्ष हो ॥ १८६ ॥

मेषेबुधास्तेभुवनेसुभिक्षंचतुष्पदांनाशकरंवृषास्तम्। राज्ञांतुपीडामिथुनेथकर्केऽनावृष्टयेमृत्युभयंच चौराः ॥ १८७ ॥

"अस्त फल"—मेष राशिमें बुधका अस्त हो तो सुभिक्ष हो। वृषमें उदय हो तो चौपायोंका नाश हो। मिथुनमें हो तो राजाओंको पीडा हो। और कर्कमें हो तो अनावृष्टि तथा मृत्युभय और चौरभय हो ॥ १८७ ॥

तथैवसिंहेल्पजलंचकन्याबुधास्ततश्चौरभयातिवृष्टिः। क्रयाणकानांचमहर्घतायेतुलाप्यलिधातुमहर्घतायै ॥ १८८ ॥

सिंहमें अस्त हो तो वर्षा कम हो, कन्यामें हो तो चौरभय तथा अतिवृष्टि हो। और तुलामें हो तो व्यापारी वस्तु महँगी हों तथा वृश्चिकमें हो तो धातु महँगे हों ॥ १८८ ॥

राज्ञांभयंधन्विनिरोगचारोमृगेल्पलाभो व्यवसायिलोके। कुंभेतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा मीनेज्ञधानानृपवर्गपीडा ॥ १८९ ॥

धनमें हो तो राजाओंमें भय हो। रोगका प्रचार हो। मकरमें हो तो व्यापारियोंको कम लाभ हो। कुम्भमें हो तो हवा बहुत चले और हिम (ठंढ) से वृक्ष जल जाँय तथा मीनमें बुधका अस्त हो तो राजवर्गमें पीडा हो ॥ १८९ ॥

(६) अथगुरुचारः।

मेषराशौयदाजीवश्चैत्रसम्वत्सरस्तदा।
प्रबुद्धोनामजलदःवर्षाचसर्वतोमुखी ॥ १९० ॥

(६) "गुरुचार विचार" मेष राशिमें बृहस्पति हो तो उसे चैत्र सम्वत्सर जानना उसमें प्रबुद्ध नामका मेघ चारों ओर जल बर्षाता है ॥ १९० ॥

सुभिक्षंविग्रहोराज्ञांसमर्धवस्त्रकपेटम्।
हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ॥ १९१ ॥

सुभिक्ष होता है राजाओंमें विग्रह रहता है। वस्त्र-कपीठ-सोना, चाँदी, तांबा, कपास और मूंगे यह सस्ते होते हैं ॥ १९१ ॥

अश्वपीडामहारोगोद्विजानांकष्टसंभवः।
मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्भाद्रपदेपुनः ॥ १९२ ॥

घोडोंमें महा रोगसे पीडा और ब्राह्मणोंको कष्ट यह फल तीन महीने रहता है ॥ १९२ ॥

गोधूमशालिमाषाणामाज्यस्यात्रसमर्घता।
दक्षिणस्यामुत्तरस्यांखण्डवृष्टिःप्रजायते ॥ १९३ ॥

फिर भादवेमें गेहूं—चावल, घी, उडद इनकी सस्ती होती है। और दक्षिण, उत्तरमें खण्ड वृष्टि होती है ॥ १९३ ॥

दक्षिणोत्तरयोर्देशेछत्रभंगोपिकुत्रचित् ।
दुर्भिक्षमपिषण्मासाआश्विनेफाल्गुनेतथा ॥१९४॥

दक्षिणोत्तर देशमें कहीं छत्रभंगभी हो सकता है। आश्विनसे फाल्गुन तक छः मासका दुर्भिक्ष हो ॥ १९४ ॥

पश्चात्सुभिक्षंद्वौमासौमेघावेस्युर्जलप्रदाः ।
कार्तिकेमार्गशीर्षेचकार्पासान्नमहर्घता ॥ १९५ ॥

पीछे सुभिक्ष हो दो मास वर्षा हो कार्तिक मार्गशीर्षमें कपास तथा अन्न महँगा हो ॥ १९५ ॥

मेदपाठेराज्यपीडा देशभंगोभवेद्ध्रुवम् ।
लोकाःसरोगादुर्भिक्षंपौषेरसमहर्घता ॥ १९६ ॥

मेदपाठमें राज्य पीडा तथा देश भंग हो पौषमें लोग रोगी हों रसकी महँगाई हो ॥ १९६ ॥

वाणिज्येसंशयोलाभेवैशाखेगुर्जरेरणः ।
छत्रभंगस्तथाषाढेश्रावणेचभयंपथि ॥ १९७ ॥

वैशाखमें व्यापार लाभमें संशय रहे गुर्जर देशमें रण हो छत्रभंग हो और श्रावणमें मार्ग भय हो ॥ १९७ ॥

अब्दमध्येयदाजीवःक्रमाद्राशित्रयंस्पृशेत् ।
तदासुभटकोटीभिःप्रेतपूर्णावसुंधरा ॥ १९८ ॥

(वर्षके बीचमें) यदि बृहस्पति तीन राशियोंको स्पर्श करे तो योद्धाओंकी कोटीका नाश हो तथा पृथ्वी प्रेतोंसे पूर्ण हो ॥ १९८ ॥

वृषगश्चेयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा ।
नंदशालोभवेन्मेघःसर्वधान्यसमर्घता ॥ १९९ ॥

वृषराशिमें बृहस्पति हो तो उसे वैशाख वत्सर जानना । इसमें नंदशाल नामक मेघ वर्षा करता है और सब रस सस्ते होते हैं॥१९९॥

वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणांरोगाश्वदन्तिनाम् ।
अश्वानांचमहापीडागृहवैरंपरस्परम् ॥ २०० ॥

वैशाख और आश्विनमें स्त्री और हाथियों को पीडा हो परस्पर विरोध हो ॥ २०० ॥

गोधूमशालिचणकामुद्गामाषास्तथातिलाः ।
महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेमेघानांनमहाजलम् ॥ २०१ ॥

गेहूं, चावल, चने, मूंग, उडद, तिल यह श्रावण तथा जेठमें महँगे होते हैं । वर्षा कम हो ॥ २०१ ॥

शृंगालकेमालवेचउत्पातोराजविग्रहः ।
देशभंगाद्भयंशून्यंघृतधान्यमहर्घता ॥ २०२ ॥

शृंगाल मालवा इनमें उत्पात हो राजाओंमें विग्रह हो देश भंग हो घी और धान्य थोडे कम विकें ॥ २०२ ॥

आषाढेश्रावणेवर्षानवर्षाभाद्रपादके ।
अश्वरोगश्चतुष्पादनाशःपीडागमःक्वचित्॥ २०३ ॥

आषाढ श्रावणमें वर्षा हो भादवेमें खींच हो । चौपायोंमें रोग हों । और चौपाये मरें ॥ २०३ ॥

मिथुने संगते जीवे ज्येष्ठाख्यो वत्सरो भवेत् ।
बालानां दोषमश्वानां खण्डवृष्टिस्तदावदेत्॥२०४॥

मिथुनमें बृहस्पति आवे तो जेष्ठ वर्ष होता है । इसमें बालकों तथा घोडोंमें पीडा हो खण्ड वृष्टि हो ॥ २०४ ॥

कर्कोटकस्तथा मेघो वर्षते नात्र संशयः ।
तस्करैः पीड्यते लोकः पापोपहतमानसैः॥ २०५॥

उस समयमें कर्कोटक नाम मेघ वर्षा करता है । लोग चोरोंसे पीडित हों ॥ २०५ ॥

पश्चिमायां सिंधुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ।
चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगपीडोत्तरापथे ॥२०६॥

पश्चिममें सिंधु देशमें वायव्यमें और उत्तर दिशामें चित्र विचित्र वर्षा हो तथा रोग पीडा हो ॥ २०६ ॥

श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कर्पूरं चंदनादिकम् ।
मंजिष्ठं नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च रूप्यकम् २०७
मासो वै पंचकं यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् ।
पश्चान्महर्घंपूर्वोक्तधान्यानां च समर्घता ॥२०८॥

सफेद वस्त्र,तथा काँसी कपूर चंदन मजीठ नारियल सुपारी सोना और चाँदी यह चैत्र तक पांच महीने सस्ते होकर फिर महँगे हों ॥ २०७॥२०८ ॥

श्रावणे तुमहत्कष्टंमहिषीणांचहस्तिनाम् ।
पूर्वाग्नियाम्यनैर्ऋत्यामीशानेचसुभिक्षता ॥ २०९ ॥

श्रावणमें भैंस और हाथियोंको बडा कष्ट हो और पूर्व, आग्नेय, दक्षिण ईशान इन दिशाओंके देशोंमें सुभिक्ष हो ॥ २०९ ॥

राजास्वस्थःप्रजावृद्धिःसुभिक्षंमंगलंभुवि ।
समर्घंतैलखण्डादिशर्कराधातवोपिच ॥ २१० ॥

राजालोग स्वस्थ रहें, प्रजामें वृद्धि हो, सुभिक्ष हो, पृथ्वीपर मंगल हों । तेल-खांड-शक्कर और धातु सस्ते हों ॥ २१० ॥

शुंठीमरीचपिप्पल्योमञ्जिष्ठोनातिकोशलः ।
महर्घंमेतद्रस्तुस्यात्फाल्गुनेधान्यसंग्रहः ॥ २११ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, मँजीठ, जायफल कंकोल यह महगे हों और फाल्गुनमें धान्य संग्रह लाभदायक हो ॥ २११ ॥

कर्कगुरुस्तदाऽऽषाढेवासरस्तत्रजायते ।
पूर्वदक्षिणयोर्मेघःमध्यमःकंबलाभिधः ॥ २१२ ॥

कर्क राशिका बृहस्पति हो तो उसको आषाढ वर्ष कहतेहैं । उसमें कंबल नामक मेघ दक्षिण और पूर्वसे वर्षा करते हैं ॥ २१२ ॥

महर्घं सर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुनेतथा ।
पश्चिमायांसिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि ॥ २१३ ॥
क्षयश्चतुष्पदानांस्याद्दुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् ।
हेमरूप्यंतथाताम्रंपट्टसूत्रंप्रवालकम् ॥२१४ ॥
मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोकोक्त्यालोकविक्रयः ।
मंजिष्ठाश्वेतवस्त्राणांसमर्घंस्यान्नसंशयः ॥ २१५ ॥

कार्तिक और फाल्गुनमें सब धान्य तेज हों, पश्चिम सिंधु देश वायव्य-उत्तर दिशा इनमें चौपायोंका नाश हो. हरिणोंको दुःखहो, दुर्भिक्ष हो । सोना, चांदी-ताम्बा, रेशम, मूंगा, मोती, द्रव्य, और अन्न यह लोकोक्तियों (बड़े सस्ते-बड़े अच्छे इत्यादि बातें बनानेसे बिकें । और मंजीठ तथा श्वेत वस्त्र सस्ते हों ॥२१३॥२१४॥२१५॥

गोधूमशालितैलाज्यंलवणंशर्करापुनः ।
माषामहर्घाजायन्तेपापकर्मरतोजनः ॥ २१६ ॥

गेहूँ, चावल, तेल, घी, नमक, शक्कर, उडद यह महँगे हों और मनुष्य पाप करें ॥ २१६ ॥

पट्टसूत्रंचवस्त्राणिजातीफललवंगकम् ।
मरिचंशीतकालेथसंग्राह्यावैवणिग्जनैः ॥ २१७ ॥

रेशमी वस्त्र, जायफल, लौंग और मिर्च यह जाडेमें व्यापारियोंको संग्रह करनी चाहिये ॥ २१७ ॥

वैशाखज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणस्तस्यविक्रयात् ।
वर्षाकाले महावर्षासर्वधान्यसमर्घता ॥ २१८ ॥

इन वस्तुओंको वैशाख जेठमें बेचनेसे दूना लाभ हो वर्षा ऋतुमें बहुत वर्षा होनेसे खेतियां बहुत हों ॥ २१८ ॥

सिंहेजीवेश्रावणाख्यंवत्सरेवासुकिर्घनः ।
बहुक्षीरघृतागावोजलपूर्णाचमेदिनी ॥ २१९ ॥

सिंह राशिपर बृहस्पति आवे तब उसको श्रावण वर्ष कहते हैं । उसमें वासुकी मेघ वर्षता है गायें घी दूध बहुत देती हैं और पृथ्वी जलसे पूर्ण होजाती है ॥ २१९ ॥

देवब्राह्मणपूजास्यान्नराणांमान्यतासताम् ।
रोगाविवादश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्घता ॥ २२० ॥

उस समयमें देव ब्राह्मणोंकी पूजा हो और सत्पुरुषोंका मान हो। रोग विवाद हो और चौपायोंकी तेजी हो ॥ २२० ॥

गोधूमतिलमाषाज्यशालीनांचमहर्घता ॥
सुवर्णरूप्यताम्रादेःप्रवालानांसमर्घता ॥ २२१ ॥

गेहूं, तिल, उडद, घी, चावल, सोना, रूपा, तांबा और मूंगे महँगे हों ॥ २२१ ॥

सुभिक्षंसर्पदंशश्चमेघोप्याषाढभाद्रयोः ।
श्रावणेवृष्टिरल्पैवसुकालःकार्तिकेमतः ॥ २२२ ॥

सुभिक्ष हो, कहीं सर्प बाधा हो आषाढ और भादवेमें अच्छी वर्षा हो श्रावणमें कम वर्षा हो और कार्तिकमें सुकाल हो ॥ २२२ ॥

कन्याभोगेगुरोर्जातेमेघनामतमस्तमः ।
भाद्रसम्वत्सरस्तत्रसप्तमासाश्चरौरवम् ॥ २२३ ॥

जब कन्या राशिपर बृहस्पति आवे तो उसे भाद्रपद वर्ष कहते हैं। उसमें तमनाम मेघ वर्षता है और सातमहीने दुःख रहता है॥२२३॥

ततःपरंसुभिक्षस्यात्कार्तिकान्माधवावधि ।
धान्यसंग्रहणेलाभोद्विगुणोभाद्रमासजः ॥ २२४ ॥

इसके पीछे कार्तिकसे लेकर वैशाख तक सुभिक्ष रहता है । इस अवसरमें धान्य संग्रह करनेसे भादवेमें दूना लाभ होताहै ॥२२४॥

चतुष्पदानांपीडापि गोधूमाःशालिशर्कराः ।
तैलंमाषामहर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा ॥२२५ ॥

उस वर्षमें चौपायोंमें पीडा हो गेहूं, धान्य, शक्कर, तेल, उडद, ईख और गुड यह महँगे हों ॥ २२५ ॥

शूद्राणामंत्यजानांचकष्टंसौराष्ट्रमण्डले ।
खण्डवृष्टिर्दक्षिणस्यामुत्पातोम्लेच्छमण्डले॥२२६॥

तथा शूद्र और अन्त्यजोंको कष्ट हो। सौराष्ट्र देशमें कष्ट दक्षिणमें खण्ड वृष्टि और म्लेच्छ देश (काबुल) में उत्पात हों ॥ २२६ ॥

मेदपाटे शृगालेचपरचक्रभयंरणः ।
सर्पदंशोवह्निभयंमेघोल्पश्चरसेल्पता ॥ २२७ ॥

मेदपाट और शृगाल देशमें शत्रुसे भय और युद्ध हो । साँपोंके काट खानेकी तथा अग्निकी शिकायत रहे । मेघ और रस कम हों ॥ २२७ ॥

मरुदेशेछत्रभंगश्चैत्रेवामाधवेभवेत् ।
गोधूमघृततैलानिमहर्घाणिसमादिशेत् ॥ २२८ ॥

चैत्र वा वैशाखमें मरु देशमें छत्रभंग हो । और गेहूं घी तेल महँगे बिकें ॥ २२८ ॥

वस्त्रकम्बलधातूनामन्नादेश्चसमर्घता ।
धान्यसंग्रहआषाढेभाद्रेलाभश्चतुर्गुणः ॥ २२९ ॥

वस्त्र कम्बल धातु यह सस्ते हों और आषाढमें धान्य संग्रह करनेसे भादवेमें चौगुणा लाभ हो ॥ २२९ ॥

गुरोस्तुलायांमेघाख्यःतक्षकोवत्सरोऽश्विनः ।
तदातिवृष्टिर्मंजिष्ठानालिकेरसमर्घता ॥ २३० ॥

यदि गुरु तुल राशिपर आवे तो वह आश्विन नामका वर्ष होता है उसमें तक्षक मेघ अत्यंन्त वृष्टि करता है।और मंजीठ तथा नारियल महँगे होते हैं ॥ २३० ॥

अन्योन्यराजयुद्धानिसमर्घत्वाज्यतैलयोः ।
मार्गशीर्षेतथापौषेद्वयेधान्यस्यसंग्रहः ॥ २३१ ॥
लाभःस्यात्पंचमेमासेमार्गात्प्रारभ्यचैत्रतः ।
छत्रभंगस्ततोराजविग्रहःक्वापिमंडके ॥ २३२ ॥

राजाओंमें अन्योन्य युद्ध हो घी तेल सस्ते हों। यदि मगसिर और पौषमें धान्य संग्रह करे तो पाँचवें महीने (चैत्र या वैशाखमें) लाभ हो।और कहीं छत्र भंग तथा राजाओंमें विग्रह हो२३१॥२३२

उत्पातोमरुदेशेस्यान्मार्गेचौरभयंतथा ।
कोटजेसलमेवाँदौपरचक्रगमोमत ः ॥ २३३ ॥

मारवाड़में उत्पात हों मगशिरमें चौरभय हो। कोट और जैसलमेर आदिमें परचक्र हो ॥ २३३ ॥

रसक्रयाणकादीनांसंग्रहेणचतुर्गुणः ।
लाभश्चतुर्थकेमासेधातूनांचसमर्घता ॥ २३४ ॥

रसादिकोंके संग्रहसे चौथे मासमें लाभ हो तथा धातु सस्ते हों ॥ २३४ ॥

वृश्चिकस्थेगुरौसोममेघःकार्तिकमासतः ।
सम्वत्सरःखण्डवृष्टिर्धान्यमल्पंभयंमहत् ॥ २३५॥

वृश्चिकका बृहस्पति हो तब कार्तिक वर्ष होता है उसमें सोम मेघ वर्षता है । खण्ड वर्षा होती है । और खेतियां कम पैदा होती हैं। तथा भय अधिक होता है ॥

गृहेपरस्परंवैरमष्टौमासानसंशयः ।
भाद्राश्विनकार्तिकाख्यास्त्रयोमासामहर्घता २३६॥

लोगोंके घरोंमें आठ महीने तक परस्पर वैर भाव रहता है । भाद्रपद आश्विन कार्तिक इन तीनोंमें महँगाई होती है ॥ २३६ ॥

हेमरूप्यंकांस्यताम्रतिलाज्यश्रीफलादिषु ।
महर्घंगुडकार्पासलवणश्वेतवस्त्रकम् ॥ २३७ ॥

सोना, चांदी, कांसी, तांबा, तिल, घी, श्रीफल, गुड, कपास लवण और सफेद वस्त्र यह महँगे होते हैं ॥ २३७ ॥

महिषीवृषभाश्वाः समर्घामध्यमंडले ।
पीडास्यान्म्लेच्छलोकानांमहोत्पातश्चसंभवेत्२३८॥

भैंस, बैल, घोड़े यह मध्य प्रदेशमें सस्ते होते हैं । और म्लेच्छ लोगोंमें पीडा होती है तथा बडे उत्पात रहते हैं ॥ २३८ ॥

देशभंगोप्यल्पवृष्टिःस्त्रीणामपिचदुःखिता ।
मरौतथानागपुरेदेशेक्लेशाकुलाःप्रजाः ॥ २३९ ॥

देशभंग अल्प वृष्टि तथा स्त्रियोंको दुःख होता है । मरु देश तथा नागपुरकी प्रजा क्लेशोंसे आकुल होती है ॥ २३९ ॥

धनेगुरौहेममालीमेघसम्वत्सरस्तथा ।
मार्गशीर्षेदिव्यवृष्टिःस्त्रीणांपीडागृहेगृहे ॥ २४० ॥

धनका बृहस्पति हो तो मार्गशीर्ष संवत्सर होता है उसमें हेममाली मेघ वर्षता है । और घर घरमें स्त्रियोंको पीडा होती है ॥ २४० ॥

पूर्वकालेभवेद्धान्यंगोधूमशालिशर्कराः ।
कार्पासश्चप्रवालानिकांस्यलोहघृतंत्रपु॥ २४१ ॥
हेमरूप्यमहर्घाणितिलास्तैलंगुडस्तथा ।
पूगीफलंश्वेतवस्त्रंसमर्घंचकचिद्भवेत् ॥ २४२ ॥

पूर्वकालमें धान्य, गेहूं, चावल, शक्कर, अधिक हों और कपास, प्रवाल, कांसी, लोह, घी, सीसा, सोना, चांदी यह महँगे हों तथा तिल तेल गुड़ सुपारी श्वेत वस्त्र यह कुछ सस्ते हों ॥ २४१॥२४२ ॥

मार्गशीर्षात्पुनर्ज्येष्ठंयावद्घृतमहर्घता ।
महिषीवाजिधनूनांमंजिष्ठायामहर्घता ॥ २४३ ॥

मगशिरसे लेकर जेठतक घी महंगा हो और भैंस, घोड़े गौ, मँजीठ महँगे हों ॥ २४३ ॥

मार्गशीर्षेतथापौषेमंजिष्ठाहिंगुमौक्तिकम् ।
जातीपूगीफलंचैवप्रवालानांमहर्घता ॥ २४४ ॥

मगशिर तथा पौषमें मँजीठ हींग, मोती जायफल सुपारी और प्रवाल महँगे हों ॥ २४४ ॥

चतुष्पादादिकार्पासंसंग्रहोरसमापकान् ।
तल्लाभःसप्तमेमासेप्रोक्तोव्यक्तश्चतुर्गुणः ॥ २४५ ॥

चौपाये आदि तथा कपास-संग्रह करनेसे सात महीने पीछे चौगुणा लाभ होता है ॥ २४५ ॥

गुरौमकरगेमेघोजलेन्द्रःपौषवत्सरः ।
चतुष्पदक्षयोभूम्यांदुर्भिक्षंनिर्जलोजनः ॥ २४६ ॥

जब गुरु मकर राशिमें आवे तब पौष वर्ष होता है उसमें जलेन्द्रमेघ वर्षता है । यह चौपायोंका नाश और पृथ्वीपर दुर्भिक्ष तथा मनुष्योंको निर्जल कर देता है ॥ २४६ ॥

उत्तरेपश्चिमेदेशेखण्डवृष्टिःकदापिच।
पूर्वस्यांदक्षिणेचैवदुर्भिक्षंराज्यविग्रहम् ॥ २४७ ॥

उत्तर तथा पश्चिम देशोंमें खण्ड वृष्टि और पूर्व दक्षिणमें राज-विग्रह तथा दुर्भिक्ष करता है ॥ २४७ ॥

पापबुद्धिरतालोकाहाहाभूतावमेदिनी।
जलतैलाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रेमहर्घता ॥ २४८ ॥

लोग पापबुद्धिरत होजाते हैं। और पृथ्वीपर हाहाकार मच जाता है। जल, तेल, घी, दूध, अन्न और लाल वस्त्र यह महँगे होजाते हैं ॥ २४८ ॥

उत्तमामध्यमाःसर्वेसर्वभक्षणतत्पराः।
क्षत्रियाणांछत्रभंगोम्लेच्छानांचततःक्षयः ॥२४९ ॥

उत्तम मध्यम सबही सर्वभक्षी होजाते हैं और क्षत्रियोंका छत्र-भंग तथा म्लेच्छोंका क्षय होता है ॥ २४९ ॥

चैत्राश्विनाषाढमासास्त्रयोमहर्घहेतवः।
पश्चाद्धान्यंसुभिक्षंस्यात्प्रजापीडादितस्कराः२५०॥

चैत्र आषाढ और आश्विन इन तीनों महीनोंमें अन्न तेज रहकर पीछे सस्ता हो तथा प्रजामें पीड़ा और चौर भय हो ॥ २५० ॥

हेमरूप्यंताम्रलोहंकर्पूरंचन्दनादिकम्।
महर्घनर्मदातीरेअन्यदेशेशुभंभवेत ॥ २५१ ॥

सोना चांदी तांबा लोह कपूर और चन्दन आदि नर्मदा किनारे महँगे हों और अन्यत्र शुभ हों ॥ २५१ ॥

मेषेमालवकेदेशेभंगोवर्षानभूयसी।
व्याधयोबहुलारूप्यधातूनांचमहर्घता ॥ २५२ ॥

मालव देशमें भंग हो और बहुत वर्षा नहीं हो व्याधियां बहुत हों तथा चांदी महँगी हो ॥ २६२ ॥

भेदपाटे चकटकेमार्गशीर्षेपिपौषके ।
महाजनानांपीडापिच्छत्रभंगोमहाभयम् ॥ २५३ ॥

भेदपाट और कटकमें मगशिर पौषमें बड़े लोगोंको पीडा हो छत्रभंग तथा भय हो ॥ २५३ ॥

देशग्रामपुरादीनांविध्वंसोयुद्धसंभवः ।
शालयोयवगोधूमामहर्घाःस्युस्तथारसाः ॥ २५४ ॥

देश ग्राम पुरादिमें विध्वंसक युद्ध हो । और चावल जौ गेहूं मह महँगे हों ॥ २५४ ॥

कुंभेगुरौवत्सदशोमेघोमाघादिवत्सरः ।
सुभिक्षंजायतेतत्रऋषिदेवद्विजार्चनम् ॥ २५५ ॥

कुम्भका बृहस्पति हो तो माघ वर्ष होताहै उसमें पन्द्रह मेघ वर्षता है । उसमें सुभिक्ष होता है और ऋषि देवता तथा ब्राह्मणोंकी पूजा होती है ॥ २५५॥

कांस्यंचपित्तलंलोहंमंजिष्ठात्रपुकांचनम् ।
एषांमासत्रयंयावत्समर्घत्वंप्रजायते ॥ २५६ ॥

कांसी पीतल लोह मंजीठ. सीसा और सोना इनका ३ मास तक सस्तापन रहे ॥ २५६ ॥

माघफाल्गुनचैत्रेषुरोगामासत्रयेमताः ।
महर्घंलवणंलोकेमरौधान्यमहर्घकम् ॥ २५७ ॥

माघ–फाल्गुन–चैत्रमें रोग हो । नमक महँगा. तथा मरु देशमें धान्य महँगा हो ॥ २५७ ॥

चैत्रवैशाखयोःसिंधुदेशेकटकचालकः।
वस्त्रकंबलहिंगूनांमहर्घत्वंप्रजायते ॥ २५८ ॥
चैत्र वैशाखमें सिंधु देशमें कटक तथा चालक प्रदेशमें वस्त्र कंबल हींग महंगे हों ॥ २५८ ॥

कार्तिकेआश्विनेरोगाश्छत्रभंगोमहद्भयम् ।
रसकार्पासवस्त्राणांसर्वत्रस्यान्महर्घता ॥ २५९ ॥
कार्तिक आश्विनमें रोग हों, छत्रभंग तथा महाभय हो । और रस कपास वस्त्र यह सर्वत्र महंगे हों ॥ २५९ ॥

श्रावणेवाभाद्रपदेधान्यंसंगृह्यतेयदा ।
पौषेस्याद्द्विगुणोलाभःयुगंधर्याश्चविक्रयात्॥२६०॥
यदि श्रावण भादवेमें धान्य संग्रह करे तो पौषमें दुगुणा लाभ हो तथा युगंधरीके विक्रयसेभी लाभ हो ॥ २६० ॥

मीनेगुरौफाल्गुनेस्याद्वत्सरःसंभवोघनः।
खण्डवृष्टिर्महर्घाणिसर्वधान्यानिभूतले ॥ २६१ ॥
मीनके बृहस्पतिमें फाल्गुन संवत्सर होता है इसमें संभव मेघ बर्षता है । खण्ड वृष्टि होती है और सब धान्य महंगे होते हैं२६१॥

विविधारोगपीडाचदेशान्तरेव्रजेज्जनः ।
मासानांपंचकंयावद्भयंराजविरोधतः॥ २६२ ॥
पश्चात्सुखंसुभिक्षंच शालिगोधूमशर्कराः ।
तिलतैलगुडानांचमहर्घत्वंसमीरितम् ॥ २६३ ॥
कई प्रकारकी रोगपीडासे लोग देशान्तरमें चले जांय । और राज विरोधसे पांच महीने भय रहे । पीछे सुख तथा सुभिक्ष हो । शाली गेहूं, शक्कर, तिल, गुड, यह महंगे हों ॥ २६२ ॥ २६३ ॥

मञ्जिष्ठानारिकेलानांश्वेतवस्त्रंचदन्तकाः ।
कर्पूरलवणाज्यानांमहर्घत्वंप्रजायते ॥ २६४ ॥

मजीठ, नारियल, श्वेत वस्त्र, हाथीदांत, कपूर, नमक और घी महंगे हों ॥ २६४ ॥

पौषेक्लेशसमुत्पत्तिस्तथाफाल्गुनचैत्रयोः ।
मरुदेशेमहापीडादुर्भिक्षंतत्रजायते ॥ २६५ ॥

पौषमें क्लेश उत्पन्न हो तथा फाल्गुन और चैत्रमें मरुदेशमें महा पीड़ा तथा दुर्भिक्ष हो ॥ २६५ ॥

चतुष्पदानांमरणंवैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् ।
आषाढे श्रावणेधान्यंघृततैलमहर्घता ॥ २६६ ॥

वैशाख जेठमें चौपायोंका मरण और आषाढ श्रावणमें धान्य तथा घी तेल महंगे हों ॥ २६६ ॥

श्रावणस्योत्तरेपक्षेमहावर्षाप्रजायते ।
घृतंसमर्घंभाद्रपदेशुभावाश्विनकार्तिकौ ॥२६७॥

श्रावण शुक्लमें महा वर्षा हो भादवेमें घी सस्ता हो और आश्विन कार्तिकमें शुभ हो ॥ २६७ ॥

समर्घास्तिलकार्पासाश्छत्रभंगस्ततोऽर्बुदे ।
मार्गशीर्षेतथापौषेउत्पातोमरुमण्डले ॥ २६८ ॥

तिल कपास सस्ते हों आबूमें छत्रभंग हो और मगशिर पौषमें मारवाडमें उत्पात हो ॥ २६८ ॥ (इति)

अथ वक्रीविचारः ।

मेषराशिगतोजीवोयदास्यान्मीनसङ्गतः ।
तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः ॥२६९॥

एतेमहर्घतांयांतिमासद्वयंनसंशयः।
पश्चाद्भाद्रपदेमासेआश्विनेहेमहेश्वरि॥ २७० ॥

"वक्री विचार"–मेषका बृहस्पति वक्री होकर मीन पर आजाय तो आषाढ श्रावणमें गाय, भैंस, गधे और ऊंट यह दो महीने निःसन्देह महंगे हों पीछे हे पार्वती! भादवा आसोजमें सस्ते हों ॥ २६९ ॥ २७० ॥

चन्दनंकुसुमंचापियेचान्येपिसुगंधयः।
तैलपण्यानिसर्वाणिमासद्वयंमहर्घता ॥ २७१ ॥

चन्दन पुष्प तथा औरभी सुगन्धवाली वस्तुएं और तैलादि सब दो मास महंगे हों ॥ २७१ ॥

वृषराशिगतेजीवेवक्रीस्यान्मासपंचके।
वृषभादिचतुष्पादैस्तुलाभाण्डेमहर्घता ॥ २७२ ॥

वृषका बृहस्पति वक्री हो तो पांच महीने बैल आदि चौपाये तथा तौलके बिकनेवाले पदार्थ और बर्तन महंगे हों ॥ २७२ ॥

संग्रहःसर्वधान्यानांमासाष्टकेमहर्घता।
श्रीःश्रावणेभाद्रपदेआश्विनेकार्तिकेतथा ॥ २७३॥
तत्परंसर्वधान्यानांचतुष्पादांविशेषतः।
विक्रयाद्विगुणोलाभःत्रिगुणस्तुचतुष्पदे ॥ २७४ ॥

सब धान्योंका संग्रह किया जाय तो लाभ हो क्योंकि आठ महीने महंगाई रहे। श्रावण, भादवा आसोज और कार्तिकके पीछे सब धान्य तथा विशेषकर चौपाये बेचनेसे दुगुणा लाभ हो और चौपायोंमें तिगुणा लाभ हो ॥ २७३ ॥ २७४ ॥

मिथुनस्थःसुरगुरुःविकारंकुरुतेयदा।
अष्टमासीभवेत्क्रूराचतुष्पदमहर्घता ॥ २७५ ॥

गेहूं चने आदि बेचनेके धान्य और गुड़ लवणादि सस्ते हों ॥२८८॥

चैत्रादिसंग्रहस्तेषांमार्गशीर्षादिविक्रयः ।
सर्वाणिलाभंलभतेमासैकादशकात्यये ॥ २८९ ॥

इनका चैत्रादिमें संग्रह करके मार्गशीर्षादिमें बेचनेसे सबहीमें लाभ होता है ॥ २८९ ॥

मकरस्थो यदा जीवःकरोति वक्रगामिताम् ।
आरोग्यंकुरुतेधान्यंसमर्घंनात्रसंशयः ॥ २९० ॥

मकरका बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे और धान्य सस्ता हो ॥ २९० ॥

कुंभराशिगते जीवः करोति यदि वक्रताम् ।
आरोग्यंसर्वस्वस्थरवंराज्ञांश्रीजयसंभवः ॥ २९१ ॥

कुंभका बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे, सब स्वस्थ रहें और राजाओंको विजयश्री मिले ॥ २९१ ॥

सर्वधान्येषुनिष्पत्तिः सर्वधान्यस्यविक्रयः ।
घृततैलतुलाभांडमासाष्टकेचसंग्रहः ॥ २९२ ॥
पश्चाद्विक्रयतोलाभःसुभिक्षंनिर्भयाजनाः ।
पूजागोद्विजदेवानां भवत्येव न संशयः ॥ २९३ ॥

सब धान्यकी उत्पत्ति हो सब धान्योंके विक्रयसे लाभ हो । घी तेल तुला और भाण्ड इनका ८ मास संग्रह करके पीछे बेचे तो लाभ हो । सुभिक्ष हो । मनुष्य निर्भय हों और गौ ब्राह्मण तथा देवताओंका निःसन्देह पूजन हो ॥ २९२ ॥ २९३॥

मीनराशिगतोजीवो वक्रतामुपयातिचेत ।
धनक्षयस्तदालोकेचौराद्राजापिरोपितः ॥ २९४ ॥

मीनका गुरु वक्री हो तो चौर तथा राजाओंके द्वारा धनका नाश हो ॥ २९४ ॥

निराधाराप्रजापीडाग्रहभूतादिदोषतः ।
तुलाभांडगुडःखंडाअर्घंददतिवांछितम् ॥ २९५ ॥

निराधार प्रजाको ग्रह भूतादि दोषोंसे पीड़ा हो, तुल भाण्ड गुड़ खाण्ड यह इच्छित लाभ दें ॥ २९५ ॥

लवणंघृततैलादिसर्वधान्यमहर्घता ।
कार्पासस्यार्घसम्प्राप्तिर्लाभस्तेषांचतुर्गुणः॥२९६॥

लवण, घी, तैलादि और सब धान्य महँगे हों, कपासभी महँगी हो इन सबमें चौगुना लाभ हो ॥ २९६ ॥

अथ नक्षत्रभोगविचारः ।

कृत्तिकारोहिणीऋक्षेयदातिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
मध्यमात्रभवेद्वृष्टिःसस्यंभवतिमध्यमम् ॥ २९७ ॥

"नक्षत्र भोग विचार" यदि कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रपर बृहस्पति हो तो वर्षा तथा खेती मध्यम हो ॥ २९७ ॥

मृगशीर्षेतथार्द्रायांयदितिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
सुभिक्षंलभतेसौख्यंवृष्टिंजातंसदाजनः ॥ २९८ ॥

मृगशिर और आर्द्रापर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष हो, लोगोंको सुख मिले और वर्षा हो ॥ २९८ ॥

आदित्यपुष्याश्लेषासुगुरुभोगेप्रसंगिनी ।
अनावृष्टिभयंघोरंदुर्भिक्षंसर्वमण्डले ॥ २९९ ॥

पुनर्वसु पुष्य और श्लेषापर गुरु हो तो अनावृष्टिसे सर्वत्र दुर्भिक्ष हो ॥ २९९ ॥

मघाचपूर्वाफाल्गुन्यांयदातिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंदेशयोगंबहूदकम् ॥ ३०० ॥

मघा और पूर्वाफाल्गुनी पर हो तो देशमें सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और बहुत जल हो ॥ ३०० ॥

उत्तराफाल्गुनीहस्तेगुरौवर्षासुखंजने ।
चित्रायांचतथास्वातौविचित्राधान्यसंपदः ३०१॥

उत्तराफाल्गुनी तथा हस्तपर बृहस्पति हो तो वर्षा हो लोग सुखी रहैं । और चित्रा स्वातीपर हो तो धान्य संपत्ति विचित्र हो॥ ३०१॥

विशाखायांचराधायांसस्यंभवतिमध्यमम् ।
मध्यमैवभवेद्वर्षावर्षं तदपि मध्यमम् ॥ ३०२ ॥

विशाखा तथा अनुराधा पर बृहस्पति हो तो अन्न मध्यम हो । और वर्षा मध्यम होनेसे वर्ष भी मध्यम हो ॥ ३०२ ॥

गुरुज्येष्ठामूलचारेमासद्वयेनवर्षणम् ।
परतःखण्डवृष्टिःस्यान्नृपाणांदारुणोरणः ॥३०३॥

ज्येष्ठा तथा मूलका बृहस्पति हो तो दो मास वर्षा नहीं हो, पीछे खंड वर्षा हो और राजाओंमें दारुण रण हो ॥ ३०३ ॥

जीवेपूर्वोत्तरापाढयुक्तेलोकसुखंमतम् ।
त्रिमासाज्जायतेवर्षामासमेकंनवर्षति ॥ ३०४ ॥

पूर्वोत्तरापाढमें बृहस्पति हो तो लोग सुखी रहैं तीन महीने मेघ वर्षे और एक मास नहीं वर्षे ॥ ३०४ ॥

श्रवणेवाधनिष्ठायांवारुणेगुरुसंगमे ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंबहुसस्याचमेदिनी ॥ ३०५ ॥

श्रवण धनिष्ठा तथा शतभिषाका बृहस्पति हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो और पृथ्वीपर खेतियाँ बहुत उत्पन्न हों ॥ ३०५ ॥

पूर्वोत्तराभाद्रपदयोरनावृष्टिभयादिकम् ।
पौष्णाश्विनीभरणीषुसुभिक्षंधान्यसम्पदा ॥३०६॥

पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपदपर गुरु हो तो अनावृष्टि आदिका भय हो। और रेवती, अश्विनी, भरणी पर हो तो सुभिक्ष हो तथा धान्य सम्पदा अच्छी हो ॥ ३०६ ॥

विशेषफलम् ।

मृगादिपंचकंचित्राद्वयमेवाष्टकन्तथा ।
नक्षत्रेषुशुभंजीवोशेषेषुशुभमादिशेत् ॥ ३०७ ॥

"विशेष फल" मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, चित्रा स्वाती विशाखा, इनका गुरु शुभ होता है ॥ ३०७ ॥

स्वातिमुख्याष्टकेजीवेत्वश्विन्यादित्रिकेपिच ।
शनिराहुकुजैश्चैवप्रत्येकंसहितोभवेत् ॥ ३०८ ॥
सञ्चरतेयदाकालेसुभिक्षंजायतेतदा ।
मृगादिदशकेजीवेधनिष्ठापंचकेथवा ॥ ३०९ ॥
भौमादिसहितोगच्छेद्दुर्भिक्षंतत्रजायते ।
एकराशिगतेचैवएकर्क्षेतुमहद्भयम् ॥ ३१० ॥

स्वातिको आदि लेकर आठ नक्षत्रोंपर अथवा अश्विन्यादि तीन पर शनि राहु मंगल इन सहित बृहस्पति विचरे तो सुभिक्ष होताहै। मृगशीर्षादि पांचमें तथा धनिष्ठादि ५ में भौमादि सहित बृहस्पति चले तो दुर्भिक्ष हो। एक राशिका गुरु एकही नक्षत्रपर रहे तो महाभय हो ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥

अतिचारगते जीवेवक्रीभूतेशनैश्चरे।
हाहाभूतंजगत्सर्वंरुण्डमालामहीतले ॥ ३११ ॥

बृहस्पति अति चारी (शीघ्र गति वाला) हो और शनैश्चर वक्री हो तो पृथ्वीपर उस समय सब जगतमें हाहाकार मचे और महीतलपर रुण्डमालायें हों ॥ ३११ ॥

उदयफलम् ।

मेषेगुरूदयभवात्त्वतिवृष्टिरेवदुर्भिक्षमुत्तमनृतिर्वृषभेसुभिक्षम् ।पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः स्यादवस्थयामिथुनकेगणिकासुपीडा ॥ ३१२ ॥

"उदय फल"–मेषमें गुरु उदय होनेसे अतिवृष्टिके कारण दुर्भिक्षमें मरण होता है । वृष राशिमें उदय हो तो सुभिक्ष होता है । पाषाण शाली–मणि रत्न महंगे होते हैं । और मिथुनमें उदय हो तो अपनी अवस्थासे वेश्याओंमें पीडा होती है ॥ ३१२ ॥

स्यात्कर्कटेजनमृतिर्जलवृष्टिरल्पासिंहेतथैवकथितंबहुधान्यलाभः । कन्यास्थितस्यचगुरोरुदयेशिशूनांपीडातथैवगणिकासुचवृद्धलोके ॥ ३१३ ॥

कर्कमें हो तो मनुष्योंकी मृत्यु हो, जल वृष्टि कम हो, सिंहमें हो तो बहुत धान्य लाभ हो, कन्यापर बैठे हुए गुरुके उदयसे बालकोंको पीडा हो तथा वेश्या और वृद्धोंको पीडा हो ॥ ३१३ ॥

काश्मीरचन्दनफलादिमहर्घतास्याल्लाभोमहान् व्यवहृतौचतुलावलंबे । दुर्भिक्षतालिधनुषोरपि चाल्पवर्षालोकेरुजोमकरकेबहुधान्यवृष्टिः ॥ ३१४ ॥

तुलके बृहस्पतिके उदय होनेसे कश्मीरी चन्दन तथा फलादि महँगे हों, व्यवहारमें लाभ हो । वृश्चिकमें दुर्भिक्ष और धनमें अल्प वर्षा हो और मकरमें रोग तथा बहुत धान्य वर्षा हो ॥ ३१४ ॥

कुंभेगुरोरुदयतासकलेपिदेशेवृष्टिर्घनेपिचघनेति महर्घमन्नम् । मीनेल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगःपी- डाजनस्यमरकान्नरकानुरूपा ॥ ३१५ ॥

कुम्भके बृहस्पतिके उदय होनेसे सब देशोंमें बहुत वर्षा और बहुत महँगाई हो और मीनमें उदय होनेसे राजाओंके युद्धका योग हो और मनुष्योंमें मरकीसे नरक समान पीड़ा हो॥ ३१५ ॥

मासफलम् ।

जीवोभ्युदेतियदिकार्तिकमासिवह्निर्भीकेनवृष्टि- रपिरोगनिपीडनंच । मार्गेपिधान्यविगमंसुख- मेवपौषेनीरोगतासकलधान्यसमुद्भवश्च ॥ ३१६ ॥

"मासोदय फल"—यदि कार्त्तिकमें बृहस्पति उदय हो तो वह्नि भय हो, अनावृष्टि हो, रोग पीडा हो। मगशिरमें हो तो धान्य बाहर बहुत जाय। पौषमें सुख हो और नैरोग्यता हो तथा सब धान्य उत्पन्न हों॥ ३१६॥

माघेतथैवपरतोभुविखण्डवृष्टिश्चैत्रेविचित्रजल- वृष्टिरतोपिराधे। सर्वं सुखंजलनिरोधनमेवशु- क्रेऽप्याषाढकेनृपरणान्नमहर्घताच ॥ ३१७॥

माघ और फाल्गुनमें उदय हो तो खण्ड वृष्टि हो चैत्रमें विचित्र वर्षा, वैशाखमें सर्व सुख, ज्येष्ठमें जलकी रुकावट और आषाढमें राजाओंमें रण तथा अन्नकी महर्घता हो ॥ ३१७ ॥

आरोग्यंश्रावणेवर्षावहुलासुखिनोजनाः । भाद्रमासेधान्यनाशआश्विनःसुखदःस्मृतः ॥३१८॥

श्रावणमें गुरु उदय हो तो-आरोग्यता बढे, वर्षा बहुत हो, लोग सुखी रहें। भादवेमें उदय हो तो धान्य नाश हो और आश्विनमें हो तो सुख देवे ॥ ३१८ ॥ (इति)

अस्तफलम् ।

यद्यस्तमेत्यजगतोगुरुरल्पवृष्टिर्दुर्भिक्षमेवकुरुते वृषभेगुरुःस्यात् । तैलंघृतंचलवणंप्रभवेन्महर्घं- मृत्युस्तथाल्पजलदोमिथुनेस्तमास्ते ॥ ३१९ ॥

"अस्त फल"–यदि मेष राशिपर स्थित हुआ बृहस्पति अस्त हो तो अल्प वर्षा हो, वृषका अस्त हो तो दुर्भिक्ष करे, मिथुनमें हो तो तैल घी लवणकी महर्घता हो । मनुष्योंकी मृत्यु हो और वर्षा कम हो ॥ ३१९ ॥

कर्केस्ततोनृपभयंकुशलंसुभिक्षंसिंहेनृणामरणलो- कधनादिनाशः । कन्यास्ततःसकलधान्यसम- र्घतास्यात्क्षेमंसुभिक्षमतुलंजनलोकनाशः॥ ३२०॥

कर्कका गुरु अस्त हो तो राजाओंमें भय हो–कुशल हो–सुभिक्ष हो । सिंहमें अस्त हो तो लोक धनादिका नाश हो । कन्याका अस्त हो तो सब धान्य सस्ते हों क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ ३२० ॥

पीडाद्विजेषुबहुधान्यसमर्घताचजातेतुलास्तम- यनेनयनेषुरोगः । राज्ञांभयान्यलिनितस्करलुं- ठनानिमापास्तिलाश्चमहर्घोधनुपास्तमास्ते॥ ३२१॥

तुलाका अस्त हो तो मनुष्योंका नाश हो, ब्राह्मणोंमें पीडा हो, धान्यकी बहुत समर्घता हो । वृश्चिकमें हो तो आंखें दूखनेका विकार अधिक फैले । धनमें हो तो राजाओंका भय हो चोरोंकी लूट खोस रहे । मकरमें अस्त हो तो उडद तिल अधिक हो ॥ ३२१ ॥

कुम्भेगुरोरस्तमयात्प्रजायाःपीडापरंगर्भवतीच जाया । मीनेसुभिक्षंकुशलंसमर्घंधान्यंवनस्या- त्पतयापि पृष्ठेः ॥ ३२२ ॥ (इति)

कुंभका गुरु अस्त हो तो प्रजामें और गर्भवती स्त्रियोंमें पीड़ा हो। मीनका बृहस्पति अस्त हो तो सुभिक्ष हो, कुशल हो, धान्यकी समर्घता हो और वर्षा कम हो तौभी धान्य अधिक हो ॥ ३२२ ॥ इति

(७) अथ शुक्रचारः।

शुक्रोदयात्फाल्गुनमासिवृद्धिरर्थस्यधान्यादिषुभैक्षवृत्तिः। चैत्रेविभूतिर्युधिमाधवेचरणोमहान्वृष्टिरतीवशुक्रे ॥ ३२३ ॥

(७) "शुक्र चार"—फाल्गुनमें शुक्रका उदय हो तो अर्थ वृद्धि हो, धान्यादिमें भैक्ष्यवृत्ति (भीख मंगापन) हो। चैत्र वैशाखमें शुक्रोदय हो तो युद्ध अधिक हो और जेठमें उदय हो तो वर्षा अधिक हो ॥ ३२३ ॥

आषाढमासेजलदुर्लभत्वंचतुष्पदार्तिर्नभसिप्रदिष्टा। समृद्धिरन्नस्यतुभाद्रमासेतथाश्विनेसम्पदएवसर्वाः ॥३२४ ॥

आषाढमें उदय हो तो जल दुर्लभ हो। श्रावणमें हो तो चौपायोंको दुःख हो, भाद्रमें हो तो अन्नकी समृद्धि और आश्विनमें हो तो सब सम्पत्ति हो ॥ ३२४ ॥

शुभंपरंकार्त्तिकमार्गमासेपौषेमहच्छत्रविभंगएव। माघेपितद्वत्सकलंफलंस्यान्नचेत्पराब्दे जलदस्य रोधः ॥ ३२५ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्षमें उदय हो तो शुभ हो। पौषमें हो तो छत्रभंग हो। माघमें उदय हो तौभी सब फल ऐसाही हो और आगले वर्षमें जल नहीं वर्षे ॥ ३२५ ॥

मेषेशुक्रोदयेधान्यंमहर्घंरोगसंभवः ।
वृषेधान्यंसमर्घंस्यान्नृपास्तुष्टाःप्रजासुखम्॥३२६॥

मेष राशिमें शुक्रका उदय हो तो धान्य महँगे हों, रोग उत्पन्न हों। वृषमें उदय हो तो धान्य सस्ता हो, राजा लोग प्रसन्न रहैं और प्रजामें सुख हो ॥ ३२६ ॥

मिथुनेलोकमरणंगोधूमाबहवोभुवि ।
कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्यविनाशंचौरजंभयम् ॥ ३२७॥

मिथुनमें लोकमरण हो पृथ्वीपर गेहूं अधिक उपजें। कर्कमें अति वृष्टिसे धान्य नाश हो और चौरोंका भय रहे ॥ ३२७ ॥

सिंहेपिकर्कवद्वाच्यंकन्यायांनृपपीडनम् ।
स्वल्पावृष्टिस्तुलायोगेसमर्घंधान्यमाहितम्॥३२८॥

सिंहमेंभी कर्ककी भाँति कहना चाहिये। कन्यामें राजपीडा हो और स्वल्प वर्षा हो और तुलमें धान्यके अधिकतासे समर्घता हो ॥ ३२८ ॥

वृश्चिकेबहुलावृष्टिर्दुर्भिक्षधान्यमल्पकम् ।
धनुष्यवर्षणंधान्यंमहर्घंमकरेतथा ॥ ३२९ ॥

वृश्चिकमें बहुत वर्षा हो, धान्य कम होनेसे दुर्भिक्ष हो। धन और मकरमें अवर्षणसे धान्य महँगा हो ॥ ३२९ ॥

कुंभेतिविरलोमेघश्चतुष्पदविनाशनम् ।
मीनेसुभिक्षंलोकानांसुखंमेघमहोदयः ॥ ३३० ॥

कुम्भमें मेघ कहीं कुछ वर्षे चतुष्पदोंका नाश हो और मीनमें शुक्रोदय हो तो संसारमें सुख तथा सुभिक्ष हो ॥ ३३० ॥

शुक्रेश्विन्यांब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिलामाषाः । स्वल्पाभरण्यांसंस्थेतुपधान्यमहर्घताचतिलनाशः ॥ ३३१ ॥

"नक्षत्र गत फल"—अश्विनीमें शुक्र हो तो ब्राह्मण जातिमें विरोध हो । जौ, तिल, उड़द कम हों । भरणीपर हो तो तुष धान्य महँगे हों और तिलोंका नाश हो ॥ ३३१ ॥

सर्षपमाषाल्पत्वमाग्नेयेसर्वधान्यनिष्पत्तिः ।
रोहिण्यामारोग्यंमृगेमहर्घाणिधान्यानि ॥ ३३२॥

कृत्तिकापर हो तो सरसों उड़द कम हों और सब धान्य उत्पन्न हों। रोहिणीमें आरोग्यता और मृगशिरमें धान्यकी महर्घता हो॥ ३३२॥

रौद्रेऽल्पवृष्टिरन्नमदौसुखंनश्यतिविशेषात् ।
पुष्येदुर्भिक्षभयंचौराःसार्पेनवर्षास्यात् ॥ ३३३ ॥

आर्द्रामें अल्प वृष्टि हो पुनर्वसुमें अन्न सुखका नाश हो । पुष्यमें दुर्भिक्ष भय तथा चौर भय हो और श्लेषामें वर्षा नहीं हो ॥ ३३३ ॥

मघादित्रितयेकष्टंहस्तेमेघमहोदयः ।
रोगवृष्टिस्तुचित्रायांस्वातौक्षेमसुभिक्षता ॥३३४॥

मघा–पूर्वा–उत्तरामें कष्ट हस्तमें मेघका महोदय । चित्रामें रोग वृद्धि स्वातिमें क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ ३३४ ॥

तरुदेवविशाखायांतुषधान्यमहर्घता ।
अल्पवृष्टिश्चमैत्रर्क्षेचतुष्पदप्रपीडनम् ॥३३५ ॥

विशाखामें तुष धान्यकी महँगाई और अनुराधामें उदय हो तो अल्प वृष्टि तथा चौपायोंको पीडा हो ॥ ३३५ ॥

द्वारानुसारात्शेषेषुफलमार्यैर्निगद्यते ।
चारानुसाराद्दुर्भिक्षंसुभिक्षंफलमादिशेत ॥ ३३६॥

शेष नक्षत्रोंका फल द्वारोंके अनुसार जानना । और चारके अनुसार सुभिक्ष दुर्भिक्षका फल कहना ॥ ३३६ ॥

भरण्याद्यष्टकेभानांमेघद्वारंभृगोःस्मृतम् ।
मेघवृष्टिःप्रजानंदःसमर्घधान्यमेवच ॥ ३३७ ॥

मिथुनेवैश्यपीडास्यादल्पवर्षाप्रजाभयम् ।
कर्कटेबहुलावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ॥ ३४८ ॥

मिथुनमें वैश्योंको पीड़ा हो अल्प वर्षा तथा प्रजाभय हो। कर्कमें निःसन्देह बहुत वर्षा हो ॥ ३४८ ॥

सिंहेपीडाभूपवर्गेतथाऽनावृष्टिजंभयम् ।
कन्यायांवैद्यलोकस्यसूत्रधारस्यपीडनम् ॥ ३४९॥

सिंहमें भूपवर्गमें पीडा हो और अनावृष्टिका भय हो कन्यामें वैद्य लोगोंको तथा सूत्रधार (नटादिकों) को पीडा हो ॥ ३४९ ॥

तुलायांसिंहवत्सर्वंदुर्भिक्षंवृश्चिकेमतम् ।
स्त्रीधान्यनाशोधनुषिमकरेधान्यसंपदः ॥ ३५० ॥

तुलामें सिंहकी तुल्य हो और वृश्चिकमें दुर्भिक्ष हो। धनुमें स्त्री तथा धान्यका नाश हो और मकरमें धान्यकी सम्पत्ति हो ॥ ३५०॥

द्विजपीडाकुम्भराशौमीनेमेघमहोदयः ।
रोगनाशःप्रजासौख्यंपृथिव्यांबहुमंगलम् ॥३५१॥

कुंभराशिमें द्विजपीडा हो और मीन राशिपर शुक्रका अस्त हो तो मेघ अच्छा वर्षे तथा रोग नाश–प्रजा सुख और पृथ्वीपर बहुत मंगल हों ॥ ३५१ ॥

भृगुसुतःकुरुतेभ्युदयंयदासुरगणर्क्षगतःखलुसिंधुषु । सकलगुर्जरकर्वटमंडलेभवतिसस्यविनाशमहारुजे ॥ ३५२ ॥

---

१ अश्विनी मृगरेवत्यो हस्तपुष्यपुनर्वसु । अनुराधा श्रुतिः स्वातिः कथितो देवतागणः ॥ १ ॥ तिस्र पूर्वोत्तरास्तिस्रः आर्द्रा चैव तु रोहिणी । भरणी च मनुष्याख्यो गणोमी कथितो बुधैः ॥ २ ॥ कृत्तिका च मघाश्लेषा विशाखा शततारका । चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षगणः स्मृतः ॥ ३ ॥

यदि शुक्रका उदय देव गणके नक्षत्रोंमें हो तो सिंधु-गुर्जर-और चर्वट देशोंमें सस्य नाश तथा महारोग हो ॥ ३५२ ॥

जालंधरेपिदुर्भिक्षंविग्रहोरणसंभवः ।
मनुष्यगणभेशुक्रोदयेसौराष्ट्रविग्रहः ॥ ३५३ ॥

मनुष्य गणके नक्षत्रोंमें शुक्रोदय हो तो जालन्धरमें दुर्भिक्ष विग्रह रण संभव और सौराष्ट्रमें विग्रह हो ॥ ३५३ ॥

कालिंगदेशेस्त्रीराज्येमध्यमंवर्षंउच्यते ।
मरुस्थलेचदुर्भिक्षंघृतधान्यमहर्घता ॥ ३५४ ॥

कलिंग देशमें स्त्री राज्य (भूपाल आदि) में मध्यम वर्षा हो। और मारवाडमें दुर्भिक्ष हो घी और अन्न महंगे हों ॥ ३५४ ॥

स्वर्णरौप्यंमहर्घंस्यात्पीडागोमहिषव्रजे ।
कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्वंप्रजायते ॥ ३५५ ॥

सोना, चांदी, महँगे हों गाय भैंसोंमें पीडा हो । कपास रुई सूत आदिभी महंगे हों॥ ३५५ ॥

नक्षत्रेराक्षसगणेशुक्रस्याभ्युदयेसति ।
गुर्जरेपुद्गलभयंदुर्भिक्षंद्रव्यहीनता ॥ ३५६ ॥

राक्षस गणके नक्षत्रोंमें शुक्रोदय हो तो गुजरातमें और पुंगलमें दुर्भिक्ष तथा द्रव्य हानि हो ॥ ३५६ ॥

पंचवर्णपट्टसूत्रंमूल्येनापिचदुर्लभम् ।
श्रीफलंदुर्लभंमृत्युःश्रेष्ठःपुंसश्चकस्यचित् ॥ ३५७ ॥

पंचवर्ण (पंचरंगी) पट्टवस्त्र (रेशमी कपडे) और सूती वस्त्र मूल्यसेभी नहीं मिले।तथा श्रीफल मिलनाभी दुर्लभ हो और किसी श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु हो ॥ ३५७ ॥

विराटढुंढपांचालसौराष्ट्रेषुचरौवरम् ॥
नथाराज्यपरावर्त्तोमालवेषुजनक्षयः ॥ ३७० ॥
वैराट ढूंढाड़ पांचाल और सौराष्ट्र देशोंमें कष्ट हो, राज्य परिवर्तन हो, तथा मालवेके मनुष्योंका क्षय हो ॥ ३७० ॥

जीर्णदुर्गेभयंभंगःपत्तनेऽन्नमहर्घता ।
नव्यमुद्राप्रकाशःस्याद्दक्षिणेसुखसंपदः ॥ ३७१ ॥
पुराने किलोंके टूट पड़नेका भय हो, दुर्भिक्ष हो। नया रुपया चले और दक्षिणमें सुख संपदा हो ॥ ३७१ ॥ इति ॥

(८) अथ शनिचारः ।

मेषस्थेभानुपुत्रेत्रिभुवनविदिते यातिधान्यंविनाशनूनंतैलंगवंगेहयमुरदलितंविग्रहस्तीव्रएव ।
पातालेनागलोकेदिशिविदिशिगता भीतभीता नरेन्द्राःसर्वेलोकाविलीनाःशुभफलविहिनायाचमानाव्रजन्ति ॥ ३७२ ॥
(८) "शनिचार विचार"—मेषका शनि हो तो धान्यका नाश हो तैलंग, वंग, देशमें विग्रह हो । और पाताल तथा नाग लोक एवं दिशा विदिशाओंके राजा लोग भयभीत होकर भागते फिरें।तथा अच्छे फलसे हीन होकर मनुष्य याचना करते फिरें ॥ ३७२ ॥

वैरावर्ताजनानांधनसुखहरणंसर्वदेशेमहर्घं दुःखं
वैराग्ययोगःसकलजनमनस्यान्ननाशःपशूनाम् ।
धान्यंसैवार्द्धनाशेरसकससहितंसर्वशून्यं जनानामित्येतेसर्वदेशाःपरिजनविकलाःसूर्यपुत्रेवृषस्थे३७३
वृषका शनि हो तो मनुष्योंमें वैर भाव बढ़े,धन सुखका नाश हो, अन्नकी सर्वत्र तेजी हो।दुःख वैराग्य और संताप हो पशुओंका नाश,

खेतियोंका नाश, रसोंकी महँगाई और शून्यता यह बातें भी हों और अनेक देशोंमें व्याकुलता फैले ॥ ३७३ ॥

आद्यंकार्पासलोहलवणतिलगुडाःसर्वदेशेमहर्घा
मंजिष्ठाहेमतारेवृषभहयगजंसर्वधान्यंसमर्घम् ।
सप्तद्वीपेसमुद्रेसुखिजनसहितेसर्वसौख्यंनरेन्द्राः
सर्वत्रायान्तिमेघाःसकलमुनिमतंमैथुनेसूर्यपुत्रे३७४

मिथुनका शनि हो तो पहले कपास-लोह-लवण-तेल गुड यह सर्वत्र महँगे हों, मँजीठ, सोना, घोडे, बैल, हाथी सब धान्य सस्ते हों । सातों द्वीपोंमें समुद्र पर्यन्त निवासियोंको सुख मिले, राजाओंको भी सब सुख प्राप्त हों और वर्षा सर्वत्र अच्छी हो ॥ ३७४ ॥

रोगानित्यंप्रसन्तिप्रचुरपरिभवोवित्तनाशस्तथैव
कार्येहानिर्विरुद्धैः सकलभयजनैर्देशचिन्ताविपादः । आरावोऽम्बुप्रपातैःप्रचलितधरणीसर्वलोकस्यनाशः सर्वस्मिन्राजयुद्धंपशुधनहरणं
कर्कटेसूर्यपुत्रे ॥ ३७५ ॥

कर्कका शनि हो तो लोगोंको रोजही रोग खाते रहैं, धनका नाश हो, कार्यकी हानि हो, सब लोग विरुद्ध रहैं, देशमें चिन्ता और विषाद फैले । शब्दयुक्त जल बर्षे, भूकम्प अधिक हों, सब लोकोंका नाश हो, राजाओंमें युद्ध हो और पशु तथा धनका हरण हो॥३७५॥

भूम्यां नाशश्चतुष्पादृजहयवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगैः पीड्यन्तेसर्वदेशाउदधिपुरपथेदुर्गदेशेषुभंगः । म्लेच्छान्तोयान्यभावोवनसुखमवनीशेन्द्रचन्द्रप्रतापः सर्वेतेयातिकालेभ्रमतियुगमिदंसिंहगेसूर्यपुत्रे॥३७६॥

सिंहका शनि हो तो हाथी घोडे बैलोंका नाश हो, युद्ध दुर्भिक्ष

और-रोगोंसे लोग पीडित रहैं।समुद्रके मार्गके देशोमें भंग हो म्लेच्छोंसे लोगोंको दुःख हो धान्य भाव अच्छा हो राजाओंको धन सुख मिले उनका प्रताप फैले।और पीछे सब दुःखी होकर भ्रमण करैं३७६

काश्मीरंयातिनाशंहयरवदलितंविग्रहंतत्रकुर्याद्रत्नस्थंधातुरूप्यंगजहयवृषभंछागलंमाहिपं च । मंजिष्ठाकुंकुमाद्यंरसकससहितंयान्तिसर्वेसमर्घं कन्यायांसूर्यपुत्रेसकलजनसुखंसंग्रहेसर्वधान्यम् ॥ ३७७ ॥

कन्याका शनि हो तो काश्मीरका नाश हो घोडोंमें रव (शब्द). परित विग्रह हो रत्न धातु चांदी हाथी घोड़े बैल छाली, भैंस, मंजीठ और केशर यह रस कस सहित सब सस्ते हों और सब मनुष्योंको सुख हो तथा धान्य संग्रह लाभदायक हो ॥ ३७७ ॥

धान्यानां वैमहर्घंनरपुरनगराः क्लेशपूर्णाश्चदेशाः पृथ्व्यांकम्पमाप्तासकलमुनिवरेदेहपीडापिनित्यम् । सर्वेतेयान्तिनाशंनरपुरनगराण्यम्बुदोप्यल्पएवचक्रावातोजनानांसुखधनरहितःसूर्यपुत्रेतुलायाम् ३७८

तुलका शनि हो तो धान्य महँगे हों, शहरों वा गांवोंके मनुष्य क्लेशयुक्त हों । पृथ्वी कम्पित हो सब मुनि श्रेष्ठोंमें भी देह पीड़ा हो। शहर वा गांवोंके सब मनुष्योंका नाश हो जल बहुत कम वर्षे और मनुष्य सुख तथा धनसे हीन रहैं ॥ ३७८ ॥

भूमीशाःक्रोधपूर्णाविषधरमुदिताःपक्षिणांसन्निपातः सप्तद्वीपप्रकम्पान्नरपतिमरणंयातिमेधाविनाशम् । वैकल्याद्व्याप्यमानःसकलजनरिपुःसर्वकार्यंनिहंतिसर्वेतेयांतिनाशंप्रकलयुगविधेर्वृश्चिकेसूर्यपुत्रे ॥ ३७९ ॥

वृश्चिकका शनि हो तो राजा लोग क्रोधित रहें सर्पोंमें हर्ष बढ़ै पक्षियोंमें युद्ध मचे । सातों द्वीपोंमें भूकम्पादि हों राजाओंका मरण तथा वर्षाका विनाश हो । मनुष्योंमें कलह विकलपतासे शत्रुता फैले कामोंका नाश हो और गुणवानोंका नाश हो ॥ ३७९ ॥

सप्तद्वीपाःसमुद्राःसकलमुनिवनंवायुपूर्णाधरित्री विप्रावेदांगलीनाजगतिजनसुखं सर्वतोयातिलस्यम् । धान्यंचारुप्रभूतं रसकसबहुलंयातिधान्यंप्रसारं सर्वेषांचजनानांप्रहसतिवदनंसूर्यपुत्रे धनस्थे ॥३८० ॥

धनका शनि हो तो समुद्रके सातों द्वीप और मुनियोंको सम्पूर्ण वनकी पृथ्वी वायुसे पूर्ण हो।ब्राह्मण लोग वेदांगमें लीन रहें जगतमें मनुष्य सर्वत्र सुखी रहें खेतियां अच्छी हों अन्नभी अच्छे हों रस,कस बहुत हों धान्य फैले और सब मनुष्य प्रसन्न वदन रहें ॥ ३८० ॥

रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभं सूत्रकार्पासमूल्यं सर्वस्मिन्धान्यमात्रं भवति भुवितले सर्वनाशश्च सस्ये । पृथ्वीशाःक्रोधपूर्णाभवतिपथिभयं सर्वरोगाद्विनाशश्चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बलेसूर्यपुत्रेमृगस्थे ॥ ३८१ ॥

मकरका शनि हो तो चांदी तांबा सोना हाथी घोड़े बैल सूत कपास इन सबका मूल्य धान्य मात्र हो अर्थात् अधिक तेज हो । अन्नका नाश हो । राजा क्रोधित रहें मार्गोंमें भय रहे सब रोगोंसे नाश हो और बलवान् राजाओंकोभी चिन्ता लगी रहे ॥ ३८१ ॥

लक्ष्मीप्राकारसौख्यंधनकणसहितं देशसौख्यंनृपाणांधर्माधर्माविचित्तेसुखनिरतजनोमेघपूर्णाध-

रित्री । मांगल्यंसर्वलोकेप्रभवतिबहुशःसस्यनि-
ष्पत्तिर्वर्षाभूमीरम्याविवाहैर्जनसुखसमयःकुंभगे
सूर्यपुत्रे ॥ ३८२ ॥

कुम्भका शनि हो तो लक्ष्मीकी प्राप्ति सौख्य धन तथा अन्न हो देशमें सुख रहे राजा लोग धर्म अधर्मका विधान: करते रहें । मनुष्य सुखी रहें।वर्षा अच्छी हो । सब जगह मंगल हो । खेतियां बहुत हों। पृथ्वी मनोहर रहे और विवाहादि मंगलोंसे लोग सुखी रहें ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीवेकम्पमात्रंप्रचलतिपवनःकम्पते नागलो-
कःसप्तद्विपेषुसिन्धोर्गिरिवरगहने सर्ववृक्षादिहा-
निः ॥ नाशःपृथ्वीपतीनांजनपदविलयोयान्ति
मेघाःप्रणाशंचक्रावर्तैःसमस्तंभ्रमतिजगदिदंमी-
नगेसूर्यपुत्रे ॥ ३८३ ॥

और मीनका शनि हो तो पृथ्वी कम्पित रहे, पवन चले पाताल (अमेरिका) आदिमें भूकम्प हो सिंधु तथा पर्वतोंमें उत्पात हों सब वृक्षादिकी हानि हो । राजाओंका नाश हो मनुष्योंका विनाश हो मेघोंका अभाव हो और प्रवण्ड पवनसे सारा जगत् घूमे ॥ ३८३ ॥

मेषेशनेरुदयनेजलवृष्टिरुच्चैःसौख्यंजनंवृषभगेतृ-
णकाष्टकष्टम् । अश्वेषुरोगकरणंचमहर्घमिक्षुज-
न्यंगुडादिमिथुनेऽतिसुभिक्षमेव ॥ ३८४ ॥

"उदय फल" मेषका शनि उदय हो तो वर्षा बहुत हो लोग सुखी रहें । वृषका उदय हो तो घास तथा काटका कष्ट हो घोडोंमें रोग करे ईखसे पैदा होनेवाले गुडादि महँगे हों और मिथुनका उदय हो तो अत्यन्त सुभिक्ष हो ॥ ३८४ ॥

वृष्टिर्नकर्कगृहगेसरसांचशोषः सर्वत्रमारिभयमाशुजनेषुपीडा। पीडागमःक्वचनसिंहगतेशिशूनां नाशप्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ ३८५ ॥

कर्कका शनि उदय हो तो वर्षा नहीं हो रस सब सूख जायँ सब जगह मारी भयसे लोगोंमें पीडा हो। सिंहका उदय हो तो बालकोंमें पीड़ा हो राजा लोग धर्मशून्य राज करें॥ ३८५ ॥

कन्याशनेरुदयताकिलधान्यनाशःपृथ्वीशसंधिरतुलस्तुलयानवर्षा। गोधूमवर्जितमहीतदसौफलं स्यादस्वस्थताधनुषिमानुषजातिरोगम् ॥ ३८६ ॥

कन्याका उदय हो तो धान्य नाश हो तुलका उदय हो तो पृथ्वीश संधि करे वर्षा नहीं हो गेहूं पृथ्वीपर नहीं रहैं और धनमें उदय हो तो मनुष्योंका स्वास्थ्य विगड़े और रोग अधिक हों॥३८६॥

स्त्रीणांशिशोश्चविपदोखिलधान्यनाशःशौरेर्मृगेभ्युदयनेनृपयुद्धवृद्धिः। नाशश्चतुष्पदकुलेकलशेथमीनेदीनेजनेनवुशनेरुदयान्नधान्यम् ॥ ३८७ ॥

स्त्री और बालकोंमें विपत्ति हो और धान्यका नाश हो। यदि मकरका शनि उदय हो तो राजाओंकी युद्ध वृद्धि हो और चौपायोंका नाश हो। कुंभ अथवा मीनका शनि उदय हो तो मनुष्योंमें गरीबी बढे और धान्य नहीं हो ॥ ३८७ ॥

अथ अस्तविचारः।

मेपेस्तंगमनेशनेर्भुविजनेधान्यंमहर्घवृषेसर्वत्रापि गवादिपीडनमहोपण्यांगनामैथुने। दुःखार्तो पथिककर्केरिपुभयं कार्पासधान्यादिषुदौर्लभ्यं जलदेष्ववर्षणविधिःसिंहेप्रभूतव्यथा ॥ ३८८ ॥

" अस्त विचार "—मेषका शनि अस्त हो तो धान्य तेज हो, वृषका अस्त हो तो सब जगह गवादि पशुओंको पीडा हो, मिथुनमें पण्यांगना (व्यापारकी स्त्रियां–वेश्या) ओंमें पीडा हो। कर्कमें मार्गीय कष्ट शत्रु भय कपास तथा धान्यादिकी दुर्लभता हो और बादलोंसे मेघ नहीं बर्षे। सिंहमें व्यथा उत्पन्न हो ॥ ३८८ ॥

धातूनांचमहर्घतान्नविषमः कन्यास्थितावग्रतो
लोकेन्येपितुलाबलेनसततंनिष्पत्तिरानंदतः ।
स्वल्पधान्यमलौजनेनृपभयंपीडापिशल्भादिभि-
श्चापेलोकसुखंमृगेपिपवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः३८९

कन्यामें अस्त हो तो धातुओंकी महँगाई हो अन्न भाव तेज हो तुलामें हो तो लोगोंमें आनन्द हो धान्य कम उपजे वृश्चिकमें प्राणियोंमें भय हो और राजाओंसे पीडा तथा टीडी आदिकी पीडा हो। धनमें हो तो सुख हो मकरमें अस्त हो तो प्रचण्ड पवन चले वर्षा कम हो स्त्रियां अधिक मरें ॥ ३८९ ॥

कुम्भेशीतभयंचतुष्पदपरिग्लानिश्चहानिर्गवां
मीनेहीनतयाघनस्यनजलंक्वापीढ्वापीस्थले ।
संतापीनृपतिःस्वधर्मविमुखःपापीजनः पीडया
मंदंमंदसमंसभूपतिरणोमन्देस्तमभ्याश्रिते ॥३९०॥

कुंभमें शीतभय चौपायोंमें मन मचलान गायोंकी हानि और मीनमें शनिका अस्त हो तो वर्षा कहीं कहीं कुछ कुछ हो। राजा निज धर्मसे विमुख होकर दुःखदें पापियोंको पीडा हो और राजाओंमें युद्ध हो ॥ ३९० ॥

कन्यायांमिथुनेमीनेवृषेधनुषिवास्थितः ।
शनिःकरोतिदुर्भिक्षंराज्ञांयुद्धंपरस्परम् ॥ ३९१ ॥

"विशेष फल"–कन्या मिथुन मीन वृष और धन पर शनि स्थित हो तो दुर्भिक्ष करे और राजाओंमें परस्पर युद्ध हो ॥३९१॥

(९) अथ राहुचारः।

यस्मिन्संवत्सरेराहुर्मीनराशौप्रजायते।
तस्मिन्मासेभयंविद्युद्दुःखकष्टसमागतः ॥ ३९२॥

(९) "राहु चार"–जिस वर्षमें मीनका राहु हो तो उसके आक्रांत मासमें बिजलीका भय हो और कष्टका आगमन हो॥३९२॥

एवंज्ञात्वाचकर्तव्योयावदन्नादिसंग्रहः।
संग्रहःसर्वधान्यानांलाभोद्वित्रिचतुर्गुणः ॥ ३९३ ॥

इस प्रकार जान कर अन्नका संग्रह किया जाय तो दुगना तिगुना लाभ हो ॥ ३९३ ॥

वर्षमेकंतुदुर्भिक्षंरौरवपरिकीर्तितम्।
प्राप्तेत्रयोदशेमासेसुभिक्षमतुलंभवेत् ॥ ३९४ ॥

एक वर्षतक दुर्भिक्ष रहे और तेरहवा महीना आये पीछे अतुल सुभिक्ष हो ॥ ३९४ ॥

कुंभेराशौयदाराहुर्दैवाद्भौमोपिसंगतः।
तदालोक्यविधातव्यःशणसूत्रस्यसंग्रहः ॥ ३९५ ॥

कुंभका राहु और दैव योगसे मंगलभी साथ हो तो सण सूत्र का संग्रह करना चाहिये ॥ ३९५ ॥

भांडानिचसमस्तानिकांस्यादीनिविशेषतः।
संगृह्यंतेमासषट्कविक्रेतव्यानिसप्तमे ॥ ३९६ ॥
लाभश्चतुर्गुणोज्ञेयोभौमराहुद्वयस्थितौ।
नान्यथेतिचवक्तव्यंयावद्भुक्तिस्थिताविमौ॥३९७॥

सब प्रकारके वर्तन विशेष कर कांसी पीतलके वर्तन संग्रह करके

छः महीने रखकर सातवें महीनेमें बेचें तो चौगुणा लाभ होता है इसमें कोई झूँठ नहीं है । राहु और मंगलकी एक स्थिति रहे जब तक यह बात जानना ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥

सैंहिकेयोयदायातिराशिमकरनामकम् ।
तदासंवीक्ष्यकर्तव्यःपट्टसूत्रस्यसंग्रहः ॥ ३९८ ॥
धृत्वामासत्रयंयावत्पट्टसूत्रंयथातथा ।
प्राप्तेचतुर्थेकेमासेलाभःस्यात्रिकपंचकः ॥ ३९९ ॥

राहु मकर राशिपर हो तो उस समय मौका देखकर पट्ट सूत्र संग्रह करके तीन महीने बाद चौथे महीनेमें बेचे तो तिगुना चौगुना पचगुना लाभ होता है ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥

सैंहिकेयोयदायातिधनराशौक्रमात्ततः ।
महिष्यादेस्तदाकार्यःसंग्रहोवसुधातले ॥ ४०० ॥
हयानांचगजानांचगर्दभानांविशेषतः ।
लाभश्चतुर्गुणःप्रोक्तोमासेद्वितियपंचमे ॥ ४०१ ॥

यदि धन राशिपर राहु हो तो भैंस और घोडे तथा हाथी और विशेष कर गधे खरीदकर रखनेसे दूसरे या पांचवें महीनेमें चौगुना लाभ होता है ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥

वृश्चिकस्थोयदाराहुर्दैवाद्भौमस्यसंगमः ।
तदाज्ञात्वाचकर्तव्यःसंग्रहोघृतवाससाम् ॥ ४०२ ॥
पंचमासान्व्यतिक्रम्यषष्ठेकार्योस्यविक्रयः ।
लाभश्चद्विगुणोज्ञेयोनिश्चितंशास्त्रभाषितम् ॥ ४०३ ॥

यदि वृश्चिकका राहु हो और दैवयोगसे भौमका भी संगम हो जाय तो उस योगको जानकर घी तथा कपड़ोंका संग्रह करना चाहिये

उनको पांच महीने रखकर छठे महीनेमें वेंचनेसे निश्चय, दुगुना लाभ होताहै । यह शास्त्र कहता है ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥

तुलाराशियदाराहुःसंस्थितःसंक्रमेरवेः ।
तदाभवतिदुर्भिक्षंपितुःपुत्रस्यविक्रयः ॥ ४०४ ॥
वार्षिकंसंग्रहंकुर्याद्व्रीहीणांचविशेषतः ।
गणकानांतथालोकेलाभःकंबलकांस्यतः ॥४०५॥

तुल राशिका सूर्य संक्रांतिके दिन राहु बदले तो ऐसा दुर्भिक्ष हो कि जिसमें पिता पुत्रको भी वेंच दे । उस समयमें वार्षिक संग्रह करना चाहिये तो विशेषकर चावलोंका संग्रह करना चाहिये ज्योतिषियोंको लाभ होताहै और कंबल तथा कांसीसेभी लाभ होताहै ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥

कन्यागतोयदाराहुःसंभवेन्मासपंचके ।
तदाविज्ञायसंग्राह्यंधातकीपिप्पलीद्वयम् ॥४०६॥
मासमेकंचसंग्राह्यधातकीपुष्पविक्रये ।
मासद्वयेनपिप्पल्यालाभोभवतिवांछितः ॥ ४०७ ॥

कन्या राशिमें राहु आवे तो यह देखकर पांच महीने तक धावडया तथा दोनों पीपलका संग्रह करना चाहिये । एक महीने संग्रह करके दूसरे महीनेमें वेंचनेसे धायके फूल और पीपलोंमें मनचाहा लाभ होता है ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥

सिंहराशौक्रमाद्वक्रोयदाराहुःप्रवर्तते ।
अवश्यंसंग्रहःकार्यस्तदाचोष्येषुवस्तुषु ॥ ४०८ ॥

वक्री राहु सिंहका हो तो चूंपने (आचार सुरब्बे आम तथा ईख) की वस्तुओंका अवश्य संग्रह करना चाहिये । उनमें लाभ होता है ॥ ४०८ ॥

आदौधान्यकमादायशुंठीमरिचपिप्पली ।
जीरकंलवणंसौवर्चलसैंधवखादिरः ॥ ४०९ ॥
धृत्वासंवत्सरंयावत्षण्मासान्तेस्वविक्रयः ।
लाभश्चतुर्गुणंतस्ययदिसौम्येनवेध्यते ॥ ४१० ॥

धानिया सोंठ मिर्च पीपल जीरा और सींधा, खारी, तथा संचर लवण इनको इकट्ठे करके छः महीनेके पीछे बेंचनेसे (यदि सौम्य ग्रह न वेधे तो) चौगुना लाभ होता है ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥

कर्कटेतुयदाराहुस्तिष्ठत्येवमहाबलः ।
अवश्यंतस्कराःसर्वेलोकपीडांप्रकुर्वते ॥ ४११ ॥

यदि कर्कका राहु हो तो अवश्यही लोगोंको चोरोंसे बहुत पीड़ा हो ॥ ४११ ॥

सूक्ष्मतास्यात्तुव्रीहीणांसमर्घंस्वर्णरूप्यकम् ।
कांस्यंताम्रंचसंग्राह्यंषण्मासेलाभदायकम् ॥ ४१२ ॥

चावलोंकी कमी हो सोना चांदी सस्ते हों और कांसी तांबा संग्रह करनेसे छःमासमें लाभ दे ॥ ४१२ ॥

मिथुनेचयदाराहुःस्वोच्चस्थानवशात्तदा ।
घृतधान्यंसमर्घंस्यान्माणिक्यानांसमर्घता ॥ ४१३ ॥

यदि मिथुनका राहु हो तो उच्चका होनेके कारण घी, धान्य, मूंगा आदि सस्ते हों ॥ ४१३ ॥

सैंहिकेयोयदायातिभौमग्रहनिरीक्षितः ।
वृषराशौक्रमेणैवनिधानंलभतेजनः ॥ ४१४ ॥

राहु यदि वृषका हो और उसे मंगल देखता हो तो मनुष्योंको उचित है कि ॥ ४१४ ॥

संग्रहःसर्वधान्यानांघृततैलंविशेषतः ।
कुंकुमंगंधद्रव्यंचकार्पासश्चगुडस्तथा ॥ ४१५ ॥
मासषट्कश्चधृत्वैवंविक्रेयंसप्तमेपुनः ।
ज्ञेयश्चतुर्गुणोलाभःसत्यमेवहिनान्यथा ॥४१६॥

उस समय सब धान्योंका संग्रह करें । विशेष कर घी तेल रोली केशर इत्रादि सुगन्ध द्रव्य और गुड़ तथा कपास इनका संग्रह करके छः महीने बाद सातवें मासमें बेंचे तो चौगुणा लाभ होता है यह सत्य है झूंठ नहीं है ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥

कांस्यंचलाक्षामंजिष्ठाशुंठीमरिचहिंगवः ।
एषांसंग्रहणंकार्यंषण्मासश्चाधिनिश्चितम् ॥ ४१७॥

कांसी-लाख-मँजीठ, सोंठ, मिर्च, हींग इनके संग्रहसे भी छः मासमें लाभ होता है ॥४१७ ॥

मेषराशौयदाराहुःसंस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः ।
दैवाद्ग्रहणसंयोगेदुर्भिक्षंभवतिध्रुवम् ॥ ४१८ ॥

यदि मेषका राहु हो और मेष परही चन्द्र सूर्य हों, और दैवयोगसे सूर्यग्रहण होनेका संयोगभी आजाय तो निश्चय दुर्भिक्ष होता है ॥ ४१८ ॥ (इति) ॥

(१०) अथ केतुचारः ।

रवावस्ताचलेप्राप्तेपश्चिमायांनिरीक्षते ।
यदावह्निशिखाकारास्तदाकेतूदयोवदेत् ॥ ४१९ ॥

(१०) "केतुचार विचार"-जिस समय सूर्य अस्ताचलको प्राप्त हो उस समय पश्चिम दिशाको देखना चाहिये । यदि जब आगकी शिखाका आकार दीखे तो केतुका उदय जानना ॥ ४१९ ॥

अश्विन्यामुदितःकेतुर्हन्यादश्मकपालकम् ।
भरण्यांचकिरातेशंकृत्तिकायांकलिंगपम् ॥ ४२० ॥

यह केतु यदि अश्विनीमें उदय हो तो अश्मक देशके राजाका नाश हो। भरणीमें किरात राजाका और कृत्तिकामें कालिंग देशके राजाका नाश हो ॥ ४२० ॥

रोहिण्यांसूरसेनेशंमृगेचोशीनराधिपम् ।
आर्द्रायांजालणाधीशमश्मकेशंपुनर्वसौ ॥ ४२१॥

रोहिणीमें सूरसेनके राजाका, मृगशिरमें उशीनरके राजाका, आर्द्रामें जालनाके राजाका और पुनर्वसुमें अश्मकके राजाका नाश हो ॥ ४२१ ॥

पुष्येचमगधाधीशंसार्पेकेरलयाधिपम् ।
मघायामंगनाथंचपूपायांपांडचनायकम् ॥ ४२२॥

पुष्यमें मगधाधीशका श्लेषामें केरलाधिपका मघामें अंगनाथका पूषामें पांडयका नाश हो ॥ ४२२ ॥

उज्जयिन्यांनृपंहन्यादुत्तराफाल्गुनीगतः ।
दण्डकाधिपतिंहस्तेचित्रायांकुरुभूपतिम्॥ ४२३ ॥

उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैनके राजाका, हस्तमें दण्डकाधिपका और चित्रामें कुरु राजाका नाश हो ॥ ४२३ ॥

स्वात्यांकाश्मीरकम्बोजभूपतीनांविनाशकः।
इक्ष्वाकुकोशलेशानांविशाखायांचघातकः ॥४२४

स्वातिमें कश्मीर तथा कंबोजके राजाओंका और विशाखामें इक्ष्वाकु तथा कोशलेशका घात हो ॥ ४२४ ॥

मैत्रेपौण्ड्रमहीनाथंसार्वभौमन्तथैंद्रभे ।
अन्ध्रमद्रकनाथंचमूलस्थोहन्तिनिश्चितम् ॥४२५॥

अनुराधामें पौंड्र राजाका, ज्येष्ठामें सम्राट्का और मूलमें अन्ध्र तथा मद्रासके राजाका घात हो ॥ ४२५ ॥

पूर्वाषाढाकाशिराजमुत्तराहंतिकेकतम् ।
सौधेशिबिपवेदीशंश्रवणेकेकयेश्वरम् ॥ ४२६ ॥

पूर्वाषाढमें काशीराजका, उत्तरामें कैकत, अभिजितमें शिवपेश और श्रवणमें केकयेश्वरका नाश हो ॥ ४२६ ॥

वासवेपञ्चजन्येशंवारुणेसिंहलेश्वरम् ।
पूर्वभायामंगनाथंनैमिषेशमुभागतौ ॥ ४२७ ॥

धनिष्ठामें पांचजन्य, शतभिषामें सिंहलेश्वर, पूर्वाभाद्रपदमें अंगनाथ और उत्तराभाद्रपदमें नैमिषक्षेत्रके अधिपतिका नाश हो॥४२७॥

रेवत्यामुदितःकेतुःकिराताधिपघातकः ।
धूम्राकारसपुच्छश्चकेतुर्विश्वस्यपीडकः ॥ ४२८ ॥

और रेवतीमें केतुका उदय हो तो किरात देसके राजाका घात हो। यदि धूम्रके आकारका चोटल पूंछल केतु उदय हो तो वह संसार भरको पीडा देता है ॥ ४२८ ॥

श्रावणेभाद्रमासेचकेतवोवारुणादश ।
जलवृष्टिकरालोकेतदाधान्यसमर्घता ॥ ४२९ ॥

"विशेष फल"-श्रावण और भादोंमें वारुण नामके दश केतु होतेहैं ये संसारमें अच्छा जल वर्षातेहैं और अन्न सस्ता रहताहै॥४२९॥

आश्विनेकार्तिकेतैस्कःसूर्यपुत्राश्चतुर्दश ।
कुर्युश्चतुष्पदेमृत्युंदुर्भिक्षंचैवनाशनम् ॥ ४३० ॥

आश्विन और कार्तिकमें तैस्क नामक सूर्यके पुत्र चौदह केतु उदय होते हैं वे दुर्भिक्ष आदिसे चौपायोंका नाश करते हैं ॥ ४३० ॥

वह्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशत्केतवोमार्गपौषयोः
अग्निदाहंचौरभयमनावृष्टिंदिशन्त्यमी ॥ ४३१ ॥

मगसिर और पौषमें वह्निपुत्र ३४ केतु होते हैं ये अग्निदाह,चौर भय और अनावृष्टि करते हैं ॥ ४३१ ॥

केतवोयमपुत्राःस्युर्माघफाल्गुनयोर्नव ।
धान्यंमहर्घंदुर्भिक्षंकुर्युर्भूपमहारणम् ॥ ॥ ४३२ ॥

माघ फाल्गुनमें यमके पुत्र नौ केतु दीखते हैं वे धान्य महँगा करके दुर्भिक्ष बना देते हैं और राजाओंमें बड़ी लड़ाईयां होतींहैं ॥४३२॥

केतवोऽष्टादशसुतावरुणस्यवसन्तके ।
लोकेसुखंमंगलानिसुभिक्षंकुर्युरुद्यताः ॥ ४३३ ॥

चैत्र और वैशाखमें वरुणके पुत्र अठारह केतु होते हैं वे संसारमें सुख और मंगल कार्य करते हैं ॥ ४३३ ॥

ज्येष्ठाषाढोदितावायोः पुत्राविंशतिकेतवः ।
सवातजलवर्षायेतरुप्रासादभंगदाः ॥ ४३४ ॥

जेठ और आषाढमें वायुके पुत्र बीस केतु होते हैं वे पवन सहित वर्षा करते हैं जिससे वृक्ष और महलोंकी अटारियां टूटजातीहैं॥४३४॥

एवंपंचोत्तरशतंकचिदष्टोतरंशतम् ।
केचिदेकोत्तरशतंकेतूनांस्थानकत्रयात् ॥ ४३५ ॥

इस प्रकार यह १०५केतु हैं कोई १०८और कोई १०१केतु बतलाते हैं४३५

केतूदयफलम् ।

एषांकदाफलमितिज्ञेयमृक्षंविलोकयेत् ।
महोत्पातहतेऋक्षेदेशेनावृष्टिसंभवः ॥ ४३६ ॥

इनका फल जाननेके लिये नक्षत्रका विचार करना चाहिये यदि इनसे नक्षत्र हत हुआ हो तो उस देशमें उत्पात और अनावृष्टि होतीहै॥४३६॥

उल्कापातोदिशांदाहोभुकंपोब्रह्मवर्चसम् ।
दृष्ट्वाऋक्षंभवेद्यत्रतदृक्षंपीडितंभवेत् ॥ ४३७ ॥

इति वर्षप्रबोधे पूर्वभागः समाप्तः ।

उल्कापात–दिग्दाह–भूकंपादि देखकर नक्षत्रका विचार करे क्योंकि उस दिन जो नक्षत्र होगा वही पीडित होगा ॥ ४३७ ॥

इति श्रीहनूमान शर्मा संग्रहीत भाषाटीकासहित वर्षप्रबोधके पूर्वभागका द्वितीयस्थल समाप्त । पूर्वभाग समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

वर्षप्रबोधः

उत्तरभागः भाषाटीकासहितः ।



(१) अथ उत्पातनिरूपणम् ।

प्रकृतेश्चान्यथाभावउत्पातःसत्वनेकधा ।
सयत्रतत्रदुर्भिक्षंदेशराज्यप्रजाक्षयः ॥ १ ॥

अब वर्षप्रबोधका उत्तरभाग आरम्भ होता है ।

(१) "उत्पात निरूपण"–प्रकृतिमें किसी प्रकारका फेर बदल ही वही उत्पात होता है और इस भांति अनेक प्रकारके उत्पात होते हैं । जहां ऐसे उत्पात हों वहां दुर्भिक्ष तथा देश, राज्य और प्रजाका नाश होता है ॥ १ ॥

देवानांविकृतंभंगंचित्रेष्वायतनेषुच ।
ध्वजश्चोर्द्ध्वमुखोयत्रतत्रराष्ट्रस्यविप्लवः ॥ २ ॥

देवमूर्तियां हँसें, रोवें या टूट जायँ अथवा गिरपड़ें । ध्वजा ऊर्ध्व मुख होजाय तो देशमें उपद्रव होता है ॥ २ ॥

जलस्थलपुरारण्यदृश्यन्तेऽन्यत्रजन्तवः ।
शिवाकाकादिकाक्रन्दः पुरमध्येपुरच्छिदे ॥ ३ ॥

जलजीव (मच्छी) आदि स्थल (सूखी रेतमें) और स्थलके जीव जलमें और शहरोंके जंगलमें अथवा जंगली जीव शहरोंमें दीख पड़ें । गावोंमें गीदड़ और कौए रोवें तो विध्वंस हो ॥ ३ ॥

छत्रप्राकारसेनादिदाहायेनृपतीन्पुनः ॥
अस्त्राणांज्वलनंकोशनिर्गमश्चपराजये ॥ ४ ॥

छत्र, परकोटा, सुवर्ण और अस्त्र यह अपने आप जल उठें तथा म्यानसे तलवार निकल पडे तो पराजय होती है ॥ ४ ॥

अन्यायश्चदुराचारःपाखण्डाधिकताजने ।
सर्वमाकस्मिकञ्जातंवैकृतंदेशनाशनम् ॥ ५ ॥

मनुष्योंमें अन्याय दुराचार पाखण्ड यह अकस्मात् अधिक हों तो देशका नाश होता है ॥ ५ ॥

राजादिःकृषिजीवीचेद्विधर्मःपशुपालकः
देवताप्रतिमाभंगोलिंगिविप्रवधस्तथा ॥ ६ ॥

जो राजा होकरभी खेती करे ग्वाल पना करे, देव मूर्ति टूटजाय और संन्यासी, ब्राह्मण मारा जाय तो यहभी उत्पातहीका कारणहै६

सितरक्तंपीतकृष्णंसुरेन्द्रस्यशरासनम् ।
भवेद्विप्रादिवर्णानांचतुर्णांनाशनंक्रमात् ॥ ७ ॥

विना वर्षा इन्द्रधनुष हों और वह सूर्यके सन्मुख न हो तो उसके रंग सजातियोंका फल जानना । सफेद, लाल, पीला, काला होनेसें क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इनका नाश करताहै ॥ ७ ॥

अकालेपुष्पितावृक्षाःफलिताश्चान्यभूभुजे ।
अल्पेऽल्पंमहतिप्राज्यंदुर्निमित्तैःफलंवदेत् ॥ ८ ॥

वृक्षोंमें विना समय फल फूल आवें अथवा बिलकुलही कम या एकदम अधिक फल फूल आवें तौभी दुर्निमित्त होता है ॥ ८ ॥

अश्वत्थोदुम्बरवटप्लक्षाःपुनरकालतः ।
विप्रक्षत्त्रियविट्शूद्रवर्णानांनाशनंक्रमात् ॥ ९ ॥

पीपल, गूलर, वट औ पिलखन यह विना समय फलें तो क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्रोंका नाश होता है ॥ ९ ॥

वृक्षेपत्रेफलेपुष्पेवृक्षपुष्पफलंदलम् ।
जायतेचेत्तदालोकेदुर्भिक्षादिमहाभयम् ॥ १० ॥

वृक्षके पत्तेमें, फूलमें और फलमें वृक्षका पत्ता फूल या फल उत्पन्न हो तो दुर्भिक्ष होता है और महामारी पडती है ॥ १० ॥

गोधनिर्निशिसर्वत्रकलिर्वादर्दुराःशिखी ।
श्वेतकाकश्चगृध्रादिभ्रमणंदेशनाशनम् ॥ ११ ॥

गोधनी, कली, मींडक और मोर यह रात्रिमें विचरें तो देशनाश होता है अथवा सफेद काग और गीध आदि घरोंमें घुसें तो भी देशक्षय होता है ॥ ११ ॥

एवमुत्पातसंयोगाज्ज्ञात्वाशास्त्रान्तरादपि ।
वर्षेशुभाशुभंदेशेज्ञेयंवर्षपरीक्षकैः ॥ १२ ॥

इस प्रकारके उत्पातोंके संयोगको अन्य शास्त्रोंसे भी जान लेना चाहिये और संवत्सरका शुभाशुभ तथा वर्षाका ज्ञान करलेना चाहिये ॥ १२ ॥

"उत्पातभेदाः" भूमिकम्पेप्रजापीडानिर्घातेतु
नृपक्षयःअनावृष्टिस्तुदिग्दाहेदुर्भिक्षंपांसुवर्षणे१३॥

"उत्पातोंके भेद * और विशेष फल ।"–भूकंपसे प्रजामें पीडा हो, निर्घातसे नृप क्षय हो, दिग्दाहसे अनावृष्टि हो, पांसु (बालू) वर्षासे दुर्भिक्ष हो ॥ १३ ॥

क्षयकृत्पांसुवृष्टिश्चनीहारश्चभयंकरः ।
दिग्दाहोऽग्निभयंकुर्यान्निर्घातोनृपभीतिदः ॥ १४ ॥

धूलकी वर्षासे क्षय होता है, नीहार (कोहरा) भय करताहै । दिग्दाहसे अग्नि भयभी होता है, निर्घात (वज्रपात) से राजाको भय होता है ॥ १४ ॥

* इनके लक्षण अन्तमें बतलाये हैं ।

झंझावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः ।
भूकंपोदुःखदायीचपरिवेषश्चरोनसत् ॥ १५ ॥

झंझा वायु (सन सनाट करती हुई हवा) और घोर शब्दसे चौर भय होता है । भूकंप दुःखदाई और परिवेष (कुण्डाला) बुरा होता है ॥ १५ ॥

ग्रहयुद्धेराजयुद्धंकेतौदृष्टेतथैवच ॥
ग्रहणांतेमहावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ १६ ॥

ग्रहोंके युद्धसे अथवा धूमकेतुके दीखनेसे राज युद्ध होताहै और ग्रहणके अन्तमें यदि महावर्षा हो तो सब दोष दूर होजाते हैं॥१६॥

उल्कापातेश्रेष्ठनाशोद्रुमच्छिन्नेधनक्षयः ।
पाषाणवर्षणेज्ञेयासर्वधान्यमहर्घता ॥ १७ ॥

बडे तागओंके टूटनेसे सेठोंका नाश, तथा वृक्षोंके उखड़ पडनेसे धन क्षय होता है । पाषाणे वृष्टि अथवा उपल वृष्टि (ओले गिरने) से सब खेतियोंका नाश होता है ॥ १७ ॥

विद्युत्पातेजलाभावःप्रजानाशोऽधकारिता ।
ऋतूनांव्यत्ययेरोगःसर्वजन्तुषुजायते ॥ १८ ॥

बिजलीके उत्पातसे जलका अभाव होता है, घोर अन्धकारसे प्रजाका नाश होता है । ऋतुओंकी विपरीतता (जाडेमें गर्मी और गर्मीमें ठंढ पडने) से सब जीवोंमें रोग फैलता है ॥ १८ ॥

जन्तूनांविकृतोत्पत्तौराजविघ्नकरीमता ।
विग्रहोजायतेघोरश्चन्द्रसूर्यविपर्यये ॥ १९ ॥

जीवोंकी विपरीत उत्पत्ति होनेसे राजाओंमें विघ्न होता है । और चन्द्र सूर्यके विपर्ययसे घोर विग्रह होता है ॥ १९ ॥

ग्रहयुद्धेभवेद्युद्धंयुतौचैवमहर्घता ।
अकालेफलपुष्पाणिसस्यनाशकराणिच ॥ २० ॥

ग्रहोंके युद्धसे युद्ध और युक्त होनेसे महँगाई होती है। अकालमें फल पुष्प होनेसे खेतियोंका नाश होता है ॥ २० ॥

यस्यराज्येचराष्ट्रेचदेवध्वंसःप्रजायते ।
सूर्येंद्वोःसर्वथाग्रासेसर्वस्यापिमहर्घता ॥ २१ ॥

जिसके राज्यमें अथवा राष्ट्रमें देवताका विध्वंस (टूट फूट कट चूर) हो जाय अथवा सूर्य और चन्द्रमाका सर्वग्रास हो तो सब तरहकी महँगाई होती है ॥ २१ ॥

भौमादिग्रहवक्रस्य चक्रे च प्राक्तनंफलम् ॥ २२ ॥

भौमादि ग्रहोंके वक्री होनेसेभी पूर्वोक्त फल होता है॥२२॥(इति)

(२) अथ मंडलविचारमाह ।

कृत्तिकाभरणीपुष्यंद्विदैवंपूर्वफल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदंपैत्र्यंस्मृतमाग्नेयमंडलम् ॥ २३ ॥

(२) "मण्डल विचार"-कृत्तिका, भरणी, पुष्य, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद और मघा यह "आग्नेय मण्डल"के नक्षत्र हैं ॥ २३ ॥

यद्यस्मिन्धूलिवर्षादिर्विकारःकोपिजायते ।
भूमिकंपोशनेःपातवल्कापातोन्धकारिता ॥२४॥
दर्शनंधूमकेतोश्चग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।
रक्तवृष्टिर्जलवृष्टिरन्यद्वाकिंचिदद्भुतम् ॥ २५ ॥
तदाग्निमंडलात्प्राज्ञोजानीयाद्भाविलक्षणम् ।
नेत्ररोगमतीसारंदेशेग्निप्रबलोदयः ॥ २६ ॥

इनमेंसे जिस नक्षत्रमें धूलिवर्षा आदि कोईभी विकार पैदा हो अथवा भूकंप, वज्रपात, उल्कापात, अंधकार, धूमकेतुका दर्शन, चन्द्र सूर्यके ग्रहण, रक्त वृष्टि (लाल रंगकी वर्षा), जलकी वर्षा अथवा तमाशी और कुछ अद्भुत दृश्य हो तो विद्वानोंको उचित है कि

अग्निमंडलसे भावी फलका लक्षण जानना। इसमें नेत्ररोग, अतिसार और प्रबल अग्निका उदय हो ॥ २४ ॥ २५ ॥२६ ॥

गवांदुग्धंघृतात्पत्वंद्रुमेपुष्पफलात्पता ।
अर्थनाशंचचौरेभ्यःस्वल्पवृष्टिंसमादिशेत् ॥२७॥

गायोंमें दूध घीकी कमी हो, वृक्षोंमें फल पुष्पोंकी कमी हो, चौरोंसे द्रव्यका नाश हो और वर्षा कम हो ॥ २७ ॥

क्षुधयापीडितालोकाभिक्षाखर्प्परधारिणः ।
सैंधवायमुनातीरघृताटंकजवाह्लिकाः ॥ २८ ॥
जालंधराश्चकाश्मीराःसमंश्चोत्तरापथः ।
एतेदेशाविनश्यंतितस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥ २९ ॥

इति आग्नेयमंडलम् ।

लोग भूँखसे पीडित होकर भिक्षाके लिये खप्परधारी .(जोगी) हो जाँय । सिंधुदेश-यमुना किनारेके देश घृताटंक और वाह्लिक जालंधर-काश्मीर और उत्तर देश इन देशोंका उन उत्पातोंके देखनेसे नाश हो ॥ २८ ॥ २९ ॥

मृगादित्याश्विनीहस्ताश्चित्रास्वातिसमन्विताः ।
उत्तराफाल्गुनीवायोरिदंमंडलमुच्यते ॥ ३० ॥

मृगशिर, पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति और उत्तराफाल्गुनी यह नक्षत्र "वायुमण्डल" के हैं ॥ ३० ॥

यद्येषुजायतेकिंचित्पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् ।
महावातास्तदावांतिमहद्भयमुपस्थितम् ॥ ३१ ॥

यदि इनमें पूर्वोक्त उत्पात लक्षण हों तो उस समय महावायु (बड़ी जोरकी आँधी) चलती है और महाभय उपस्थित होताहै ३१

उन्नीताअपिपर्जन्यानमुञ्चंतितदाजलम् ।
विनाशोदेवविप्राणांनृपाणांविन्ध्यवासिनाम् ॥ ३२ ॥

जलसे भरे हुए बादलोंकी घन घोर घटासेभी जल नहीं बर्षे। और ब्राह्मणोंका देवताओंका तथा विन्ध्यवासियोंका विनाश होता है ॥ ३२ ॥

प्राकारगिरिशृङ्गाणितोरणस्थलभूमिका ।
वायुवेगविधूतानिवनानिनिपतंतिहि ॥ ३३ ॥
इति वायुमण्डलम् ।

शहरोंके परकोटे, पहाड़ोंके शिखर, मकानोंके तोरण और बनोंके वृक्ष यह वायु वेगसे भग्न होजाते हैं ॥ ३३ ॥

आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्रपदंपुष्यंचवारुणम् ।
पूर्वाषाढामूलमेतद्वारुणंमंडलंस्मृतम् ॥ ३४ ॥

आर्द्रा-श्लेषा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, शतभिषा, पूर्वाषाढा और मूल यह "वारुण" (जल) मंडलके नक्षत्र हैं ॥ ३४ ॥

यथूत्पातोदयेपूर्वगदितेस्यात्प्रजासुखम् ।
बहुक्षीरघृतागावोबहुपुष्पफलाद्रुमाः ॥ ३५ ॥

इनमें पहले कहे हुए उत्पात हों तो प्रजाको सुख मिलता है। गायोंके दूध घी बहुत हों, वृक्षोंके फल पुष्प अधिक हों ॥ ३५ ॥

बहुधान्यामहीलोकेनैरुज्यंबहुमंगलम् ।
धान्यानिचसमर्घाणिसुभिक्षंप्रबलंभवेत् ॥ ३६ ॥

पृथ्वीपर खेतियां अच्छी हों, निरोगता हो, बहुत भांतिके मंगल हों। अन्न सस्ते हों और बड़ा सुभिक्ष हो ॥ ३६ ॥

कीटकामूषकाःसर्पाःशलभामृगकर्कटाः ।
मारिःपिपीलिकाकामंस्थलदेशेप्रजायते ॥ ३७ ॥

कीड़े, मूसे, सर्प, टीडी, हरिण, केंकड़े, पिपीलिका और मारी यह स्थल देशोंमें बहुत हों ॥ ३७ ॥

ज्येष्ठानुराधारोहिण्योधनिष्ठाश्रवणस्तथा ।
अभिजिदुत्तराषाढाशुभंमाहेन्द्रमंडलम् ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, धनिष्ठा, श्रवण, अभिजित् और उत्तराषाढ यह नक्षत्र "महीमण्डल" (भूमंडल) के हैं ॥ ३८ ॥

एषूत्पातोदयेलोकाः सर्वेमुदितमानसाः ।
संधिकुर्वंतिभूमीशाःसुभिक्षंमंगलोदयः ॥ ३९ ॥

इनमें यदि उपरोक्त उत्पात हों तो सब लोग बडे प्रसन्न मन रहें। राजा लोग संधि (राजीपा) करें। सुभिक्ष हो और मंगल कार्योंका उदय हो ॥ ३९ ॥

उल्कापातादयःसर्वेऽमीषुस्वस्वफलप्रदाः ।
वर्षाकालंविनाज्ञेयावर्षाकालेतुवृष्टिदाः ॥ ४० ॥

उल्कापातादि वर्षाकालके विना भी अपने अपने फल देते हैं और वर्षा कालमें तो अवश्यही वर्षा करते हैं ॥ ४० ॥

माहेंद्रंसप्तरात्रेणसद्योवारुणमंडलम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेनफलंमासेनवायवम् ॥ ४१ ॥

माहेंद्र (पृथ्वी) मंडलका फल सात रात्रिमें, वारुण (जल)मंडलका फल तत्काल, अग्निमंडलका फल पन्द्रह दिनमें और वायुमंडलका फल १ महीनेमें होताहै ॥ ४१ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंराज्ञांसंधिःपरस्परम् ।
अंत्यमंडलयोर्ज्ञेयंतद्विपर्ययमाद्ययोः ॥ ४२ ॥

"विशेष फल" अन्त्य मण्डल (पृथ्वीमण्डल) में सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और राजाओंमें परस्पर सन्धि होती है। और आद्य (अग्निमंडल) में इनसे विपरीत होता है ॥ ४२ ॥

माहेंद्रेवारुणेचैवदृष्टाभवंतिघेनवः ।
उत्पाताःप्रलयंयांतिधरणीवर्द्धतेशिवैः ॥ ४३ ॥

माहेन्द्र और वारुण मंडलमें गायें बड़ी हृष्ट पुष्ट होती हैं, उत्पात सब दूर होजाते हैं और पृथ्वीपर कल्याण बढते हैं ॥ ४३ ॥

त्रिमासिकंतुचाग्नेयंवायव्यंचद्विमासिकम् ।
मासमेकंचवारुण्यंमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् ॥ ४४ ॥

किसीका यहभी मत है कि, आग्नेयमंडलका ३ मासमें, वायव्यका दोमासमें वारुणका एक मासमें और माहेंद्रका सात रात्रिमें फल होता है ॥ ४४ ॥

विवेकविलासे पुनः ।

मंडलेऽग्नेरष्टमासैर्द्वाभ्यांवायव्यकेपुनः ।
मासेनवारुणेसप्तरात्रान्माहेंद्रकेफलम् ॥ ४५ ॥

विवेक विलासमें लिखा है कि-अग्निमंडल आठ महीनेमें, वायुमण्डल दो महीनेमें, वारुण एक महीनेमें और माहेंद्र सात रात्रिमें, फल देता है ॥ ४५ ॥

रुद्रदेवः प्राह ।

वायव्यंमासयुग्मेनमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् ।
आग्नेयमर्द्धमासेनवारुणंशीघ्रवारिदम् ॥ ४६ ॥

रुद्रदेव कहते हैं-कि वायव्य दो महीनोंमें, माहेंद्र सात रातमें, आग्नेय १५ दिनमें और वारुण शीघ्रही फल देता है (अथवा जल बर्षाता है) ॥ ४६ ॥

वारुणाग्नेययोर्भौमानिलयोःफलमंदता ।
अन्योन्यमभिघातेनतद्विमृश्यवदेत्फलम् ॥ ४७ ॥

वारुणसे आग्नेयका और भौमसे वायुका फल मंद होता है। और परस्परके अभिघातसे जो फल हो वह विचार कर कहना चाहिये ॥ ४७ ॥

भूमिकंपरजोवर्षदिग्दाहाकालवर्षणम् ।
इत्याद्याकस्मिकंसर्वमुत्पातइतिकीर्त्यते ॥ ४८ ॥

भूकंप–धूलि वर्षा– दिग्दाह (दिशाओंमें आग जली हुई दीखे) और अकालवर्षा हो यह सब अकस्मात् (अचानक) होनेवाले उत्पात कहाते हैं ॥ ४८ ॥

इत्यनीतिप्रजारोगरणाद्युत्पातजंफलम् ।
मंडलाख्यासमंप्रायोवह्निवाय्वादिकंतथा ॥ ४९ ॥

इस प्रकार अन्याय, रोग, यह रण उत्पातोंसे होने वाले फल हैं । और मण्डलभी कहाते हैं, प्रायः यह वह्नि वायव्यादि होते हैं ॥ ४९॥

आग्नेयेपीडचतेयाम्यांवायव्यांपुनरुत्तराम् ।
वारुणेपश्चिमांनात्रपूर्वामाहेंद्रमंडले ॥ ५० ॥ इति॥

आग्नेय मण्डलमें दक्षिण दिशामें पीडा होती है । वायु मण्डलमें उत्तरमें,वारुणमें पश्चिममें और माहेंद्रमें पूर्वमें पीड़ा होती है ॥ ५० ॥

(३) अथ वायुविचारमाह ।

पूर्वस्याअथवोदीच्याःपवनःशीघ्रवृष्टये ।
दक्षिणस्यावृष्टिनाशीपश्चिमायांविलंबकः ॥ ५१ ॥

(३)"पवन विचार" पूर्व अथवा उत्तरकी पवन शीघ्र वृष्टि करती है । दक्षिणसे वृष्टि रुकती है और पश्चिमकी हवासे वर्षामें विलंब होता है ५१ ॥

आग्नेयाविग्रहंवह्नेर्भयंवृष्टिविबाधनम् ।
नैर्ऋतःपवनोयावत्तावत्कुर्यान्महातपम् ॥ ५२ ॥

अग्निकोणकीसे अग्निभय तथा जलकी रुकावट और नैर्ऋत्यकीसे महा गर्मी होती है ॥ ५२ ॥

वायव्यवायुःकुरुतेवृष्टिंपवनसंयुताम् ।
ततःपीडामत्कुणाद्यांइतयोजीववर्षणम् ॥ ५३ ॥

वायव्यकी वायुसे पवन सहित वर्षा होती है,जिससे खटमल आदि उत्पन्न होकर ईति भय होता है ॥ ५३ ॥

ऐशानःपवनोविश्वहितायजलवृष्टये ।
आनंदंनंदयेल्लोकोवायुचक्रमिदंमतम् ॥ ५४ ॥

ईशानकी पवनसे संसारका हित होता है, जल वृष्टि होतीहै ।और लोगोंको आनन्द मिलता है ॥ ५४ ॥

रुद्रोऽपि स्वकृतमेघमालायामाह ।

वायुधारणमेवेदंशृणुतत्त्वेनसुंदरि ।
सुभिक्षंपूर्ववातेनजायतेनात्रसंशयः ॥ ५५ ॥

महादेवजी अपनी बनाई मेघमालामें कहते हैं कि हे सुन्दरी !वायु धारण,तत्वसे सुनो ! पूर्वकी वायुसे निःसन्देह सुभिक्ष होता है॥५५॥

आग्नेय्यांखंडवृष्टिश्चजायतेगिरिजात्मजे ।
दक्षिणईतिर्विज्ञेयानैर्ऋत्यांकुलतात्वहे ॥ ५६ ॥

अग्निकोणकीसे खंड वृष्टि होती है दक्षिणकीसे ईति (चूहे टीड़ी अनावृष्टि आदि) होते हैं।और नैर्ऋत्यकीसे आकुलता होती है॥५६॥

वारुणेदिव्यधान्यंचवायव्यांतत्तसंभवः ।
उत्तरायांशुभंज्ञेयमीशान्यांसर्वसंपदः ॥ ५७ ॥

इति सामान्यतोवायुचक्रविचारः ।

पश्चिमकी पवनसे दिव्य धान्य (अच्छी खेतियां) वायव्यकी से ताप, उत्तरकी शुभ और ईशानकी पवन सब संपत्ति देनेवाली होती है ॥ ५७ ॥

हेमंतेदक्षिणेवायुःशिशिरेनैर्ऋतःशुभः ।
वसंतेचोष्णःश्रेष्ठफलदायीशरत्सुसः ॥ ५८ ॥

हेमंतमें दक्षिणकी,शिशिरमें नैर्ऋत्यकी और वसंतमें उष्ण (गर्म) वायु, शरदमें श्रेष्ठ फल देती है ॥ ५८ ॥

शरत्कालेतुपूर्वस्याःसमीरःफलनाशनः ।
वसंतेचोत्तरावायुःफलपुष्पाणिनाशयेत् ॥ ५९ ॥

शरदमें पूर्वकी वायुसे फल मारे जाते हैं । और वसंतमें उत्तरकी वायुसे फल पुष्पोंका नाश होता है ॥ ५९ ॥

आग्नेय्यानकदापीष्टऐशानःसर्वदाशुभः ।
नैर्ऋतोविग्रहंरोगंदुर्भिक्षंकुरुतेभयम् ॥ ६० ॥

इति वातविशेषचक्रम् ।

आग्नेयी वायु सदा खराब और ईशानकी सदा अच्छी होती है । नैर्ऋत्यकीसे रोग विग्रह और दुर्भिक्ष भय होता है ॥ ६० ॥

झंझावातंविनाकश्चिद्यदाप्राच्यादिकोऽनिलः ।
स्पष्टभावेनचेद्वातितदावृष्टिःस्थिराभवेत् ॥ ६१ ॥

झनझनाटकी न हो तो पूर्वकी वायु स्पष्ट भावसे चलती हुई निश्चय वर्षा करती है ॥ ६१ ॥

श्रावणेमुख्यतःप्राच्यानभस्येचोत्तरोऽनिलः ।
वृष्टिंदृढतरांकुर्याच्छेषमासेषुवारुणः ॥ ६२ ॥

इति स्थापकवातः ।

मुख्य तो श्रावणमें पूर्वकी और भादेमें उत्तरकी पवन दृढ वर्षा करती है । और शेष महीनोंमें पाश्चिमी हवा अच्छी है यह स्थापक वायु है ॥ ६२ ॥

चैत्रासितद्वितीयायांसर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ।
विनामेघंतदाभाद्रपदेवृष्टिस्तुभूयसी ॥६३ ॥

"चैत्र" कृष्ण द्वितीयाको यदि सब दिशाओंमें, घूमती हुई हवा चले तो भादवेमें विना बादलोंके भी बहुत वर्षा हो ॥ ६३ ॥

पूर्वस्याउत्तरस्याश्चवायुश्चैत्रेसितेनरे !
तृतीयायांतदालोकेसुभिक्षंप्रचुरंजलम् ॥ ६४ ॥

यदि चैत्र कृष्ण तीजको पूर्व अथवा उत्तरकी पवन चले तो प्रचुर जल वृष्टिसे अच्छा सुभिक्ष होता है ॥ ६४ ॥

चतुर्थ्यांवृष्टियुग्वातस्तदादुर्भिक्षमादिशेत् ।
चैत्रेसितादिपंचम्यांताहृगेवफलंभवेत् ॥ ६५ ॥

चैत्र कृष्ण चतुर्थीको यदि वर्षा सहित वायु चले तो दुर्भिक्ष होता है।चैत्र शुक्ल पंचमीको भी ऐसी पवन चले तो ऐसाही फल जानना ६५

चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषुकृष्णेऽथपक्षेयदिपूर्ववातः ।
वर्षायुतोनैवशुभःसितेतुपूर्वोत्तरावायुरतीवशस्तः ६६

चैत्र कृष्ण २।३।४।५को वर्षा सहित पूर्व वायु चले तो शुभ नहीं होती है, किंतु शुक्ल पक्षमें पूर्वोत्तरकी वायु अत्यन्त श्रेष्ठ होती है ६६

चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांवायुर्दक्षिणपूर्वयोः ।
वृष्टचासहतदावर्षेधान्यंत्रिगुणमूल्यता ॥ ६७ ॥

चैत्रशुक्ल पंचमीको दक्षिण पूर्वकी वर्षा सहित वायु चले तो उस वर्षमें धान्यका तिगुना मूल्य होजाता है ॥ ६७ ॥

एवं च ।

चैत्रोऽयम्बहुरूपस्तुदक्षिणानिलसंयुतः ।
सर्वोविद्युत्समायुक्तोवृष्टेर्गर्भहितावहः ॥ ६८ ॥

यदि चैत्रमें अनेक प्रकारकी पवन चले और बिजली चमके तो श्रेष्ठ वर्षा हो ॥ ६८ ॥

मूलमारभ्ययाम्यांतंक्रमाच्चैत्रविलोकयेत् ।
यावद्दक्षिणतोवायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ॥ ६९ ॥

मूलसे भरणी तक चैत्रको देखना चाहिये उसमें जब तक दक्षिणकी पवन चले तब तक वर्षा हो ॥ ६९ ॥

शुक्लाकृष्णापिवैशाखेऽष्टमीयद्वाचतुर्दशी ।
एषुचेद्दक्षिणोवातस्तदामेघमहोदयः ॥ ७० ॥

वैशाखमें शुक्ल या कृष्णकी आठें चौदसको दक्षिणकी पवन चले तो मेघ उदय हो ॥ ७० ॥

राधेशुक्लतृतीयायांचिह्नैर्निश्चीयतेऽनिलः ।
पूर्वस्यायदिवोदीच्यांघनाघनस्तदाघनः ॥ ७१ ॥

वैशाख शुक्ल ३ को ध्वजादि चिह्नोंसे वायुका विचार करे, यदि पूर्व या उत्तरकी वायु चले तो मेघ आवे और वर्षा हो ॥ ७१ ॥

दक्षिणोनैर्ऋतोवायुर्वृष्टेःस्यात्प्रतिघातकः ।
वारुणाद्वृष्टिरधिकापरधान्यस्यरोधनम् ॥७२॥

उसी दिन दक्षिण या नैर्ऋत्यकी पवन चले तो वर्षा नहीं हो और पश्चिमकी पवन चले तो अच्छी हो किन्तु जाड़ेकी खेतियां नष्ट हों ॥ ७२ ॥

वैशाखशुक्लतुर्येहिसंध्यायामुत्तरानिलः ।
सुभिक्षायाथपंचम्यामैंद्रोधान्यमहर्घकृत् ॥ ७३ ॥

वैशाख शुक्ल ४ को उत्तरकी हवा चले तो सुभिक्ष हो और पंचमीं को पश्चिमी पवन चले तो तेजी हो ॥ ७३ ॥

उदयास्तंगतोयावत्पूर्वोवायुर्यदाभवेत् ।
संगृह्णीयाच्चधान्यानिबहूनिसुलभान्यथ ॥ ७४ ॥

उदय और अस्तके समय पूर्वकी पवन चले तो सस्ते नाजका अतुर संग्रह करना चाहिये ॥ ७४ ॥

एवंशुद्धदशम्यांचेत्तदापिधान्यसंग्रहः ।
तथादेशेषुपूर्णायांवायुंसम्यग्विचारयेत् ॥ ७५ ॥

इसी प्रकार शुक्ल दशमीको भी उदयास्तमें पवन चले तो धान्य संग्रह करना चाहिये । तथा देशोंमें पूर्ण वायुका भले प्रकार विचार .. चाहिये ॥ ७५ ॥

प्रातश्चतुर्घटीमध्येपूर्वोवायुर्यदाभवेत् ।
सूर्यार्द्रासंगमेवाद्यदिनेमेघमहोदयः ॥ ७६ ॥
सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर हो तब यदि प्रातःकालके समय चार घड़ीके भीतर पूर्वकी पवन चले तो मेघका उसीदिन उदय होता है ॥ ७६॥

वृष्टिर्द्वितीयेपिवायुर्घटिकेपूर्ववायुतः ।
ज्ञेयाद्वितीयेदिवसेआर्द्रातपनसंगमे ॥ ७७ ॥
इसी भाँति दूसरे दिनमी पूर्व वायु हो तो अवश्य वर्षा होतीहै॥७७॥

पूर्णिमातःसमारभ्ययावज्ज्येष्ठासिताष्टमी ।
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवकेवृष्टिरुच्यते ॥ ७८ ॥
वैशाखी पूर्णिमासे "ज्येष्ठ" कृष्णाष्टमी तक आर्द्राके सूर्यमें नौ नक्षत्रोंका योग हो अर्थात् आर्द्रापर सूर्य हो और पूर्णिमासे अष्टमीतक आर्द्रादि नौ नक्षत्र हों तो अवश्य वर्षा होतीहै ॥ ७८ ॥

सूर्यसोमेत्वमायोगेवायुर्वारुणदिग्भवः ।
यदासरत्सुविज्ञेयोवायुर्धान्यमहाफलम् ॥ ७९ ॥
सूर्य चंद्र और अमावास्याका योग हो और पश्चिमी हवा चले तो अच्छा अन्न हो ॥ ७९ ॥

नवमासान्यदापूर्वोवायुश्चरतिभूतले ।
स्वातौमौक्तिकनिष्पत्तिर्बहुधान्यादिमंगलम् ॥८०॥
यदि नौमास तक बराबर पूर्वी पवन चले तो सीपमें मोती और पृथ्वीपर धान्य तथा मंगल बहुत हों ॥ ८० ॥

ज्येष्ठमासेरविकरास्तपंतिप्रचुरोऽनिलः ।
लूकासमन्वितोवापिघनगर्भस्तदाशुभः ॥ ८१ ॥
जेठ मासमें कड़ी धूप पड़े, हवा बहुत चले, लू लगें तो वर्षाका गर्भ शुभ होता है ॥ ८१ ॥

ज्येष्ठमासेऽष्टमीकृष्णातथाकृष्णचतुर्दशी ।
दक्षिणानिलसंयुक्तःपरतोवृष्टिहेतवे ॥ ८२ ॥
जेठ वदी आठें तथा चौदसको दक्षिणी पवन हो तो पीछे वर्षा होती है ॥ ८२ ॥

ज्येष्ठस्ययदिपंचम्यांदक्षिणःपवनश्चरेत् ।
तदातिलास्तथातैलंघृतंक्रेयंतदाश्विने ॥ ८३ ॥
जेठकी पंचमीको दक्षिणी पवन चले तो तिल तेल घी यह आसोजमें खरीदने चाहिये ॥ ८३ ॥

यदुक्तंमेघमालायांगर्जितंश्रूयतेयदि ।
दक्षिणस्याभवेद्वायुराच्छन्नंचयदानभः ॥ ८४ ॥
धान्यानांतिलतैलानांसंग्रहःक्रियतेतदा ।
द्विगुणस्त्रिगुणोलाभःक्रमान्मासश्चतुष्टये ॥ ८५ ॥
उक्त मेघमालामें यदि गर्जना सुने, दक्षिणी पवन हो और आकाश बादलोंसे ढका हुआ हो तो धान्य तथा तिल तेलादिका संग्रह करनेसे चार मासमें दुगुना तिगुना लाभ होता है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

सिताऽष्टम्यांज्येष्ठमासेचतस्रोवायुधारणाः ।
मृदुवायुः१शुनोवातः२स्निग्धाभ्रः३स्थगिताभ्रकः
मृदु (कोमल पवन) शुन (शब्द युक्त हवा)–स्निग्ध (चिकनी हवा) और स्थगित (थमी हुई हवा) यह चार भाँतिकी पवन होतीहैं । इसका ज्येष्ठ शुक्लाष्टमीको विचार करना चाहिये ॥ ८६ ॥

यदिताएकरूपाःस्युःसुभिक्षंसुखकारिकाः ।
सांतरालाःशिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥ ८७॥
यदि उस दिन यह चारोंही चलें तोः सुखकारक सुभिक्ष होता है । और एकके पीछे एक चले तो चोर तथा अग्निभय होताहै॥८७॥

ज्येष्ठस्यशुक्लैकादश्यांपूजांकृत्वासुशोभनाम्।
शुभंमंगलकंकृत्वापुष्पधूपैरलंकृतः ॥ ८८ ॥
ज्येष्ठ शुक्ल एकादशीको पूजन करना चाहिये और धूप दीपादिसे अलंकृत शुभ मंगल करना चाहिये ॥ ८८ ॥

उच्चस्थानेप्रतिष्ठाप्यदीर्घदण्डेमहाध्वजः।
एवंकृत्वाप्रयत्नेनशोधयेत्कालनिर्णयम् ॥ ८९ ॥
और पीछे एक लम्बे दण्डवाली ध्वजाको किसी ऊँचे स्थानपर स्थापन करना चाहिये। और ऐसा करके यत्न पूर्वक उस समयका निर्णय करना चाहिये ॥ ८९ ॥

एकोवातोयदावातियानिचिह्नानिवापुनः।
तदात्रिचतुरोमासान्ध्रुवंवर्षतिवारिदः ॥ ९० ॥
यदि उस ध्वजाके हिलनेके चिह्नोंमे ४ दिन तक एकही पवन चले तो तीन चार मासतक निश्चय वर्षा होती है ॥ ९० ॥

प्रथमंपश्चिमोवातश्चतुर्दिनानिवातिचेत्।
अनावृष्टिंविजानीयाद्दुर्भिक्षंरौरवन्तदा ॥ ९१ ॥
यदि पहले पश्चिमी हवा ४ दिन चले तो अनावृष्टि जाननी और दुर्भिक्ष जानना ॥ ९१ ॥

उत्तरोदयमार्गेणचतस्रोहंतिवादिशः।
चत्वारोवार्षिकामासामेघावर्षंतिभूतले ॥ ९२ ॥
यदि चारों दिन उत्तरकी हवा चले तो वर्षाके चारों महीनोंमें मेघ बर्षे ॥ ९२ ॥

विपरीतोयदावातश्चतस्रोहंतिवादिशः।
रविमार्गपरिभ्रष्टोजानीयात्तस्यलक्षणम् ॥ ९३ ॥
यदि चारों दिनोंमें विपरीत वायु चले तो अशुभ लक्षण जानना॥९३॥

शीतकालेतदावृष्टिर्वर्षाकालेनविद्यते ।
अनयोर्वैपरीत्येचवृष्टिंवर्षासुनिर्दिशेत् ॥ ९४ ॥

उससे शीत कालमें तो वर्षा हो किन्तु वर्षातमें नहीं हो । और इससे विपरीत वर्षा हो तो अच्छी जानना ॥ ९४ ॥

वायव्यांपश्चिमायांचनैर्ऋत्यांवातिचक्रमात् ।
आषाढेश्रावणेक्षिप्रंद्वौमासौवृष्टिरुत्तमा ॥ ९५ ॥

यदि वायव्य पश्चिम और नैर्ऋत्यकी वायु क्रमसे चले,तो आषाढ़ श्रावणमें जल्दी वर्षा हो ॥ ९५ ॥

पूर्वस्यांचतथेशान्यामाग्नेय्यांवातिचक्रमात् ।
भाद्रपदाश्विनोच्छिद्रातदन्तेवृष्टिरुत्तमा ॥ ९६ ॥

पूर्व ईशान तथा अग्निकी पवन चले तो भादवा और आसोजके अन्तमें वर्षा हो ॥ ९६ ॥

अमायांचैवपूर्णायांज्येष्ठमासेदिवानिशम् ।
मेघैराच्छादितेव्योम्निवातोवहतिवारुणः ॥ ९७॥
अनावृष्टिस्तदादेश्याक्वचिद्वृष्टिस्तुभाग्यतः ।
मासौद्वौश्रावणाषाढौपूर्णेभाद्रपदाश्विनौ ॥ ९८ ॥

यदि जेठकी अमावस या पूर्णिमाको दिन रात मेघाच्छादन रहे और पश्चिमी पवन चले तो अनावृष्टि जानना । आषाढ श्रावणमें कहीं कुछ भाग्यसे वर्षा होसकती है । नहीं तो भादों और आश्विन भी पूरे सूखे निकल सकते हैं ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

आषाढशुक्लपंचम्यांपश्चिमोयदिमारुतः ।
वर्षागर्जितसंयुक्तःशक्रचापेनभूषितः ॥ ९९ ॥

"आषाढ"-शुक्ल पञ्चमीको यदि पश्चिमी पवन चले और गर्जना सहित वर्षा हो तथा इन्द्रधनुषसेभी शोभित हो तो ॥ ९९ ॥

तदासंगृह्यतेधान्यंकार्तिकेतन्महर्घता ।
लाभायजायतेनूनंनान्यथाऋषिभाषितम् ॥ १०० ॥

उस समय धान्यका संग्रह करे क्योंकि कार्तिकमें उसकी तेजी होती है। जिससे अच्छा लाभ रहता है यह ऋषि भाषण झूँठा नहीं है ॥ १०० ॥

आषाढशुक्लपक्षस्यद्वित्तीयायांनवर्षति ।
यदिमेघस्तदावृष्टिःश्रावणेजायतेध्रुवम् ॥ १०१ ॥

आषाढ शुक्ल द्वितीयाको मेघ तो हों किन्तु वर्षा न हो तो श्रावणमें निश्चय वर्षता है ॥ १०१ ॥

तृतीयायांपूर्ववायुःपूर्वगामीचवारिदः ।
घनामेघास्तदाभाद्रेवर्षतेविपुलंजलम् ॥ १०२ ॥

आषाढ शुक्ल ३ को पूर्वकी वायु चले और पूर्वहीसे बादल जाय तो भादोंमें बहुत वर्षा और गहरा जल होता है ॥ १०२ ॥

चतुर्थ्यांदक्षिणोवायुर्मेघःपूर्वेचगच्छति ।
आश्विनेचतदामासेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥ १०३ ॥

चौथको यदि दक्षिणी पवन चले और पूर्वमें बादल जांय तो आश्विनमें निश्चय वर्षा होती है ॥ १०३ ॥

वृष्टेदिनचतुष्केऽस्मिन्वातेपूर्वोत्तरागते ।
अतिवृष्टिःसुभिक्षंच्दुर्भिक्षंचतदन्यथा ॥ १०४ ॥

यदि इन चारों दिनोंमें पूर्वोत्तर वायु चले तो अतिवृष्टि तथा सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ १०४ ॥

सर्वरात्रंयदाश्राणिवातौपूर्वोत्तरौयदि ।
तस्मिन्वर्षेकणाःपुष्टाभवन्तिसुविमंगलम् ॥ १०५ ॥

इन दिनोंमें सब रात बादल रहें और पूर्वोत्तर वायु चले तो उस

वर्षमें अन्न बहुत मोटा होता है और पृथ्वीपर मांगलिक काम होते हैं ॥ १०५ ॥

यदिवानाभ्रलेशःस्याद्वातौपूर्वोत्तरौनहि ।
नवर्षतियदादेवोदुष्टकालंतदादिशेत् ॥ १०६ ॥

यदि लेश मात्रभी बादल न हो और पूर्वोत्तरकी पवनभी न हो तो मेघ नहीं बर्षे और अकाल पडे ॥ १०६ ॥

यत्राभ्रेस्वल्पकेजातेमध्येवातेऽल्पवर्षणम् ।
यत्रमासविभागेचनिर्मलंदृश्यतेनभः ॥ १०७॥
तत्रहानिश्चवृष्टेश्चविज्ञेयंगर्भपातनम् ।
यत्राभ्रंपंचनाडीषुवातौपूर्वोत्तरौयदि ॥ १०८ ॥
तत्रमासेभवेद्वृष्टिरित्येवंसर्वनिर्णयः ।
आषाढ्यांरात्रिकालेऽपिपवनःसर्वदिग्गतः ॥१०९

जब कम बादल हों और हवाभी कम चले तो मध्यम वर्षा हो। और महीनेके अन्तमें निर्मल आकाश दीखे तो वर्षाकी हानि तथा गर्भपात हो और पांचों नाडीमें मेघ तथा पूर्वोत्तरकी पवन चले तो पौष मासमें अवश्य वर्षा हो तथा आषाढी पूर्णिमाको रातमें सब दिशाओंकी पवन चले तो ऐसाही हो ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

अभ्रैरवृष्टैरपिचपूर्णिमासुखदायिनी ।
आद्ययामेयदाभ्राणिवातौपूर्वोत्तरौयदि ॥ ११० ॥
आद्यमासेतदावृष्टिर्वांछितादधिकाशिवौ ।
आषाढ्यांचविनष्टायांनूनंभवतिनिःकणम् ११९ ॥

पूर्णिमाको बादल हों और अवृष्टि हो तो सुख होता है । उसदिन यादि पहले पहरमें बादल हों और पूर्वोत्तरकी पवन चले तो पहले महीनेमें आशासेभी अधिक वर्षा होती है और यादि आषाढी टूट जाय तो कण नहीं होता है ॥ ११० ॥ १११ ॥

ग्रहणंवृक्षपाताद्यैर्मर्त्यंनश्यतिपूर्णिमी ।
प्रथमाघटिकाःपंचआषाढःपंचश्रावणः ॥११२॥

पूर्णिमाके हाससे ग्रहण तथा वृक्ष पातादि होते हैं। (आषाढ शुक्ल पूर्णिमाकी रातको पांच पांच घड़ीके पांच भाग बनाकर उस रातको पांच भागोंमें विभाजित करे) प्रथम पांच घटीको आषाढ, दूसरी पांच घटीको श्रावण समझे ॥ ११२ ॥

पंचभाद्रपदोमासस्तथापंचाश्विनःपुनः ।
यत्राश्राकुलनाडीषुवातोपूर्वोत्तरोस्फुटम् ॥ ११३॥
तत्रमासेभवेद्वृष्टिर्वातैरपिशुभैःशुभः ।
येषुमासेषुयेदग्धागर्भाःपौषादिसंभवाः ॥ ११४ ॥

इसी प्रकार तीसरी पांच घड़ीको भादवा और चौथी पांच घड़ीको आसोज माने। इस प्रकार मानी हुई घड़ियोंमें जिस मासकी पांच घड़ियोंमें बादल छाये हों और पूर्वोत्तरकी स्पष्ट हवा चले तो उस मासमें वर्षा होती है और शुभ वायुभी शुभ होता है। जिस मासमें पौषादि संभावित गर्भ दग्ध हों तो नेष्ट होते हैं११३॥११४॥

तन्मासपंचभागेषुरात्रौ चंद्रोऽतिनिर्मलः ।
पौषादिसंभवेगर्भेध्रुवमुत्पातसंभवः ॥ ११५ ॥

उस रात्रिमें महीनोंके पांचों भागोंमें चन्द्रमा अत्यन्त निर्मल रहे तो पौषादिके गर्भमें उत्पात होनेकी संभावना है ॥ ११५ ॥

तेनाषाढीदिवारात्रौद्रष्टव्यावृष्टिहेतवे ।
यद्याषाढ्यामहोरात्रमत्रेवातैःशुभैर्युतम् ॥ ११६ ॥

अत एव आषाढ़ी पूर्णिमाको वृष्टिके हेतु दिन रात देखने चाहिये। यदि आषाढीको रात दिन पवन चलती रहे तो शुभ है ॥ ११६ ॥

तदागर्भाःशुभाज्ञेयाःशीतकालेपिधीमता।
एकमेवदिनंप्रेक्ष्यंवर्षज्ञानायधीधनैः ॥ ११७ ॥

उससे शीतकालमें भी गर्भ शुभ होते हैं। साल भरके ज्ञानके लिये यह एक दिन विद्वानोंको अवश्य विचारना चाहिये ॥ ११७ ॥

चेदष्टम्यांशुभ्रमभ्रंवातैर्वर्षंभवेच्छुभम्।
आषाढ्यांनिर्मलश्चंद्रःपरिवेषयुतोऽथवा ॥ ११८ ॥
तदाजगत्समुद्धर्तुंशक्रेणापिनशक्यते।
कुहूतःषोडशेचाह्निलक्षणंचिंतयेदिदम् ॥ ११९ ॥

जो आषाढकी अष्टमीको शुभ्र (सफेदी वाले) बादल हों और वायु सहित वर्षा हो तो शुभ होता है। आषाढ शुक्ल पूर्णिमाको निर्मल चन्द्रमा हो अथवा उसके परिवेष (घेरा) हो तो संसारका उद्धार करनेमें इन्द्रभी समर्थ नहीं होसकता। अतः गत अमावससे सोलहवें दिन सब प्रकारके लक्षण विचारने चाहिये ॥११८॥११९॥

अस्तंगच्छतितिग्मांशौतस्माद्वर्षंशुभाशुभम्।
आषाढ्यांपूर्ववातेचसर्वधान्यामहीभवेत् ॥१२०॥

"आषाढी पूर्णिमा"–को जिस समय सूर्य भगवान् अस्त होनेको चले गयेहों उस समय वर्षका शुभाशुभ जाननेको वायु परीक्षा करे। उस दिन यदि पूर्वकी पवन चले तो सम्पूर्ण धान्य पृथ्वीपर हो ॥ १२० ॥

आग्नेयवातेलोकाःस्युरुद्विग्नाश्चातिरोगतः।
दक्षिणेपवनेराज्ञांमहायुद्धंपरस्परम् ॥ १२१ ॥

आग्नेयकी वायु चले तो लोगोंमें उद्वेग तथा रोग बहुत हों। और दक्षिणकी पवन चले तो राजाओंमें परस्पर महायुद्ध हों ॥ १२१ ॥

नैर्ऋतेनिर्जलाभूमिर्धान्यसंग्रहकारणम्।
वारुणेप्रबलावृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ॥ १२२ ॥

नैर्ऋत्यकी पवन चले तो नीरका नाश हो और धान्य संग्रह करनेकी आवश्यकता हो। पश्चिमकी पवन चले तो बहुत जल वर्षे और उससे खेतियां बहुत उत्पन्न हों ॥ १२२ ॥

वायव्येमत्कुणात्पीडामशकाद्यास्तथेतयः ।
उत्तरेपवनेलोकागीतमंगलपूरिताः ॥ १२३ ॥

वायव्यकी पवन चले तो खटमल मच्छर आदि ईति हों। उत्तरकी चले तो लोकोंमें गीत मंगल बहुत हों ॥ १२३ ॥

धान्यंधनंतथेशानेसुखंधान्यसमर्घता ।
इत्याषाढीवातचक्रमाषाढेपवनशेखरम् ॥ १२४ ॥

और यदि आषाढी पूर्णिमाको ईशानकी पवन चले तो धन धान्यका सुख मिले और अन्न सस्ता बिके यह अषाढी वायुचक्र विचारणीय है ॥ १२४ ॥

गर्जतियदिवामेघोवातिचोत्तरःपवनः ।
क्षेमंतदानींभुविमेघमहोवयंकुर्यात् ॥ १२५ ॥

"विशेषफल"–जो आषाढी पूर्णिमाको मेघ गर्जे और उत्तरकी पवन चले तो शुभ होताहै ॥ १२५ ॥

अभ्रंविनाषाढपूर्णावातौपूर्वोत्तरौयदि ।
यत्रयामार्द्धकेतत्रमासेवृष्टिर्दिवाभवेत् ॥ १२६ ॥

यदि आषाढी पूर्णिमाको बादल न हों और पूर्व उत्तरकी पवन चले तो जिस यामार्द्धमें ऐसा हो उसी मासमें वर्षा हो (यामार्द्ध पहले कह आये हैं) ॥ १२६ ॥

भवेत्पूर्वोत्तरौवातौनचान्नंनापिवर्षणम् ।
आषाढ्यांतर्हिविज्ञेयंदुर्भिक्षंलोकदुःखदम् ॥ १२७ ॥

यदि आषाढीको पूर्वोत्तर वायु भिन्न रूपकी हो अर्थात् वेग पूर्वक कभी पूर्वकी कभी उत्तरकी हो और बादल न हों तो न तो अन्न हो और न वर्षा हो किन्तु लोकदुखदाई दुर्भिक्ष हो ॥ १२७ ॥

मार्गमासेसिताष्टम्यांपूर्वोवातःसुभिक्षकृत् ।
अन्यतःपवनःकुर्याद्दुर्भिक्षंभाविवत्सरे ॥ १२८ ॥

("श्रावण–भाद्रपद–आश्विन–और कार्तिक" की पवनका विचार ११० के श्लोकमें पहले होगया अब "मार्गशीर्ष" का विचार लिखते हैं ।)यदि मार्ग शुक्लाष्टमीको पूर्वकी पवन चले तो सुभिक्ष करती है । और और तरहकी चले तो दुर्भिक्ष करती है ॥ १२८ ॥

एकादश्यांपौषकृष्णेदक्षिणःपवनोयदा ।
विद्युद्वादलसंयुक्तस्तदादुर्भिक्षकारकः ॥ १२९ ॥

"पौष" कृष्ण एकादशीको दक्षिणकी पवन चले तो और बिजली बादल संयुक्त हों तो दुर्भिक्ष करती है ॥ १२९ ॥

पौषस्यशुक्लपंचम्यांतुपारःपवनोयदि ।
तदागर्भस्यपीडास्याद्भाविवर्षहितावहः ॥ १३० ॥

पौष शुक्ल पंचमीको पर्फकी पवन हो तो आगामी वर्षके हितमें गर्भ पीडा करती है ॥ १३० ॥

पंचम्यांव्योमखंडेपियदाचशीतलोऽनिलः ।
विद्युन्मेघसमायुक्तस्तदागर्भोदयोध्रुवम् ॥ १३१ ॥

उसी पंचमीको आकाशमें शीतल पवन चले और मेघ सहित बिजली चमके तो निश्चयही गर्भका उदय होता है ॥ १३१ ॥

माघेशुक्लप्रतिपदिवायुर्वादलसंयुतः ।
तैलादिसर्वसुरभीमहर्घंजायतेभुवि ॥ १३२ ॥

"माघ" शुक्ल प्रतिपदाको बादल सहित वायु चले तो तैलादि सब सुगन्ध पदार्थ महँगे हों ॥ १३२ ॥

माघस्यशुक्लपंचम्यांवृष्टियुक्तोत्तरानिलः ॥
अनावृष्टिर्भाद्रपदेकुर्याद्धान्यमहर्घता ॥ १३३ ॥

यदि माघ शुक्ल पंचमीको वृष्टि युक्त उत्तरकी पवन हो तो भादोंमें अनावृष्टि होकर अन्न महँगा हो ॥ १३३ ॥

शुक्लेमाघस्यसप्तम्यांवारुण्यांविद्युदभ्रयुक् ।
ऐन्द्रोवातोथकौबेरोदिवाविंशत्सुभिक्षकृत् ॥ १३४ ॥

माघ शुक्ल सप्तमीको पश्चिममें बादल तथा बिजली हो और पूर्व अथवा उत्तरकी पवन हो तो बीस दिनमें सुभिक्ष हो ॥ १३४ ॥

माघस्यनवमीकृष्णादशम्येकादशीतथा ।
सवाताविद्युतायुक्ताःकथयन्तिजलंबहु ॥ १३५ ॥

माघ कृष्ण नौमी दशमी एकादशीको वायु और बिजली हो तो बहुत जल होता है ॥ १३५ ॥

अमावास्यामहोरात्रंहिमोवातस्तुवृष्टिकृत् ।
पौर्णमास्यांभाद्रपदेकुर्यान्मेघमहोदयम् ॥ १३६ ॥

अमावास्याको दिन रातमें ठंढी पवन हो तो वर्षा करती है। और भाद्रपदकी पूर्णिमाको वर्षा करती है ॥ १३६ ॥

फाल्गुनेऽतिरवोवायुर्वातिपत्राणिपातयन् ।
दक्षिणोतिमृदुश्चैत्रेमेघगर्भहितायसः ॥ १३७ ॥

"फाल्गुन" में अत्यंत शब्द वाली वायु चलकर वृक्षोंके पात गिरादे। और दक्षिणकी कोमल पवन चले तो चैत्रके मेघके गर्भको हित होती है ॥ १३७ ॥

हुताशन्यादीप्तिकालेऐन्द्रःस्यादतिवृष्टये ।
औदीच्योधान्यनिष्पत्त्यैदुर्भिक्षंदक्षिणोनिलः १३८

"होलीकी हवा"—यदि फाल्गुनी पूर्णिमाको होलीके दीप्तिकाल (जल उठनेके समय) पूर्वकी पवन चले तो अतिवृष्टि होती है

उत्तरकी चले तो धान्य उपजाते हैं और दक्षिणकी चले तो दुर्भिक्ष होता है ॥ १३८ ॥

वारुणीमध्यमंवर्षमुच्चैर्वातोभयंकरः ।
चतुर्दिक्षुमहद्वातेराज्ञांयुद्धंप्रजाक्षयः ॥ १३९ ॥
इतिवर्षप्रबोधे उत्तरभागे प्रथमःस्थलः ।

पश्चिमकी वायु चले तो मध्यम वर्ष होता है । ऊंची हवा चले तो भय करती है। चौतर्फाकी हवा चले तो राजाओंमें युद्ध और प्रजाका क्षय होता है ॥ १३९ ॥

इति हनूमान शर्मा संग्रहीत-भाषाटीकासहित वर्षप्रबो-
धके उत्तरभागका प्रथमस्थल समाप्त ।

---

(१) अथ वृष्टिविचारमाह ।

अन्नंजगतःप्राणाःप्रावृट्कालस्यचान्नमायत्तम् ।
यस्मादतःपरीक्ष्यःप्रावृट्कालःप्रयत्नेन ॥ १ ॥

(१) "अब वर्षाका विचार" लिखते हैं । अन्नही जगत्का प्राण है और वही अन्न वर्षाके वशीभूत है अर्थात् वर्षा होनेहीसे अन्न होसकता है अत एव वर्षाकालकी यत्नसे परीक्षा करनी चाहिये ॥ १॥

दैवविदवहितचित्तोद्युनिशंयोगर्भलक्षणेभवति ।
तस्यमुनेरिववाणीनभवतिमिथ्याम्बुनिर्देशे ॥ २ ॥

जो दैवका जाननेवाला रात दिन गर्भके लक्षण जाननेमें मन लगाता है उसके वाक्य वर्षाके बतानेमें मुनियोंकी भाँति कभी झूँठ नहीं होते ॥ २ ॥

गर्भलक्षणम् ।

मार्गशिरःसितपक्षेप्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेषाढाम् ।
पूर्वांवासमुपगतेगर्भाणांलक्षणंज्ञेयम् ॥ ३ ॥

"गर्भलक्षण"–मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदासे जिस दिन चंद्रमा पूर्वाषाढ नक्षत्रमें आवे उस दिनसेही सब गर्भोंका लक्षण जान लेना चाहिये॥ ३॥

यन्नक्षत्रमुपगतेगर्भश्चन्द्रेभवेत्सचन्द्रवशात् ।
पञ्चनवतिदिनशतेतत्रैवप्रसवमायाति ॥ ४ ॥

चंद्रमाके जिस नक्षत्रमें प्राप्त होनेसे मेघका गर्भ होता है उसी नक्षत्रसे १९५ एकसौ पचानवे दिनमें वह गर्भ प्रसवकालको प्राप्त होता है अर्थात् मेंह वर्षता है ॥ ४ ॥

सितपक्षभवाःकृष्णेशुक्लेकृष्णाद्युसंभवारात्रौ ।
नक्तंप्रभवाश्चाहनिसन्ध्याजाताश्चसन्ध्यायाम्॥५॥

शुक्ल पक्षका पैदा हुआ गर्भ कृष्ण पक्षमें और कृष्ण पक्षका शुक्ल पक्षमें एवं दिनका गर्भ रातमें और रातका गर्भ दिनमें और प्रातःकालका सायंकालमें तथा सायंकाल का गर्भ प्रातःकालमें प्रसव होता है ॥५ ॥

क्रूरग्रहसंयुक्तेकर्काशनिमत्स्यवर्षदागर्भाः ।
शशिनिरवौवाशुभसंयुक्तेक्षितेभूरिवृष्टिकराः ॥ ६ ॥

यदि प्रसव कालके समय क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो उस गर्भसे ओले अशनि और मच्छी आदिकी वर्षा होती है और यदि चंद्र सूर्य शुभग्रहोंसे संयुक्त हों अथवा शुभनिरीक्षित हों तो अच्छी वर्षा होती है ॥ ६ ॥

करकाधूमरिकापातोरजोवृष्टिःसधूमिका ।
त्रिभिरेतैर्महोत्पातैःसद्योगर्भोविनश्यति ॥ ७ ॥

करक वृष्टि–धूम पात और सधूम रजोवृष्टि यह तीनों शीघ्र गर्भनाशक हैं ॥ ७ ॥

गर्भःपुष्टःप्रसवेग्रहोपघातादिभिर्यदिनवृष्टिः ।
आत्मीयगर्भसमयेकरकामिश्रंददात्यंभः ॥ ८ ॥

जो पुष्ट गर्भ भी प्रसव कालमें ग्रहोंके उपघातादिसे न वर्षे तौ आत्मीय गर्भके समय ओलोंसे मिला हुआ जल वर्षे ॥ ८ ॥

पञ्चनिमित्तैःशतयोजनंतदर्धार्धमेकहान्यातः ।
वर्षतिपञ्चसमन्ताद्रूपेणैवयोगर्भः ॥ ९ ॥

जो गर्भ पांच निमित्तोंसे पुष्ट होता है,वह सौ योजन तक फैलकर वर्षा करता है और यदि उसमें निमित्तोंकी न्यूनता हो तो पूर्ण वर्षामेंभी अर्द्धार्द्ध न्यूनता होती है । अर्थात् एक निमित्त कम हो तो ५० योजन (२०० कोश) दो कम हों तो २५ योजन (१०० कोश) तीन कम हों तो १२॥ योजन (५० कोश) और ४ निमित्त कम हों तो २० कोश तक जल वर्षता है ॥ ९ ॥

द्रोणःपञ्चनिमित्तेगर्भेत्रीण्याढकानिपवनेन ।
षड्विद्युतानवाभ्रैःस्तनितेनद्वादशप्रसवे ॥ १० ॥

"जलका तौल"–यदि गर्भमें पांच निमित्त (पवन १,जल २ बिजली ३ गर्जना ४ और बादल ५) हों तो प्रसव कालमें एक द्रोण (२०० पल)जल वर्षाता है । पवन निमित्तवाला गर्भ प्रसव तीन आढक (१५० पल) जल वर्षाता है । बिजली निमित्तक गर्भ छः आढक (३०० पल) जल वर्षाता है । मेघ निमित्तक नौ आढक (४५० पल) और गर्जन निमित्तक १२ आढक (६०० पल) जल वर्षाता है (एक पल, ३ तोले २ मासे ८॥ रत्तीका होता है। आकाशी जलकी तौल आजही नहीं हुई है । पहलेहीसे होती आरही है) ॥ १० ॥

मृगशीर्षाद्यागर्भामन्दफलाःपौषशुक्लजाताश्च ।
पौषस्यकृष्णपक्षेविनिर्दिशेच्छ्रावणस्यसितम् ॥ ११ ॥

मृगशीर्षादिके गर्भ और पौष शुक्लके पैदा हुए गर्भ मंद फल युक्त होते हैं । पौषके कृष्ण पक्षसे श्रावणका शुक्ल पक्ष बतलाना चाहिये ॥ ११ ॥

माघसितोत्थागर्भाःश्रावणकृष्णेप्रसूतिमायांति ।
माघस्यकृष्णपक्षेविनिर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम् ॥ १२ ॥
माघके शुक्लपक्षका गर्भ श्रावणके कृष्णपक्षमें वर्षता है और माघके कृष्ण पक्षसे भाद्रपद शुक्लका ज्ञान होता है ॥ १२ ॥

फाल्गुनशुक्लसमुत्थाभाद्रपदस्यासितेविनिर्देश्याः ।
तस्यैवकृष्णपक्षोद्भवास्तुयेतेऽश्वयुक्शुक्ले ॥ १३ ॥
फाल्गुन शुक्लमें उठे हुए गर्भ, भाद्रपद कृष्णमें वर्षते हैं। और फाल्गुन कृष्णमें उत्पन्न हुए गर्भ आश्विन शुक्लमें प्रसव होते हैं॥१३॥

चैत्रसितपक्षजाताःकृष्णेश्वयुजश्ववारिदागर्भाः ।
चैत्रासितसंभूताःकार्तिकशुक्लेभिवर्षन्ति ॥ १४ ॥
चैत्र शुक्लके गर्भ आश्विन कृष्णमें और चैत्र कृष्णके कार्तिक शुक्लमें वर्षते हैं ॥ १४ ॥

मार्गशीर्षेकृष्णपक्षेमघायांगर्भसंभवे ।
यद्वाकृष्णचतुर्दश्यांसविद्युन्मेघदर्शने ॥ १५ ॥
आषाढेशुक्लपक्षेचचतुर्थ्यांवर्षतिध्रुवम् ।
मार्गकृष्णचतुर्थ्यादित्रयेऽश्लेषात्रयीक्रमात् ॥१६॥
गर्भितेष्वेषुऋक्षेषुमार्गेकृष्णफलंभवेत् ।
आषाढेपूर्वफाल्गुन्यांत्रिरात्रंवृष्टिसंभवः ॥ १७ ॥
मार्गशीर्ष कृष्णमें मघामें या १४ में गर्भ हो और बिजली सहित बादल दीखे तो आषाढ शुक्ल चतुर्थीको निश्चय वर्षा होती है। मार्गशीर्ष कृष्ण चौथ, पांचै,छठको वा श्लेषा, मघा,पूफाको गर्भ तो मार्ग कृष्णमें फल मिलता है। उससे आषाढमें पूर्वाफाल्गुनीसे तीन रात वर्षा होती है ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

उत्तराहस्तचित्राचसप्तम्यादित्रयेयदा ।
मार्गशीर्षेगर्भताचेदभ्रैर्वातैश्चविद्युतः ॥ १८ ॥
आषाढेश्वेतपक्षेतुअष्टम्यांस्वातिभेतदा ।
त्रिरात्रंमेघवृष्ट्यास्याज्जलैरेकार्णवामही ॥ १९ ॥

मार्गशीर्षमें ७।८।९ को उ. ह. चि. होकर बादल बिजली और वायुसे गर्भ तो आषाढ शुक्ल अष्टमीसे अथवा स्वातिसे तीन रात तक इतना जल वर्षे कि पृथ्वीपर एकार्णव होजाय ॥ १८ ॥ १९ ॥

दशम्यादित्रयेमार्गेकृष्णेचामावसीतिथौ ।
चित्रास्वातिविशाखासुसंजातेगर्भलक्षणे ॥ २० ॥
आषाढेशुक्लपक्षान्तस्तिथौतस्यांघनोदयः ।
तस्मिन्नेवचनक्षत्रेजायतेनात्रसंशयः ॥ २१ ॥

मार्ग कृष्ण १०।११।१२ अथवा ३० तिथि और चित्रा स्वाति विशाखामें गर्भ तो आषाढ शुक्लकी उन्हीं तिथियोंमें और उन्हीं नक्षत्रोंमें मेघ होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २० ॥ २१ ॥

चैत्रेकृष्णद्वितीयायांनिरभ्रंचेन्नभोभवेत् ।
तदाभाद्रपदेमासेज्ञेयोमेघमहोदयः ॥ २२ ॥

(२) "गर्भ तथा वर्षाकारक अन्ययोग"—चैत्र कृष्ण दोयज को आकाशमें बादल न हों तो भादवेमें मेघमहोदय जानना ॥ २२ ॥

चैत्रकृष्णद्वितीयायांमेघोवैप्रबलोयदा ।
जलंपततिचैत्रेचतदावृष्टिस्तुकार्तिके ॥ २३ ॥

चैत्र कृष्ण द्वितीयाको प्रबल बादल हों तो कार्तिकमें अच्छी वर्षा होती है ॥ २३ ॥

चतुर्थ्यांकृष्णपक्षस्यवर्षादौर्भिक्ष्यकारिणी ।
पंचम्यामसितेचैत्रेनृणांतद्वार्दिनःशुभः ॥ २४ ॥

कृष्णपक्षकी ४ को वर्षा हो तो दुर्भिक्ष हो और पंचमीको दुर्दिन हो तो शुभ है ॥ २४ ॥

चैत्रस्यकृष्णपंचम्यांहस्तनक्षत्रसंगमे ।
नविद्युद्गर्जिताभ्राणितदास्याद्वत्सरःशुभः ॥ २५ ॥

चैत्र कृष्ण पंचमीको हस्त हो और बादल बिजली गर्जन न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥ २५ ॥

त्रयोदशीचनवमीपंचमीकृष्णचैत्रगाः ।
एतास्तुविद्युतोगर्भसंभवोवृष्टिहानिकृत् ॥ २६ ॥

चैत्र कृष्णकी तेरस, नौमी, पंचमीको बिजली का गर्भ वृष्टिकी हानि कर्ता है ॥ २६ ॥

चैत्रस्यकृष्णसप्तम्यामभ्रच्छन्नंयदानभः ।
रक्तवस्तुसमर्घत्वंभवत्येवनसंशयः ॥ २७ ॥

चैत्रकृष्ण सप्तमीको आकाश बादलोंसे घिरा हुआ हो तो लाल वस्तुयें बहुत हों ॥ २७ ॥

प्रतिपच्चैत्रशुक्लायांद्वितीया वा तृतीयका ।
चतुर्थीवृष्टियुक्ताचेच्चातुर्मास्यंतदाघनः ॥ २८ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे चार दिन तक वर्षा हो तो चौमासा अच्छा हो॥२८

चैत्राद्यप्रतिपन्मेघःगर्जितंवर्षणंतथा ।
श्रावणे भाद्रमासेचतदावृष्टिर्नजायते ॥ २९ ॥

चैत्र कृष्ण प्रतिपदाको मेघ गर्जे तथा वर्षे तो श्रावण भादोंमें वर्षा नहीं हो ॥ २९ ॥

पंचमीसप्तमीशुक्लाचैत्रीयाचत्रयोदशी ।
एतासुबादलंश्रेष्ठंतत्रवर्षाद्दुःखकृत् ॥ ३० ॥

चैत्र शुक्ल ५।७।१३ में बादल अच्छे और वर्षा नेष्ट है ॥ ३० ॥

चैत्रेमासेकृष्णपक्षेचतुर्दशीतथाष्टमी ।
तत्राभ्रमुत्तरोवायुःशुभायवत्सरेभवेत् ॥ ३१ ॥

चैत्र कृष्ण १४ या ८ को बादल तथा उत्तरकी वायु हो तो वर्षा अच्छा होता है ॥ ३१ ॥

चैत्रस्यशुक्लपक्षेतुत्रयोदश्यांरजोनिलः ।
अथवाधूमरीपातोमेघस्तत्रनवर्षति ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल १३ को धूलियुक्त पवन हो अथवा धूमरी पात हो तो मेघ नहीं वर्षे ॥ ३२ ॥

चैत्रेदशम्यांशनिनामघायोगेयदाम्बुदः ।
वर्षेत्तदासर्ववर्षेधान्यस्यार्थोनजायते ॥ ३३ ॥

चैत्र शुक्लदशमीको शनिवार मघा नक्षत्र हो और वर्षा हो तो उस वर्षभरमें धान्यकी उत्पत्ति अच्छी नहीं हो ॥ ३३ ॥

वैशाखकृष्णप्रतिपद्युद्गच्छेन्नभभास्करः ।
मेघैराच्छाद्यतेव्योम्निसंवत्सरहितायसः ॥ ३४ ॥

यदि वैशाख कृष्ण १ को मेघाच्छादित सूर्य ऊगे तो संवत्सर का हित हो ॥ ३४ ॥

शुक्लेकृष्णेचवैशाखेचतुर्दश्यष्टमीदिने ।
गर्जविद्युत्पयोवर्षावर्षानंदविधायकाः ॥ ३५ ॥

वैशाख शुक्ल या कृष्णकी चौदस आठेको गाजे-बिजली हो और वर्षे तो आनंद हो ॥ ३५ ॥

वैशाखकृष्णेकादश्यांमेघोवैप्रवलोभवेत् ।
तदाधान्यानिविक्रेयःकर्तव्यःकृपिकर्मणि ॥ ३६ ॥

वैशाख कृष्ण ११ को प्रबल मेघ हो तो खेती बोनेके लिये धान्य बेचदेना चाहिये ॥ ३६ ॥

वैशाखशुक्लप्रतिपद्द्वितीयादिनद्वयेबादलकंशुभाय।
तदातृतीयादिवसेपिचाभ्रंवृष्टिर्विशिष्टापरमंगरोगः॥३७
वैशाख शुक्ल १।२।३ में बादल हों तो वर्षा विशेष हो परंतु अंग रोग हो॥ ३७॥

वैशाखशुक्लदशमीदिनेचबादलंशुभम्।
राधेश्विनीदिनेषष्ठ्यांरक्तवस्तुमहर्घता॥ ३८॥
वैशाख शुक्ल १० को बादल शुभ होते हैं, वैशाखकी छठको अश्विनी हो तो लाल वस्तु महँगी हों॥ ३८॥

(वैशाखसितपंचम्यांमेघबादलसंभवः।
संग्रहस्सर्वधान्यानांलाभोभाद्रपदेभवेत्॥ ३८॥
वैशाख शुक्ल५को मेघ बादल हों तो भादवेमें वर्षा नहीं हो॥३८॥)

राधेशुक्लप्रतिपदिसप्तम्यादिदिनत्रये।
बादलानांसमुदयेशीघ्रंवृष्टिंविनिर्दिशेत्॥ ३९॥
वैशाख शुक्ल १।७।८।९ को बादल होनेसे शीघ्र वर्षा हो॥ ३९॥

एकादशीत्रयेशुक्लेदुर्भिक्षंवृष्टिबादलात्।
राधेचपूर्णिमावृष्टिर्भाद्रेधान्यमहर्घकृत्॥ ४०॥
एकादशी आदि ३ दिनोंमें बादल वा वृष्टिसे दुर्भिक्ष होता है और पूर्णिमाको वर्षा होनेसे भादवेमें खैंच होती है॥४०॥

पंचम्यामथसप्तम्यांनवम्येकादशीदिने।
त्रयोदश्यांचवैशाखेवृष्टौलोकेसुखंभवेत्॥ ४१॥
वैशाखकी५।७।९।११।१३को वर्षा हो तो लोकमें सुख हो॥४१॥

अष्टम्यांचचतुर्दश्यांज्येष्ठशुक्लेतथासिते।
कृष्णेदशम्यांवृष्टिःस्याद्भाद्रमासेतिवृष्टये॥ ४२॥

ज्येष्ठ शुक्ल १४ । ८ तथा कृष्ण १०को वर्षा हो तो भादवेमें अति वृष्टि हो ॥ ४२ ॥

ज्येष्ठस्यदशमीरात्रौयदिचन्द्रोनदृश्यते ।
वर्षणंजायतेश्रेष्ठंस्वस्थासर्वामहीभवेत् ॥ ४३ ॥

जेठकी शुक्ल दशमीकी रातमें यदि चन्द्रमा न दीखे तो वर्षा अच्छी हो ॥ ४३ ॥

ज्येष्ठस्यकृष्णेकादश्यांद्वादश्यांवाब्दगर्जितम् ।
विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद्वत्सरःस्यात्तदाशुभम् ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठकृष्ण ११। १२को मेघ गर्जे बिजली चमके और जल गिरे तो वर्ष शुभ होता है ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठाषाढसमुद्भूतेरोहिणीदिवसेनभः ।
साभ्रंवृष्टिविनाशायसमेघंवृष्टिवर्द्धनम् ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठ आषाढमें रोहिणीके दिन बादल हों तो वर्षाका नाश हो और वर्षा हो तो वृद्धि हो ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठेमूलदिनेवृष्टिर्ज्येष्ठान्तेदिवसद्वये ।
दुर्भिक्षंकुरुतेश्रेष्ठाविद्युत्पांसुयुतानिलाः ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठके अंतके दो दिनोंमें ज्येष्ठा और मूलमें वर्षा हो तो दुर्भिक्ष हो और आंधी तथा बिजली हो तो श्रेष्ठ हो ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठमासेतथाषाढेयत्रतत्राब्दवर्षणम् ।
श्रावणेभाद्रमासेवातद्दिनेवृष्टिनिर्णयः ॥ ४७ ॥

ज्येष्ठ तथा आषाढमें जहां कहीं वर्षा हो तो श्रावण भादवेमें भी उस दिन वर्षा हो ॥ ४७ ॥

ज्येष्ठेशुक्लद्वितीयायांगर्भपातायगर्जितम् ।
शुक्लेतृतीयार्द्रायोगेवृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शनी ॥ ४८ ॥

ज्येष्ठ सुदी २ को गर्जे तो गर्भ पात हो तीजको आर्द्रा हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ४८ ॥

यदिज्येष्ठस्यपंचम्यांवृषार्केवृष्टिरुद्भवेत् ।
पूर्वाषाढादिनेवास्यान्मूलदृष्टंनदोषकृत् ॥ ४९ ॥

यदि ज्येष्ठकी ५ को वृष संक्रांतिमें वृष्टि हो या पूर्वाषाढ तथा मूलके दिन वर्षा हो तो ठीक है ॥ ४९ ॥

ज्येष्ठस्यपूर्णिमायांतुमूलंप्रस्रवतेयदा ।
दिनषष्टिंव्यतिक्रम्यज्ञेयोमेघमहोदयः ॥ ५० ॥

ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमाको मेघ वर्षे तो ६० दिन पीछे अच्छी वर्षा हो ॥ ५० ॥

यदाश्रुतिधनिष्ठाहेनभवेज्जलवर्षणम् ।
ज्येष्ठानुज्ज्वलपक्षेतुनक्षत्रश्रवणादिके ॥ ५१ ॥

जो श्रवण धनिष्ठामें न वर्षे और ज्येष्ठ कृष्णमें श्रवणादिमें न वर्षे तो ॥ ५१ ॥

अवर्षणेनवर्षास्याद्वृष्टौतुविपुलंजलम् ।
चित्रास्वातिविशाखासुवादलंचतदाशुभम् ॥५२॥

अवर्षणसे वर्षा हो और वर्षनेसे बहुत जल हो उस समय चि. स्वा. वि. में बादल शुभ होते हैं ॥ ५२ ॥

कृष्णाषाढचतुर्थ्यांचमेघैराच्छादितोरविः ।
मासत्रयव्यतीतेचतदामेघमहोदयः ॥ ५३ ॥

आषाढ कृष्ण चौथको सूर्य बादलोंसे ढका हुआ हो तो तीन मास पीछे वर्षा हो ॥ ५३ ॥

आषाढकृष्णतुर्यायामस्तेभास्करमण्डले ।
नवर्षतियदामेघस्तदाकष्टतरंजलम् ॥ ५४ ॥

आषाढ कृष्ण चौथको सूर्यास्तके समय मेह न वर्षे तो जलका कष्ट हो ॥ ५४ ॥

आषाढेकृष्णपक्षस्याष्टम्यांचन्द्रोदयक्षणे ।
मेघैराच्छादितंव्योमनीरपूर्णातदामही ॥ ५५ ॥

आपाढ कृष्णाष्टमीको चन्द्रोदयके समय आकाशमें बहुत बादल हो तो वर्षा बहुत हो ॥ ५५ ॥

आषाढेनवमीकृष्णाविद्युदम्भोदशेखरे ।
विक्रयःसर्वधान्यानांकर्षणेवैहितायच ॥ ५६ ॥

आषाढ कृष्ण नौमीको बादल बिजली हों तो खेतीके निमित्त सब धान्य बेंच देने चाहिये ॥ ५६ ॥

आषाढकृष्णपक्षेचधनिष्ठाश्रवणंतथा ।
गर्जविद्युद्विहीनंस्याद्देशभंगस्तदादिशेत् ॥ ५७ ॥

आषाढ बदीमें श्रवण, धनिष्ठामें बिना बिजलीके गर्जे तो देश भंग हो ॥ ५७ ॥

आषाढमासेरोहिण्यांविद्युद्वर्षाशुभायसा ।
स्वातियोगेपिचाषाढेतथैवफलमिष्यते ॥ ५८ ॥

आषाढकी रोहिणीमें बिजली वर्षा शुभ हैं । स्वातिमें भी यही फल है ॥ ५८ ॥

आषाढशुक्लप्रतिपत्त्र्येवर्षायदाभवेत् ।
एकोद्वादश च द्रोणःषोडशापिक्रमाज्जलम् ॥ ५९॥

आषाढ सुदी एकै-दोयज, तीजको वर्षा हो तो उससे क्रमसे एक, बारह, सोलह द्रोण जल वर्षे ॥ ५९ ॥

आषाढेशुक्लपंचम्यादिकेतिथिचतुष्टये ।
यावन्त्यभ्राणिवर्षारुतावन्मेघमहोदयः ॥ ६० ॥

आषाढ सुदी ५ से चार दिनोंमें जितने बादल वर्षा हों उतनाही अधिक मेघ जानना ॥ ६० ॥

शुक्लाषाढनवम्यांचदशम्यांवर्षणंशुभम् ।
दुर्भिक्षंजायतेनूनंवातेवृष्टिविनाकृते ॥ ६१ ॥

आषाढ शुक्ल ९ । १० को वर्षा हो तो शुभ हो और विना वर्षा पवन चले तो दुर्भिक्ष करे ॥ ६१ ॥

आषाढस्याप्यमावस्यांनवम्यांशुक्लकृष्णयोः ।
उद्गच्छेच्चसहस्रांशुर्निर्मलोयदिदृश्यते ॥ ६२ ॥

आषाढी अमावस तथा शुक्ल कृष्णकी नौमीको उगता हुआ सूर्य निर्मल हो ॥ ६२ ॥

मध्याह्नेवृष्टिरूपंस्यात्सूर्यस्यास्तंगमेतथा ।
अग्रेतोयंनपश्यामिवर्जयित्वामहानदीः ॥ ६३ ॥

और मध्याहमें तथा सूर्यास्त समयमें वृष्टिका रूपक हो तो आगे जल नहीं गिरे बडी नदियां भी सूख जांय ॥ ६३ ॥

चतुर्थ्यांतुसिताषाढेविद्युद्वर्षाश्चगर्जितम् ।
तदाजलंसमुद्रेस्यात्पुस्तकेवाप्रदृश्यते ॥ ६४ ॥

आषाढ शुक्ल चौथको बिजली वर्षा गर्जन हो तो जल समुद्रमें दीखे या पुस्तकोंमें ॥ ६४ ॥

आषाढ्यांप्रथमेयामेबादलेनसुभिक्षता ।
मासमेकंजलंधान्यंरतोकंलोकमहाभयम् ॥ ६५ ॥

आषाढीको पहली पहरमें बादल हो तो सुभिक्ष नहीं हो, केवल एक मास मात्र जल धान्य हो राजभय भी हो ॥ ६५ ॥

श्रावणस्यादिमेपक्षेअश्विन्यांमेघवृष्टितः ।
सर्वान्दोषान्निहंत्येवसुभिक्षंप्रविजायते ॥ ६६ ॥

श्रावण कृष्णमें अश्विनीमें वर्षा हो तो सब दोषोंको दूर करके सुभिक्ष करती है ॥ ६६ ॥

श्रावणेविपुलाविद्युद्गर्जितंचपुनर्घने ।
वृष्टिस्तदामनोभीष्टाकुरुतेवत्सरंशुभम् ॥ ६७ ॥

श्रावणमें बहुत बिजलियाँ हों और मेघ गर्जना हो तो उस वर्षमें मनोभीष्ट वर्षा होती है ॥ ६७ ॥

श्रावणेकृष्णपक्षेचेच्चतुर्थ्यामरुणोदये ।
वादलंवृष्टिरनिशंसर्वत्रसुखवृष्टिकृत् ॥ ६८ ॥

श्रावण कृष्ण चौथको प्रातःकाल सूर्योदयके समयसे बादल वर्षा दिनभर रहे तो सर्वत्र सुवृष्टि हो ॥ ६८ ॥

श्रावणेकृष्णपंचम्यांनिर्मलंगगनंशुभम् ।
तदाष्टादशयामान्तेघनस्तोयंव्यपोहति ॥ ६९ ॥

श्रावणकृष्ण पञ्चमीको आकाश निर्मल हो तो अठारह पहरके बाद जल वर्षे ॥ ६९ ॥

अमावास्यांश्रावणस्ययदिवृष्टिर्घनाघनः ।
चराचरंतदाविश्वंसुखभाक्चचलाचलम् ॥ ७० ॥

श्रावणकी अमावसको यदि वर्षा तथा घने बादल हों तो चला-चलके चराचरको सुख हो ॥ ७० ॥

चित्रास्वातिविशाखासुश्रावणेनजलंयदा ।
तदाकुल्यादिकंकृत्वानदीतीरेगृहंकुरु ॥ ७१ ॥

श्रावणके चित्रा स्वाति विशाखामें यदि जल न वर्षे तो कुले करनें मात्रके लिये भी नदी किनारे घर बांधना चाहिये ॥ ७१ ॥

नभःप्रथमपंचम्यांयदिवृष्टःपयोधरः ।
तदाभूश्चतुरोमासान्भवेद्धारसमाकुला ॥ ७२ ॥

श्रावणकी कृष्ण पञ्चमीको यदि वर्षा हो तो चारों महीनोंमें जल वर्षे ॥ ७२ ॥

श्रावणेशुक्लसप्तम्यामस्तंयातेदिवाकरे ।
नवर्षतियदामेघोजलाशांमुंचसर्वथा ॥ ७३ ॥

श्रावण शुक्ल सप्तमीको सूर्यास्तके समय मेह न वर्षे तो फिर सर्वथा जलकी आशा छोड़देना ॥ ७३ ॥

अष्टम्यांश्रावणेशुक्लेप्रातर्वादलडम्बरम् ।
रविराच्छादितस्तेनपृथिव्येकार्णवाभवेत् ॥ ७४ ॥

श्रावण शुक्ल अष्टमीको प्रातःकाल बादलोंका आडंबर हो तो संपूर्ण पृथ्वी जलमयी हो ॥ ७४ ॥

मेघैराच्छादितश्चन्द्रःपूर्णायांसमुदीरते ।
तदास्वस्थंजगत्सर्वंराज्यसौख्यंघनोमहान् ॥७५॥

श्रावणी पूर्णिमाको चंद्रमा मेघोंसे ढँका हुआ हो तो सब जगत् स्वस्थ रहे और राज्यमें घना सुख हो ॥ ७५ ॥

श्रावणेकृष्णपक्षेवापूर्वाभाद्रपदासुच ।
चतुर्थ्यांमेघवृष्टिश्चतदामेघमहोदयः ॥ ७६ ॥

श्रावण कृष्णमें पूर्वाभाद्रपदमें चौथमें मेघ वर्षे तो जल अच्छा वर्षे ॥ ७६ ॥

शुक्लाचतुर्दशीपूर्णाचतुर्थीपंचमीतथा ।
सप्तमीचेच्छ्रावणस्यवृष्टियुक्ताशुभंतदा ॥ ७७ ॥

श्रावण शुक्ल १४।१०।४।५।७ को वर्षा हो तो शुभ है ॥ ७७ ॥

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।
प्रजानंदःसुखंराज्येवहुभोगान्वितामही ॥ ७८ ॥

श्रावण शुक्ल ७ को स्वाति योगमें जल वर्षे तो प्रजामें आनंद सौख्य हो और पृथ्वी बहुत भोगोंसे युक्त हो ॥ ७८ ॥

एकादश्यांनभःकृष्णेयदिवर्षामनागपि ।
तदावर्षंशुभंभाविजायतेनात्रसंशयः ॥ ७९ ॥

श्रावण कृष्ण ११ को वर्षा हो तो आगामी वर्ष शुभ होता है७९

नभश्चतुर्दशीराकाचतुर्थीपंचमीतथा ।
सप्तमीवृष्टियुक्ताचेद्वर्षंशुभंनचान्यथा ॥ ८० ॥

श्रावणकी १४।१५।४।५।७ वृष्टि युक्त हों तो निःसन्देह वर्षा अच्छा हो इसमें झूंठ नहीं ॥ ८० ॥

भाद्रमासेद्वितीयायांयदिचन्द्रोनदृश्यते ।
तदासंपूर्णवर्षास्यादन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥ ८१ ॥

भाद्रपदकी शुक्ल दोयजको यदि चन्द्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण वर्षा होकर अच्छी खेतियां हों ॥ ८१ ॥

भाद्रेचशुक्लपंचम्यांजलंदत्तेनचेद्घनः ।
दैवकोपात्तदाज्ञेयोसज्जनोपिचदुर्जनः ॥ ८२ ॥

भाद्रपद शुक्ल पंचमीको बादल वर्षा न करें तो ईश्वरका कोप समझना । ऐसा अकाल पड़े कि सज्जनभी दुर्जन हो जाँय ॥ ८२॥

सप्तम्यांभाद्रमासस्यनवर्षानचगर्जितम् ।
विद्युद्वियोननेनैवदैवकालस्यनाशकः ॥ ८३ ॥

भाद्रपदकी सप्तमीको न वर्षा हो न गर्जे और न बिजली चमके तो देवकाल घातक होता है ॥ ८३ ॥

नवम्यांभाद्रमासस्यवृष्टिर्दुष्कालमादिशेत
एकादश्यांतुतस्यैवघनोधान्यसमर्घदः ॥ ८४ ॥

भादवेकी नौमीकी वृष्टि दुष्काल करती है । और एकादशीकी अन्न समर्घ करती है ॥ ८४ ॥

सिंहार्कदिवसेवृष्टिर्नशुभायनृणांस्मृता ।
दैवाज्जातेघनेपश्चाद्वृष्टिर्दिनद्वयान्तरे ॥ ८५ ॥
सिंह संक्रांतिके दिन वर्षा शुभ नहीं होती है। यदि उससे दो दिन पीछे हो तो ॥ ८५ ॥

तदातद्दूषणंनास्तिमासमेकंप्रवर्षति ।
भाद्रेचतुर्दशीवृष्टिर्जनेरोगायजायते ॥ ८६ ॥
उसका दूषण दूर होकर एक मास वर्षता है। और भादवेकी चौदशकी वर्षासे रोग होता है ॥ ८६ ॥

आश्विनस्यचतुर्थ्यांचेद्वादलान्यरुणोदये ।
तदाक्षेमायलोकानांवृष्टिःसंजायते शुभा ॥ ८७ ॥
आश्विनकी चौथको सूर्योदयमें बादल हों तो लोकमें क्षेम तथा शुभ वर्षा हो ॥ ८७ ॥

आश्विनस्यसितेपक्षेदशम्यांयदिवादलम् ।
विद्युद्वाथवामापतिलानांवैमहर्घता ॥ ८८ ॥
आश्विन शुक्ल दशमीको यदि बादल हों या बिजली वर्षा हो तो उड़द और तिल महँगे हों ॥ ८८ ॥

सप्तम्याश्वयुजिमासेसितेऽष्टमीजलान्विता ।
सुभिक्षंतत्रचादेश्यंराजानःशांतविग्रहाः ॥ ८९ ॥
आश्विन शुक्ल ७।८ जल युक्त हों तो सुभिक्ष होता है और राजा लोग विग्रहसे शांत होते हैं ॥ ८९ ॥

एकादश्यांकार्त्तिकस्ययदिमेघःसमीक्ष्यते ।
आषाढेत्रतदावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ॥ ९० ॥
कार्त्तिककी एकादशीको यदि बादल दीखें तो आषाढमें निश्चय वर्षा होती है ॥ ९० ॥

द्वितीयायांतृतीयायांकार्त्तिकेवृष्टिलक्षणम् ।
भाविवर्षेबहुजलंनचेत्तस्मिन्नवर्षणम् ॥ ९१ ॥

कार्त्तिककी २।३ को वर्षाका लक्षण हो तो अगले वर्षमें बहुत जल वर्षे अवर्षण नहीं हो ॥ ९१ ॥

द्वादश्यांकार्तिकेरात्रौमार्गस्यदशमीदिने ।
पंचम्यांपौषमासस्यसप्तम्यांमाघमासके ॥ ९२ ॥
धाराधरोयदावृष्टिंकुरुतेवासुगर्जितम् ।
तदाचश्रावणेमासेसलिलंनैवदृश्यते ॥ ९३ ॥

कार्तिककी बारसकी रात मगशिरकी दशमीका दिन पौषकी पाँचैं और माघकी सातैंको बादलोंसे वर्षा हो और मेघ गर्जे तो श्रावणमें जल बिलकुल नहीं वर्षे ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

कार्त्तिकेचद्वितीयायांतृतीयानवमीदिने ।
एकादश्यांत्रयोदश्यामभ्राद्वृष्टिर्घनोमहान् ॥ ९४॥

कार्त्तिककी २।३।९।११।१३ को बादल होकर वर्षा हो तो वर्षा बहुत हो ॥ ९४ ॥

कार्त्तिकेयदिसंक्रान्तेःपर्यन्तेदिवसद्वये ।
महावृष्टिस्तदावर्षेशुभाभाविनिवत्सरे ॥ ९५ ॥

कार्तिककी संक्रांति पर्यन्तके दो दिनोंमें महावर्षा हो वो भावी वर्षे शुभ हो ॥ ९५ ॥

मार्गशीर्षप्रतिपदिनविद्युन्नैवगर्जितम् ।
नवृष्टिश्चेत्तदागर्भेकुशलंकुशलोदितम् ॥ ९६॥

मार्गशीर्षकी प्रतिपदाको न बिजली हो न गर्जना हो न वर्षा हो तो गर्भमें कुशल जानना ॥ ९६ ॥

चतुर्थ्यामथपंचम्यांमार्गशीर्षस्यवादलम् ।
तदाभाविनिवर्षेस्याद्वर्षापूर्णामहीतले ॥ ९७ ॥
मगशिरकी ४ या ५ को बादल हों, तो भावी वर्षमें पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥ ९७ ॥

मार्गशीर्षस्यसप्तम्यांनिर्मलंचेद्दिवानिशम् ।
धान्यंमहर्घंवैशाखेसाभ्रतायांमहर्घता ॥ ९८ ॥
मगशिरकी सातैंको दिन रात आकाश निर्मल रहे तो वैशाखमें धान्य महँगा हो ॥ ९८ ॥

मार्गस्यशुक्लद्वादश्याममायामथवर्षणम् ।
तदावर्षंशुभंभाविभावनीयंसुभावनैः ॥ ९९ ॥
मार्ग शुक्ल दशमी अथवा अमावसको वर्षे तो भावी वर्षकी भावना शुभ हो ॥ ९९ ॥

पौषेकृष्णदशम्यांचेद्रात्रौवर्षतिवारिदः ।
तदाभाद्रपदेमासिवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ १०० ॥
पौष कृष्ण दशमीकी रातमें जल वर्षा हो तो भादवेमें बहुत वर्षा हो ॥ १०० ॥

पौषेविद्युच्चमत्कारोगर्जिताभ्रादिसंभवः ।
जानीयान्निश्चितंतेनजगत्यांमेघदोहदः ॥ १०१ ॥
पौषमें बिजली चमके मेघ गर्जे बादल हों तो जगत्में निश्चय मेघका दोहद (गर्भरहा) जानना ॥ १०१ ॥

वृष्टेमेघेपौषषष्ठ्यांभाद्रेकृष्णेघनोदये ।
पौषशुक्लेमेघवृष्टौश्रावणेस्याच्चवर्षणम् ॥ १०२ ॥
पौषकी छठको मेघ वर्षे तो भादवावदीमें मेघ हो । पौष शुक्लमें मेघ वर्षे तो श्रावणमें वर्षा हो ॥ १०२ ॥

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्केविद्युच्चगर्जितम्।
तदामेघस्यगर्भःस्यादचलेसुखसंपदे ॥ १०३ ॥
पौष शुक्ल ७।८।९ को,बिजली तथा गर्जना हो तो मेघके अ-ल गर्भ रहा जानना ॥ १०३ ॥

एकादश्यांतथाषष्ठ्यांपूर्णायांदर्शकेथवा।
नवृष्टिःस्यात्तदाषाढेघनप्रोक्तोघनाघनः ॥ १०४ ॥
पौषकी ११।६ या पूर्णिमा अमाको वर्षा न हो तो आषाढमें घनसे घनी वर्षा हो ॥ १०४ ॥

पौषमासेश्वेतपक्षेऋक्षंशतभिषग्यदा।
वाताभ्रविद्युत्पंचम्यांगर्भश्चैवप्रजायते ॥ १०५ ॥
पौष शुक्ल पंचमी शतभिषामें यदि वायु बादल बिजली हो तो गर्भ होता है ॥ १०५ ॥

सचाषाढेकृष्णपक्षेचतुर्थ्यांवर्षतिध्रुवम्।
द्रोणसंज्ञस्तत्रमेघःसप्तरात्रंप्रवर्षति ॥ १०६ ॥
उससे आषाढ कृष्ण,चौथको निश्चय वर्षा होती है। और वह द्रोण मेघ सात रात वर्षता है ॥ १०६ ॥

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्लपौष्णदिनत्रयम्।
विद्युत्तुषारवाताभ्रैर्हिमैर्गर्भसमुद्भवः ॥ १०७ ॥
पौष शुक्ल ७।८।९ को रेवती आश्विनी भरणीमें बिजली बर्फ वायु हो तो ठंढमेंभी गर्भ रहे ॥ १०७ ॥

एकादशीपौषशुक्लेसहिमाविद्युतायुता।
सजलारोहिणीयोगाच्छुभादेश्याविचक्षणैः॥१०८॥
पौष शुक्ल एकादशी हिम सहित बिजली युक्त हो और रोहिणी सजल हो तो शुभ योग होता है ॥ १०८ ॥

पौर्णमासीद्वितीयाचविद्युतावाहिमान्विता ।
वर्षानिष्पत्तिरादेश्यामेघैश्छन्नैस्तथाम्बरे ॥१०९॥

पौषी पूर्णिमा या द्वितीयाको हिम युक्त बिजली हो और बादलोंसे आकाश ढका हो तो वर्षा उत्पन्न होती है ॥ १०९ ॥

आषाढस्यत्वमावास्यांप्रबलंजलमादिशेत् ।
निष्पत्तिःसर्वधान्यानांप्रजानांनिरुपद्रवः ॥ ११० ॥

आषाढकी अमावसको प्रबल जल गिरता है और सब धान्योंकी उत्पत्ति एवं निरुपद्रव होता है ॥ ११० ॥

पौर्णमास्यांयदापौषेचन्द्रमानैवदृश्यते ।
उत्तरस्यांदक्षिणस्यांयदाविद्युत्प्रदर्शनम् ॥ १११ ॥

पौषकी पूर्णिमाको यदि चन्द्रमा न दीखे और उत्तर दक्षिणमें बिजली दीखे ॥ १११ ॥

अभ्रच्छन्नंनभोवापिमहावृष्टिन्तदादिशेत् ।
अमावास्यांश्रावणस्यनूनंभाविनिवत्सरे ॥११२ ॥

और आकाश मेघाच्छन्नभी हो तो श्रावणी अमावसको महा वर्षा हो ॥ ११२॥

पौषस्यकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंजायतेनात्रसंशयः ॥ ११३ ॥

पौष कृष्ण सप्तमी स्वाति योगमें जल बर्षे तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य होता है ॥ ११३ ॥

अभ्रच्छन्नेजलंस्वल्पंजलपातेमहाजलम् ।
त्रयोदशीत्रयेकृष्णेपौषेविद्युच्चगर्भदा ॥ ११४ ॥

उस दिन यदि केवल बादल हो तो कम वर्षा और जल वर्षे तो महा वर्षा हो । और पौष कृष्ण त्रयोदशीसे तीन दिन तक बिजली हो तो गर्भ देती है ॥ ११४ ॥

ऐन्द्रीविद्युदमावस्यांदर्शनंवाहिमस्यचेत् ।
अभ्रच्छन्ननभोवापिसुभिक्षंजायतेतदा ॥ ११५ ॥

अमावसको यदि बिजली पूर्वमें चमके, कड़ी ठंढ पडे और बाद्ल हों तो सुभिक्ष होता है । ११५ ॥

सप्तम्यादित्रयेमाघेशुक्लेवादलयोगतः ।
धनधान्यसमृद्धिःस्याद्विवाहाद्युत्सवोजने ॥११६॥

माघमें शुक्ल ७।८।९को बादल हों तो धन धान्य समृद्धि हो और विवाहादि उत्सव हों ॥ ११६ ॥

माघनवम्यांशुक्लेपरिवेषःशशिनिदृश्यतेऽवश्यम् ।
आषाढेवर्षतितदामेघमहोदयोभवति । ११७ ॥

माघशुक्ल नौमीको चंद्रमाका परिवेष (मंडल) हो तो आषाढमें अवश्य वर्षा हो ॥ ११७ ॥

माघेदशम्यांहिशुभायवर्षातद्वन्नवम्यांयदिचेदवर्षा ।
हर्षायतर्षातिशयोनकश्चिद्वर्षागमेमेघमहोदयेन ११८

माघ शुक्ल दशमीको वर्षा हो तो हर्ष और नौमीको अवर्षा हो तो हर्ष होता है । दोनों दिनोंकी वर्षासे मेघ वर्षता है ॥ ११८ ॥

माघमासेचतुर्दश्यांप्रहरेयत्रवादलम् ।
वर्षाकालेतत्रमासेनवर्षतिपयोधरः ॥ ११९ ॥

माघ शुक्ल चौदशको जिस पहरमें बादल हों, चौमासेके आषाढादि उसी मासमें सूखा पड़े ॥ ११९ ॥

महासुभिक्षमादेश्यंराजानोनिरुपद्रवाः ।
सप्तमीनिर्मलीनेष्टाश्रेष्ठावृष्टिबलान्नतु ॥ १२० ॥

यदि सप्तमी निर्मल हो तो नेष्ट और वृष्टियुक्त हो तो, श्रेष्ठ होती है तथा सुभिक्ष और निरुपद्रव होता है ॥ १२० ॥

माघस्यशुक्लसप्तम्यांयदाभ्रंजायतेऽभितः ।
तदावृष्टिर्घनालोकेभविष्यतिनसंशयः ॥१२१॥

माघ शुक्ल सप्तमीको बादल हो तो संसारमें घनी वर्षा होती है॥१२१॥

माघेचकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेभ्रगर्जितम् ।
हिमपातेचसंजातेसर्वधान्यप्रजासुखम् ॥ १२२ ॥

माघ कृष्ण सप्तमीको स्वाति योगमें बादल गर्जन और ठंढ पडे तो सब धान्य हों प्रजा सुखी हो ॥ १२२ ॥

तथैवफाल्गुनेचैत्रेवैशाखेस्वातियोगजम् ।
विद्युदभ्रादिकंश्रेष्ठमाषाढेपिसुभिक्षकृत् ॥ १२३ ॥

इसी भाँति फाल्गुन चैत्र, वैशाखके स्वाति योगमें बिजली बादल आषाढमें सुभिक्ष करते हैं ॥१२३ ॥

स्वातौनिशांशेप्रथमेभिवृष्टेसस्यानि सर्वाण्युप-
यान्तिवृद्धिम् । भागेद्वितीयेतिलमुद्गमाषाग्रैष्मं
तृतीयेस्तिनशारदानि ॥ १२४ ॥

स्वातिमें रात्रिके प्रथमांशमें वर्षा हो तो सब धान्योंकी उत्पत्ति और वृद्धि करती है । दूसरे भागमें हो तो तिल मूंग उडद करती है और तीसरे भागमें हो तो ग्रीष्मके जौ गेहूं आदि तो करती है किन्तु शरदके मक्का बाजरी आदि नहीं करती ॥ १२४ ॥

वृष्टेह्निभागेप्रथमेसुवृष्टिस्तद्वद्द्वितीयेतुपर्कीटसर्पाः ।
वृष्टिस्तु मध्यापरभागवृष्टेर्निश्छिद्रवृष्टिर्द्युनिशंप्र-
विष्टे ॥ १२५ ॥

उसी दिन यदि दिनके प्रथम भागमें वर्षा हो तो सुवृष्टि हो । दूसरेमें हो तो वर्फ, कीडे और सर्पादि हों, तीसरेमें हो तो मध्यम वर्षा हो और दिनरात वर्षे तो निरंतर वर्षा हो ॥ १२५ ॥

समुत्तरेणताराचित्रायाःकीर्त्यतेह्यपांवत्सः ।
तस्यासन्नेचन्द्रेस्वातीयोगःशिवोभवति ॥ १२६ ॥

चित्रा नक्षत्रके समान सूतमें ठीक उत्तरमें एक अपांवत्स नामक तारा है यदि चन्द्रमा उस ताराके समीप हो तो स्वातिमें चन्द्रमाका योग शुभ होता है ॥ १२६ ॥

माघेकृष्णनवम्यांचमूलऋक्षदिनेथवा ।
विद्युन्मेघधनुर्योगेचाभ्रैर्नभसिसंवृते ॥ १२७ ॥
एतस्माद्गर्भतोवृष्टिर्भाविवर्षेभिजायते ।
आषाढेवाभाद्रपदेदशमीदिवसेशुभा ॥ १२८ ॥

माघ कृष्ण नौमीको अथवा मूल नक्षत्रमें बिजली मेघ और धनुष हो तथा आकाश बादलोंसे आवृत(ढकाहुआ)हो तो इस गर्भसे भावी वर्षमें आषाढ अथवा भादवेकी दशमीको शुभवर्षा होती है१२७॥१२८

माघमासेचसप्तम्यांकृष्णेत्रयोदशीद्वये।
पूर्वस्यामुन्नतेमेघेवादलैःसंकुलेपिखे ॥ १२९ ॥

माघकृष्ण १३।१४ को पूर्वमें बड़े बादल हों और आकाश ढका हुआ हो तो ॥ १२९ ॥

बहूदककरावृष्टिराषाढेसप्तरात्रिकी ।
अमावास्यामभ्रयोगाद्भाद्रेवैपूर्णिमादिने ॥ १३० ॥

आषाढमें सात रात तक बहुत जल वर्षता है। अमावसको बादल हों तो भादवेमें पूनमको वर्षता है ॥ १३० ॥

नवृष्टिर्नगर्जारवोवादलेषुचतुर्थ्यांचगोधूमकादुर्लभाःस्युः । तदापंचमीवृष्टिहीनापिसाभ्रातदा भाद्रमासेमहान्वृष्टियोगः ॥ १३१ ॥

माघकृष्ण चौथको न वर्षा हो न गर्जे और न बादल हों तो गेहूं दुर्लभ होते हैं और यदि पंचमीको वर्षा न हो केवल बादल ही हों तो भादोंमें महा वर्षा होती है ॥ १३१ ॥

कार्पासस्यमहर्घताभुविभवेत्षष्ठीयदानिर्मलासप्त-
म्यामपिचन्द्रनिर्मलतयाराज्ञांमहान्विग्रहः ।
अष्टम्यांयदिभास्करस्समुदितःप्रातःपरं निर्मले
रौद्रेवृष्टिनिरोधकृन्नभसिचप्रायोल्पवर्षाकरः॥१३२॥

यदि छठ निर्मल हो तो कपास महँगी हो सातैंको चंद्र निर्मल हो तो राजाओंमें महा विग्रह हो और यदि आठैंका सूर्योदय निर्मल हो तो वृष्टि रोक कर अल्प वर्षा करे ॥ १३२ ॥

सप्तम्यादित्रयेकृष्णेफाल्गुनेघनगर्जितम् ।
संग्रामाद्यप्रतिग्रामंधान्यानांचसमर्घता ॥ १३३ ॥

फाल्गुन कृष्णकी सप्तमीसे तीन दिनोंमें घन गर्जे तो संग्रामादि हों तथा धान्य सस्ते हों ॥ १३३ ॥

फाल्गुनेमासिवर्षावैजायतेचाष्टमीदिने ।
तदासुभिक्षमादेश्यंदेशेक्षेमंसुखंबहु ॥ १३४ ॥

फाल्गुनकी अष्टमीको वर्षा हो तो सुभिक्ष हो और देशमें क्षेम सुख बहुत हो ॥ १३४ ॥

सप्तम्यादित्रयेसाभ्रेगर्भेकुशलनिश्चयः ।
अमावास्यांभाद्रपदेजलंसुलभमब्दतः ॥ १३५ ॥

सप्तमी आदि तीन दिन बादल हों तो गर्भमें कुशल रहे और भाद्रपदकी अमावसको जल वर्षे ॥ १३५ ॥

फाल्गुनेशुक्लसप्तम्यांपौर्णमास्यांतथादिने ।
निर्वातंगगनंमेघाविजलाविद्युदन्विताः॥१३६ ॥

भविष्यद्वत्सरेतत्रसुभिक्षंक्षेममादिशेत्।
भाद्रेसौकृष्णसतम्यांदर्शेगर्भःफलंजलम् ॥ १३७ ॥

फाल्गुन शुक्ल सप्तमीको तथा पूनमको विना पवन आकाशमें विना जलके बादलोंमें विजली हो तो भविष्य वर्षमें सुभिक्ष हो । और भादेवकी कृष्ण सप्तमी अथवा अमावसको इस गर्भका फल (जल) हो ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

समयेचेद्धुताशन्याज्वलनस्यास्तिबादलम् ।
गोधूमकुंकुमापातान्महर्घंप्रोच्यतेतदा ॥ १३८ ॥

यदि होली जलनेके समय बादल हों तो गेहूंकी फसलमें रोली लग जानेसे महँगाई हो ॥ १३८ ॥

दशम्यैकादशीशुक्लेफाल्गुनेभ्रादिगर्भयुक् ।
तदाचतुर्थपंचम्यामाश्विनेवृष्टिदायिनी ॥ १३९ ॥

और फाल्गुन शुक्ल दशमी एकादशीको बादल आदिसे गर्भ हो तो आश्विनकी चौथ पांचै को वर्षा हो ॥ (इति) ॥ १३९ ॥

(३) अथ विद्युल्लक्षणम् ।

प्राचीतत्क्षणमेवनक्तमपरा सन्ध्यात्र्यहाद्वाफलंस-
प्ताहात्परिवेषरेणुपरिधाःकुर्वन्तिसद्योनचेत् । त-
द्वत्सूर्यकरेंद्रकार्मुकतडित्प्रत्यर्कमेघानिलास्त-
स्मिन्नेवदिनेऽष्टमेऽथविहगाःसप्ताहपाकामृगाः १४०

(३) "वर्षाकारक विजलीका वर्णन"–(वर्षाके प्रसंगमें जो संध्या-परिवेष-वायु-आदि आये हैं उनका यहां प्रमाण बतला कर विजलीका वर्णन करते हैं ।) प्रातःसंध्याका तत्काल फल होता है सायंसन्ध्या वा रात्रिका तीन दिनमें–परिवेष, परिघ, रजका उसी दिन–(अथवा उस दिन न हो तो सात दिनमें) सूर्यकी किरणोंका

इन्द्रधनुषका बिजलीका, प्रतिसूर्य तथा वायुका आठ दिनमें—और पक्षियोंका सप्ताहमें फल होता है ॥ १४० ॥

एकंदीप्त्यायोजनंभातिसंध्याविद्युद्भासाषट्प्रकाशीकरोति। पंचाब्दानांगर्जितंयातिशब्दोनास्तीयत्ताकाचिदुल्कानिपाते ॥ १४१ ॥

सन्ध्याका प्रकाश४ कोश तक—मेघकी गर्जना२०कोश तक—और बिजलीकी चमक २४ कोशतक जाती है :किन्तु उल्कापातके योजनोंका कोई नाप नहीं किया जाता ॥ १४१ ॥

विद्युद्भ्रान्तिर्निखिलाकांतिः कलनामस्तायदा पयोदाः। उन्मत्ताइवदृष्टश्चन्द्रःकिरणविहीनंभुविजलपूरम् ॥ १४२ ॥

जिस समय बिजली घूमती है उस समय मेघ समस्त दीप्ति धारण करनेसे उन्मत्तकी भांति मतवाला होकर चन्द्रमाकी किरणोंसे पृथ्वी को हीन देखके उसे जलसे पूरता है ॥ १४२ ॥

विद्युन्मालाकुलोभूत्वानभनष्टार्कइन्दुना।
प्रावृट्कालोविजानीयाज्जनसौख्यानन्ददायकः १४३

जिस समय बिजलियोंके चकामकोंसे आकुल होकर आकाश सूर्य चन्द्र और तारागणोंसे हीन हो तो उस समय मनुष्योंको सुख और आनन्द देनेवाला वर्षा काल जानना ॥ १४३ ॥

यदातुविद्युतःश्रेष्ठाःशुभाशाप्रत्युपाश्रिताः।
तदातुसर्वसस्यानांवृद्धिंब्रूयाद्विचक्षणः ॥ १४४ ॥

"बिजलियोंके चमकनेका फल"—जिस समय शुभ दिशाओंमें बिजली चमके उस समय सब प्रकारके धान्योंकी वृद्धि होती है १४४

दिवतडिद्यदिचपिनाकिदिग्भवा।
तदाक्षमाभवतिसमातिवारिणा ॥ १४५ ॥

यदि दिनमें ईशान कोनमें बिजली चमके तो उस समय पृथ्वी जलसे समान (बराबर) हो जाती है ॥ १४५ ॥

पौषशुक्लचतुर्दश्यांविद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।
कृष्णपक्षेतथाषाढेभवेन्मेघमहोदयः ॥ १४६ ॥

पौष सुदी चौदशको बिजलीका चमकना अच्छा है । उससे आषाढ कृष्णमें बहुत मेह बर्षता है ॥ १४६ ॥

नभप्रदीपंप्रच्छाद्यगर्जेदैरावतान्वितः ।
विद्युत्कुमारिसंयोगाद्देवेन्द्रोगर्भकारकः ॥ १४७ ॥

आकाशमें सूर्यको बादलोंसे छिपाकर मेघ गर्जे और बिजली चमके तो मेघका उदय होता है ॥ १४७ ॥

उत्तरस्यांयदाविद्युत्स्वर्णवर्णाप्रदीप्यते ।
साविद्युज्जलदाज्ञेयाशीघ्रंमेघमहोदयः ॥ १४८ ॥

यदि उत्तर दिशामें सोनाके वर्ण समान बिजली चमके तो वह बिजली जल देने वाली होती है । उससे शीघ्र वर्षा होती है॥१४८॥

ऐंद्रीचजलदाविद्युदाग्नेयीजलनाशिनी ।
याम्यदिक्स्थातुयाविद्युद्घटाटोपाभयंकरी १४९

पूर्व दिशाकी बिजली जल देनेवाली होताहै आग्नेयी जलशोषती है और दक्षिण दिशाकी बिजरी काले घटाटोपोंसे डरानेवाली होती है ॥ १४९ ॥

प्रभूतजलदाज्ञेयावारुणीसस्यसंपदे ।
नैर्ऋतिर्निर्मलाप्रोक्ताकौवेरीक्षिप्रवर्षिणी ॥ १५० ॥

पश्चिम दिशाकी बिजली सस्य सम्पदाके लिये बहुत जल देती है और नैर्ऋत्यकी निर्मल आकाश करती है तथा उत्तरकी बिजली १५० ॥

ऐशानीलोकशुभदाविद्युद्भेदाइतिस्मृताः ।
यत्रदेशेसुभिक्षंस्याद्विद्युत्तत्रैवगच्छति ॥ १५१ ॥

ईशानकी बिजली शुभदायक होती है । जिस देशमें सुभिक्ष होनेकी सम्भावना हो बिजली वहीं जाती है ॥ १५१ ॥

दिक्षुभूतास्थितिर्गुप्तामेघानांमार्गदर्शनी ।
विद्युद्धीनानगर्जंतिनवर्षंतिजलंविना ॥ १५२ ॥

यह बिजली दिशाओंमें खड़ी रहकर मेघोंको मार्ग दिखाती है । अथवा बादल बिजली बिना नहीं गर्जते और जल बिना मेघ नही वर्षता ॥ १५२ ॥

कपिलाविद्युदनिलंकुर्यात्पीतातुवृष्टये ।
लोहिताआतपायस्यात्सितादुर्भिक्षहेतवे ॥

यदि भूरी बिजली चमके तो पवन चले, पीली चमके तो बहुत वर्षा हो लाल चमके तो गर्मी अधिक करे और सफेद चमके तो अकाल पडे ॥ इति ॥

(४) अथ ग्रहयोगाद्वर्षाज्ञानम् ।

अवृष्टानयुतौक्रूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगौ ।
जीवदृष्टौविशेषेणमहावृष्टिस्तदाभवेत् ॥ १५३ ॥

(४) "ग्रहोंके संयोगसे वर्षा कहते हैं ।"(तात्कालिक योग क्रूर ग्रह सहित बुध शुक्र एक राशिपर आये हों तो वर्षा नहीं हो) और यदि उनको गुरु देखे तो बहुत वर्षा हो ॥ १५३ ॥

ज्ञजीवावेकराशिस्थौक्रूरदृष्टिविवर्जितौ ।
शुक्रदृष्टौविशेषेणकुर्वातेवृष्टिमुत्तमाम् ॥ १५४ ॥

गोचर ग्रहोंमें बुध बृहस्पति एक राशिपर हों और उनको क्रूर ग्रह न देखें किन्तु शुक्र देखता हो तो उत्तम वर्षा करते हैं ॥ १५४ ॥

जीवशुक्रौयदायुक्तौक्रूरेणापिविलोकितौ ।
बुधदृष्टौमहावृष्टिंकुर्वातेजलयोगतः ॥ १५५ ॥

गुरु शुक्र एक राशिपर हों क्रूर ग्रह तथा बुध देखता हो तो महा वर्षा करते हैं ॥ १५५ ॥

गुरुर्बुधोदानवेन्द्रोएकराशिगतास्त्रयः ।
अदृष्टाःक्रूरखचरैर्महावृष्टिविधायकाः ॥ १५६ ॥

बुध बृहस्पति शुक्र तीनों एक राशिके हों और क्रूर न देखें तो महा वर्षा होती है ॥ १५६ ॥

यदाशुक्रश्चभौमश्चमन्दश्चैकत्रराशिगः ।
तदावर्षतिपर्जन्योजीवदृष्टौनसंशयः ॥ १५७ ॥

जब शुक्र शनि भौम एक राशिमें हों और बृहस्पति देखे तो मेह वर्षता है ॥ १५७ ॥

शुक्रेचन्द्रमसायुक्तेभौमेवाचंद्रसंयुते ।
उद्बन्धनादिशःसर्वाजलयोगस्तदामहान् ॥ १५८॥

शुक्र चन्द्रमाके साथ हो अथवा भौम चन्द्रमाके साथ हो तो महान् जलयोग होता है ॥ १५८ ॥

अग्रतोवास्थिताःसौम्याःक्रूराणांतुपरस्पराः ।
ददतेसलिलंभूरिनतोयंस्याद्विपर्यये ॥ १५९ ॥

सौम्यग्रह आगे हों और क्रूर पीछे हों तो जल वर्षता है॥१५९॥

एकराशिगतोजीवःसूर्येणसहवर्षति ।
यावन्नास्तमनंयातियोगोद्वन्द्वज्ञजीवयोः ॥१६० ॥

सूर्यके साथ एक राशिमें बृहस्पति होनेसे वर्षा होतीहै । जबतक अस्त न हों तबतक बुध गुरु योगसे वर्षा होती है ॥ १६० ॥

उन्मार्गगमनंकृत्वायदाशुक्रंत्यजेद्बुधः।
तदावर्षतिपर्जन्योदिनानिपंचसप्तवा ॥ १६१॥
शुक्र वक्री होकर बुधको छोड़दे तो पांच, सात दिन वर्षा होतीहै१६१

कर्कटेतुप्रविशतेसूर्यंपश्येद्यदागुरुः।
पादोनंपूर्णदृष्ट्यावातत्रकालेमहाजलम् ॥ १६२॥
कर्कपर गये हुए सूर्यको गुरु पादोन वा पूरी दृष्टिसे देखे तो बहुत जल वर्षता है ॥ १६२ ॥

ह्युदयेस्तंगमेचेत्स्याज्जीवदृष्टोयदाग्रहः।
पादोनपूर्णदृष्ट्यावातदावर्षतिनान्यथा ॥ १६३ ॥
जब ग्रह उदय वा अस्त हो उसको गुरु देखे तो वर्षा होतीहै१६३॥

शनिशुक्रेऽल्पवृष्टिःस्याद्रसस्यानिभवन्तिच।
वक्रोत्तीर्णाःशुभाःक्रूराजीवोवक्रगतःशुभः ॥१६४॥
शनि शुक्र एक राशिके हों तो कम वर्षा हो। क्रूर ग्रह वक्रसे उत्तर कर शुभ होतेहैं। किन्तु बृहस्पति वक्री हो तब अच्छा है ॥ १६४ ॥

अतिचारगताःक्रूराःस्वल्पवृष्टिविधायकाः।
सौम्यायदावक्रगतास्तदावृष्टिविधायिनः ॥१६५॥
क्रूर ग्रह अतिचारी (बहुत गति वाले) हों तो कम वर्षा होतीहै और सौम्य ग्रह जब वक्री हों तब वर्षा होती है ॥ १६५॥

सिंहेकन्यातुलायांचयास्यतेचयदागुरुः।
एकादश्यांचयोगोयंवर्षत्येवमहाजलम् ॥ १६६ ॥
सिंह कन्या और तुलमें बृहस्पति जाय और ग्यारहवेंमें अन्य योग हो तो बहुत जल वर्षे ॥ १६६ ॥

शुक्रस्ययदिभोमेनयदिस्यात्सप्तसप्तकम्।
वृष्टिर्मासेतदाकालेतथैवशनिजीवयोः ॥ १६७ ॥

शुक्रसे मंगल सातवें हो और शनिसे बृहस्पति सातवें हो तो महीनेमें वर्षा होती है ॥ १६७ ॥

क्रूराणांसहसौम्यैश्चयदिस्यात्सप्तसप्तकम् ।
अनावृष्टिस्तदाज्ञेयालोकपीडामहत्यपि ॥ १६८ ॥

क्रूर ग्रहों सहित सौम्य ग्रह सातवीं सातवीं राशिपर हों तो अनावृष्टि तथा पीड़ा हो ॥ १६८ ॥

विशेषयोगः ।

अश्विन्यादित्रयंचैवआर्द्रादेःपंचकंतथा ।
पूर्वाषाढादिचत्वारिचोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ १६९॥
उक्तानिशशिभान्यत्रप्रोच्यंतेसूर्यभान्यथ ।
रोहिणीचमृगश्चैवपूर्वाफाल्गुनिकातथा ॥ १७० ॥

"विशेष योग"-अश्विनी आदि तीन और आर्द्रा आदि पांच पूर्वाषाढादि चार और रेवती आदि दो इनको यहां चंद्र नक्षत्र कहे हैं । और रोहिणी मृगशिर पूर्वाफाल्गुनी आदि बाकीके सब नक्षत्र सूर्य नक्षत्र हैं ॥ १६९ ॥ १७० ॥

सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रेचन्द्रेनवर्षति ।
चान्द्रसूर्योभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥ १७१ ॥

सूर्य जिस नक्षत्रपर हो वह नक्षत्र तथा नित्यका जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र इन दोनोंको उपरोक्त विधिके अनुसार देखना । यदि सूर्य सूर्यकेही हों तो हवा चले । चन्द्र चन्द्रके हों तो वर्षा नहीं हो । और चंद्र सूर्य दोनोंका योग हो तो वर्षा हो । (यथा वर्ष कालमें सूर्य मृगशिरपर हो और पंचांगस्थ नित्यका नक्षत्र आर्द्रादि पांचमें हों तो वर्षा हो । इत्यादि) ॥ १७१ ॥

आर्द्रादिदशर्कस्त्रीणांविशाखात्रिनपुंसकम् ।
मूलाच्चतुर्दशपुंसांनक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ १७२ ॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्रोंको स्त्री-विशाखादि तीनको नपुंसक और मूलादि चौदहको पुरुष संज्ञक नक्षत्र मानकर इनसे वर्षाका विचार करे ॥ १७२ ॥

वायुर्नपुंसकेभेचस्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ।
स्त्रीणांपुरुषसंयोगेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥ १७३ ॥

सूर्य और चंद्रमा जिस जिस नक्षत्रपर हों उनकी उपरोक्त संज्ञा देखकर विचार करे। यदि नपुंसक नक्षत्र हों तो पवन चले, स्त्री नक्षत्र हों तो बादल छाये रहें-स्त्री नपुंसक हों तो कुछ बूंदा बांदी हो, पुरुष हों तो धूप रहे और स्त्री संज्ञक तथा पुरुष संज्ञक नक्षत्रोंका योग हो तो निश्चय अच्छी वर्षा हो (इति) ॥ १७३ ॥

(५) अथ प्रश्नद्वारा ज्ञानमाह ।

पृच्छालग्नेचतुर्थस्थौशनिराहूयदापुनः ।
दुर्भिक्षंचमहाघोरंतत्रवर्षेध्रुवंभवेत् ॥ १७४ ॥

(५) "अब प्रश्नसे वर्षा कहते हैं।"-(कोई आशार्थी आकर वर्षाके लिये स्वस्थचित्तसे प्रश्न करे तो तत्काल उस समयका लग्न लगाकर उसका विचार करे) यदि प्रश्न लग्नसे चौथे घरमें शनि राहु हों तो उस वर्षमें महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥ १७४ ॥

चतुर्णामपिकेन्द्राणांमध्येयत्रशुभाग्रहाः ।
तस्यांदिशिचनिष्पत्तिःसुभिक्षंचप्रजायते ॥१७५॥

यदि उस समय चारों केन्द्रोंमें शुभ ग्रह हों तो जिस जिस केंद्रमें जो जो ग्रह हों उन उन ग्रहोंकी दिशामें धान्यकी उत्पत्ति और सुभिक्ष जानना ॥ १७५ ॥

यस्यांदिशिशनिर्दृष्टःक्रूरश्चात्रग्रहेस्थितः ।
दिशितस्यांबुधैर्वाच्यंदुर्भिक्षंनात्रसंशयः ॥ १७६ ॥

जिस दिशामें क्रूर ग्रह हो और उस पर शनिकीभी दृष्टि हो तो पंडित लोग उस दिशामें निश्चय दुर्भिक्ष कहैं ॥ १७६ ॥

पंचांगुलिस्पर्शनेपियद्यंगुष्ठंजनःस्पृशेत् ।
तदावृष्टिस्तुमहतीसावित्रीस्पर्शनेल्पिका ॥ १७७॥

पूछनेवाला यदि पांच अंगुली पकड़ कर भी अंगूठेको पकड़े हुए प्रश्न करे तो अधिक वर्षा हो और कनिष्ठाको छुए तो कम वर्षा हो ॥ १७७ ॥ (इति)

(६) अथ सद्योवृष्टिलक्षणम् ।

पूर्वस्यांयदिसंध्यायांमेघैराच्छादितंनभः ।
पर्वताःकृत्रिमैःकैश्चित्कैश्चित्कुञ्जरमूर्तिभिः॥ १७८॥

(६) "शीघ्र वर्षा होनेके लक्षण "–यदि सायंकालके समय पूर्वमें आकाशमें बादलोंकी घटा चढे. उनमें कोई बादल पर्वत सरीखा और कोई हाथी जैसा दीखे ॥ १७८ ॥

नानाकृतिधरैश्चैवमातंगधवलैर्घनैः ।
पंचरात्रात्सप्तरात्रात्सद्योवृष्टिर्निगद्यते ॥ १७९ ॥

अथवा कई बादल सफेद हाथी जैसे होकर कई भाँतिके बन जाँय तो पांच या सात रातमें शीघ्र वर्षा होती है ॥ १७९ ॥

उत्तरस्यांचसंध्यायांगिरिमालेवविस्तृतः ।
मेघस्तृतीयदिवसेवृष्ट्यातुष्टिकरोनृणाम् ॥१८०॥

सायंकालमें उत्तर दिशामें बादलोंकी पर्वत मालासी दीखे तो मनुष्योंके संतोषदायक तीन दिनमें वर्षा होती है ॥ १८० ॥

पश्चिमायान्तुसंध्यायांघनाःस्युःपर्वताइव ।
श्यामाभ्रेस्तंगतेभानोसद्योवर्षाभिलक्षणम् ॥१८१॥

संध्यासमय पश्चिममें बादलोंके पहाड दीखें और सूर्यास्तके समय काली घटा हो तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ १८१ ॥

दक्षिणस्यांयदामेघःसकोटीनारसंभवाः ।
त्रिपंचसप्तरात्रान्तःकिंचिद्वृष्टिविधायकाः॥१८२॥

दक्षिण दिशामें यदि कोटी बाँधकर बादल खडे हों तो तीन पांच या सात रातमें कुछ वर्षा कर सकते हैं ॥ १८२ ॥

आग्नेय्यांबहुतापायमेघाःस्वल्पजलप्रदाः ।
नैर्ऋत्यामीतिसंतापरोगवर्षाकराःस्मृताः ॥१८३ ॥

अग्नि कोणमें बादल हों तो गर्मी अधिक और जल कम हो । तथा नैर्ऋत्यमें हों तो संताप और रोगकारी वर्षा हो ॥ १८३ ॥

वातवृष्टिकराः सद्योवायव्यामुन्नताघनाः ।
ऐशान्यामशनिव्यक्तामेघाःसुखकराजलात् १८४॥

वायव्यमें यदि ऊँचे बादल हो तो शीघ्र बर्षता है और ईशान कोणमें बादल हों तो बराबर वर्षा होती रहती है ॥ १८४ ॥

चतुर्थीपंचमीषष्ठीह्यमावस्याचसप्तमी ।
आषाढकृष्णतिथयःसद्योमेघायलक्षणैः ॥१८५ ॥

चौथ-पांच-छठ-सातैं और अमावसको आषाढमें घटा हो तो शीघ्र वर्षनेके लक्षण हैं ॥ १८५ ॥

पूर्वस्यांबादलंधूम्रंसूर्यास्तेयातिकृष्णताम् ।
उत्तरस्यांमेघमालाप्रभातेविमलादिशः ॥ १८६ ॥

यदि पूर्वमें धुएँके आकारके बादल हों और सूर्यास्तके समय काले हो जाँय । तथा उत्तरमें मेघमाला हो और प्रभातमें विमल दिशा हं और ॥ १८६ ॥

मध्यकालेजनस्तापईदृशंमेघलक्षणम् ।
अर्द्धरात्रेगतेवृष्टिःप्रजातोषायजायते ॥ १८७ ॥

दुपहरीमें मारे गर्मीके लोग तड़फडाते हों यह मेघके लक्षण हैं । जिस दिन यह बातें हों उसदिन आधीरात जाने तक लोगोंको संतोष देनेवाली वर्षा अवश्य होती है ॥ १८७ ॥

भाद्रशुक्लेचतुर्थेह्निपंचमेसप्तमेष्टमे ।
पूर्णिमायांचगर्भेणसद्योमेघमहोदयः ॥ १८८ ॥

भादों सुदी चौथ-पांचै-सातैं-आठैं-पूनोके गर्भसेभी शीघ्र वर्षा होती है ॥ १८८ ॥

पंचभिःसप्तभिर्वास्यादिनैरेकार्णवामही ॥
चतुर्थ्यामपिपंचम्यामाश्विनेशीघ्रगर्भता ॥ १८९॥

पांच सात दिनहीमें पृथ्वीका जलसे एकार्णव हो जाता है और आश्विनकी चौथ पांचैसेभी शीघ्र गर्भता होती है ॥ १८९ ॥

दक्षिणःप्रबलोवातःसकृदेवप्रजायते ।
वारुणैश्चैवनक्षत्रैःशीघ्रंवर्षतिमाधवः ॥ १९० ॥

यदि दक्षिणकी प्रबल पवन चले और पश्चिमी पवनभी हो तो शीघ्र वर्षा आती हैं ॥ १९० ॥

धूम्रिताःस्युर्दिशःसर्वाःपूर्ववातेवहत्यपि ।
चतुर्थ्यामन्तरेमेघःसारांसिपरिपूरयेत् ॥ १९१ ॥

पूर्वकी पवन बहती हो और सब दिशायें धूयें सरीखी हों तो चार पहरके भीतर तालावोंके भरने योग्य अच्छी वर्षा होती है १९१

उदयशिखरिसंस्थोदुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्याद्रुतकनकनिकायःस्निग्धवैदूर्यकान्तिः । तदहनिकुरुतेम्भस्तोयकालेविवस्वान्प्रतिपदियदिवोच्चैः खंगतोतीवतीक्ष्णम् ॥ १९२ ॥

यदि उदय होनेके समय सूर्य अत्यंत प्रचण्ड (जगमगाहट करते हुए) हों या गलाये हुए सोनेके समान हों अथवा वैडूर्य मणिके समान हों चौमासेमें जिस दिन ऐसे सूर्य हों उसी दिन मेघ वर्षे-

है। अथवा जिस दिन आकाशके बीचमें पहुंच कर सूर्य अत्यंत तीक्ष्ण हो तो उस दिन वर्षा होती है ॥ १९२ ॥

रात्रौतारागलत्कारःप्रातश्चात्यरुणोरविः ।
अवृष्टेशक्रचापश्चसद्योवृष्टिस्तदाभवेत् ॥ १९३ ॥

रातमें तारे गिरें प्रातःकालमें सूर्य लाल हों; विना वर्षा इन्द्रधनुष हो तो शीघ्र वर्षा होती है अथवा तारे टूटें बिजली सहित मेघ गर्जें तो वर्षाकाल समीपही जानना ॥ १९३ ॥

धूम्रितानिबिडाःशैलाश्चर्मादिषुतथार्द्रता ।
प्रभातेपश्चिमायांचेदिन्द्रचापःप्रदृश्यते ॥ १९४ ॥

वारुणैश्चैवनक्षत्रैःशीघ्रंवर्षतिमाधवः ।
गोमयेउत्कराःकीटाःपरितप्यन्तिदारुणाः ॥१९५॥
चातकानांरवोवृष्टिःसद्योवैसूचयेज्जने ।

पर्वत धूऐंकेसे होकर घने इकट्ठे दीखें चमड़े आदिमें गीलापन हो । प्रातःकाल पश्चिममें इन्द्रधनुष हो और जलनाड़ीके नक्षत्र हों तो शीघ्र वर्षा होती है । गोबरमें गुबरिंड़े अथवा और भांतिके दारुण कीडे हों । और पपीहे बोलें तो शीघ्र वर्षा होती है ॥१९४॥१९५॥

सूर्योदयेश्रावणमासिगर्जेभ्रमन्तिनीरोपरिवापिमस्त्याः । घनस्तदाष्टादशयाममध्येकरोतिभूमिंसलिलेनपूर्णाम् ॥ १९६ ॥

श्रावण मासमें जिस दिन सूर्योदयके समय मेघ गर्जें और पानीके ऊपर मछलियां बार बार इधर उधर घूमें तो उस समय अठारह पहरके भीतर भारी वर्षा होती है ॥ १९६ ॥

शुकपोतविलोचनसन्निभोमधुनिभश्चयदाहिमः दीधितिः । प्रतिशशीचयदादिविराजतेपततिवारितदानचिराद्दिवः ॥ १९७ ॥

यदि चंद्रमाका रंग तोता और कबूतरकी आंखके समान लाल हो अथवा सहदके समान हो या प्रतिशशि (दूसरा चंद्रमा) दीखै तो जल्दी मेघ बर्षता है ॥ १९७ ॥

स्तनितंनिशिविद्युतोदिवारुधिरनिभायदिदंडवत्स्थिताः । पवनःपुरतश्चशीतलोयदिसलिलस्यतदागमोभवेत्॥ १९८ ॥

रातको बादल गर्जे–दिनमें लाल रंगकी सीधी बिजली चमके और पूर्व दिशाकी पवन चले तो शीघ्र वर्षा हो ॥ १९८ ॥

वल्लीनांगगनतलोन्मुखाः प्रवालाःस्नायन्तेयदि जलपांसुभिर्विहंगाः । सेवन्तेयदिचसरीसृपास्तृणाग्राण्यासन्नोभवतितदाजलस्यपातः ॥ १९९ ॥

वाल्लियों (लता-बेलियों) के कोमल नये पत्ते आकाशकी तर्फ ऊपरको मुंह करें, पक्षी जलसे या धूलिसे स्नान करें । और सर्पादि जीव घासकी नोंकपर चढकर बैठें तो जल्दी जल आता है ॥ १९९॥

अतिवातश्चनिर्वातोह्यतिचोष्णमनुष्णता ।
अल्पाभ्रञ्चनिरभ्रंचपडेतेवृष्टिलक्षणाः ॥ २००॥

अत्यंत पवन चले अथवा बिलकुल बंद होजाय । अत्यंत गर्मी पड़े या ठंढक हो और बादल हों अथवा बिलकुल साफ हो तो यह छः लक्षण भी शीघ्र वर्षा होनेके हैं ॥ २०० ॥

यदाभाद्रपदेमासेप्रतिपद्दशमीतथा ।
सप्तमीपूर्णिमाचैवनवमीचयथाक्रमम् ॥ २०१ ॥

मेघायत्रनदृश्यन्तेपश्चिमांदिशमाश्रिताः ।
तद्वद्वर्षतिसततंबहुनीराःपयोधराः ॥२०२॥

यदि भादवेमें पड़वा, दशमी, सप्तमी, पूर्णिमा और नौमीको यथा क्रमसे मेघ न दीखे और पश्चिम दिशामें न हो तो बहुत वर्षा हो ॥ २०१ ॥ २०२ ॥

संध्याकालेचयेमेघाःपर्वताकारसन्निभाः ।
आदित्यास्तंगतेतर्हिअहोरात्रेणवर्षति ॥ २०३ ॥

यदि प्रातःसंध्यामें पर्वताकार घटा हो तो सूर्यास्तमें दिन रात वर्षता है ॥ २०३ ॥

(७) अथ तात्कालिकलक्षणम् ।

विनोपघातेनपिपीलिकानामण्डोपसंक्रान्तिर-
हिव्यवायः । द्रुमाधिरोहश्चभुजंगमानांवृषैर्नि-
मित्तानिगवांप्लुतंच ॥ २०४ ॥

(७) "तत्काल वर्षा होनेके लक्षण"-यदि विना किसी उप-घात (धक्केके) चीटियां (कीड़ी) अपने अण्डोंको उठाकर एक जगहसे दूसरी जगह लेजांय सर्पपर सर्प चढ़ें या मैथुन करें । अथवा वृक्षपर सर्प चढ़ें । और गायें उछलें कूदें अथवा ऊपरको मुँह करें तो उसी दिन वर्षा आती है ॥ २०४ ॥

मार्जाराभृशमवनिंनखैर्लिखन्तोलोहानामलनि-
चयःसविस्रगन्धः। रथ्यायांशिशुनिचिताश्चसे-
तुबन्धाःसंप्राप्तंजलमचिरान्निवेदयंति ॥ २०५ ॥

बिल्लियां अपने पंजोंसे पृथ्वीको कुचरें, लोहेपर मैल जम जाय और उसमें कचे मांसकी समान सुगंध आवे और बालक रास्तोंमें खेलते हुए धूल (रेत) आदिके पुल या बन्धे बांधें तो इन बातोंसे शीघ्र जल वर्षता है ॥ २०५ ॥

यदितित्तिरपत्रनिभंगगनंमुदिताः प्रवदन्तिचपक्षिगणाः। उदयास्तमयेसवितुर्द्युनिशंविसृजन्तिघनानचिरेणजलम् ॥ २०६ ॥

यदि प्रातःकाल अथवा सायंकालके समय तीतर पंखी बादल हों। और मोर टिटहरी पपीहा आदि पक्षी आनन्दित होकर खूब कलरव करें (हु हल्ला मचावें) तो शीघ्रही दिन रात मेघ वर्षताहै२०६

यद्यमोघकिरणाःसहस्रगोरस्तभूधरकराइवोच्छ्रिताः। भूसमंचरसतेयदांबुदस्तन्महद्भवतिवृष्टिलक्षणम् २०७

यदि हजार किरणों वाले सूर्यके अस्त समयमें अस्ताचलकी किरणोंके समान ऊँची और अमोघ किरणें विराजमान हों (दीखें) और मेघ पृथ्वीके नजदीक ही शब्द करे (गर्जना करे) तो इन बातोंसे वर्षा होनेका बडा लक्षण जानना चाहिये ॥ २०७ ॥

प्रावृषिशीतकरोभृगुपुत्रात्सप्तमराशिगतःशुभदृष्टः। सूर्यसुतान्नवपंचमगोवासप्तमगश्चजलागमनाय २०८ (इति)

यदि चौमासेके दिनोंमें चन्द्रमाको शुभ ग्रह देखें अथवा चन्द्रमा शुक्रसे सातवीं राशिमें या शनिसे नौवीं पांचवीं सातवीं राशिमें आवे तो उस दिन जल वर्षता है ॥ २०८ ॥ इति।

(८) अथोपकरणनिरूपणम्।

(गंधर्वनगर) कपिलंसस्यघातायमंजिष्ठाहरणंगवि। अव्यक्तवर्णंकुरुतेबलक्षोभंनसंशयः ॥ २०९

(८) "वर्षा सम्बन्धी और बातोंका ज्ञान "–(गंधर्व नगर) यह आकाशमें किसी समय किसी रंगका–नगर जैसा दीखा करता है। यदि यह गंधर्व नगर भूरा दीखे तो खेतियोंका नुकसान हो–

मंजीठ जैसा हो तो गायोंमें बीमारी करे-और अप्रगट रंगका हो तो बल हरण करे ॥ २०९ ॥

गंधर्वनगरंस्निग्धंसप्राकारंसतोरणम् ।
सौम्यांदिशंसमाश्रित्यराज्ञस्तद्विजयंकरम् ॥२१०॥

गंधर्वनगर यदि चिकना हो और परकोटा तथा तोरण सहित पूर्व दिशामें हो तो वह राजाकी विजय करता है ॥ २१० ॥

(इन्द्रधनुष परिवेष)

इन्द्रायुधपरिवेषौखेचरचारेचपूर्वकथितौ ।
दैवंतस्यामवलोक्यवर्षतावश्यमेवेति ॥ २११ ॥

(इन्द्रधनुष और परिवेष) यह दोनों पीछे खेचर चारमें आठवें श्लोकसे तेरहवें श्लोक तक कह आये हैं अतएव वर्षाविचारक विद्वानोंको वहां अवश्य देखलेना चाहिये ॥ २११ ॥

(प्रतिसूर्य) प्रतिसूर्यकःप्रशस्तोदिवसकृहतुवर्णसप्रभस्निग्धः । वैदूर्यनिभःस्वच्छःशुक्लश्चक्षेमसौभिक्षः ॥ २१२ ॥

(प्रतिसूर्य) इसका भी वहां उल्लेख हुआ है किन्तु प्रसंगवश फिर लिखते हैं। जिस ऋतुमें सूर्यका रंग जैसा हो उस ऋतुमें प्रति सूर्यका रंगभी वैसाही चिकना या वैडूर्य मणिकी समान स्वच्छ और शुक्ल वर्ण युक्त हो वो क्षेम तथा सुभिक्ष करता है ॥ २१२ ॥

(रज) कथयन्तिपार्थिववधंरजसाघनतिमिरसंचयनिभेन । अभिभाव्यमानगिरिपुरतरवःसर्वादिशश्छन्नाः ॥ २१३ ॥

(रज-धूलि) गहरे अन्धियारेके समूहकी समान धूरि जब सब दिशाओंको ढक ले जिससे पर्वत पुर वृक्षादि न दीखें तो जानना कि राजाका नाश होगा। जेठ वैशाखमें अधिक आंधी आवे या ऐसी

धूलि वर्षा उत्तर पश्चिमसे अधिक आवें तो कई एक उसे वर्षाके हित अच्छी कहते हैं ॥ २१३ ॥

केत्वाद्युदयविमुक्तंयदारजोभवतितीव्रभयदायि ।
शिशिरादन्यत्रवोफलमविकलमाहुराचार्याः॥२१४॥

केतु उदयके पीछे जब धूलि उड़े तो अत्यंत तीव्र भयदायी होती है।आचार्योंका कथन है कि इसका फल शिशिर ऋतुमें कुछ बिगाड़ नहीं करता अन्य ऋतुओंमें होता है ॥ २१४ ॥

(निर्घात) पवनःपवनाभिहतोगगनादवनौयदा समापतति । भवतितदानिर्घातःसचपापोदीप्त-विहगरुतः ॥ २१५ ॥

(निर्घात) पवनसे पवन टकरा कर जब पृथ्वीपर गिरता है तब वही निर्घात होता है । अर्थात् जो अत्यंत जोरसे कड़कड़ाहटका शब्द होता है वही निर्घात है । उस निर्घातके समय सूर्यकी ओरको मुंह करके पक्षी रोवें तो पापकारी होता है ॥ २१५ ॥

(उल्का) दिविभुक्तशुभफलानांपततांरूपाणि यानितान्युल्काः । धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्तारा इतिपञ्चधाभिन्नाः ॥ २१६ ॥

(उल्का) स्वर्गमें शुभ फल भोगकर पडनेका जो रूप होता है वही उल्कापात है । किन्तु इनमें धिष्ण्या, उल्का, अशनि,बिजली, और तारा यह पांच भेद हैं ॥ २१६ ॥

(दिग्दाह) दाहोदिशांराजभयायपीतोदेशस्य नाशायहुताशवर्णः ।यश्चारुणःस्यादपसव्यवायुः सस्यस्यनाशंसकरोतिदृष्टः ॥ २१७ ॥

इति वर्षप्रबोधे उत्तरभागे द्वितीयस्थलःसमाप्तः ।

(दिग्दाह)-किसी २ समय दिशाओंमें लाललाल रंगकी आग लगी हुईसी दीखा करती है उसको दिग्दाह कहते हैं। यह दिग्दाह पीले वर्णका हो तो राजभय करता है। अग्निके वर्णका देश नाश करता है और लाल दिग्दाह दक्षिणी पवन सहित धान्यका नाश करता है। यदि आकाश अच्छा, तारा निर्मल और सुवर्ण समान दिग्दाह हो तो हितकारक होता है ॥ २१७ ॥

इति हनूमानशर्मासंग्रहीत भाषाटीका सहित वर्षप्रबोधके उत्तरभागका दूसरा स्थल समाप्त ।

(१) अधिकमासनिर्णयः ।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैःषोडशभिस्तथा ।
घटिकानांचतुष्केणपतत्यधिकमासकः ॥ १ ॥

(१) "अधिमासका निर्णय"-गताधिमासके पीछे ३२ महीने १६ दिन ४ घड़ी बीतने पर अधिमासका सम्भव होता है ॥ १ ॥

शाकेबाणकरांककेविरहितेनन्देन्दुभिर्भाजिते
शेषेऽग्नौचमधुश्चमाधवशिवेज्येष्ठश्चखेचाष्टके ।
आषाढोनृपतौनभश्चशरकेभाद्रश्चविश्वांककेनेत्रे
चाश्विनकोऽधिमासउदितोशेषेन्यकेस्यान्नहि॥ २ ॥

वर्तमान शकेमें नौ सौ पचीस (९२५) घटाकर उन्नीसका भाग देनेसे ३ शेष रहैं तो चैत्र, ११ शेष रहैं तो वैशाख, शून्य अथवा ८ बचें तो ज्येष्ठ, १६ बचें तो आषाढ, ५ रहैं तो श्रावण, १३ रहैं तो भाद्रपद, और २ बचें तो आश्विन अधिकमास जानना और उनसे अन्य बचें तो कोईभी अधिमास नहीं जानना. ॥ २॥

असंक्रांतिमासोधिमासःस्फुटंस्याद्विसंक्रांतिमा-
सःक्षयाख्यःकदाचित् । क्षयःकार्तिकादित्रये
नान्यतःस्यात्तदावर्षमध्येधिमासद्वयंच ॥ ३ ॥

जिस मासमें संक्रांति नहीं हो वह अधिमास होताहै और जिस मासमें दो संक्रांति हों वह क्षय मास होता है।क्षयमास कार्तिक आदि तीनही मासमें होता है और जिस वर्षमें क्षय मास होता है उसी वर्षमें अधिमासभी दो होजाते हैं ॥ ३ ॥

अथ अधिकमासफलम् ।

दुर्भिक्षंश्रावणेयुग्मेपृथ्वीनाशःप्रजाक्षयः ।
भाद्रपाद्वितयेधान्यनिष्पत्तिःस्याद्यथेहितम् ॥ ४॥

"अधिमास फल"–जिस वर्षमें दो सावन हों तो दुर्भिक्ष होकर पृथ्वी पर प्रजाका क्षय होता है और दो भादवें हों तो हितकारक अच्छी खेतियां होती हैं ॥ ४ ॥

आश्विनद्वितयेभूम्यांसैन्यचौररुजंभयम्।
सुभिक्षंकेऽपनाप्याद्दुर्भिक्षंदक्षिणादिशि ॥ ५ ॥

दो आसोज हों तो पृथ्वीमें सेना, चौर और रोगभय होता है। और उस वर्षमें सुभिक्ष नहीं होता है, दक्षिणदिशामें दुर्भिक्ष होता है ॥ ५॥

सुभिक्षंकार्त्तिकयुगेक्वचिद्दुःखंरणान्नृणाम् ।
मार्गशीर्षयुगेदेशेजायतेपरमंसुखम् ॥ ६ ॥

यदि दो कातिक हों तो सुभिक्ष होताहै किन्तु राजाओंमें कहीं रे युद्धादिके दुःख होते हैं। दो मगसिर हों तो देशमें परम सुख होता है ॥ ६ ॥

पौषयुग्मेसुभिक्षंचमंगलंनृपतेर्जयः ।
राजदण्डपरोलोकोलोकेमतिविपर्ययः ॥ ७ ॥

पौष दो हों तो सुभिक्ष होता है, प्रजामें मंगल और राजाओंमें जय होती है। किन्तु राजदंडसे लोकमतिका विपर्यय होता है ॥ ७ ॥

माघद्वयेभुविक्षेमंराज्यानांचभयंतथा ।
सुभिक्षंफाल्गुनयुगेक्षत्रियाणांशिवंभवेत् ॥ ८ ॥

दो माघ हों तो पृथ्वीपर क्षेम और राजाओंको भय होता है । और दो फाल्गुन हों तो सुभिक्ष होता है तथा क्षत्रियोंका कल्याण होता है ॥ ८ ॥

चैत्रद्वयेशुभंधान्येवैश्यानामुदयोमहान् ।
वैशाखयुग्मेधान्यानांनिष्पत्तिरशुभंक्वचित् ॥९॥

दो चैत्र हों तो खेती अच्छी होती है और वैश्योंकी उन्नति होती है । दो वैशाख हों तो कहीं २ धान्यकी उत्पत्ति अशुभ होती है॥९॥

ज्येष्ठद्वयेनृपध्वंसोधान्यानिक्षितिसत्तमे ।
द्व्याषाढेव्यथाकिंचित्खण्डवृष्टिःक्वचित्पुनः॥१०॥

दो जेठ हों तो राज्यध्वंस,धान्यकी उत्पत्ति हो और २ दो आषाढ हों तो कुछ व्यथा तथा कहीं कुछ खण्ड वृष्टि हो ॥ १० ॥

क्वचिद्द्विकार्तिकेदुःखंद्विमाघेप्यशुभंमतम् ।
द्विफाल्गुनेवह्निभयमशुभंमाधवद्वये ॥ ११ ॥

किसीका यहभी मत है कि दो कार्तिक होनेसे दुःख, दो माघ होनेसे अशुभ, दो फाल्गुन होनेसे अग्निभय और दो वैशाख होनेसे अशुभ होता है ॥ ११ ॥

अनेकयुगसाहस्र्यांदैवयोगात्प्रजायते ।
त्रयोदशदिनेपक्षस्तदासंहरतेजगत् ॥ १२ ॥

(२) "तिथि क्षय वृद्धि फल"-दैवयोगसे कई एक युगोंमें प्रजाका नाश करनेके निमित्त तेरह दिनका पक्ष आता है । अर्थात् जिस पक्षमें तेरह तिथि हों वह पक्ष प्रजामें बीमारी महर्घता आदिक उपद्रव करता है ॥ १२ ॥

जिस मासमें संक्रांति नहीं हो वह अधिमास होताहै और जिस मासमें दो संक्रांति हों वह क्षय मास होता है।क्षयमास कार्तिक आदि तीनही मासमें होता है और जिस वर्षमें क्षय मास होता है उसी वर्षमें अधिमासभी दो होजाते हैं ॥ ३ ॥

अथ अधिकमासफलम् ।

दुर्भिक्षंश्रावणेयुग्मेपृथ्वीनाशःप्रजाक्षयः ।
भाद्रपाद्वितयेधान्यनिष्पत्तिःस्याद्यथेहितम् ॥ ४ ॥

"अधिमास फल"–जिस वर्षमें दो सावन हों तो दुर्भिक्ष होकर पृथ्वी पर प्रजाका क्षय होता है और दो भादवें हों तो हितकारक अच्छी खेतियां होती हैं ॥ ४ ॥

आश्विनद्वितयेभूम्यांसैन्यचौररुजंभयम् ।
सुभिक्षंकेचनाप्याहुर्दुर्भिक्षंदक्षिणादिशि ॥ ५ ॥

दो आसोज हों तो पृथ्वीमें सेना, चौर और रोगभय होता है । और उस वर्षमें सुभिक्ष नहीं होता है, दक्षिणदिशामें दुर्भिक्ष होता है ॥ ५ ॥

सुभिक्षंकार्तिकयुगेक्वचिद्दुःखंरणान्नृणाम् ।
मार्गशीर्षयुगेदेशेजायतेपरमंसुखम् ॥ ६ ॥

यदि दो कातिक हों तो सुभिक्ष होताहै किन्तु राजाओंमें कहीं २ युद्धादिके दुःख होते हैं । दो मगशिर हों तो देशमें परम सुख होता है ॥ ६ ॥

पौषयुग्मेसुभिक्षंचमंगलंनृपतेर्जयः ।
राजदण्डपरोलोकोलोकेमतिविपर्ययः ॥ ७ ॥

पौष दो हों तो सुभिक्ष होता है, प्रजामें मंगल और राजाओंमें जय होती है । किन्तु राजदंडसे लोकमतिका विपर्यय होता है ॥ ७ ॥

मार्गादिपंचमासेषुशुक्लपक्षेतिथिक्षये ।
दौःस्थ्यंवाछत्रभंगोपिजायतेराजविग्रहः ॥ १९ ॥

मार्गशीर्षादि पांच महीनोंके शुक्ल पक्षमें तिथियां टूटें तो लोगोंका स्वास्थ्य बिगडे राजाओंमें विग्रह हो और छत्रभंगभी हो ॥ १९ ॥

मार्गादिपंचमासेषुतिथिवृद्धिर्निरन्तरम् ।
कृष्णपक्षेतदासौख्यंप्रजामारिः प्रवर्तते ॥ २० ॥

यदि मगशिर आदि पांच महीनोंमें बराबर तिथियां बढतीही चली जांय तो स्वास्थ्यका अच्छा सुधार रहे किन्तु कृष्ण पक्षमें मारीभय हो ॥ २० ॥

श्रावणेशुक्लपक्षेचेद्यदाकश्चित्तिथिक्षयः ।
तदाकार्तिकमासेस्याच्छत्रभंगोपिजायते ॥ २१ ॥

श्रावण शुक्लमें कोईभी तिथि टूटे तो कार्तिकमें छत्रभंग हो॥२१॥

श्रावणेकृष्णपक्षस्यप्रतिपद्दिवसेधृतौ ।
योगेधृतिःस्याद्धान्यस्यशेषयोगेषुविक्रयः ॥२२॥

श्रावण कृष्ण प्रतिपदाको धृति योग हो तो धान्यका संग्रह करना चाहिये और यदि अन्य योग हो तो विक्रय करना चाहिये ॥ २२ ॥

(३) अथ मासे वारफलम् ।

चैत्रेचश्रावणेमासेपंचजीवोयदाभवेत् ।
दुर्भिक्षंरौरवंघोरंछत्रभंगंनसंशयः ॥ २३ ॥

(३) "महीनोंमें वारोंका फल"—चैत्र और श्रावणके महीनेमें पांच बृहस्पतिवार हों तो घोर दुर्भिक्ष हो तथा छत्रभंग हो ॥ २३ ॥

पंचार्कवासरेरोगाःपंचभौमेभयंमहत् ।
दुर्भिक्षंपंचमंदेषुशेषावाराःशुभप्रदाः ॥ २४ ॥

पांच रविवार हों तो रोग, मंगल हों तो महाभय,शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और सोम शुक्र बुधवार हों तो शुभ होते हैं ॥ २४ ॥

पंचमीश्रावणेहीनासप्तमीभाद्रपादके।
आश्विनेनवमीनैष्टापौर्णमासीचकार्तिके॥ १३॥
सावनमें पाँचें तिथि टूट जाय, भादवेमें सातें टूट जाय और आसोजमें नौमी तथा कातिकमें पुनम टूटे तो नेष्ट है॥ १३॥

भाद्रपदेपौषयुगेसितपक्षेपततितिथिस्तस्याः।
द्विगुणदिनैर्नृपमरणंयदिवादुर्भिक्षमतिरौद्रम्॥१४॥
भादवेमें और पौषमें शुक्ल पक्षकी जितनी तिथि घटें उनसे दुगुने दिनोंमें राजाका मरण और अतिरौद्र दुर्भिक्ष होता है॥ १४॥

यस्यमासेशुक्लपक्षेतृतीयावाचतुर्थिका।
पतेत्तदामुद्गघृतंमहर्घंचभवेद्भुवि॥ १५॥
जिस मासकी शुक्ल तृतीया वा चतुर्थी घटे तो मूँग घी महँगे हैं॥ १५॥

भाद्रपौषेतथामाघेविशेषेणमहर्घता।
यन्मासेदशमीछेदस्तदाघृतमहर्घता॥ १६॥
भादवा पौष तथा माघमें जिस मासमें दशमी टूटे उसीमें घीकी विशेष महँगाई हो॥ १६॥

श्वेतपक्षेप्रतिपदापंचमीवाचतुर्दशी।
वर्द्धिताचेत्सुभिक्षायच्छिन्नादुर्भिक्षकारिका॥१७॥
शुक्ल पक्षमें पडवा, पाँचे चौदस ये बढें तो सुभिक्ष और घटें तो दुर्भिक्ष होता है॥ १७॥

चैत्राद्भाद्रपदंयावच्छुक्लपक्षेयदात्रुटिः।
तदाक्वचिन्नोपपत्तिरल्पधान्योदयःक्वचित्॥ १८॥
चैत्रसे लेकर भादवे तक शुद्धही शुक्ल पक्षमें नव तिथियां टूटें तो कहीं कुछ खेतियां हों और कहीं कुछ धान्य उत्पन्न हो॥ १८॥

चैत्रशुक्लप्रतिपदिरवौवायुर्विशेषतः ।
अल्पवृष्टिफलंतुच्छमल्पधान्यंप्रजायते ॥ ३१ ॥

यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो पवन अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा फल कम हों ॥ ३१ ॥

चन्द्रेबहुजलंधान्यंतृणानांबहुलोदयः ।
ईतयःसप्तधाभौमेपीडादुःखपराभवाः ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको चन्द्रवार हो तो जल घास और वर्षा बहुत हो। यदि उस दिन मंगलवार हो तो सात भांतिकी ईति उत्पन्न हो अर्थात् (१) अत्यंत वर्षा हो (२) बिलकुलही न हो (३) टीडी दल आवें (४) मूषे अधिक हों (५) चिड़ी कमेड़ी कबूतर आदि पक्षी अधिक हों (६) कालरा गजाई हों (७) और रोली आदि लगजाय ॥ ३२ ॥

बुधेचमध्यमेवर्षंसुभिक्षंतुगुरौभृगौ ।
शनौधान्यतृणरसाजलशोषःप्रजायते ॥ ३३ ॥

बुध हो तो मध्यम वर्ष हो, शुक्र और बृहस्पति हों तो सुभिक्ष हो और शनिवार हो तो रस घास और खेतीका नाश तथा जलका शोष हो ॥ ३३ ॥

चैत्रेचैवाष्टमीमध्येसौम्योवाथभवेत्कुजः ।
विरूपवर्षंजानीहिनदीतीरेगृहंकुरु ॥ ३४ ॥

यदि चैत्रकी अष्टमीको बुधवार या मंगलवार हो तो उस वर्षको विरूप जानना । उसमें जल नहीं वर्षता है और नदी किनारे घर बांध लेना अच्छा है ॥ ३४ ॥

वैशाखस्यचतुर्दश्यांवारोचेद्गुरुभार्गवौ ।
तदानिष्पद्यतेधान्यंविपुलंपृथिवीतले ॥ ३५ ॥

एकमासेरवेर्वाराःपंचनस्युःशुभावहाः ।
चन्द्रजीवौयदापंचधान्यादीनांसमर्घता ॥ २५ ॥

किसीभी एक महीनेमें पांच दीतवार हों तो शुभ नहीं होते हैं। सोम और गुरुवार पांच हों तो धान्य सस्ता होता है ॥ २५ ॥

मंगलेम्रियतेराजाप्रजावृद्धिस्तुभार्गवे ।
बुधेरसक्षयोभूम्यांदुर्भिक्षंतुशनैश्वरे ॥ २६ ॥

पांच मंगलवार हों तो मुखिया मरे, पांच शुक्रवार हों तो प्रजावृद्धि हो।बुध हों तो रसक्षय हो और पांच शनिवार हों तो महँगाई हो२६

मासाद्यदिवसेसोमसुतवारोयदाभवेत् ।
धान्यंमहर्घंत्रीन्मासान्भाववर्षेहिदुःखकृत् ॥२७॥

मासके प्रथम दिनमें बुधवार हो तो तीन महीने अन्न महँगाहो२७

पंचार्कयोगोवैशाखेवृष्टिगर्भविनाशकः ।
पंचभौमेभयंवह्नेर्वृष्टिरोधस्तुकुत्रचित् ॥ २८ ॥

वैशाखमें पांच दीतवार हों तो वर्षाके गर्भको बिगाड़ते हैं। और पांच मंगलवार हों तो अग्निका भय हो तथा कहीं वर्षामें देरी हो२८

प्रतिपत्सर्वमासेषुबुधेदुर्भिक्षकारिणी ।
ज्येष्ठमासेविशेषेणवृष्टिभंगायजायते ॥ २९ ॥

प्रत्येक मासकी पडवाको बुधवार हो वो दुर्भिक्ष करता है, विशेष करके जेठके महीनेमें बुरा है क्योंकि उससे वर्षाकी हानि होती है२९

आषाढेकार्त्तिकेमासेफाल्गुनेपिचदैवतः ।
जायतेपंचभौमाश्चपंचमासास्तदाशुभाः ॥ ३० ॥

आषाढ-कार्त्तिक और फाल्गुनमें पांच मंगलवार हों तो शुभ होते हैं ॥ ३० ॥

चैत्रशुक्लप्रतिपदिरवौवायुर्विशेषतः ।
अल्पवृष्टिफलंतुच्छमल्पधान्यंप्रजायते ॥ ३१ ॥

यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो पवन अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा फल कम हों ॥ ३१ ॥

चन्द्रेबहुजलंधान्यंतृणानांबहुलोदयः ।
ईतयःसप्तधाभौमेपीडादुःखपराभवाः ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको चन्द्रवार हो तो जल घास और वर्षा बहुत हो। यदि उस दिन मंगलवार हो तो सात भांतिकी ईति उत्पन्न हो अर्थात् (१) अत्यंत वर्षा हो (२) बिलकुलही न हो (३) टीडी दल आवें (४) मूषे अधिक हों (५) चिड़ी कमेड़ी कबूतर आदि पक्षी अधिक हों (६) कातरा गजाई हों (७) और रोली आदि लगजाय ॥ ३२ ॥

बुधेचमध्यमेवर्षंसुभिक्षंतुगुरौभृगौ ।
शनौधान्यतृणरसाजलशोषःप्रजायते ॥ ३३ ॥

बुध हो तो मध्यम वर्ष हो, शुक्र और बृहस्पति हों तो सुभिक्ष हो और शनिवार हो तो रस घास और खेतीका नाश तथा जलका शोष हो ॥ ३३ ॥

चैत्रेवैचाष्टमीमध्येसौम्योवाथभवेत्कुजः ।
विरूपवर्षंजानीहिनदीतीरेगृहंकुरु ॥ ३४ ॥

यदि चैत्रकी अष्टमीको बुधवार या मंगलवार हो तो उस वर्षको विरूप जानना। उसमें जल नहीं वर्षता है और नदी किनारे घर बांध लेना अच्छा है ॥ ३४ ॥

वैशाखस्यचतुर्दश्यांवारोचेद्गुरुभार्गवौ ।
तदानिष्पद्यतेधान्यंविपुलंपृथिवीतले ॥ ३५ ॥

वैशाखकी चौदसको यदि गुरु, शुक्रवार हो तो पृथ्वीपर बहुत अन्न होता है ॥ ३५ ॥

ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षेयातिथिःप्रथमाभवेत् ।
आगताकेनवारेणतमन्वेषययत्नतः ॥ ३६ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदाको कौन वार होगा इसका विचार करना चाहिये ३६

भानुनापवनोवातिकुजोव्याधिकरोमतः ।
सोमपुत्रेणदुर्भिक्षंखण्डवृष्टिःप्रजायते ॥ ३७ ॥

यदि रविवार हो तो पवन चले, मंगल हो तो उदंगल करे, बुध हो तो खंड वृष्टि तथा महँगाई करे ॥ ३७ ॥

गुरुभार्गवसोमानामेकोपियदिजायते ।
वर्षावधितदापृथ्वीधनधान्यसमाकुला ॥ ३८ ॥

सोम शुक्र बृहस्पतिमेंसे कोई हो तो चौमासे तक पृथ्वीपर बहुतहीं धन धान्य इकट्ठे होजाय ॥ ३८ ॥

अथवादैवयोगेनशनिवारोभवेद्यदि ।
जलशोषःप्रजानाशश्छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ ३९ ॥

यदि दैव योगसे जेठी पड़वाको शनिवार हो तो जल शोष, प्रजा नाश एवं छत्रभंग हो ॥ ३९ ॥

आषाढमासेसितपंचमीदिनेरव्यादिवारः क्रमशः फलानि । वृष्टिःसुवृष्टिर्लतिवृष्टिरूर्ध्ववातः प्रवातः प्रलयःप्रणाशः ॥ ४० ॥

आषाढ शुक्ल पंचमीको सूर्यवार हो तो वृष्टि-सोम हो तो सुवृष्टि मंगल हो तो अति-वृष्टि,बुध हो तो पवन, गुरु हो तो आंधी तूफान, शुक्र हो तो भारी तूफान और शनिवार हो तो नाशकारक हवा सम्बन्धी और उत्पात हों ॥ ४०॥

आषाढेषष्ठीदिवसेकृष्णपक्षेशनिर्यदा
तदागोधूमकाग्राह्याद्विगुणायस्तुकार्त्तिके ॥ ४१ ॥
आषाढ वदी छठ को शनिवार हो तो गेहूं इकट्ठे करने चाहिये।
कार्तीकमें उनसे दुगुना लाभ हो ॥ ४१ ॥

आषाढस्याप्यमावस्यायदिसोमवतीभवेत् ।
सुभिक्षंकुरुतेवश्यंनक्षत्रेमृगसर्प्पके ॥ ४२ ॥
आषाढी अमावस सोमवारी हो और मृगशिर आदि सात नक्ष-
त्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सस्ती होती है ॥ ४२ ॥

श्रावणेकृष्णपक्षेचप्रतिपद्गुरुयोगतः ।
मुद्गामाषास्तिलास्तैलंमहर्घंशीघ्रमादिशेत् ॥४३ ॥
श्रावण वदी पड़वा गुरुवार हो तो मूंग उडद तिल तेल यह जल्दीही
महँगे होते हैं ॥ ४३ ॥

श्रावणेनवमीयुक्तःशनिः संतापकारकः ।
छत्रभंगंविजानीयादाश्विनांतेनसंशयः ॥ ४४ ॥
श्रावणकी नौमी शनिवार हो तो संताप करती है और आश्विनके
अन्तमें छत्रभंग होता है ॥ ४४ ॥

दशम्यांश्रावणेसिंहेरविःसंक्रमतेशनौ ।
महीस्याज्जलदैःपूर्णातदास्याद्धान्यसंपदः ॥ ४५॥
श्रावणकी दशमीको सूर्य संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो पृथ्वी
पर जलकी अधिकता और अन्नकी वृद्धि हो ॥ ४५ ॥

वैशाखकृष्णपक्षस्यपंचम्यांजायतेरविः ।
आगामिवर्षसंक्रान्तौतद्दिनेवृष्टिबाधकः ॥ ४६ ॥
वैशाख वदी पांचै रविवार हो तो आगामी वर्षकी संक्रांतिके उस
दिन वृष्टिको रोकता है ॥ ४६ ॥

वैशाखी अमावसको भरणी हो तो व्याधि हो, कृत्तिका हो तो जल कम वर्षे और रास्तोंमें लुटेरे लूटते रहैं तथा राजाओंमें परस्पर युद्ध हो ५७

तृतीयायामक्षयायांरोहिणीगुरुणासह ।
सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिःसुविमंगलकर्मच ॥ ५८ ॥

अक्षय तृतीयाको रोहिणी गुरुवार हो तो सब धान्य पैदा हो और मंगल हो ॥ ५८ ॥

ज्येष्ठशुक्लतृतीयायांद्वितीयायांप्रजायते ।
नक्षत्रमार्द्रातद्वृष्टौमहादुर्भिक्षकारणम् ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठ सुदी दोयज वा तीजको आर्द्रा हो और उसमें वर्षा हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठकृष्णदशम्यांचरेवतीसुखकारिणी ।
एकादश्यांखण्डवृष्टिर्द्वादश्यांसानुकष्टदा ॥ ६० ॥

जेठ कृष्ण दशमीको रेवती हो तो सुख हो एकादशीमें रेवती हो तो खण्ड वृष्टि हो और द्वादशीमें रेवती हो तो कष्ट हो ॥ ६० ॥

शुक्लेज्येष्ठदशम्यांचशनिवारःप्रजायते ।
वृष्टिरोधोगवांनाशोमहाशोकाकुलाप्रजा ॥ ६१ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल १० को शनिवार हो तो वृष्टिमें रोक लगे, गायें मरें और प्रजामें शोक हो ॥ ६१ ॥

यावतीभुक्तिराषाढेशुक्लायांप्रतिपद्दिने ।
पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यांवृष्टिःस्यात्तावतीस्फुटम् ॥ ६२ ॥

आषाढ शुक्ल प्रतिपदामें पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घडी भोगे उतनी-ही वर्षा चौमासेमें हो ॥ ६२ ॥

आषाढेदशमीकृष्णासुभिक्षायचरोहिणी ।
एकादश्यांमध्यकालंदुर्भिक्षंद्वादशीभवेत् ॥ ६३ ॥

आषाढ कृष्ण १० को रोहिणी हो तो सुभिक्ष करती है । एका-दशीमें हो तो मध्यम और बारसमें हो तो दुर्भिक्ष करती है ॥६३॥

त्रयोदश्यांरोहिणीचेदुत्तमःपवनस्तदा ।
चतुर्दश्यांराजयुद्धंप्रजाशोकाकुलातदा ॥६४॥

त्रयोदशीमें रोहिणी हो तो उत्तम पवन चले और चतुर्दशीमें राज युद्ध तथा प्रजामें शोक हो ॥ ६४ ॥

आषाढशुक्लनवमीसानुराधाशनौयदा ।
कचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिःक्वचिद्दुर्भिक्षकारिका॥६५॥

आषाढ सुदी नौमी (भड्ल्या नौमी) अनुराधा शनिवार युक्त हो तो कहीं धान्यकी कुछ उत्पत्ति और कहीं कुछ दुर्भिक्ष हो॥६५॥

आषाढेप्रथमेपक्षेप्रथमादितिथित्रये ।
श्रवणंवाधनिष्ठास्यात्तदान्नसंग्रहःशुभः ॥ ६६ ॥

आषाढ कृष्ण पड़वा, दोयज, तीजको श्रवण वा धनिष्ठा हो तो अन्न संग्रह करना शुभ है ॥ ६६ ॥

आषाढेशनिरेवत्यामष्टम्यांसंगतोयदा ।
तदावृष्टिनिरोधेनकष्टमुत्कृष्टमादिशेत् ॥६७॥

आषाढमें अष्टमीको शनिवार रेवती नक्षत्र हो तो वर्षाके न होनेसे लोगोंको उत्कृष्ट कष्ट हो ॥ ६७ ॥

आषाढेकर्कसंक्रान्तौशनिवारोयदाभवेत् ।
तदादुर्भिक्षमादेश्यंधान्यस्यापिमहर्घता ॥ ६८ ॥

आषाढमें कर्क संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो धान्य महँगा हो और दुर्भिक्ष हो ॥ ६८ ॥

चतुर्दश्यांतथाषाढेसोमवारप्रवर्तनात् ।
नधान्यंनतृणंलोकेकिंवादेःप्रयोजनम् ॥ ६९ ॥

आषाढमें चौदशको सोमवार होनेसे न धान्य हो और न घास हो, अतः गवादिकोंके रखनेका भी उस समय प्रयोजन नहीं ॥६९॥

आषाढेप्रथमेपक्षेद्वितीयानवमीतिथौ ।
गुर्विंदुशुक्रवाराःस्युःश्रेष्ठानेष्टोबुधःशनिः ॥ ७० ॥

आषाढ कृष्ण द्वितीया तथा नौमीको गुरु, सोम, शुक्रवार हों तो श्रेष्ठ और बुध, शनिवार हों तो नेष्ट हैं ॥ ७० ॥

आषाढशुद्धैकादश्यांशन्यादित्यकुजैःसमम् ।
संपूर्णस्तिथिभागश्चेत्तदादुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ७१ ॥

आषाढ शुक्ल एकादशीको शनि, सूर्य, मंगलवार हों तो सम है किन्तु यदि यह तिथिके सम्पूर्ण भागमें हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ७१ ॥

आषाढपूर्णिमाषष्टिघटीमानायदाभवेत् ।
मासाद्वादशधान्यानांसुभिक्षंचसुखंजने ॥ ७२ ॥

आषाढी पूर्णिमा साठ घड़ी हो तो बारह महीने तक धान्यका सुभिक्ष रहे ॥ ७२ ॥

त्रिंशद्घटीभिःषण्मासात्सुखंदुःखंततःपरम् ।
चातुर्मास्यंपंचदशघटीमानेसुभिक्षता ॥ ७३ ॥

तीस घडी हो तो छः महीने सुख और पीछे दुःख रहे । और १५ घडी हो तो चौमासे भर सुभिक्ष रहे ॥ ७३ ॥

न्यूनत्वेतुपंचदशघटीभ्योदुःखसंभवः ।
वातवादलसंयोगात्फलेन्यूनाधिकाश्रयः ॥ ७४ ॥

यदि पन्द्रह घडीसे भी आषाढी पूनम कम हो तो दुःखकी संभावना हो।वायु और वादलके संयोगसे फलोंमें न्यूनाधिकता हो॥७४॥

मासाभिधाननक्षत्रंराकायांक्षीयतेयदि ।
महर्घत्वंतदानूनंवृद्धौज्ञेयासमर्घता ॥ ७५ ॥

यदि पूर्णिमाको महीनेका नक्षत्र (यथा आषाढमें पूर्वाषाढ, श्रावणमें श्रवण, भाद्रपदमें पूर्वाभाद्रपद और आश्विनमें अश्विनी इत्यादि)टूट जाँय तो महँगाई,और बढ जायँ तो सस्ती होतीहै॥७५॥

मासनामकनक्षत्रंराकायांनभवेद्यदा।
महर्घंचतदावश्यंतत्तद्योगविशेषतः॥ ७६ ॥

और यदि पूर्णिमाको मास नक्षत्र बिलकुलही न हो तो उसके योग विशेषसे अवश्य महर्घता होती है ॥ ७६ ॥

ऋक्षवृद्धौरसाधिक्यंकणाधिक्यंचनिश्चितम्।
योगाधिक्येरसच्छेदोदिनार्धंप्रत्यहंस्फुटः॥ ७७ ॥

योग यह है कि यदि नक्षत्र बढे तो रस अधिक हों और कण (अन्न) अधिक हों। और योग बढे तो रस क्षय हो ॥ ७७ ॥

मृगादिपंचकेराकाधान्येमहर्घतावदेत्।
मघाचतुष्टयेपूर्णाकुर्याद्धान्यसमर्घताम्॥ ७८ ॥

पूर्णिमाको मृगादि पांच नक्षत्रोंमें महर्घता और मघादि चारमें पूरी समर्घता हो ॥ ७८ ॥

राकाचित्राष्टकेयुक्तादुर्भिक्षात्कष्टकारणी।
श्रवणाद्रोहिणीयावन्नक्षत्रैःपूर्णिमाशुभा॥ ७९ ॥

पूर्णिमा चित्रादि आठमेंसे किसीसे युक्त हो तो दुर्भिक्षसे कष्ट करती है। और श्रवणसे रोहिणी तकके नक्षत्रोंमेंसे किसीसे युक्त हो तो वह पूर्णिमा शुभ फल देती है ॥ ७९ ॥

आर्द्राचतुष्टयेसूर्यवारेपूर्णार्थनाशिनी।
मघाचतुष्टयेसोमेप्येषाधान्यमहर्घकृत्॥ ८० ॥

सूर्यवार और आर्द्रादि चारमेंसे किसीसे युक्त पूर्णिमा हो तो अर्थ नाश करती है। सोमवार तथा मघादि चारमेंसे युक्त हो तो धान्य महँगा करती है ॥ ८० ॥

चित्राष्टकेभौमवारेपूर्णिमाव्याधिवर्द्धिनी ।
दुर्भिक्षायशनौशेषावारर्क्षेषुशुभावहा ॥ ८१ ॥

भौमवार तथा चित्रादि आठोंमेंसे युक्त हो तो वह पूनम व्याधि बढाती है।शनिवार युक्त हो तो दुर्भिक्ष और शेषवार तथा नक्षत्रोंसे युक्त हो तो शुभ होती है ॥ ८१ ॥

कृत्तिकाश्रावणेकृष्णेकादश्यांमध्यमाभवेत् ।
सुभिक्षंरोहिणीकुर्याद्दुर्भिक्षंमृगशीर्षतः ॥ ८२ ॥

श्रावण कृष्ण एकादशीको कृत्तिका हो तो मध्यम रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ८२ ॥

द्वादश्यांश्रावणेकृष्णेमघाचेद्रात्रिगोचरा ।
तत्राभ्रेजलवृष्टौवाजलयोगस्तदामहान् ॥ ८३ ॥

श्रावण कृष्ण द्वादशीको रातमें मघा हो और उसमें बादल तथा जल वृष्टि हो तो बड़ा जल योग होता है ॥ ८३ ॥

श्रावणस्यत्रयोदश्यांरेवत्यांरवियोगतः ।
बहुधान्यविवस्तूनिजायन्तेवसुधातले ॥ ८४ ॥

श्रावणकी तेरसको रेवती नक्षत्र रविवार हो तो बहुत धान्य और बहुत वस्तु हों ॥ ८४ ॥

शनौश्रावणसप्तम्यांजलपूर्णावसुंधरा ।
श्रावणस्यचतुर्दश्यामार्द्रायामन्नसंग्रहः ॥ ८५ ॥

श्रावणकी सप्तमीको शनिवार हो तो पृथ्वी जल पूर्ण हो। और श्रावणकी चतुर्दशीको आर्द्रा हो तो अन्न संग्रह करनेकी आवश्यकता हो ॥ ८५ ॥

श्रावणस्यत्वमावस्यांपुष्याश्लेषामघायदि ।
मध्यमंवर्षमादेश्यंवृष्टिर्नमहतीतदा ॥ ८६ ॥

श्रावणकी अमावसको पुष्य आश्लेषा मघा हो तो मध्यमें वर्ष जानना। क्योंकि उसमें बहुत वर्षा नहीं होती है ॥ ८६ ॥

विशाखाद्यष्टकेदर्शोदुर्भिक्षंनहुधास्मृतम्।
सुभिक्षमेकादशकेवारुणाद्येपुरोहितम्॥ ८७॥

उसी अमावसको विशाखादि आठ नक्षत्रोंमेंसे हो तो दुर्भिक्ष और शतभिषादि ग्यारहमेंसे हो तो सुभिक्ष जानना ॥ ८७ ॥

अमावस्यांमध्यवर्षंभवेत्पुष्यचतुष्टये।
शनिःसूर्यःकुजोदर्शेष्वनन्तरमरिष्टकृत् ॥ ८८ ॥

अमावसमें पुष्यादि चार नक्षत्रोंमेंसे हो तो मध्यमः वर्ष और शनि सूर्य मंगलवारसेभी युक्त हो तो अनन्त अरिष्टकारी अमावस होती है ॥ ८८ ॥

पार्वणीयदिरौद्रास्यादादित्यःप्रतिपत्तिथौ ।
द्वितीयापुष्यसंयुक्ताजलंधान्यंतृणंनच ॥ ८९ ॥

अमावस और प्रतिपदामें आर्द्रा और रवितवार हो और द्वितीया पुष्य युक्त हो तो अन्न जल घास नहीं हो ॥ ८९ ॥

अमावस्यादिनेयोगःपुनर्वस्वादिपंचके।
समर्घमयदुर्भिक्षमुत्तरादिचतुष्टये ॥ ९० ॥

अमावास्याके दिन यदि पुनर्वसु आदि पांचमेंसे हो तो समर्घ और उत्तरादि चारमेंसे हो तो दुर्भिक्ष (महर्घ) जानना ॥ ९० ॥

विशाखाद्यष्टकेकष्टंवारुणादौजनेसुखम्।
इचिंकेचनाचार्यादर्शनक्षत्रजंफलम् ॥ ९१ ॥

विशाखादि आठमें कष्ट और शतभिषादिमें मनुष्योंको सुख हो। यह नक्षत्र जनित अमावस फल कईएक आचार्योंने कहा है ॥ ९१ ॥

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांस्वातियोगःसुभिक्षकृत् ।
श्रवणपूर्णिमायांस्याद्धान्येगनंदिनाःप्रजाः ॥ ९२ ॥

श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वाति नक्षत्र हो तो शुभ होता है। श्रावणी पूर्णिमाको श्रवण हो तो इतना अन्न हो कि उससे प्रजा प्रसन्न हो जाय ॥ ९२ ॥

प्रथमायांतिथौभाद्रेगुरौश्रवणसंयुते ।
अभंगंजायतेवर्षंधनधान्यादिसम्पदः ॥ ९३ ॥

भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदाको बृहस्पतिवार तथा श्रवण हो तो वह वर्ष नहीं बिगड़ता है क्योंकि उसमें धन धान्यादि सम्पत्तियां हो जाती हैं ॥ ९३ ॥

भाद्रपदासिताष्टम्यांरोहिणीशुभदायिनी ।
नवमीभाद्रशुक्लस्यरवौमूलेभयंकरी ॥ ९४ ॥

भाद्रपद कृष्णाष्टमी रोहिणी युक्त हो तो शुभ देती है। भादवा सुदी नौमी दीतवार मूल नक्षत्र हो तो यह भयकारी है ॥ ९४ ॥

एकादशीभाद्रशुक्लेमूलेदिनकृतायुता ।
मेघेनवत्सरेसौख्यंलोकंव्याधिर्विबाधते ॥ ९५ ॥

भादवा सुदी ११ दीतवार मूल नक्षत्र हो तो वर्षमें मेहका सुख नहीं हो और लोगोंको विशेष व्याधियोंसे बाधा हो ॥ ९५ ॥

भाद्रेशुक्लद्वितीयायांद्वितीयवारयोगतः ।
धान्यनिष्पत्तिरतुलासंपदःस्युश्चतुष्पदे ॥ ९६ ॥

भादवा सुदी दोयज सोमवार हो तो बहुत धान्य उपजे और चौपायें बहुत बढें ॥ ९६ ॥

शनौभाद्रपदेकृष्णाचतुर्थीयदिजायते ।
देशभंगश्चदुर्भिक्षंस्वस्थस्योदरपूरणम् ॥ ९७ ॥

भादवा वदी चौथ शनिवार हो तो देश भंग तथा दुर्भिक्ष हो और स्वस्थ पुरुष पेट भर सकें ॥ ९७ ॥

नवम्यांस्वातिसंयोगेभाद्रमासेसितेयदा ।
तदासुखमयीभूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥ ९८ ॥

भादवा सुदी नौमीको स्वाति हो तो पृथ्वीपर घी और अन्न बहुत हों ॥ ९८ ॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यांचेद्वाराजीवेन्दुभार्गवाः ।
उत्तराहस्तचित्राभिःसुभिक्षंनिश्चयात्तदा ॥ ९९ ॥

भादवा सुदी चौथको गुरु शुक्र सोमवार हो और उत्तरा हस्त चित्रासे संयुक्त हो तो सुभिक्ष हो ॥ ९९ ॥

भाद्रमासेतृतीयायांभौमेचोत्तरफाल्गुनी ।
तदावृष्टिकरोनैवप्रोन्नतोपिघनाघनः ॥ १०० ॥

भादवा सुदी ३ मंगलवार उत्तराफाल्गुनी हो तो बड़े२ बादलोंकी घटा चढे तौभी वर्षा नहीं हो ॥ १०० ॥

भाद्रमासेत्वमावस्यांरवौघृतमहर्घता ।
धान्यंमहर्घंभौमज्ञेशनौतैलंविनिर्दिशेत् ॥ १०१ ॥

भादवाकी अमावस दीतवारी हो तो घी महँगा हो। मंगल बुध हो तो धान्य महँगा हो और शनिवारी हो तो तेल महँगा हो १०१॥

जनानांबहुलाःक्लेशाराजादुःखैःप्रपीड्यते ।
अमावस्यादिनेसूर्यैःसन्तापायार्थनाशनात् ॥ १०२

अमावसको यदि दीतवार हो तो सन्ताप, अर्थ नाश, क्लेश, और राजदुःखकी पीड़ा हो ॥ १०२ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंवर्षायाःप्रबलोदयः ।
सस्योत्पत्तिःप्रजासौख्यंसोमवारेप्रवर्तते ॥ १०३॥

सोमवारी अमावस हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य वर्षाका प्रबल उदय-धान्यकी उत्पत्ति और प्रजा सुख हो ॥ १०३ ॥

राज्यभ्रंशोराजयुद्धंक्लेशानांचप्रवर्द्धनम् ।
उपघातोल्पवृष्टिश्चक्षयश्चार्थस्यभूमिजे ॥ १०४ ॥
मंगलवारी हो तो राज्यभ्रंश, राजयुद्ध-क्लेशोंकी वृद्धि-उपघात-अल्पवृष्टि और द्रव्योंकी हानि हो ॥ १०४ ॥

दुर्भिक्षंराज्यनाशश्चप्रजानांदुःखभाजनम् ।
स्थानत्यागोधान्यमल्पंबुधवारेप्रवर्तते ॥ १०५ ॥
बुधवारी हो तो दुर्भिक्ष-राज्यनाश-प्रजाको दुःख-स्थानत्याग-और कम धान्य हो ॥ १०५ ॥

सदावृष्टिःसुभिक्षंचकल्याणंदुःखनाशनम् ।
आरोग्यंचप्रजाःस्वस्थागुरुवारेसमादिशेत् १०६॥
गुरुवारी अमावस हो तो सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष हो कल्याण हो दुःखका नाश हो । आरोग्य रहे और प्रजा स्वस्थ हो ॥ १०६ ॥

भृशंजलोद्धतामेघाःकृषीणांभूयुपद्रवाः ।
तस्करोपद्रवानित्यंशुक्रेणामावसीदिने ॥ १०७ ॥
शुक्रवारी हो तो उद्धत मेघोंसे जलभ्रंश हो और खेतीमें बहुत उपद्रव हों । तथा चौरोंके उपद्रव भी नित्य रहैं ॥ १०७ ॥

दुर्भिक्षंरौरवंघोरंमहादुःखंमहद्भयम् ।
पराङ्मुखाःपितुःपुत्राव्यसनंशनिवासरे ॥ १०८ ॥
यदि शनिवारी अमावस हो तो घोर रौरव समान दुर्भिक्ष होकर महादुःख तथा महाभय हो पिता पुत्रोंमें पराङ्मुखता हो ॥ १०८ ॥

भाद्रपदेशुक्लषष्ठ्यामनुराधायदाभवेत् ।
नक्षत्रान्तरदोषेपिहीनेहीनत्वमाप्नुयात् ॥ १०९ ॥
भादवा सुदी छठको अनुराधा हो तो श्रेष्ठ और नहीं हो तो हानि ॥ १०९ ॥

आश्विनेप्रथमायांचेच्छुक्लायांशनिरागते ।
तदाधान्यंचविक्रेयंपुरस्तस्यमहर्घता ॥ ११० ॥
आसोज सुदी पड़वाको शनिवार हो तो संग्रहीत धान्यको बेंच देना चाहिये ॥ ११० ॥

आश्विनेहितृतीयायांयदिभौमःशनैश्चरः ।
तदाग्निःप्रबलोभूम्यामन्नादीनांमहर्घता ॥ १११ ॥
आश्विन शुक्ल तीजको यदि मंगल वा शनिवार हो तो पृथ्वीपर प्रबल अग्निके उत्पात हों और अन्नादिकी महँगाई हो ॥ १११ ॥

चतुर्थ्यामाश्विनेसूर्येविक्रेतव्यंघृतंजनैः ।
संगृह्यंतेचधान्यानिपुरोलाभायतान्यपि ॥ ११२ ॥
आसोजसुदी चौथको रविवार हो तो पहलेका इकट्ठा किया हुआ घी और अन्न बेंच देना चाहिये क्योंकि उसमें लाभ होता है ११२

आश्विनेशुक्लसप्तम्यांसोमेहस्तसमागमे ।
गन्तव्यंमालवस्थानेनिर्जलाजलदायिनी ॥११३॥
आसोज सुदी सातैं सोमवार हस्त नक्षत्र हो तो मारवाड़ छोड़कर मालवेमें चला जाना चाहिये क्योंकि वह निर्जलवालोंको जल दे सकता है ॥ ११३ ॥

सप्तम्यांशनियुक्तायांसितेपक्षेयदाश्विने ।
श्रवणंवाधनिष्ठाचेज्जगतोनाशकारणम् ॥ ११४ ॥
आसोज सुदी सातैं शनिवार श्रवण या धनिष्ठा युक्त हो तो जगत्के नाशका कारण हो ॥ ११४ ॥

आश्विनेचबुधेष्टम्यांविधेयोघृतसंग्रहः ।
कार्त्तिकेविक्रयस्तस्यसंपदःस्युःपदेपदे ॥ ११५ ॥
आसोजकी आठैं बुधवार हो तो घी इकट्ठा करके कार्तिकमें बेचे तो पद पद पर सम्पदा मिलती है ॥ ११५ ॥

नवम्यामाश्विनेशुक्लेकुजवारेणसंगतौ ।
मुहुःकार्पासचपलामाषादेःसंग्रहोमतः ॥ ११६ ॥
द्विगुणस्तुभवेल्लाभोचैत्रमासेथविक्रये ।
आश्विनेदशमीभौमेभूम्यांव्याधिरबाधितः ११७॥

आसोजसुदी नौमीको मंगलवार हो तो वारंवार और जल्दी जल्दी कपासादि संग्रह करनी चाहिये उससे चैत्रमें वेंचनेसे दूना लाभ होता है । आसोजसुदी दशमी मंगलवार हो तो पृथ्वीमें व्याधि उत्पन्न होती है ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

एकादश्यांशनौतस्मिंश्छत्रभंगोथवाभुवि ।
नगरग्रामभंगःस्याद्वैरिचौराद्युपद्रवः ॥ ११८ ॥

उसी एकादशीको शनिवार हो तो छत्रभंग तथा नगर और ग्रामादिका भंग और वैरी तथा चौरादिके उपद्रव होते हैं ॥ ११८ ॥

तृतीयारोहिणीयोगेवारयोःशनिभौमयोः ।
तदाकार्पासिकंग्राह्यंफाल्गुनेलाभमादिशेत् ॥ ११९॥

आसोजकी तीजमें रोहिणी और शनि तथा मंगलवार हो तो कपास संग्रह करके फागुणमें वेंचनेसे लाभ होता है ॥ ११९ ॥

आश्विनेकृष्णपंचम्यांरविवारःप्रवर्तते ।
माघमासेह्यमावस्यांमहर्घंनिश्चयाद्घृतम् ॥१२०॥

आसोज वदी पांचै रविवार हो तो माघकी अमावस पर घी निश्चय महँगा हो ॥ १२० ॥

षष्ठ्यामथाश्विनेज्येष्ठादित्यमूलाभिसंगमे ।
संग्रहस्सर्वधान्यानांपंचमासिफलं लभेत् ॥ १२१॥

यदि आश्विनकी छठ रविवार और ज्येष्ठा तथा मूलसे युक्त हो तो सब धान्य संग्रह करनेसे ५ मासमें लाभ होता है ॥ १२१ ॥

आश्विनैकादशीकृष्णावारयोर्बुधसोमयोः ।
महिषीणांगवांमूल्यंमहत्संजायतेजने ॥ १२२ ॥
आश्विन कृष्ण एकादशीको बुध या सोमवार हो तो गाय भैंस महँगी हों ॥ १२२ ॥

द्वादशीशनिनायुक्ताहस्तचित्रासमन्विता ।
तदायुगन्धरीग्राह्याचैत्रेवैत्रिगुणंफलम् ॥ १२३ ॥
तथा बारस शनिवार हस्त चित्रा युक्त हो तो युगंधरी संग्रह करके चैत्रमें बेचनेसे तिगुणा लाभ होता है ॥ १२३ ॥

आश्विनस्याप्यमावस्यांशनिवारोयदाभवेत् ।
मध्यमंवर्षमथवादुष्कालःखण्डमण्डले ॥ १२४ ॥
आश्विनकी अमावसको शनिवार हो तो मध्यम वर्ष हो और खंड मंडलमें अकाल हो ॥ १२४ ॥

कार्त्तिकेप्रथमेपक्षेप्रथमाबुधसंयुता ।
जायतेमध्यमावृष्टिरनावृष्टिःक्वचिद्भवेत् ॥ १२५ ॥
कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा बुधवार हो तो वर्षा मध्यम हो और कहीं अनावृष्टिभी हो ॥ १२५ ॥

कार्त्तिकेसप्तमीशुक्लाशनौधान्यार्घनाशिनी ।
श्वेतवस्तुमहर्घंस्यात्त्रिमासिद्विगुणंफलम् ॥१२६॥
कार्तिक शुक्ल सप्तमी शनिवार हो तो धान्यकी सस्ती दूर करे और सफेद वस्तु महँगी होकर तीन मास दुगुना लाभ दे ॥१२६॥

कार्त्तिकेपंचमीरौद्रयोगस्यात्तृणसंग्रहः ।
चतुष्पदेऽन्यथादुःखंजायतेअल्पवृष्टिजम् ॥ १२७॥
कार्त्तिककी पंचमीको आर्द्रा हो तो घासका संग्रह लाभ दे और अल्पवृष्टिसे चौपायोंको दुःख हो ॥ १२७ ॥

कार्त्तिकेदशमीकृष्णाशनौरोगकरीजने ।
रविःकृष्णत्रयोदश्यांयवगोधूममूल्यकृत् ॥ १२८ ॥
कार्त्तिक कृष्ण दशमी शनिवार हो तो रोग करे और कृष्ण त्रयोदशीको रविवार हो तो जौ गेहूं मूल्यवान् (महँगे हों) ॥ १२८ ॥

कार्त्तिकेकृष्णदशमीशनौमेघसमन्विता ।
महर्घंघृतपूगादिचतुर्मासात्तुविक्रयः ॥ १२९ ॥
कार्त्तिक कृष्ण दशमी शनिवारको मेघ हो तो घी सुपारी महँगे हों चार मासमें बेंचनेसे लाभ हो ॥ १२९ ॥

कार्त्तिकेचेदमावस्यांशनिश्चेदन्ननाशनः ।
भौमेभूम्यांमहावह्नीरविर्युद्धायभूभुजाम् ॥ १३० ॥
कार्त्तिकी अमावास्या शनिवारी हो तो अन्न तेज हो । मंगलवारी हो तो महा अग्नि काण्ड और रविवारी हो तो राजाओंमें युद्ध हो ॥ १३० ॥

मार्गशीर्षेचतुर्थीचेन्मंगलोरेवतीदिने ।
प्रतिग्रामंवह्निभयंजलक्लेशव्यथाभयम् ॥ १३१ ॥
मार्गशीर्षकी चौथ मंगलवारको रेवती हो तो प्रत्येक गाँवमें आगका भय हो और जलका क्लेश तथा व्यथा और भय हो ॥१३१॥

द्वादश्यांमार्गशीर्षस्यभौमवारेर्कसंक्रमे ।
भाविवर्षविनाशायग्रहणंशीतगोस्तथा ॥ १३२ ॥
मार्गशीर्षकी बारसको मंगलवारके दिन सूर्य संक्रांति हो अथवा चन्द्रग्रहण हो तो भावी वर्षमें अकाल पडता है ॥ १३२ ॥

मार्गेनवम्यांरेवत्यांबुधोदुर्भिक्षकारकः ।
पंचमीगुरुणायोगात्पंचमासान्सुभिक्षदा ॥ १३३ ॥
मार्गशीर्षमें नौमीको रेवती बुधवार हो तो दुर्भिक्ष करता है । और पंचमी गुरुवार हो तो पांच महीने सुभिक्ष होता है ॥ १३३ ॥

मार्गशीर्षप्रतिपदिपुष्ययुक्तेचतुष्पदः ।
जलवृष्ट्यापरंवर्षगर्भनाशाद्विनश्यति ॥ १३४ ॥

मार्गशीर्षकी प्रतिपदाको पुष्य हो तो चौपायोंको दुःख हो और आगेके वर्षका गर्भ नाश होनेसे वर्षाकी कमी हो ॥ १३४ ॥

पुनर्वस्वोस्तथार्द्रायांतृतीयायांचसंगमे ।
धान्यंसमर्घमादेश्यंराजस्वास्थ्यंप्रजासुखम् १३५॥

तथा तीजको पुनर्वसु और आर्द्रा हो तो धान्य सस्ता रहे। राज्य स्वस्थ रहे और प्रजामें सुख रहे ॥ १३५ ॥

मार्गशीर्षस्यपंचम्यांमघाद्यंपंचकंयदा ।
पुरोवर्षविनाशायजायतेजलरोधतः ॥ १३६ ॥

मार्गशीर्षकी पंचमीको मघादि पांच नक्षत्रोंमेंसे कोई हो तो जला- भावसे आगेका वर्ष बिगडे ॥ १३६ ॥

मार्गेनवम्यांचित्रायांधान्यंमहर्घमादिशेत् ।
कृष्णाचतुर्दशीस्वातिश्रवणेजलरोधिनी ॥१३७ ॥

मार्गशीर्षकी नौमीमें चित्रा हो तो धान्य महँगा हो। कृष्णा चतुर्दशीमें स्वाति वा श्रवण हो तो जल वृष्टिमें रुकावट हो॥१३७॥

मार्गशीर्षस्यदशमीमूलेवारविणायुता ।
संग्राह्याश्चतिलास्तैलंज्येष्ठान्तेलाभदायकाः१३८॥

मार्गशीर्षकी दशमी मूल और रविवारी हो तो तिल तेल इकट्ठे करनेसे ज्येष्ठके अन्तमें लाभ देते हैं ॥ १३८॥

मार्गेयदिस्यादादित्यएकादश्यांतिथौतदा ।
कार्पासादिकसूत्राणांग्राह्यंवैशाखलाभकृत्॥१३९॥

मार्गशीर्षकी एकादशीको रविवार हो तो कपासादि सूत वैशाखमें लाभ देते हैं ॥ १३९ ॥

पौषेमूलममावस्यांवृष्टयेलोकतुष्टये ।
शन्यादित्यकुजास्तस्यांबहुलाभायधान्यतः॥१४६॥
पौषकी अमावास्याको मूल हो और शनि रवि मंगल हों तो धान्यसे बहुत लाभ हो ॥ १४६ ॥

पौषकृष्णप्रतिपदिरोहिण्यायोगसंभवे ।
सप्तमासाद्धान्यलाभश्छत्रभंगोथवाभवेत् ॥१४७॥
पौषकृष्ण प्रतिपदामें रोहिणी हो तो सात मासमें धान्य महँगा हो अथवा छत्रभंग हो ॥ १४७ ॥

मघाद्यदिवसेवारेबुधोभवतिचेत्तदा ।
मासत्रयंमहर्घस्यादग्रावर्षविनश्यति ॥ १४८ ॥
माघ कृष्ण प्रतिपदाको बुधवार हो तो ३ मास महँगाई रहे और आगेके वर्षकी हानि हो ॥ १४८ ॥

माघशुक्लस्यप्रतिपद्द्वितीयावातृतीयका ।
त्रुटिताधान्यसंग्राहेलाभायवणिजांमता ॥ १४९ ॥
माघ शुक्ल प्रतिपदा द्वितीया वा तृतीयाका क्षय हो तो व्यापारियोंको लाभ हो ॥ १४९ ॥

सप्तम्यांसोमवारःस्यान्माघेपक्षेसितेयदि ।
दुर्भिक्षंजायतेरौद्रंविग्रहोपिचभूभुजाम् ॥ १५० ॥
माघ शुक्ल सप्तमी सोमवार हो तो बड़ा दुर्भिक्ष हो, तथा राजाओंमें विग्रह हो ॥ १५० ॥

माघस्यशुक्लसप्तम्यांरविवारोभवेद्यदि ।
दुर्भिक्षंहिमहाघोरंविग्रहंचमहाभयम् ॥ १५१ ॥
माघ शुक्ल सप्तमी रविवार हो तो महाघोर दुर्भिक्ष और भय हो ॥ १५१ ॥

माघमासप्रतिपदिशनिभोगःप्रशस्यते ।
सर्वथाधान्यनिष्पत्तिरारोग्यंदेशस्वस्थता ॥ १५२॥
माघी पडवाको शनिवार हो तो सब धान्योंकी उत्पत्ति और देश स्वास्थ्य हो ॥ १५२ ॥

चतुर्थीमाघमासस्यशनिवारेणसंयुता ।
दुर्भिक्षंमृत्युचौराग्निभयंधान्यविनाशनम् ॥ १५३ ॥
माघकी चौथ शनिवारी हो तो दुर्भिक्ष मृत्यु चौराग्निभय और धान्यनाश हो ॥ १५३ ॥

माघेशुक्लेप्रतिपदिवाराजीवेन्दुभार्गवाः ।
सुभिक्षायरणायार्कःकुजेस्युर्बहुईतयः ॥ १५४ ॥
माघशुक्ल पडवाको गुरु शुक्र चंद्रवार हो तो सुभिक्ष हो दीतवार हो तो युद्ध और मंगलवार हो तो ईतिभय हो ॥ १५४ ॥

माघेशुक्लेयदाष्टम्यांकृत्तिकायदिनोभवेत् ।
फाल्गुनेरोलिकापातःश्रावणेवानवर्षणम् ॥ १५५ ॥
माघ शुक्लाष्टमीको यदि कृत्तिका न हो तो फागुणमें रोली लगे और श्रावणमें सूखा रहे ॥ १५५ ॥

माघेचशुक्लसप्तम्यांसोमवारेचरोहिणी ।
राज्ञांयुद्धंप्रजारोगोह्यथवावर्षमुत्तमम् ॥ १५६ ॥
माघ सुदी सातैं सोमवार रोहिणी हो तो राजाओंमें युद्ध प्रजामें रोग अथवा उत्तम वर्ष हो ॥ १५६ ॥

माघमासेचसप्तम्यांभरणीयदिजायते ।
रोगनाशस्तदालोकेवसुधाबहुधान्यभृत् ॥ १५७ ॥
माघी सप्तमीको यदि भरणी हो तो संसारके रोग दूर हों और ति । बहुत उपजें ॥ १५७ ॥

फाल्गुनेकृष्णषष्ठीचेच्चित्रानक्षत्रसंयुता ।
त्रिभिर्मासैःसुभिक्षायस्वात्यांदुर्भिक्षसाधनम् १५८॥

फाल्गुन कृष्ण षष्ठी चित्रानक्षत्रसे युक्त हो वो तीन मास सुभिक्ष और स्वाती हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ १५८ ॥

फाल्गुनेचत्रयोदश्यांशुक्लायांयदिभार्गवः ।
ज्येष्ठेरोगायनूनंस्याद्रोगोमासत्रयेथवा ॥ १५९॥

फाल्गुन शुक्ल १३ शुक्रवार हो तो जेठमें रोग पैदा होकर तीन मास रहै ॥ १५९ ॥

फाल्गुनेप्रथमेपक्षेवारुणंप्रतिपद्दिने ।
भोगानुसाराद्वर्षस्यस्वरूपंचनिरूपयेत् ॥ १६० ॥

फाल्गुन कृष्ण पड़वाको शताभिषा हो तो उसके भोगानुसार वर्ष स्वरूप जानना ॥ १६० ॥

फाल्गुनेकृत्तिकायुक्तसप्तम्यादिकपंचकम् ।
श्वेतपक्षेसुभिक्षायनार्द्राजलदवृष्टये॥ १६१ ॥

फाल्गुन शुक्लकी सातैंसे पांच दिनोंमें कृत्तिका हो तो सुभिक्ष और आर्द्रा हो तो अवर्षण हो ॥ १६१ ॥

चैत्रस्यपौर्णमास्यांहिनिर्मलंगगनंशुभम् ।
तद्दिनेग्रहणंतारापातभूकम्पवृष्टयः ॥ १६२ ॥
रजोवृष्टिःपरीवेषोविद्युत्केतूदयादिना ।
उत्पातेनचसंग्राह्यंधान्यंधातुव्ययादितः ॥ १६३॥

"बारह महीनोंकी पूर्णिमाओंका फल"—चैत्र सुदी पूर्णिमाको आकाश निर्मल हो और उसीदिन ग्रहण हो अथवा तारे टूटें भूकम्प हो या रजोवृष्टि, परिवेष, विद्युत्पात,केतु उदय आदि कोई उत्पात हों तो वर्तन बेंचकरभी धान्य संग्रह कियाजाय ॥ १६२ ॥ १६३ ॥

विक्रयेसप्तमेमासेभाद्रेद्विगुणलाभदम् ।
वैशाख्यामीदृशेचिह्नेकार्पासस्यमहर्घता ॥ १६४ ॥

और उसे सातवें महीनेमें बेंचा जाय तो दूना लाभ हो । ऐसेही चिह्न वैशाखमेंभी हों तो कपास महँगी हो ॥ १६४ ॥

गोधूममुद्गमाषादेःसंग्रहोलाभकारणम् ।
विक्रयाद्विगुणत्वेनमासेभाद्रपदेभवेत् ॥ १६५ ॥

गेहूं मूंग उड़द आदि संग्रह करनेसे भी लाभ हो उनको भाद्रपदमें बेंचनेसे दूना लाभ हो ॥ १६५ ॥

ज्येष्ठस्यपूर्णिमाऽनभ्राशुभायकथिताबुधैः ।
वृष्ट्यावापरिवेषेणतस्यांधान्यस्यसंग्रहः ॥ १६६ ॥
तुर्येमासेथवापौषेलाभस्तस्यान्नविक्रयात् ।
आषाढीनिर्मलानेष्टावादलाच्छादिताशुभा १६७॥

जेठी पूर्णिमाको बादल न हों तो शुभ हैं यदि उस दिन वर्षा या परिवेष हो तो धान्य संग्रह करके चौथे महीनेमें या पौषमें बेंचनेसे लाभ होता है । और आषाढी पूर्णिमा निर्मल हो तो नेष्ट तथा बादलोंसे ढकी हुई हो तो शुभ होती है ॥ १६६ ॥ १६७ ॥

नैर्मल्याद्धान्यसंग्राह्यंपंचमेमासिलाभदम् ।
श्रावणीनिर्मलाश्रेष्ठासाभ्रत्वेधान्यसंग्रहः ॥ १६८॥

यदि आषाढी पून्यू निर्मल हो तो धान्य खरीदनेसे पांच मासमें लाभ देता है और श्रावणी पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छी और बादल हों तो बुरी होती है ॥ १६८ ॥

विक्रयाद्घृततैलादेर्लाभोमासेतृतीयके ।
पूर्णाभाद्रपदेशुभाशुभाधान्यस्यविक्रयात् ॥१६९॥

तीसरे महीनेमें घी तेल बेचनेसे लाभ होता है। भादूँकी पून्यूका शुभ्र बादल हो तो शुभ हो ॥ १६९ ॥

अश्विनीनिर्मलापूर्णाशुभायवादलोदये ।
धान्यस्यसंग्रहंकुर्याच्चैत्रेवैलाभदोमहान् ॥ १७० ॥

आश्विनकी पून्यू निर्मल हो तो शुभ और बादल हों तो धान्य-संग्रहसे चैत्रमें लाभ हो ॥ १७० ॥

साभ्रायांमाघपूर्णायांधान्यसंग्रहइष्यते ।
विक्रयःसप्तमेमासेतस्यलाभायसंभवेत् ॥ १७१ ॥

कार्तिक मार्गशीर्ष और पौषकी पूनमकाभी यही फल जानना चाहिये''-मांघी पून्यूको बादल हो तो धान्य संग्रह करके सात मासमें बेचे तो लाभ हो ॥ १७१ ॥

फाल्गुनीपूर्णिमासाभ्रासवृष्टिर्वासगर्जिता ।
धान्यसंग्रहणान्मासेसप्तमेलाभदायिनी ॥ १७२ ॥

फाल्गुनी पून्यूको बादल वर्षा गर्जना हो तो सात मासमें धान्यसंग्रहसे लाभ हो ॥१७२ ॥

(९) अथ ग्रहसंयोगादर्घमहर्घज्ञानम् ।

कन्यामीनधनुःसिंहेष्वार्किभौमौचवक्रितौ ।
कुरुतोविभ्रमंलोकेनृपाणांक्षयकारकौ ॥ १७३ ॥

(९) ''अब ग्रहोंके योगसे तेजी मन्दी कहते हैं।''-कन्या मीन धन राशिमें शनि मंगल वक्री हों तो लोक विभ्रम और राजाओंका क्षय करें ॥ १७३ ॥

कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः ।
ज्येष्ठानुराधामूलानिपूर्वापाढातथापुनः ॥ १७४ ॥

एतेषांचैवऋक्षाणांभौमःशुक्रस्तथाशनिः ।
उत्तरस्यांयदायांतिमास्यापाढेविशेपतः ॥ १७५ ॥
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंमध्येचमध्यमंफलम् ।
दक्षिणेनयदायान्तिईतिरोगभयंभवेत् ॥ १७६ ॥

कृ. रो. मृ. म. चि. वि. ज्ये. पु. मू. और पूर्वाषाढ इन नक्षत्रोंपर भौम शुक्र शनि यह उत्तरमें विशेष कर आषाढमें आवें तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो; बीचमें रहें तो मध्यम और दक्षिणमें चलें तो ईति रोग भय हो ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

चलत्यंगारकेवृष्टिरुदयेचबृहस्पतेः ।
शुक्रस्यास्तंगमेवृष्टिस्त्रिधावृष्टिःशनैश्चरे ॥ १७७ ॥

यदि राशि छोड़कर दूसरी राशिपर मंगल चले तो वर्षा हो-बृहस्पति उदय हो तोभी वर्षा हो-शुक्र अस्त हो तब वर्षा हो और शनैश्चरके चलने अर्थात् एकराशि छोड़कर दूसरी पर जानेसे अथवा उदय होनेसे और अस्त होनेसे तीनोंसे वर्षा हो ॥ १७७ ॥

मेषवृश्चिकयोर्मध्येयदातिष्ठतिभूसुतः ।
तदाधान्यंमहर्घंस्यान्मासद्वयमुदाहृतम् ॥ १७८ ॥

मेष वृश्चिकके बीचमें यदि मंगल हो तो दो महीने तक धान्य महँगा हो ॥ १७८ ॥

रविराहुशनैश्चरभूमिसुताउदयंतिचमध्यमराशिगताः । धनधान्यहिरण्यविनाशकरा विलयंति महीपतिछत्रधराः ॥ १७९ ॥

रवि राहु शनि और मंगल मध्य राशिमें उदय हों तो धन धान्य हिरण्यको महँगा करें और छत्रधारी राजाका नाश हो ॥ १७९ ॥

शनिर्मीनेगुरुःकर्केतुलायामपिमंगलः ।
यावच्चरतिलोकस्यतावत् कष्टपरंपरा ॥ १८० ॥
शनि मीनका गुरु कर्कका, और मंगल तुलका ये जबतक इन राशियों पर चलें तबतक लोगोंको कष्ट होते रहें ॥ १८० ॥

भौमस्याधोगुरुस्तिष्ठेद्गुरुवंधोपिशनैश्चरः ।
ग्रहाणामुशलंज्ञेयमिदंजगदरिष्टकृत् ॥ १८१ ॥
मंगलसे नीचे गुरु और गुरुसे नीचे शनि हों तो यह ग्रहोंका मुशल जगत्को अरिष्ट दाई है ॥ १८१ ॥

रविराशेःपुरोभौमोवृष्टिसृष्टिनिरोधकः ।
भौमाद्याश्चखलाश्च-द्राच्चत्वारोवृष्टिनाशकाः १८२॥
सूर्य राशिके आगे मंगल हो तो वृष्टिकी सृष्टिका अवरोध करता है। और भौमादि क्रूर ग्रह चन्द्रसे आगे हों तो भी वर्षाको रोकते हैं ॥ १८२ ॥

भौमवक्रेअनावृष्टिर्बुधवक्रेधनक्षयः ।
गुरुवक्रेस्थिररोगोशुक्रवक्रेसुखीप्रजा ॥ १८३ ॥
शनिवक्रेजनेपीडाराहुःस्यादग्निकारकः ।
चतुर्ग्रहानवक्राःस्युर्योगोयंकथितोबुधैः ॥ १८४ ॥
भौम वक्री हो तो अनावृष्टि हो, बुध वक्री हो तो धन क्षय हो, गुरु वक्री हो तो रोग स्थिर रहे, शुक्र वक्री हो तो प्रजा सुखी रहे, शनि वक्री हो तो मनुष्योंमें पीडा हो, और राहु हो तोः अग्निभय हो। चार ग्रह वक्री होनेका योग अच्छा नहीं ॥ १८३ ॥ १८४ ॥

यत्रमासेग्रहाःसर्वेवक्रत्वंयांतिदैवतः ।
तन्मासेतिमहर्घंस्याद्वान्यंवाराजविग्रहः ॥ १८५॥
यदि दैव योगसे किसी महीनेमें सभी ग्रह वक्री हों तो उस मही-

नेमें धान्य आदिकी अत्यन्त तेजी हो और राजाओंमें विग्रह रहे ॥ १८५ ॥

यदितिष्ठतिभौमस्यक्षेत्रेकोपिग्रहस्तदा ।
षण्मासात्तुषधान्यानांजायतेचमहर्घता ॥ १८६ ॥

यदि मंगलके घरमें कोईभी ग्रह हो तो छःमहीने तुष धान्य महँगे रहैं ॥ १८६ ॥

शुक्रक्षेत्रेकुजेमासद्वयेनूनंमहर्घता ।
चन्द्रेचदिननाथेचसर्वरोगोऽशुभंतदा ॥ १८७ ॥

शुक्रके क्षेत्रमें मंगल हो तो २ मास महँगाई रहे, चन्द्र और सूर्य हों तो सब रोग हों अशुभ हो ॥ १८७ ॥

शनौराहौसर्वधान्यंमहर्घंराजविग्रहः ।
बुधक्षेत्रेरवौचन्द्रेविरोधःसर्वभूभुजाम् ॥ १८८ ॥

शनि राहु हों तो सब धान्य महंगे हों, राजविग्रह हो । बुधके घरमें सूर्य चन्द्र हों तो राजाओंमें विरोध हो ॥ १८८ ॥

उत्पत्तिस्तुषधान्यानांपंचमासात्प्रजायते ।
शुक्रक्षेत्रेबुधेचंद्रेचन्द्रक्षेत्रेभृगोःसुते ॥ १८९ ॥

शुक्रके घरमें बुध चन्द्र हों और चन्द्रके घरमें शुक्र होः तो पांच मासमें जौ गेहूँ अच्छे हों ॥ १८९ ॥

पाखण्डानांभवेद्वृद्धिर्धान्यानांचमहर्घता ।
रविक्षेत्रेभृगोःपुत्रेपशूनांचमहर्घता ॥ १९० ॥

सूर्यके घरमें शुक्र हो तो पाखण्डकी वृद्धि, अन्नकी महँगाई और पशुओंकी महर्घता हो ॥ १९० ॥

शनिक्षेत्रेशनौदेशेघृतधान्यमहर्घता ।
चन्द्रभास्करयोःक्षेत्रेसुभिक्षंचंद्रसूर्ययोः ॥ १९१ ॥

शनिके क्षेत्रमें शनि हो तो भी अन्न महँगे हों। और चन्द्र सूर्य अपने घरमें हों तो सुभिक्ष हो ॥ १९१ ॥

पशुनाशोधान्यवृद्धिर्गुडादीनांमहर्घता ।
गुरुक्षेत्रेशनौराहौपशुनाशस्तृणक्षयः ॥ १९२ ॥

तथा पशुओंका नाश, धान्यकी वृद्धि और गुड़ सक्करकी महँगाई हो। यदि गुरुके घरमें शनि राहु हों तो पशु नाश और तृण क्षय हो ॥ १९२ ॥

भौमेराज्ञांविरोधश्चबुधेवृष्टिस्तुभूयसी ।
भौमक्षेत्रेयदासन्तिराहुभौमार्कभार्गवाः ॥ १९३ ॥
षण्मासाद्गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ।
मंदक्षेत्रेयदासन्तिगुरुमंदबुधास्तदा ॥ १९४ ॥
चतुष्पदानांनाशश्चशंखस्यचमहर्घता ।
भौमक्षेत्रेभार्गवेचधान्यानांचमहर्घता ॥ १९५ ॥

मंगल हो तो राजाओंमें विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा हो यदि मंगलके घरमें राहु मंगल सूर्य शुक्र हों तो छः महीने गुड़ सक्कर घी कपास और दूध महँगा हो। और यदि शनिके घरमें गुरु शनि बुध हों तो चौपायोंका नाश और शंखोंकी महँगाई हो। और मंगलके क्षेत्रमें शुक्र हो तो धान्य महँगे हों॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५॥

शनिक्षेत्रेयदाभानुर्वस्त्राणांचमहर्घता ।
शुक्रेभौमेगुरुक्षेत्रेप्रजापीडाप्रजायते ॥ १९६ ॥

शनिके घरमें सूर्य हो तो वस्त्र महँगे हों, गुरुके घरमें शुक्र भौम हों तो प्रजा पीड़ा हो ॥ १९६ ॥

चन्द्रोदयेकुजक्षेत्रेतुषधान्यस्यवृद्धये ।
चन्द्रोदयेभृगुक्षेत्रेशुक्रवस्त्वुदयोभवेत् ॥ १९७ ॥

मंगलके घरमें चन्द्रोदय हो तो तुष धान्य बढे । और शुक्रके घरमें चन्द्रोदय हो तो सफेद वस्तु बढे ॥ १९७ ॥

रविक्षेत्रेतुलावृद्धिःशनिसोमभृगूदये ।
चन्द्रक्षेत्रेशुक्रचन्द्रबुधानामुदयोयदि ॥ १९८ ॥
षण्मासेषुचदुर्भिक्षमतिवृष्टिःप्रजायते ।
उदितौचबुधक्षेत्रेयदिराहुशनैश्चरौ ॥ १९९ ॥

सूर्यके घरमें शनि सोम भृगूदय हो तो वृद्धि हो। और चन्द्र क्षेत्रमें शुक्र चन्द्र बुधका उदय हो तो अति वर्षासे छः महीने दुर्भिक्ष हो। यदि बुधके घरमें शनि राहु उदय हों तो ॥ १९८ ॥ १९९ ॥

पशुक्षयःप्रजापीडाधान्यानांचमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रेचसोमश्चसूर्यपुत्रोदयोयदा ॥ २०० ॥

पशुक्षय, प्रजामें पीडा और धान्य महँगे हों । शुक्रके घरमें सोम शनि उदय हों तो ॥ २०० ॥

राजयुद्धंचधान्यानांजायतेतिमहर्घता ।
यदोदयःशनिक्षेत्रेभौमभास्करयोर्भवेत् ॥ २०१ ॥

राजाओंमें युद्ध और अन्नकी महंगाई हो । यदि शनिक्षेत्रमें भौम भास्कर उदय हों तो ॥ २०१ ॥

घृतादीनांतदावृद्धिर्गुडानांरक्तवाससाम् ।
यदासमुदयंयातिशनिक्षेत्रेशनैश्चरः ॥
तदास्यात्तृणकाष्ठानांलोहानांचमहर्घता ॥२०२

घी गुड और लाल कपडोंकी वृद्धि हो । यदि शनिके घरमें शनि उदय हो तो घास काठ और लोहादिकी महंगाई हो ॥ २०२ ॥

कार्त्तिक शुक्ल नवमीको यदि पांच ग्रह एक राशिमें हों तो अकाल वर्षा (विना चौमासे) मेंभी ऐसी महावर्षा हो कि नदियां पानीसे खूब भरी हुई बहैं ॥ २०८ ॥

मार्गशीर्षेग्रहाःपंचयदिस्युरेकराशिगाः ।
तदाजनेतिमारीस्यान्नृपस्यमरणंक्वचित् ॥ २०९ ॥

यदि मगशिरमें पांच ग्रह एक राशिमें हों तो मनुष्योंमें महामारी हो और कहीं राजाभी मरे ॥ २०९ ॥

अथ ग्रहवेधाद्वस्तुविशेषे महर्घसमर्घम् ।

सौम्यवेधेसमर्घत्वंक्रूरवेधेमहर्घता ।
देशःकालश्चवस्तूनिग्रहवेधेत्रिषुस्मृतः ॥ २१० ॥

" अब ग्रहोंके वेधसे अनेक वस्तुओंकी तेजी मंदी कहते हैं ।"

' * समरसार ' आदि कईएक ग्रन्थोंमें ' सर्वतोभद्र ' नामक चक्रका वर्णन किया गया है उस चक्रको लिख कर उसमें जिस समयकी तेजी मंदी देखनी हो उसी समयके ग्रहोंको (जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उसी पर) स्थापन करके वेधका विचार करे। जो नक्षत्र सौम्य ग्रहोंसे विद्ध होता हो तो समर्घता और क्रूर ग्रहोंसे वेधा गया हो तो महर्घता होती है। देश काल और वस्तु, तीनोंमें ग्रह वेधका विचार करना चाहिये ॥ २१० ॥

व्रीहिर्यवाश्चचणकाहीरकाधातवस्तिलाः ।
कृत्तिकावेधतोमासानघ्याम्यादितोसुखम् ॥२११॥

चावल, जौ, चने, तिल, और हीरा तथा सब धातु यह वस्तु कृत्तिकानक्षत्रके वेधसे महँगी होती हैं और दक्षिण दिशासे असुख होता है ॥ २११ ॥

---

* हमारा बनाया हुआ ' समरसार ' ' श्रीवेंकटेश्वर ' प्रेस बम्बईमें छपा है उसमें यह चक्र बहुत ही स्पष्ट लिखा है । (अनुवादक)

रोहिण्याःसर्वधान्यानिसर्वेरसाश्चधातवः ।
जीर्णाःकंबलकाःप्राच्यामसुखंदिनसप्तकम्॥२१२॥

यदि रोहिणीको क्रूर ग्रह वेधते हों तो सब धान्य, सब रस, सब धातु और पुरानी कंबल महँगी हों और पूर्वमें सात दिन असौख्य हो॥ २१२ ॥

मृगशीर्षेऽश्वमहिषीगावोलाक्षादिकोद्रवः ।
विविधानिजलान्नानिपीडाचषष्टिवासरान् ॥२१३॥

मृगशिरपर क्रूर वेध हो तो भैंस, गाय, लाख और कोदूं तथा कई प्रकारके जलके अन्न वस्तु आदि महँगे हों और साठदिन पीडा बढे२१३

आर्द्रायांतैललवणसर्वक्षाररसादयः ।
श्रीखंडादिसुगंधीनिमासेस्यात्पश्चिमाऽसुखम् २१४

आर्द्रामें तेल, लूण, सब तरहकी खारी वस्तु तथा रसादिक और मलयागिरी चंदन आदि सुगंधित वस्तुएं महीनेभर महँगी रहैं और पश्चिममें असुख हो॥ २१४ ॥

पुनर्वस्वोःस्वर्णसूतकार्पासश्चतथातिलः ।
कुसुम्भःश्यामकौशेयंमासयुग्मोत्तरासुखम् ॥२१५॥

पुनर्वसुमें सोना, सूत, कपास, तिल, कसूंभा और श्याम तथा रेशमी रंग दो मास महँगे हों उत्तरमें असुख हो ॥ २१५ ॥

पुष्येस्वर्णघृतंरूप्यंशालिशोचलसर्षपाः ।
सर्जिकातैलहिंग्वादियाम्यपीडाष्टमासिकी २१६॥

पुष्यमें सोना चांदी घी चावल संचरलून सरसों साजी तेल और हींग महँगे हों तथा दक्षिणमें आठ महीनेकी पीडा हो ॥ २१६ ॥

आश्लेषायांचमंजिष्ठागोधूमश्चमसूरिकाः ।
मरिचंकोद्रवाःशालिमासिकंपश्चिमासुखम् ॥२१७॥

आश्लेषामें मँजीठ मसूर गेंहू मिर्च कोदूं और शालि यह महँगे होते हैं और पश्चिममें असुख होता है ॥ २१७ ॥

मघायांतिलतैलाज्यप्रवालचणकागुडाः ।
अतसीदक्षिणेदेशेविग्रहश्चाष्टमासिकः ॥ २१८ ॥

मघामें तिल तेल घी मूंग चने गुड अलसी महँगे हों दक्षिणमें विग्रह हो ॥ २१८ ॥

पूफायांकंवलोर्णादियुगंधरीतिलास्तथा ।
रजतंवस्तुजातानियाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥२१९॥

पूर्वाफाल्गुनमें कंवल-ऊन युगंधरी तिल और चांदी महँगी हों दक्षिणमें पीडा हो ॥ २१९ ॥

उफायांमाषमुद्गाद्यंतंदुलाःकोद्रवःपुनः ।
सैंधवंलशुनंसर्जिमासेयुग्मोत्तरापथा ॥ २२० ॥

उत्तराफाल्गुनीमें उडद मूंग चावल कोदूं सींधानमक लहसुन और साजी महँगे हों ॥ २२० ॥

हस्तेश्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा ।
रक्तचंदनकंदादिमासयुग्मोत्तराऽसुखम् । २२१ ॥

हस्तमें चन्दन कपूर देवदारु अगर लाल चंदन और कंद आदि महँगे हों उत्तरमें असुख हो ॥ २२१ ॥

स्वर्णरत्नंतुचित्रायांगुडमाषप्रवालकम् ।
अश्वादिवाहनंमासद्वयंपीडोत्तरादिशि ॥ २२२ ॥

चित्रामें सोना, रत्न, गुड, उडद, मूंगा और घोडे आदि महँगे हों दोमास उत्तरमें पीडा हो ॥ २२२ ॥

स्वातौपूगीमरिचंसर्षपतैलादिराजिकाहिंगुः ।
खर्जूरादिकपीडासप्तदिनान्युत्तरेदेशे ॥ २२३ ॥

स्वातिमें सुपारी मिर्च सरसों तेल हींग राई और खजूर महँगे हों ७ दिन उत्तरमें पीड़ा हो ॥ २२३ ॥

विशाखायांयवाःशालिगोधूमामुद्गराजिका।
मसूरान्नमकुष्टाचयाम्यपीडाष्टमासिकी ॥ २२४ ॥

विशाखामें जौ चावल गेहूं मूंग राई मसूर और मकडा महँगे हों दक्षिणमें पीडा हो ॥ २२४ ॥

राधायांतुवरीसर्वद्विदलान्नंचतण्डुलाः ।
मकुष्टकाश्चणकाःप्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥ २२५ ॥

अनुराधामें तूअर आदि सब तरहकी दालके अन्न चावल मकोय और चने महँगे हों ॥ २२५ ॥

ज्येष्ठायांगुग्गुलंगुडंलाक्षाकर्पूरपारदाः ।
हिंगुश्चबहुकांस्यानिप्राक्पीडादिनसप्तकम्॥२२६॥

ज्येष्ठामें गूगल गुड लाख कपूर पारा हींग और कांसी महँगी हों पूर्वमें पीडा हो ॥ २२६ ॥

मूलेश्वेतानिवस्तूनिरसधान्यादिसैंधवम् ।
कार्पासलवणाद्यंचमासिकंपश्चिमासुखम् ॥२२७॥

मूलमें सफेद वस्तु, रस, धान्यादि,सेंधानमक, कपास और नमक महँगे हों ॥ २२७ ॥

पूषायांजनतुषधान्यघृतंकंदमूलचूर्णादि ।
वेद्यंसशालिपश्चिमदिशिमासिकमशुभमन्यदा२२८

पूर्वाषाढमें जन तुष धान्य, घी कंद मूल फल चूर्ण और धान महँगा हो पश्चिममें अशुभ हो ॥ २२८ ॥

उषायामश्ववृषभागजलोहादिधातवः ।
सर्वंचसारवस्त्वाद्यंप्राग्व्यथादिनसप्तकम् ॥ २२९॥

उत्तराषाढमें घोडे बैल हाथी लोह पीतल तांबा और सब सार वस्तु महँगी हों ॥ २२९ ॥

द्राक्षाखर्जूरपूगैलामुद्राजातिफलंहयाः ।
अभिजिद्वेधतःपूर्वांयथावादिनसप्तकम् ॥ २३० ॥

अभिजित्के वेधसे दाख, खजूर सुपारी मूंग जायफल असगंध यह महँगे हों ॥ २३० ॥

श्रवणेशर्करादीनिपिप्पलीपूगमालिका ।
तुषधान्यानिवेधानिप्राक्शुभंसप्तवासरान् ॥ २३१ ॥

श्रवणमें शक्कर आदि मिठाईयां पीपलि सुपारी तुष धान्य महँगे हों पूर्वमें शुभ हो ॥ २३१ ॥

धनिष्ठायांस्वर्णरूप्यधातवश्चविशेषतः ।
मणिमौक्तिकमन्नादिसप्ताहंपूर्वतःशुभम् ॥ २३२ ॥

धनिष्ठामें सोना चांदी मणि मोती महँगे हों पूर्वमें सात दिन शुभ हों ॥ २३२ ॥

तैलंकोद्रवमद्यादिधातकीपत्रमूलकम् ।
वल्लीशतभिषग्वेधंवारुण्यांमासिकंशुभम् ॥ २३३ ॥

शतभिषामें तेल कोदूं मदिरा पीपलि मूली बेलि महँगे हों पश्चिममें शुभ हो ॥ २३३ ॥

प्रियंगुमूलजात्यादिसर्वधान्यानिधातवः ।
सर्वौषधंदेवदारुयाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥ २३४ ॥

पूर्वाभाद्रपदमें प्रियंगु–जायफल, धान्य, धातु, और औषधियां महँगी हों दक्षिणमें पीडा हो ॥ २३४ ॥

उत्तराभाद्रपाद्वेध्यमथोभावेयमुच्यते ।
गुडःखण्डाःशर्कराचखलंतिलाश्चशालयः ॥ २३५ ॥

उत्तराभाद्रपदमें गुड सक्कर खाण्ड खली और तिल महँगे हों २३५

घृतंमणिमौक्तिकानिवारुण्यांमासिकंशुभम् ।
पौष्णेश्रीफलपूगादिमौक्तिकंमणयोऽपिच ॥२३६॥

रेवतीमें मणि मोती श्रीफल सुपारी यह महँगे हों और पश्चिममें शुभ हो ॥ २३६ ॥

अश्विन्यांव्रीहयोजूर्णविखरोष्ट्रघृतादिकम् ।
सर्वाणिधान्यवस्त्राणिमासद्वयोत्तरातथा ॥ २३७॥

अश्विनीमें चावल जून (तृण) विशेषरूपके गधे (खच्चर) ऊँट घी सब धान्य और वस्त्र महँगे हो उत्तरमें दो मास अशुभ हो २३७

भरण्यांतुयवधान्यानियुगन्धरीचवेध्यते ।
मरिचाद्यौषधंसर्वंयाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥ २३८॥

और भरणीपर क्रूर ग्रहोंका वेध हो तो जौ गेहूँ चावल युगंधरी और सोंठ मिर्च पीपल आदि औषधियां यह महँगी हों और दक्षिणमें पीडा हो ॥ स्मरण रहे कि उपरोक्त नक्षत्रोंको क्रूर ग्रह वेधैंगे जब तो यह वस्तु महँगी होंगी और सौम्य ग्रह वेधैंगे तो यही उपरोक्त सब वस्तुयें सस्ती होंगी ॥ २३८ ॥ (इति)

(६) अथसंवत्सरस्यशुभाशुभसूचककारणान्याह ।

रक्तमुत्पलवर्णाभंयद्याकाशंतुकार्त्तिके ।
तदाशुभंभाविवर्षंसन्ध्यायांतन्नशोभनम् ॥ २३९॥

(६) अब संवत्सरके अच्छे बुरे होनेके और कारण बतलाते हैं । "-यदि कार्तीकमें लाल कमलके वर्ण जैसा आकाश हो तो भावी वर्ष अच्छा हो किन्तु वह सन्ध्यामें अच्छा नहीं ॥ २३९ ॥

तुषारपतनंमार्गेपौषेहिमसमुद्भवः ।
माघमासेतिशीतंचफाल्गुनेदुर्दिनंशुभम् ॥ २४० ॥

मगशिरमें ओले पड़ें तो अच्छे, पौषमें बर्फ पड़े तो अच्छी माघ

मासमें अधिक शरदी पडे तो अच्छी और, फाल्गुनमें भयानक दिन हों तो अच्छे हैं ॥ २४० ॥

फाल्गुनेकालवातोपिचैत्रेकिंचित्पयोहितम् ।
वैशाखःपंचरूपंस्याज्ज्येष्ठोघर्मान्वितःशुभः ॥ २४१ ॥

फागणमें प्रचण्डवायु-चैत्रमें बूंदा बांदी-वैशाखमें पांच रूप और जेठमें अधिक गर्मी पड़े तो अच्छी है ॥ २४१ ॥

आषाढेश्रावणेभाद्रआश्विनेलक्षणंचयत् ।
तदन्यभाज्ज्ञापनीयंसंवत्सरशुभाशुभम् ॥ २४२ ॥

आषाढ श्रावण भादवा और आश्विन इनमें जो लक्षण होने चाहिये सो अन्यत्र बतलाये हैं । इन सब लक्षणोंसे भावी वर्षका शुभाशुभ जानना चाहिये ॥ २४२ ॥

आर्द्राज्येष्ठेनष्टचन्द्रेप्रथमायाःपुनर्वसुः ।
द्वितीयापुष्यसंयुक्ताजलंधान्यंतृणंनच ॥ २४३ ॥

जेठकी अमावसको आर्द्रा, पडवाको पुनर्वसु और दोयजको पुष्य हो तो इस वर्षमें अन्न जल और घास कुछ नहीं हो ॥ २४३ ॥

कृष्णपक्षेश्रावणस्यैकादश्यांरोहिणीचभम् ।
यावद्घटीप्रमाणंस्यात्तावद्धान्यस्यविक्रयः ॥ २४४ ॥

श्रावण कृष्ण एकादशीके रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतने ही सेर अन्न उस वर्षमें कार्तिक पीछे बिके ॥ २४४ ॥

यस्मिन्संवत्सरेयावद्दशमीरविवासरः ।
घटीप्रमाणमालोक्यशिवेधान्यस्यविक्रयः ॥ २४५ ॥

जिस वर्षमें शुक्ल पक्षके दशमी दीतवार कुल जितने घडी हों उ-सेर धान्य बिकता है ॥ २४५ ॥

द्विपञ्चाशद्युतेवर्षेदिवसानांशतत्रये ।
सुभिक्षंकेचिदप्याहुःपरंदेशेषुविग्रहः ॥ २४६ ॥

जिस वर्षमें तिनसौ बावन दिन हों उसको कई शुभ कहते हैं किन्तु देशमें उपद्रव हो ॥ २४६ ॥

बाणेषुत्रिदिनेकालोमध्यमोद्रिशरत्रिभिः ।
वर्षंखषट्त्रिभिःश्रेष्ठंसुभिक्षंतत्रनिश्चितम् ॥ २४७ ॥

जिस वर्षमें ३५५ दिन हों वह मध्यम होता है । ३५७ दिन हों वह शुभ होता है और जिसमें पूरे तीनसौ साठ दिन हों वह श्रेष्ठ होता है उसमें निश्चय सुभिक्ष हो ॥ २४७ ॥

अक्षय्यायांतृतीयायांसंध्यायांसप्तधान्यकम् ।
पुंजीकृत्यस्थापनीयंपृथक्कृत्वातरोरधः ॥ २४८ ॥

"अक्षय तृतीया वरीया," आखातीज (वैशाख शुक्ल तीज) की संध्याके समय सातों धान्य लेकर एक वृक्षके नीचे उनकी ढेरी लगावे ॥ २४८ ॥

यदाविकीर्णंतद्धान्यंतद्वर्षेबहुजायते ।
यत्पुञ्जरूपवातिष्ठेन्नैवनिष्पद्यतेपुनः ॥ २४९ ॥

उस ढेरीमेंसे जो जो अन्न बिखर जाँय वे उस वर्षमें बहुत उत्पन्न हों । और जो ढेरी रूपसे ज्योंके त्यों धरे रहें वे उस वर्षमें नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २४९ ॥

अक्षय्यायांतृतीयायांप्रपूर्येद्भाण्डमम्बुना ।
गर्भविलोकयेन्मध्येतत्स्वरूपंविमृश्यते ॥ २५० ॥

अक्षय तृतीयाको एक बर्तन (थाली आदि) में जल भर कर उसमें सूर्यको देखे और उसके रूपका विचार करे ॥ २५० ॥

रक्तेसूर्येविग्रहःस्यान्नीलेपीतेमहारुजः ।
श्वेतेसुभिक्षंजायेतधूसरेदुःखमूषकाः ॥ २५१ ॥

यदि उसमें सूर्य लाल दीखे तो विग्रह हो नीला अथवा पीला दीखे तो दुनियामें महा रोग हो । सफेद दीखे तो सुभिक्ष हो और धूआँकासा दीखे तो चूहोंका दुःख हो ॥ २५१ ॥

अथाषाढीविचारमाह ।–

आषाढ्यां समतुलिताधिवासितानामन्येद्युर्यदधिकतामुपेतिबीजम् । तद्वृद्धिर्भवतिनजायतेयदूनं मंत्रोस्मिन्भवतितुलाभिमंत्रणाय ॥ २५२ ॥

" आषाढी पूर्णिमाका विचार"–(उत्तराषाढ युक्त) आषाढ शुक्ल पूर्णिमाके दिन अधिवासित समस्त बीजोंको (धान्योंको) जुदे जुदे बराबर पूरे तौलकर और उनको अभिमंत्रित करके एक रातभर रख छोडे और फिर दूसरे दिन उस तुला (तराजू) को नीचे लिखे मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर उन सब बीजोंको फिर तौले । उनमेंसे जो जो बीज तौलमें घटे वह उस वर्ष नहीं हों और जो बढें वे उस वर्षमें अधिक हों। इसी प्रकार देश–गाँव और मनुष्योंकी भी परीक्षा की जाती है ॥ २५२ ॥

स्तोतव्यामंत्रयोगेनसत्यादेवीसरस्वती ।
दर्शयिष्यसियत्सत्यंसत्येसत्यव्रताह्यसि ॥२५३ ॥

सत्यात्मिका सरस्वती देवीकी इस मंत्रसे इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये कि हे सरस्वती देवी ! आप सचाईके सम्बन्धमें सच्चे व्रतवाली हैं इस लिये जो सत्य हो सो आप दिखादें।ऐसी स्तुति करनेसे जो सत्य होगा सो मालूम होजायगा ॥ २५३ ॥

येनसत्येनचन्द्रार्कौमहाज्योतिर्गणास्तथा ।
उत्तिष्ठन्तीहपूर्वेणपश्चादस्तंव्रजन्तिच ॥ २५४ ॥

जल तौलमें बढे तो थोडी वर्षा, झरनेका बढे तो मध्यम, तलावका बढे तो उत्तम और सबही जल बढें तो भारी वर्षा हो तथा कुछभी न घटे तो वर्षा नहीं हो ॥ २५८ ॥

दन्तैर्नागागोहयाद्याश्चलोम्नाहेम्नाभूपाःसिक्थकेनद्विजाद्याः । तद्वद्देशावर्षमासादिशश्चशेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥ २५९ ॥

हाथीदाँतके तौलसे हाथियोंका लोमोंसे गौ आदिका, सोनेसे राजाओंका और सिक्थक अर्थात् एक ग्रास भर अन्नसे ब्राह्मणादि वर्णोंका न्यूनाधिक्य होना जानना चाहिये । और इसी भाँति देश, वर्ष, मास, दिशामें तथा अन्य द्रव्योंकीभी आत्मरूप पदार्थोंके तौलसे स्थिति मालूम करनी चाहिये ॥ २५९ ॥

हैमीप्रधाना रजतेन मध्या तयोरलाभेखदिरेण कार्या । विद्धः पुमान्येनशरेणसावातुलाप्रमाणेन भवेद्वितस्तिः ॥ २६० ॥

यदि तराजू सोनेकी हो तो सबसे अच्छी, चांदीकी हो तो मध्यम और दोनों न हों तो खैरीकी करनी चाहिये अथवा जिस बाणसे कोई विधा हो उसकी १२ अंगुलकी डंडी बनानी चाहिये ॥२६०॥

हीनस्य नाशोऽभ्यधिकश्चवृद्धिस्तुल्येनतुल्यंतुलिनंतुलायाम् । एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तंप्रजशायोगेपिनरोविदध्यात् ॥ २६१ ॥

तुलामें तुली हुई वस्तुमें तौलमें कम हों तो हानि-बढे तो वृद्धि और तुल्य (समान) हों तो सम हो । यह तुला कोश रहस्यमें लिखा है । इसको रोहिणी योगमें भी देखना चा[illegible] ॥

अथ कुसुमलताफलम् ।

फलकुसुमसंप्रवृद्धिंवनस्पतीनांविलोक्यविज्ञेयम् ।
सुलभत्वंद्रव्याणांनिष्पत्तिश्चापिसस्यानाम्॥२६२॥

" अब पृथ्वीपर खडे हुए पुष्प, लता आदिसे वर्षाका शुभाशुभ कहते हैं। " वृक्षोंके फल फूलोंकी वृद्धि देखकर सब वस्तुओंकी सुलभता और खेतीकी उत्पत्ति जानीजातीहै ॥ २६२ ॥

शालेनकलमशालीरक्ताशोकेनरक्तशालिश्च ।
पाण्डूकःक्षीरिकयानीलाशोकेनशूकरकः ॥२६३॥

शाल वृक्षके फल फूलोंकी वृद्धिसे कलम शालीकी वृद्धि होतीहै। लाल अशोकसे लाल शाली-दूधीसे पाण्डूक और नीले अशोकसे शूकर धान्यकी वृद्धि होती है ॥ २६३ ॥

न्यग्रोधेनतुयवकस्तिन्दुकवृद्ध्याचषष्टिकोभवति ।
अश्वत्थेनज्ञेयानिष्पत्तिःसर्वसस्यानाम् ॥ २६४ ॥

बडकी वृद्धिसे यवक तेंदूकी वृद्धिसे साठी, और पीपलकी वृद्धिसे सब खेतिया होती हैं ॥ २६४ ॥

जम्बूभिस्तिलमाषाःशिरीषवृद्ध्याचकंगुनिष्पत्तिः ।
गोधूमाश्चमधूकैर्यववृद्धिःसप्तपर्णेन ॥ २६५ ॥

जामनकी वृद्धिसे तिल और उडद, सिरसकी वृद्धिसे कांगनी, महुएसे गेहूं और सप्तपर्णा(सतपत्ती) से जौंकी वृद्धि होती है॥२६५॥

अतिमुक्तककुन्दाभ्यांकार्पासःसर्षपाअसनैः ।
बदरीभिश्चकुलत्थान्चिरबिल्वेनादिशेन्मुद्गान् २६६

अतिमुक्तक और कुन्दसे कपास, असनसे सरसों, बेरसे कुलथी और बेलकी वृद्धिसे मूंग अधिक होते हैं ॥ २६६ ॥

अतसीवेतसपुष्पैःपलाशकुसुमैश्चकोद्रवाज्ञेयाः ।
तिलकेनशंखमौक्तिकरजतान्यथाचेंगुदेनशणाः२६७

-वेतके फूलोंकी वृद्धिसे अलसी, पलासके फूलोसे कोदों, तिलकके वृक्षसे शंख मोती और चांदी और ईंगुदीकी वृद्धिसे सणकी वृद्धि होती है ॥ २६७ ॥

कारणश्चहस्तिकरणैरादेश्यावाजिनोश्वकर्णेन ।
गावश्चपाटलाभिःकदलीभिरजाविकंभवति॥२६८॥

लाल एरंडकी वृद्धिसे हाथियोंकी, अश्वकर्णकी वृद्धिसे घोड़ोंकी पाडलकी वृद्धिसे गायोंकी और केलोंसे भेड़ बकरीकी वृद्धि होती है ॥ २६८ ॥

चम्पककुसुमैःकनकंविद्रुमसंपच्चबंधुजीवेन ।
कुरबकवृद्धयावज्रंवैदूर्यंनन्दिकावर्तैः ॥ २६९ ॥

चंपेके फूलोंसे सोनेकी, गुल दुपहरियेसे मूंगेकी, कुरबकसे हीरेकी और नन्दिकावर्तकी वृद्धिसे वैडूर्य मणिकी वृद्धि होती है ॥ २६९॥

विन्द्याच्चसिन्दुवारेणमौक्तिकंकारुकान्कुसुम्भेन ।
रक्तोत्पलेनराजामंत्रीनीलोत्पलेनोक्तः ॥ २७० ॥

सिंधुवालकी वृद्धिसे मोती, कसूंभेकी वृद्धिसे कारीगरोंकी, लाल कमलसे राजाओंकी और नीले कमलोंसे राज मंत्रियोंकी वृद्धि होती है ॥ २७० ॥

श्रेष्ठीसुवर्णपुष्पैःपद्मैर्विप्राःपुरोहिताःकुमुदैः ।
सौगंधिकेनबलपतिरर्केणहिरण्यपरिवृद्धिः॥२७१॥

सोनेके फूलोंसे सेठोंकी, कमलोंसे ब्राह्मणोंकी, कुमुदोंसे राजपुरोहितोंकी, सुगन्धित पुष्पोंसे सेनापतिकी और आककी वृद्धिसे सोनेकी वृद्धि होती है ॥ २७१ ॥

आम्रैः क्षेमं भल्लातकैर्भयं पीलुभिस्तथारोग्यम् ।
खदिरशमीभ्यां दुर्भिक्षमर्जुनेशोभनावृष्टिः ॥ २७२॥

आमकी वृद्धिसे कल्याण, भिलावेसे आरोग्यता-खेजड़ेसे दुर्भिक्ष (इसकी फली सांगरेसे सुभिक्ष) और अर्जुनकी वृद्धिसे वर्षाकी वृद्धि होती है ॥ २७२ ॥

पिचुमन्दनागकुसुमैः सुभिक्षमथमारुतः कपित्थेन ।
निचुलेनावृष्टिभयं व्याधिभयं भवतिकुटजेन२७३॥

नीम और नागकेसरके फूलोंसे सुभिक्ष, कैथसे पवन वेग, निचुलसे वृष्टि भय, और कुटजकी वृद्धिसे रोग भय होता है ॥ २७३ ॥

दुर्वाकुशकुसुमाभ्यांभिक्षुर्वह्निश्चकोविदारेण।
श्यामालताभिवृद्धयाबन्धक्योवृद्धिमायान्ति २७४

दूर्वा और दर्भोंकी वृद्धिसे तथा पुष्पोंकी वृद्धिसे ईखकी, कोविदारसे अग्निकी और श्यामलतासे व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी वृद्धि होती है ॥ २७४ ॥

यस्मिन्कालेस्निग्धनिश्छिद्रपत्राः संदृश्यन्तेवृक्ष-
गुल्मालताश्च । तस्मिन्वृष्टिः शोभनासंप्रदिष्टारूक्षै-
श्छिद्रैरल्पमंभः प्रदिष्टम् ॥ २७५ ॥

जिस वर्षमें वृक्ष (बड़ेपेड़) गुल्म (छोटेपेड़) वल्ली (बेलड़ी) और अन्य प्रकारकी वनस्पतियां चिकने तथा छेद रहित पत्तोंसे युक्त हों तो उस वर्षमें उत्तम वर्षा होती है । और जो उनके पत्ते रूखे सूखे तथा छेदवाले हों तो कम वर्षा होती है। ऊपर लिखे मुताबिक प्रति वर्ष निरीक्षण करके जांच करनी चाहिये ॥ २७५ ॥

काकागत।

काकस्याण्डानिचत्वारिवारुणंप्रथमंस्मृतम् ।
तथाद्वितीयमाग्नेयंवायवीयंतृतीयकम् ।
चतुर्थंभूमिजंप्रोक्तमेषांफलमथोदितम् ॥ २७६ ॥

"कागकी चेष्टाओंसे शुभाशुभका ज्ञान"–
कागके वारुण–आग्नेय–वायवीय और भूमिज यह चार अण्डे होते हैं ॥ २७६ ॥

क्षेमंसुभिक्षंसुखिताचधात्रीस्याद्भूमिजेण्डेमहती चवृष्टिः । पृथ्वीतथानंदतिसस्यमाद्यंवर्षाविशेषेणजलाण्डतःस्यात् ॥ २७७ ॥

यदि भूमिज अण्डा हो तो क्षेम सुभिक्ष और पृथ्वी सुखी तथा आनन्द युक्त हो वर्षा श्रेष्ठ खेती अच्छी हो और वारुणी हो तो अधिक वर्षा हो ॥ २७७ ॥

जातानिधान्यानि समीरजाण्डे खादंतिकीटाः शलभाःशुकाश्च । दुर्भिक्षमण्डेग्निभवेनिवेद्यंजानीहिमासाश्चतुरोपिचाण्डे ॥ २७८ ॥

वायवीय अंडा हो तो खेती अच्छी हो किन्तु टीडी तोते खाजाँय और अग्नि संज्ञक हो तो दुर्भिक्ष पड़े । इस प्रकार चौमासेमें अंडोंके अनुसार फल कहे । आषाढ आदि चार महीनोंमें उपरोक्त चार भाँतिके अंडे होते हैं ॥२७८ ॥

काकालयःप्राग्दिशिभूरुहस्यसुभिक्षकृत्स्वल्पघनस्तथाग्नौ । मासद्वयंवृष्टिकरोतिप्रूर्वंततोनवृष्टिर्दिमयातएव ॥ २७९ ॥

यदि कागका घोंसला वृक्षमें पूर्वकी तर्फ हो तो सुभिक्ष, अग्नि कोणकी तर्फकी डालियोंमें हो तो कम वर्षा और दक्षिणमें हो तो केवल दो मास मेह वर्षे ॥ २७९ ॥

मासद्वयेतीवघनःप्रतीच्यांनिष्पत्तिरन्नस्यतदोच्च-
भूम्याम् । ततोल्पवृष्टिर्यदिवाल्पवर्षासवातवृष्टिः
पवनस्यकोणे ॥ २८० ॥

पश्चिमकी तर्फकी डालियोंमें हो तो दो मास बहुत बादल रहैं. ऊंची भूमिमें अन्न अधिक हो और वायव्यमें हो तो थोडी वर्षा हो अथवा पवन पानी दोनों हों ॥ २८० ॥

पूर्वंनवृष्टिर्निर्ऋतौपयोदाःपश्चाद्घनोलोकसरोग-
ताच। स्यादुत्तरस्यांभवनेसुभिक्षमीशानभागे-
पिसुखंसुभिक्षम् ॥ २८१ ॥

नैर्ऋत्यमें हो तो पहले वर्षा न हो पीछे हो—और रोग पैदा हो उत्तरमें हो तो सुभिक्ष हो और ईशानमें घोंसला हो तो अच्छा संवत् हो ॥२८१ ॥

वृक्षाग्रेतुमहावर्षावृक्षमध्येतुमध्यमा ।
अधःस्थानेनैववर्षावृक्षेकाकालयाद्वदेत् ॥ २८२ ॥

वृक्षकी चोटीपर घोंसला हो तो महावर्षा हो, बीचमें हो तो मध्यम वर्षा हो । और नीचे पेडहीमें हो तो वर्षा नहीं हो ॥ २८२॥

वृक्षकोटरकेगेहप्रकारेकाकमालयम्।
दुर्भिक्षंविग्रहोराज्ञांयाम्यांछन्नस्यपातनम् ॥२८३॥

यदि वृक्षके कोटरेमें कागका घर हो तो दुर्भिक्ष हो और राजा-ओंमें विग्रह हो ॥ २८३ ॥

नदीतीरेकाकगृहेमेघप्रश्नेनवर्षणम् ।
पक्षौविधूनयन्काकोवृक्षाग्रेशीघ्रमेघकृत् ॥ २८४ ॥
नदीके किनारे घोंसला हो तो वर्षा नहीं हो और यदि काग पंख कँपाकर वृक्षके आगे बैठा हो तो जल्दी वर्षा हो ॥ २८४ ॥

अन्यप्रयोग ।

ग्रामाद्बहिश्चनिर्गत्यस्वस्थानेमण्डलंलिखेत् ।
संपूज्यशकुनंवीक्ष्यकाकेंगितविनिर्णयः ॥ २८५ ॥
" अब कागका कुछ और तंत्र कहते हैं । "–
कागकी चेष्टाओंका निर्णय करनेके लिये गाँवसे बाहर जाकर एक अच्छी जगहमें मंडल लिखे और (उसमें आगे बताई हुई विधिकी क्रिया करके) पूजन करे ॥ २८५ ॥

कपिलानांशतंहत्वाब्राह्मणानांशतद्वयम् ।
तत्पापंपरिगृह्णासियदिमिथ्याबलिंहरेः ॥ २८६ ॥
फिर कागसे कहे कि सौ गाय और दोसौ ब्राह्मणोंके (भूखे-मारनेका) जो पाप होता है वह पाप तेरेको हमारी दी हुई बलिको मिथ्या हरण करनेसे होगा । अर्थात् तू सत्य फलदायी बलिको हरण करना ॥ २८६ ॥

शाल्योदनेनसाज्येनकृत्वापिंडचयंबुधः ।
संमार्जितेशुभेस्थानेस्थापयेन्मंत्रपूर्वकम् ॥ २८७ ॥
यह कह कर चावलोंके आटेमें घी मिलाकर चार पिंड बनावे और पोते हुए शुभस्थानमें उनको मंत्र पूर्वक स्थापन करे ॥२८७ ॥
(मंत्रोयथा । ॐतुंडब्रह्मणे सुराय । असुरेन्द्राय हिरण्यपुण्डरीकायस्वाहा ॥ १ ॥)

आह्वानमंत्र ॥ ॐ तिरितिमिरिटिकाकपिंडालये स्वाहा । पिंडाभिमंत्रणम् ॥ २ ॥
देशकालपरीक्षार्थंवृषभंचाद्यपिंडके ।
द्वितीयेतुरगंन्यस्यतृतीयेहस्तिनंक्रमात् ॥ २८८ ॥
और हुंडेति इससे आवाहन और तिरिति इससे अभिमंत्रण करें फिर देश कालकी परीक्षाके निमित्त पहले पिंड पर बैलका चिह्न दूसरेपर घोडेका और तीसरे पर हाथीका चिह्न करे ॥ २८८ ॥

वर्षाज्ञानायसंस्थाप्यप्रथमेपिंडकेजलम् ।
द्वितीयेमृत्तिकास्थाप्यातृतीयेंगारकःपुनः ॥२८९॥
और वर्षके ज्ञानके लिये पहले पिंड परजल दूसरे पर मिट्टी और तीसरे पर अंगारा रखे ॥ २८९ ॥

शीघ्रंवर्षतिपानीयेमृत्तिकायास्तुपिंडके ।
पक्षान्तेनतुवृष्टिस्याद‌ंगारेनास्तिवर्षणम् ॥ २९० ॥
यदि काग जल पिंडको स्पर्श करे तो शीघ्र वर्षा, मिट्टी वालेको करे तो पन्द्रह दिन पीछे और अंगारके को स्पर्श करे तो वर्षा नहीं हो ॥ २९० ॥ इति ।

अथ गवेंगितम् ।

गावोदीनापार्थिवस्याशिवायपादैर्भूमिकुट्टयन्तश्च रोगान् । मृत्युंकुर्वन्त्यश्रुपूर्णायतास्यःपत्युर्भीतास्तस्करानाह्वयन्त्यः ॥ २९१ ॥
"अब गौके ईंगित (इशारे) अथवा चेष्टा कहते हैं ।" यदि गौ उदास हो तो राजाको भय हो, पैरोंसे भूमिको कूटे तो रोगोत्पत्ति हो नेत्रोंमें आँसू भरे रहें तो मालिककी मृत्यु हो और भयभीत हो कर पटा शब्द करे तो चौर आवे ॥ २९१ ॥

अकारणंक्रोशतिचेदनर्थोभयायरात्रौवृषभःशिवाय। भृशंनिरुद्धोयदिमक्षिकाभिस्तदाशुवृष्टिःसरसात्मजैर्वा ॥ २९२ ॥

गौ विना कारण बोले तो अनर्थ हो, रातको बोले तो भय हो बैल बोले तो शुभ हो और यदि गायोंको मक्खी अथवा श्वान बहुत घेरें तो शीघ्र वर्षा हो ॥ २९२ ॥

आगच्छंत्योवेश्महम्बारवेणसंसेवन्त्योगोष्ठवृद्ध्यैगवांगाः। आर्द्राङ्ग्योयाहृष्टरोमण्यःप्रहृष्टाधन्यागावःस्युर्महिष्योपिचैवम् ॥ २९३ ॥

यदि 'हम्बा' शब्द पुकारती हुई गौ घरमें आवे और घरको सूंघे तो गायोंकी गोष्ठि बढे। यदि गायका अंग जलसे भीग रहा हो और रोमांच हों तथा गौ प्रसन्न हो तो शुभ होता है यह बात माहिषी (भैंस) में भी जानना चाहिये ॥ २९३ ॥

इत्येवंशकुनंविचार्यसुधियावाच्यंफलंवार्षिकंयस्योद्बोधनतोलभेद्बहुधनंसर्वार्थसंसाधनम्। राजन्यैरपिमान्यतेसनिपुणःप्रोल्लासिभास्वद्गुणः शास्त्रंयन्मनसिस्फुरत्यतिभयाच्छ्रीवर्षबोधाह्वयम् ॥२९४॥

इस प्रकार शकुनोंका विचार करके बुद्धिमानोंको संवत्सरका फल कहना चाहिये। क्योंकि इस विद्याके ज्ञानसे बहुत धन और सर्वार्थसिद्धि होती है। जो इस वर्षप्रबोधको जानते हैं वे चतुर और राजमान्य होते हैं और उसके श्रेष्ठगुण सर्वत्र विख्यात हो जाते हैं २९४

श्रीमत्तपागणविभुःप्रसृतप्रभावःप्रद्योततेविजयतांप्रभुनामसूरिः। तत्पादपद्मतरणिर्विजयादिरत्नःस्वामींगणस्थमहसाविजितद्युरत्नः ॥ २९५ ॥

तच्छासनेजयतिविश्वविभासनेऽभूद्विद्वान् कृपाब्धि-
रतुलन्निषेव्यमाणः। शिष्योस्यमेघविजयाह्वय-
वाडकोसौग्रंथःकृतःसुकृतलाभकृतेन्नतेन ॥ २९६ ॥

इन दोनों श्लोकोंमें वर्षप्रबोधके बनानेवालेका परिचय है॥२९५।२९६

अनुष्टुभांसहस्राणित्रीणिसार्द्धानिमानिता।
अथोयंवर्षबोधाख्योयावन्मेरुःप्रवर्त्तताम् ॥ २९७॥

इन ग्रन्थमें सब साढे तीन हजार श्लोकथे किन्तु उनमेंसे उपयोगी विषय लेकर इनको संक्षेप कर दिया है। अब यह ग्रन्थ सुमेरु तक प्रवृत्त हो ऐसी आशा है ॥ २९७ ॥

यत्पुनरुक्तमयुक्तंद्विरुक्तमिहतद्विशोधितुंयुक्तम्।
बद्धांजलिनेतिमयाभ्यर्थंसकतगीतार्थः॥ २९८ ॥

इस ग्रन्थमें जहाँ कहीं अयुक्त पुनरुक्ति अथवा द्विरुक्ति हुई हो उसको विद्वान् लोग ठीक करलें यह मेरी प्रार्थना है ॥२९८॥

भाविवत्सरबोधायतस्यबालस्यशालिनः।
कुरुतागुरुतांग्रंथोहितंबालस्यपालनात् ॥ २९९ ॥

इति श्रीमहामहोपाध्यायमेघविजयगणिविरचि-
तो वर्षप्रबोधः समाप्तः।

यह ग्रंथ आगामी संवत्सरके शुभाशुभ ज्ञानके होनेमें उपयोगी समझकर बालकोंके हितके निमित्त निर्माण किया गया है ॥२९९॥

इति श्रीमल्लक्ष्मीनारायणात्मजहनुमानशर्मलिखित भाषाटीका-
सहित वर्षप्रबोधके उत्तर भागका तीसरा स्थल समाप्त।

समाप्तोयं ग्रन्थः।

॥ विज्ञापन ॥

धर्मसखा-पुस्तकमाला।

नहाने, धोने, खाने, पीने, पहरने और सोने आदिके विषयमें हमारे प्राचीन महर्षियोंने जो नियम स्थिर किये थे उनके अनुसार आचरण करनेसे हिन्दू सन्तानोंको अनेकों लाभ होते हैं। किन्तु कई कारणोंसे आज कल कुलीन और सदाचारी लोगोंके भी आचरण बदल गये हैं। इसी बातको देख कर जयपुरके हनूमान शर्माने "धर्म सखा-पुस्तकमाला" का सम्पादन करना प्रारम्भ किया है। जिसके पाँच मित्र आज हमारे सामने उपस्थित हैं।

(१) प्रथम मित्र "स्नानविधि" है। इसमें घर पर कुएँ, तालाब नदी आदिपर-या तीर्थ पर अथवा चाण्डालादिसे स्पर्श हो जानेपर कहां किस भांति स्नान करना चाहिये-और नित्य या नैमित्तिक स्नानमें क्या विशेष होना चाहिये यह उत्तम रीतिसे लिखा है।

(२) दूसरा मित्र "भोजन विधि" है इसमें क्या खाना क्या नहीं खाना, कब खाना, कब नहीं खाना, कैसे बनाना, परोसना और कैसे खाना, तथा सखरानखरा किस प्रकार मानना और अकेले वा सामुदायिक भोजनमें किसी प्रकारसे आकस्मिक छूआछूत या दुर्घटना हो जाय तो क्या करना चाहिये इत्यादि भोजन सम्बन्धी सब बातें सरलतासे लिखी हैं।

(३) तीसरी पुस्तक-"शयनविधि" है। इसका नाम ही गुण-सूचक है।

(४) चौथी पुस्तक" व्यवहारविधि" है। यह धर्मके लिये फूंक दे देकर पांव रखनेमें डरनेवालोंके लिये अच्छी है। इसमें वर्तमान युगके उपयोगी धर्मव्यवहारकी अनेकों बातें हैं।

ज्योतिष ग्रन्थ।



नाम.	की. रु. आ.
अनेकवर्षोंका केलेन्डर	०-१॥
कीर्तिपञ्चाङ्ग—पं० महीधर शर्माकृत संवत् १९७८ का, अनेक मुहूर्त और प्रसिद्ध देशोंके अक्षांशादि सारणियों सहित...	०-६
गौरीजातक भाषाटीका	०-२
जन्मपत्री—बनानेके सचित्र कोष्टकादि	०-४
दशवर्षीय पञ्चाङ्ग—पं० मनीरामजी कृत संवत् १९८१से १९९० तक पञ्चाङ्गोपयोगी तिथि नक्षत्रादि सब विषय और विवाहोपनयनादि मुहूर्त हैं, ...	२-८
भविष्यफलभास्कर—भाषाटीकासमेत	१-८
भविष्यफल स. १९७८ का पं हरदेव शर्माका सालभरकी तेजी मदी रुई चांदी वगैरह	०-६
मनुष्यजातक—सटीक ज्योतिषका उत्तम ग्रन्थ है	१-४
मानवपञ्चाङ्ग—पं०—श्रीमनीरामजीकृत—सं० १९७८ और १९७९ तक तैयार है और १९८० तक भी है प्रत्येकका मूल्य	०-४
मुहूर्तचिन्तामणि मूल—विद्यार्थियोंके लिये उपयोगी	०-८
मुहूर्तदीपक सटीक—५८ शा. वि. छन्द के श्लोकोंमें प्रायः सभी मुहूर्त आगये है	०-४
वर्षप्रबोध भा. टी. पञ्चांग सम्बन्धी फलके विषयमें अच्छा है	२-०
वर्षफलबनानेका—सचित्र-फार्म यथास्थान फलादेश लिखनाही बाकी है	०-१
वाशिष्ठसंहिता—फलित ज्योतिषका अनुपम ग्रन्थ है	२-०
शतवार्षिकजन्त्री ई० स० १९१६ से २०१६ तक	०-२
सामुद्रिक प्रकाश—पं० महीधरशर्मा विरचित भाषाटीका सहित। इसमें ग्रहोंके योगोंसे विशेष चमत्कारिक फल ग्रहषड्बलादि गणित, अंशायु, पिण्डायु, निसर्गायु आदिका गणित, आयुका ठीक निश्चय है	२-८

एते गुहस्य रक्षार्थं कृत्तिकोमाग्निशूलिभिः ।
सृष्टाः शरवणस्थस्य रक्षितस्यात्मतेजसा ॥
स्त्रीविग्रहा ग्रहा ये तु नानारूपा नयेरिताः ।
गङ्गोमाकृत्तिकानाञ्च ते भागा राजसा मताः ॥
नैगमेषस्तु पार्वत्या सृष्टो मेषाननो ग्रहः ।
कुमारधारी देवस्य गुहस्यात्मसमः सखा ॥
स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः सोऽग्निनाग्निसमद्युतिः ।
स च स्कन्दसखा नाम विशाख इति चोच्यते ॥
स्कन्दः सृष्टो भगवता देवेन त्रिपुरारिणा ।
बिभर्त्ति चापरां संज्ञां कुमार इति स ग्रहः ॥
बाललीलाधरो योऽयं देवो रुद्राग्निसम्भवः ।
मिथ्याचारेषु भगवान् स्वयं नैष प्रवर्त्तते ॥
कुमारः स्कन्दसामान्यादत्र केचिदपण्डिताः ।
ग्रहातीत्यल्पविज्ञाना ब्रुवते देहचिन्तकाः ॥
ततो भगवति स्कन्दे सुरसेनापतौ कृते ।
उपतस्थुर्ग्रहाः सर्व्वे दीप्तशक्तिधरं गुहं ॥
ऊचुः प्राञ्जलयश्चैनं वृत्तिं नः संविधत्स्व वै ।
तेषामर्थे ततः स्कन्दः शिवं देवमचोदयत् ॥
ततो ग्रहांस्तानुवाच भगवान् भगनेत्रहृत् ।
तिर्य्यग्योनिं मानुषञ्च दैवञ्च त्रितयं जगत् ॥
परस्परोपकारेण वर्त्तते धार्य्यतेऽपि च ।

देवा मनुष्यान् प्रीणन्ति तैर्य्यग्योनींस्तथैव च ॥
वर्त्तमानैर्यथा कालं शीतवर्षोष्णमारुतैः ।
इज्याञ्जलिनमस्कारजपहोमव्रतादिभिः ॥
नराः सम्यक् प्रयुञ्जानाः प्रीणन्ति त्रिदिवेश्वरान् ।
भागधेयं विभक्तञ्च शेषं किञ्चिन्न विद्यते ॥
तद्युष्माकं शुभा वृत्तिर्बालेष्वेव भविष्यति ।
कुलेषु येषु नेज्यन्ते देवाः पितर एव च ॥
ब्राह्मणाः साधवश्चैव गुरवोऽतिथयस्तथा ।
निवृत्ताचारशौचेषु परपाकोपभोजिषु ॥
उत्सन्नबलिभिक्षेषु भिन्नकांस्योपभोजिषु ।
गृहेषु तेषु ये बालास्तान् गृह्णीध्वमशङ्किताः ॥
तत्र वो विपुला वृत्तिः पूजा चैव भविष्यति ।
एवं ग्रहाः समुत्पन्ना बालान् गृह्णन्ति चाप्यतः ।
ग्रहोपसृष्टा बालास्तु दुश्चिकित्स्यतमा मताः ।
वैकल्यं मरणं चापि ध्रुवं स्कन्दग्रहे मतं ॥
स्कन्दग्रहोऽग्र्यतमः सर्व्वेष्वेव यतः स्मृतः ।
अन्येषां सर्व्वरूपस्तु न साध्यो ग्रह उच्यते ॥
